॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द का अपूर्व पत्र-व्यवहार

स्वामी श्रद्धानन्द जी

सम्पादक

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

महर्षि दयानन्द
का
अपूर्व पत्र-व्यवहार

संग्रहकर्त्ता व भूमिका लेखक
स्वामी श्रद्धानन्द

॥ ओ३म् ॥

महर्षि दयानन्द का अपूर्व पत्र-व्यवहार

संग्रहकर्त्ता व भूमिका लेखक
महात्मा मुंशीराम जी 'जिज्ञासु'
(स्वामी श्रद्धानन्द जी)
सम्पादक
राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

आगामी शताब्दी महोत्सव संस्करण
(1925 से 2024)

संस्थापक
पितामह श्री गोविन्दराम जी

पूर्व संचालक
पिता श्री विजयकुमार जी

प्रकाशक : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
4408, नई सड़क, दिल्ली-110006, भारत
दूरभाष : 23977216, 23914945
E-mail : ajayarya16@gmail.com
Website : www.vedicbooks.com

सन् 2024 वैदिक-ज्ञान-प्रकाश का 100वाँ वर्ष होगा (1925-2024)

प्रथम संस्करण : सन् 1909
द्वितीय संस्करण : स्वामी श्रद्धानन्द शौर्य शताब्दी वर्ष 2019 ईस्वी
मूल्य : 200.00 रुपये
मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली।

Maharishi Dayananda ka Apoorva Patra Vyavahar *by* Swami Shraddhananda

मैं
महात्मा मुंशीराम जी 'जिज्ञासु' प्रणीत
अपने विषय के इस अनूठे तथा ऐतिहासिक
ग्रन्थ के इस महत्त्वपूर्ण संस्करण को
श्री लाला गोविन्दरामजी
की
पावन स्मृति में सादर समर्पित
करता हूँ।
आप ही ने 66 वर्ष पूर्व मुझे इस दुर्लभ ग्रन्थ
के अध्ययन की प्रबल प्रेरणा दी थी।
आपने आजीवन अत्यन्त पुरुषार्थ से आर्यसमाज
की निःस्वार्थ सेवा की।
आपको जब आर्यसमाज में प्रविष्ट होने पर
घर में प्रताड़ित किया जाता था, जिस काल खण्ड में
विदेशी सरकार आर्यसमाज का दमन-दलन
कर रही थी, आप तब अदम्य उत्साह
से वैदिक पथ पर निर्भय होकर चल पड़े।

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

प्रकाशकीय

यह गौरव का विषय है कि 1953 में जिस ग्रन्थ की उपयोगिता को समझते हुए पितामह गोविन्दराम जी ने उसे उसके वास्तविक पारखी व दूरद्रष्टा आदरणीय प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी के हाथों में पहुंचाया, अब प्रथम प्रकाशन के 110 वर्षों बाद उस एतिहासिक पुस्तक का द्वितीय नवीन संस्करण आपके हाथों में है।

हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संकलित व सम्पादित 'ऋषि दयानन्द का अपूर्व पत्र-व्यवहार' के नाम से अब प्रकाशित हो रहे इस ग्रन्थरत्न में आपको न केवल ऋषि जीवन पर मूल्यवान् सामग्री मिलेगी वरन् आर्यसमाज के आरम्भिक काल के इतिहास की झाँकी भी मिलेगी। पुस्तक की भाषा को मूल रूप में ही रखने का प्रयास किया गया है, फिर अपवाद रूप में कुछ आवश्यक सुधार किये गये हैं।

इस नवीन संस्करण के सम्पादक आदरणीय प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी ने इसका विस्तृत व उपयोगी प्राक्कथन लिखकर इसको नये प्रकाश में प्रस्तुत कर इसकी रोचकता व उपयोगिता में अभिवृद्धी कर दी है।

आपको विदित ही है कि गोविन्दराम हासानन्द संस्थान की स्थापना 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रकाशन से 1925 में तब स्वामी श्रद्धानन्द जी के आशीर्वाद से ही हुई थी, जब स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी बहुत ही हर्षोल्लास से पूरे देश में मनाई जा रही थी। 'सत्यार्थ प्रकाश' के इस प्रकाशन का सर्वत्र भव्य स्वागत हुआ और रिकार्ड समय में ही यह संस्करण समाप्त हो गया। तब से यह निरन्तर छपता रहा है।

वयोवृद्ध आर्य विद्वान् पं. सुधाकर चतुर्वेदी जी, बैंगलुरु ने इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि सन् 1924 में स्वामीजी की जन्म शताब्दी के साथ ही **एक स्मारक के रूप में गोविन्दराम हासानन्द संस्थान की स्थापना हुई जो अकेला ऐसा संस्थान है जो अपनी शताब्दी की ओर अग्रसर है।**

उसी उपलक्ष्य में यह संस्करण आगामी शताब्दी वर्ष उत्सव के प्रथम पुष्प के रूप में सुधी पाठकों को समर्पित है।

-अजय कुमार

ओ३म्

महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी का स्मारक

गोविन्दराम हासानन्द की जन्म शताब्दी के इस अद्‌भुत उपहार 'महर्षि के अपूर्व पत्र व्यवहार' का शुभ समाचार सुनकर मुझे लाला गोविन्दराम जी के कोलकाता निवास काल का स्मरण हो आया। इस संस्थान के जन्मकाल से मैं इस संस्थान को जानता हूँ। लाला जी के अदम्य उत्साह का लग्न का साक्षी होने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है।

तब जन्म शताब्दी की स्मृति बनाये रखने के लिये कई सभा संस्थायें स्थापित की गईं, परन्तु वे अब दिखाई नहीं देतीं। **हर्ष का विषय है कि यह संस्थान बड़ी शान से सिर ऊँचा करके अपनी शताब्दी मनाने के लिये अग्रसर हो रहा है।**

प्रभु कृपा से शताब्दी ग्रन्थमाला के इस उपहार के पश्चात् इस संस्थान के अगले पुष्प भी देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त होगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी के इस अनुपम ग्रन्थ पर आर्य मात्र को तथा प्रकाशक को मैं किन शब्दों में बधाई दूँ? 123 वर्षीय इस वेद सेवक, स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य की शुभ कामनायें सबको स्वीकार हों।

6.3.2019 सुधाकर चतुर्वेदी

पं. लेखराम बलिदान पर्व बैंगलूर

ओ३म्

ऋषि दयानन्दजी का अपूर्व पत्र-व्यवहार

प्राक्कथन

यह सन् 1953 की घटना है। यह लेखक तब देहली रहता था। आयु मात्र 22 वर्ष थी। प्रतिमास महीने के पहले सप्ताह गोविन्दराम हासानन्द की दुकान पर एक-दो आर्यसामाजिक पुस्तकें क्रय करने जाया करता था। श्रीमान् लाला गोविन्दराम जी अपने इस ग्राहक को भली प्रकार से पहचानते थे, जानते थे। एक दिन लालाजी ने कहा, **"यह दुर्लभ पुस्तक आपके बड़े काम की है।" पुस्तक को तत्काल क्रय कर लिया। इसके प्रणेता महात्मा मुंशीराम जी 'जिज्ञासु' थे और इसके स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा लाला गोविन्दराम जी दे रहे हैं–इन दो कारणों से झटपट पुस्तक क्रय कर ली।**

प्रश्न यह है कि लालाजी ने इतने विश्वास से कैसे कह दिया कि यह दुर्लभ ग्रन्थ आपके बड़े काम का है? इसका उत्तर यह है कि वह मात्र पुस्तक विक्रेता ही नहीं थे–एक भावनाशील मिशनरी भी थे। आपने आर्यसमाज में प्रविष्ट होने के लिये बहुत कष्ट सहे। आर्यसमाज के प्रेम का हँसते-हँसते मूल्य चुकाया। सन् 1952 से लेकर उनके निधन तक इस विनीत का उनसे निकट का सम्बन्ध रहा। वह मिशनरी पहले थे और व्यापारी बाद में। उनकी वैदिक धर्म के लिये तड़प को, श्रद्धा को स्वामी श्रद्धानन्द जी और पं० गंगाप्रसाद सरीखे विचारक नेता जानते और मानते थे।

यह पुस्तक जब क्रय की तब मार्कीट में आर्य साहित्य के किसी भी पुस्तक विक्रेता के पास बिक्री के लिये नहीं थी। न किसी पुस्तकालय में देखी और न ही पं० शान्तिप्रकाश जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी की कोटि के ऊँचे विद्वानों के पुस्तकालय में देखी।

पुस्तक को बड़ी श्रद्धा से पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ तो गया। कुछ सामग्री बहुत महत्त्वपूर्ण और उपयोगी लगी परन्तु यह ग्रन्थ सुरुचिकर न लगा। श्रद्धेय लक्ष्मण जी आर्योपदेशक ने भी महर्षि का जीवन चरित्र लिखते समय, ग्रन्थ

छपने को देते समय इसे एक बार पढ़ा तो उन्हें निरुपयोगी तथा अरुचिकर लगा। ग्रन्थ छपने के लिये प्रेस में पहुँच गया तो आपने इसे फिर से आदि से अन्त तक पढ़ डाला। अब की बार इसे अत्यन्त उपयोगी पाया परन्तु ग्रन्थ लेखन में [ऋषि-जीवन] इसका लाभ उठाना अब सम्भव नहीं था। आपने ऐसा लिखा है।

इन पंक्तियों के लेखक ने पूज्य पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक की प्रेरणा से जब इसी ग्रन्थ का-पं० लक्ष्मणजीकृत (ऋषि जीवन) अनुवाद व सम्पादन कार्य आरम्भ किया तब लाला गोविन्दराम जी की प्रेरणा से क्रय किये गये इस ग्रन्थ का हमने भरपूर लाभ उठाया। श्री हरविलास शारदा तथा श्री घासीराम जी और स्वामी सत्यानन्द जी ने भी ऋषि जीवन पर प्रशंसनीय कार्य किया परन्तु, स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ का उन्होंने किञ्चित् भी लाभ न उठाया। ऋषि जीवन पर अब तक का सबसे बड़ा, सर्वाधिक प्रामाणिक तथा अनेक अलभ्य स्रोतों के प्रमाणों से सुसज्जित इस ग्रन्थ में हमने इसका पहली बार ऋषि जीवन के पाठकों को लाभ पहुँचाया। इसके लिये हमारा रोम-रोम ला० गोविन्दराम जी का तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी का ऋणी है। **श्रद्धेय लक्ष्मण जी को स्वामी श्रद्धानन्द जी रचित इस ग्रन्थ की सामग्री का लाभ न उठाने के कारण अपना ग्रन्थ अधूरा ही लगता था। यह उन्होंने खुलकर लिखा है।**

इसके बिना आर्यसमाज के इतिहास पर लिखे गये सब ग्रन्थ अधूरे ही रह गये। महात्मा मुंशीराम जी के सुपुत्र और आर्यसमाज का पठनीय इतिहास लिखने वाले उनके सुपुत्र पूज्य पं० इन्द्रजी को भी आर्यसमाज का इतिहास लिखते हुये पिताश्री लिखित इस ग्रन्थ का लाभ उठाने का ध्यान ही न आया।

आर्यसमाज के महान और यशस्वी शास्त्रार्थ महारथियों ने आर्यसमाज के विरोधियों व शत्रुओं को शास्त्रार्थ में चित्त करने के लिये इसका कुछ-कुछ लाभ (परन्तु स्वल्प) अवश्य उठाया।

हमने शास्त्रार्थ समर में लाला गोविन्दराम जी को स्मरण करके इस ग्रन्थ के प्रमाण देकर लिखित शास्त्रार्थों में तथा मौखिक रूप से ऋषि निन्दक आर्यसमाज विरोधी तत्त्वों को ऐसा चुप करवाया कि हमारे दिये गये प्रमाणों व तर्कों का कोई भी प्रतिवाद नहीं कर सका। इस ग्रन्थ के बल पर हमने विरोधियों की बोलती बन्द कर दी। यथा आर्यसमाज के इतिहास केसरी प्रकाण्ड पण्डित पं० निरंजनदेव जी ने इस सेवक को प्रबल प्रेरणा दी कि अलगाववादी सिखों ने श्री दित्तसिंह ज्ञानी नाम के एक लेखक की एक

पुस्तिका हिन्दी व पंजाबी में कई बार छापी व बँटवाई है। उसमें वह लिखता है कि स्वामी दयानन्द से मेरे तीन शास्त्रार्थ हुये। मैंने उसे (स्वामी दयानन्द को) निरुत्तर कर दिया। इसे सिखों की जीत बताया।

श्री दित्तसिंह जी ने स्वयं को वेदान्ती लिखा है:-

हमने उस पुस्तिका का उत्तर देते हुये लिखा कि दित्तसिंह उस पुस्तिका में कहीं भी स्वयं को सिख लिखता ही नहीं।

वह अपने आपको वेदान्ती बताता है। उस पुस्तक में दस सिख गुरुओं में से एक का भी नाम नहीं। सिखों के धर्मग्रन्थ का एक भी प्रमाण नहीं। उस पुस्तिका में अपने समर्थन में भाई जवाहरसिंह की चर्चा की है। इस ग्रन्थ में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महर्षि के नाम भाई जवाहरसिंह के कई पत्र दिये हैं। **दित्तसिंह के शास्त्रार्थ की आर्यसमाज विरोधियों के साहित्य में तथा तत्कालीन किसी भी पत्र में कतई चर्चा नहीं मिलती।** यह सब मनगढ़ंत कहानी है। आर्यसमाज का तब पंजाब में कोई भी पत्र नहीं छपता था। **दित्तसिंह के तथाकथित शास्त्रार्थों के 5-6 वर्ष पश्चात् तक भाई दित्त सिंह व जवाहरसिंह ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज का गुण कीर्तन करता रहा।**

सिख महाराजा फरीदकोट ऋषि भक्त बना:-

श्री दित्तसिंह ने यदि ऋषि को शास्त्रार्थ में पराजित किया था तो फिर वह आर्यसमाज में इतने लम्बे समय तक कैसे निष्ठवान् सेवक बना रहा? **ऋषि दयानन्द तो क्या उसने स्वामी श्रद्धानन्दजी (ला० मुंशीराम का आर्यसमाज लाहौर में परिचय करवाते हुये) का बहुत गुणकीर्तन किया।** ऋषि के इस पत्र व्यवहार में ऐसे कई पत्र हैं जिनसे पता चलता है कि उस काल खण्ड में बहुत सिख आर्यसमाज से जुड़े। फ़रीदकोट के महाराजा परोपकारिणी सभा तथा आर्यसमाज अनाथालय को दान देते हैं। सिख महाराजा ऋषि का कुशल-क्षेम। पूछते हैं। वेदोपदेश सुनते हैं। **ऐसे कई पत्र इस ग्रन्थ में इतिहास प्रेमी देखेंगे।**

आर्यसमाज के इतिहास में रुचि रखने वालों को आज यह बताने समझाने की आवश्यकता नहीं कि तत्कालीन महाराज फ़रीदकोट जो सन् 1883 में ऋषि दर्शन का प्यासा था। अंग्रेज़ों ने उसे आर्यसमाज से दूर कैसे कर दिया? और आगे चलकर उसी महाराजा के उत्तराधिकारी के शासनकाल में एक आर्यवीर पं० तुलसीराम का धर्म की बलिवेदी पर बलिदान हो गया। शासन ने षड्यन्त्रकारी दुष्टों को क्या दण्ड दिया?

संघर्षकाल में यह ग्रन्थ रचा गया:-

इस पत्र व्यवहार के क्रमबद्ध तथा सम्पादन करने में महात्मा मुंशीराम जी ने अत्यन्त साहस, घोर श्रम, असीम श्रद्धा, विद्वत्ता तथा सूझ-बूझ का परिचय दिया है। महात्मा जी की भूमिका तथा हमारे प्राक्कथन से पाठकों को इसकी जानकारी प्राप्त होगी। यह ग्रन्थ महात्मा जी ने परोपकारिणी सभा के निर्देश पर तैयार किया। इसका प्रकाशन आपने स्वयं किया। विक्रम संवत 1966 (ईस्वी सन् 1909) में यह ग्रन्थ 'ऋषि दयानन्द का पत्रव्यवहार' नाम से प्रकाशित भी हो गया। इसके लिये महात्मा जी ने दिन-रात एक कर दिया। उनकी व्यस्तता का कोई अनुमान तो लगावे। सन् 1907 में श्रीमती परोपकारिणी सभा ने आपको यह कार्य सौंपा। आप पर तब कितने कार्यों का भारी बोझा था? लाला लाजपतराय जी आदि आर्य देशभक्तों-क्रान्तिकारियों और आर्यसमाज की सरकारी दमन दलन से रक्षा के लिये संघर्ष से **थोड़ा चैन आया** ही था कि यह अति कठिन परिश्रम साध्य कार्य परोपकारिणी सभा ने सौंप दिया परन्तु **यह न समझा जावें कि वीर अजीत सिंह, लाला लाजपतराय जी की माण्डले से मुक्ति से महात्मा जी को कुछ चैन मिल गया। हमने 'थोड़ा चैन आया' लिखा है-'चैन आया' ऐसा नहीं लिखा।**

सरकार का वह गुप्त समुद्री तार:-

हमने अपनी खोजपूर्ण मौलिक पुस्तक **'इतिहास बोल पड़ा'** में उसी काल खण्ड में 25 मई, सन् 1900 में भारत सरकार द्वारा इंग्लैण्ड में अपनी (Home govt.) सरकार को भेजे गये एक समुद्री तार का छाया चित्र दिया है। इस ग्रन्थ में भी इस अलभ्य दस्तावेज (Document) का फोटो दिया जा रहा है (देखें पृष्ठ 287)। इसमें लिखा है- **A Revolt In India Feared The Arya Samaj grows**

रक्षक केवल महात्मा जी:-

इसमें लिखा गया अथवा यह सूचना दी गई कि शासन ने आर्यसमाज को अंकुरित होते ही कुचल देने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इस सरकारी निर्णय की इस नीति की प्रामाणिक जानकारी पहली बार हमीं ने दी है। ला० लाजपत राय जी की लुप्त हो चुकी एक उर्दू पुस्तक में दमन-दलन का एक ऐसा संकेत तो अवश्य मिलता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी विषयक एक और ग्रन्थ में भी एक ऐसा सूत्र हमारे हाथ लगा है कि महात्मा मुंशीराम एक दशाब्दी तक आर्यसमाज की रक्षा में-दमन-दलन से बचाने के लिये सरकार से जूझते रहे। **उधर आर्यसमाज की रक्षा महात्मा जी के लिये जीवन-मरण का प्रश्न था।** और इधर आपने इस ग्रन्थ के सृजन का दायित्व संभाल लिया। तनिक

उस महापुरुष की सतत साधना व जीवन संघर्ष की कल्पना तो कीजिये। यह ग्रन्थ छपकर आया ही था कि सन् 1857 के पश्चात् गोरी सरकार के अधिकारियों व चाटुकारों ने पटियाला स्टेट में **आर्यसमाज पर राजद्रोह का पहला अभियोग चलाकर सब प्रमुख आर्यों को जेलों में ठूँस दिया। प्रसिद्ध आर्य साहित्यकार श्री पं० संतराम जी बी०ए० ने लिखा है उस विपत्ति के समय आर्यसमाज का रक्षक एक और केवल एक महात्मा मुंशीराम ही थे।**

निर्भय मुंशीराम ने इस ग्रन्थ का कार्य जो हाथ में लिया यह अत्यन्त चुनौतीपूर्ण था परन्तु, आपने हर चुनौती को चीर कर पग आगे ही आगे बढ़ाया।

निर्मल हृदय महात्मा मुंशीराम की सोचः-

महात्मा मुंशीराम जी आध्यात्मिक सोच़ के व्यक्ति थे। आपका हृदय पवित्र था। आप इतिहास प्रेमी तो थे ही। संसार के अनेक विचारशील विद्वानों के सदृश यह मानते थे कि राष्ट्रों का, जातियों का और मनुष्य समाज का सत्य इतिहास महापुरुषों की जीवन कथा ही तो है। अतः वे ऋषि दयानन्द की जीवनी या जीवन चरित्र की सामग्री मानव समाज की सम्पदा मानते थे। प्राणवीर पं० लेखराम रचित ऋषि जीवन को महात्मा जी अत्युत्तम परन्तु अधूरा मानते थे। वे महर्षि के जीवन चरित्र में महर्षि के पत्र व्यवहार का भरपूर प्रयोग करना चाहते थे। श्री पं० लेखराम जी ही ऋषि जीवन के ऐसे पहले लेखक थे जिन्होंने ऋषि जीवन लिखते हुये ऋषि के पत्रों का [जितने उन्हें मिल सके अथवा उन्हें दिखाये गये] पर्याप्त प्रयोग किया परन्तु, अधिकांश पत्र व्यवहार तो उनकी पहुँच से दूर ही रहा।

महात्मा मुंशीराम जी को जब यह कार्य सौंपा गया तो आपने परोपकारिणी सभा के पास पत्र व्यवहार की पड़ताल की **"तो बहुत से पत्र फटे हुवे तथा चूहों के काटे हुवे पाए गए। कई पत्रों को कीड़े लग गए थे। जो कुछ भी पत्रादि मुझे मिले मैं उन्हें अपने साथ लाया और उनकी जाँच-पड़ताल आरम्भ की।"**

महात्मा जी ने इधर-उधर से भी ऋषि के पत्र प्राप्त करके 'सद्धर्म प्रचारक' हिन्दी में उन्हें प्रकाशित करना आरम्भ कर दिया। कुछ पाठकों की इस सामग्री में विशेष रुचि थी तो ऐसे भी बहुत पाठक थे जो पत्रिका में पहले जैसी विविध प्रकार की सामग्री ही चाहते थे सो 'सद्धर्म प्रचारक' में पत्रों का प्रकाशन बन्द करना पड़ा। महात्मा जी ने उन सब लोगों से अनुरोध करके ऋषि के पत्र अथवा उनकी प्रामाणिक प्रतिलिपि माँगी जिनके पास ऐसे पत्र थे। तब यह पता चला कि परोपकारिणी सभा, वैदिक यन्त्रालय के कर्मचारियों,

लेखकों के नाम ऋषि के पत्र ही न मिल सके। उन्होंने वे पत्र दबा लिये। कारण स्पष्ट है। जागरूक व्यवस्थापक सम्पादक द्वारा स्वामी दयानन्द के पत्रों के प्रकाश में आने से उन कर्मचारियों और लेखकों की दुर्बलताओं से पर्दा उठता होगा।

ऋषि के पत्र घुसपैठियों ने दबा लिये:-

महर्षि महत्त्वपूर्ण विषयों पर और पत्र व्यवहार के लिये कुछ निर्देश अथवा Guidelines सार संकेत जो लिखकर भेजते थे उनके आधार पर लेखक आगे पत्र बनाकर भेजा करते थे। ऋषि के हाथ से लिखे सारे संकेत कुछ भी न मिले। **जर्मनी जो पत्र महर्षि ने लिखे उनकी प्रतिलिपि कतई न मिली।** दो वर्ष पूर्व परोपकारिणी सभा के वर्तमान प्रधान डॉ० वेदपाल जी ने भी ऋषि के पत्र व्यवहार का सम्पादन करते हुये इस लेखक से यही चिन्ता व्यक्त की थी।

पण्डया ने क्या-क्या हड़प लिया?

महात्मा जी के सामने एक और धोखाधड़ी आई। पण्डया मोहनलाल विष्णुलाल मथुरा वाला जो सभा का उपमन्त्री/मन्त्री बनाया गया था, वह ऋषि की बहुत हस्तलिखित पुस्तकें तथा पत्रादि अपने घर उठा कर ले गया। "मुझे यह भी पता लगा था कि उक्त पण्डया जी आर्य पुरुषों को धमकियाँ दिया करते हैं कि यदि वह अपने काबू आई हुई चिट्ठियों को छाप देंगे तो आर्यसमाज को बहुत हानि पहुँचेगी। इस धमकी को लक्ष्य में रखकर मैंने दस भाद्रपद सं० 1966 वि० को लेख दिया था, जिसका कुछ भी परिणाम न निकलने का मुझे शोक है।"

सत्यनिष्ठ महात्मा ने पण्डया को चुनौती दी:-

महात्मा जी ने पुनः अपने पूर्व लेख को दोहराते हुये पण्डया आदि को किसी भी शर्त पर ऋषि के पत्रादि देने के लिये प्रेरित किया। **आर्यसमाज की हानि होती हो तो होने दो, वे पत्र छापे जायेंगे।** इस चुनौती से पण्डया आदि की सब हवा निकल गई। ऐसा करके पण्डया आर्यसमाज को Blackmail (डराता था) कर रहा था। अटल ईश्वर विश्वासी सत्यनिष्ठ महात्मा मुंशीराम ने पण्डया आदि को नंगा कर दिया।

पण्डित लेखरामजी, महात्मा मुंशीराम जी तथा मथुरा के आर्यसमाजी बहुत पहले जान चुके थे कि पण्डया आर्यसमाजी नहीं है। वह स्वार्थ सिद्धि के लिये ऋषि के निकट आया था। आर्यसमाज में उसकी पोल खुलने पर भी इतिहास प्रदूषित करने वालों ने उसे बहुत महिमा मण्डित किया। मथुरा वालों

ने 1899 में उसकी पोल खोल दी थी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का उपकार:-

इतिहास प्रदूषण करने वालों द्वारा उसे महिमा मण्डित भी इतना किया गया है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी, ला० लाजपतराय, पं० गंगाप्रसाद जी चीफ जज तथा उपाध्याय जी को उसके सामने बौना बना दिया गया है। **स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस ग्रन्थ का सृजन करके आर्यसमाज पर बड़ा उपकार किया है।** आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल के इतिहास का अवलोकन करते हुये जवाहरसिंह, दित्तसिंह, आलाराम, ईश्वरानन्द, गोपाल हरि देशमुख आदि जो बहुत आगे-आगे और सक्रिय दिखाई देते थे वे सब कैसे फिसल गये? इसका रहस्य क्या है?

इतिहास के प्रेरक प्रसंग:-

इस पत्र व्यवहार में महात्मा मुंशीराम जी ने प्रत्येक प्रेरक प्रसंग को मुखरित कर दिया है। कुछ प्रसंग ऐसे हैं उन्हें ऋषि जीवन में तो स्थान मिल गया परन्तु उन घटनाओं का यथोचित मूल्याङ्कन नहीं किया गया। जयपुर राज्य में ठाकुर रघुनाथ जी ने महाराजा से संवाद करते हुये जो उत्तर दिया, **जिस साहस का परिचय दिया वह राजस्थान में आर्यसमाज की पहली अग्नि परीक्षा थी।** इस घटना को ऐसे जीवनी लेखक देते तो विशेष लाभ व विशेष प्रचार होता।

आत्मोन्नति के लिये पत्र द्वारा अनूठा उपदेश:-

साधु अमृतराम नवीन वेदान्ती का पत्र व्यवहार महर्षि की विनम्रता, महानता तथा सत्यनिष्ठा आत्मोन्नति के लिये प्रयत्नशील व्यक्तियों के लिये बहुत बड़ा उपदेश है। इन पंक्तियों के **इस लेखक ने सबसे पहले इसी ग्रन्थ में साधु जी का श्री गोपाल हरि शर्मा की पुस्तक के बारे पत्र पढ़ा** फिर ऋषि दयानन्दजी के श्री गोपाल हरि शर्मा के नाम अत्यन्त हृदय स्पर्शी भावपूर्ण पत्र को पढ़ा तो यह सारा प्रसंग हमारे हृदय पर अंकित हो गया।

एक सर्वश्रेष्ठ उपदेश:-

ऋषि दयानन्द जी ने शाहपुरा से गोपाल हरि जी को अमृतराम जी का लिखा पत्र पाकर, अपने विषय में एक पुस्तक में गोपाल हरि जी द्वारा एक अप्रमाणिक बात लिखने के लिये एक संक्षिप्त परन्तु, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण पत्र लिखा। इस ऐतिहासिक पत्र में ये मार्मिक शब्द लिखकर श्रीयुत गोपाल हरि को उनकी भूल का बोध करवाया। **"जब आपको मेरा इतिहास ठीक-ठीक विदित नहीं, तो उसके लिखने में कभी साहस मत करो। क्योंकि थोड़ा सा भी असत्य हो जाने से सम्पूर्ण निर्दोषकृत बिगड़ जाता है। ऐसा**

निश्चय रखो।"

महात्मा मुंशीराम जी के ग्रन्थ में साधु अमृतराम जी के पत्र के संदर्भ में जब हमने ऋषि के उपरोक्त शब्द पढ़े तो **हमें ऋषि के ये शब्द जीवन में पढ़े सुने सर्वश्रेष्ठ सत्योपदेशों में से एक लगा।** ईश्वरीय वाणी वेद के गायत्री मन्त्र आदि उपदेशों की मानो सारगर्भित व्याख्या कर दी गई है। हम पुनः ऋषि जीवन में लिखे गये अपने इस वाक्य को यहाँ उद्धृत करके इस प्रसंग को समाप्त करते हैं। **"यह ऋषि जीवन की सर्वश्रेष्ठ घटनाओं में से एक है।"**[1]

विरोधी भी इस ग्रन्थ से चित किये गयेः-

लाला गोविन्दराम जी से जब से यह प्रसाद पाया, तब से लेकर अब तक न जाने महात्मा मुंशीराम जी द्वारा पण्डया मोहनलाल को दी गई चुनौती तथा ऋषि के उपरोक्त शब्दों को हमने कितनी बार पढ़ा। महर्षि के ग्रन्थों से मृतक श्राद्ध तथा मांसाहार के प्रमाण देने का दुस्साहस करने वाले पौराणिक पण्डितों को हमारे शास्त्रार्थ महारथी पं० मनसाराम वैदिक तोप, पं० लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति, तपोधन पं० शान्तिप्रकाश तथा शास्त्रार्थ केसरी ठाकुर अमरसिंह जी इसी ग्रन्थ से **पण्डया मोहनलाल को सुनाई गई महात्मा मुंशीराम की हुंकार लगा कर चित किया करते थे।**

इस ग्रन्थ की अपूर्वताः-

सत्य बात तो यह है कि इस ग्रन्थ की अपूर्वता को आर्य जगत् के विद्वान् एक शताब्दी तक भी पहचान न पाये। जब मिर्ज़ाइयों ने यह मनगढ़ंत गप्प गढ़ी कि मास्टर आत्माराम जी ने महर्षि दयानन्द जी को ऋषि की उपाधि दी तो श्रद्धेय लक्ष्मण जी आर्योपदेशक ने इसका सूझ-बूझ से युक्तियुक्त प्रतिवाद तो किया परन्तु, तब किसी भी विद्वान् को यह न सूझा कि विधर्मियों व विदेशियों के लेखों में तथा प्रतिष्ठित दैनिक अंग्रेजी पत्र में काशी शास्त्रार्थ के समय ही महाराज को ऋषि व महर्षि लिखा गया। ऋषि महर्षि कोई उपाधि है ही नहीं।

यह तो आत्मोन्नति, तप, त्याग, सतत साधना, उपासना तथा गम्भीर ज्ञान से श्रद्धा भक्ति से जन-जन के मन से निकले स्वाभाविक उद्गार हैं। पं० बस्ती राम जी ने रीवाड़ी में ऋषि दरबार में अपने एक गीत में भी कहा थाः-

"बस्ती राम ऋषि का चेला। इक तारे पै गावे से।"

अभी कुछ मास पूर्व न जाने किसने यही प्रश्न हमारे सुयोग्य नाती प्रिय पुलकित से पूछ लिया तो पुलकित ने हमें इसका समाधान करने को कहा।

1. द्रष्टव्य 'महर्षि दयानन्द सरस्वती सम्पूर्ण जीवन चरित्र' पृष्ठ 605।

हम ने सप्रमाण प्रश्न कर्त्ता का परोपकारी में उत्तर तो दे दिया परन्तु हमें भी तब महात्मा मुंशीराम जी के इस ग्रन्थ में अपने द्वारा **चिह्नित किया गया एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रमाण** उद्धृत करना याद न आया। ऋषि के जीवन में ही उन्हें सर्वत्र ऋषि माना जाता था, यह पत्र एक सबल साक्षी है।

हा! यह कविता फिर न छपवाई गई:-

इसी ग्रन्थ में श्री खुन्नीलाल जी विद्यार्थी फोर्थ क्लास[1] द्वारा महर्षि को गद्य व पद्य में लिखे गये पत्र में दी गई निम्न पंक्ति का ध्यान न आया:-

"ऋषि जी प्रसाद दीजे आप ही कर्त्ता"

ऋषिजी के नाम लिखे इस पत्र पर तिथि नहीं दी गई। यह कविता बहुत भावपूर्ण है। न जाने 16 पंक्तियों की यह कविता दूसरी बार किसी ने कहीं क्यों नहीं छपवाई। अब ऐसे-ऐसे अनमोल मोती जिनको कभी किसी ने मुखरित नहीं किया लाला गोविन्दराम जी के संस्थान द्वारा सब उजागर हो जायेंगे। डॉ. वेदपालजी का ग्रन्थ अवश्य एक अपवाद है।

यह आश्चर्य का विषय है:-

अच्छा हुआ जीवन की सांझ में इस ग्रन्थ रत्न के स्वाध्याय की प्रेरणा देने वाले लाला गोविन्दराम जी का ऋण चुकाने का हमें एक स्वर्णिम अवसर हाथ लग गया। अब बार-बार हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि न जाने लाला जी के साहित्य प्रेमी धर्मनिष्ठ हृदय पर इस ग्रन्थ की महिमा व महत्ता की छाप कैसे लगी और दूसरा प्रश्न यह उठता है कि सब प्रकाशक अपने पक्के ग्राहकों को उत्तम पुस्तकों के लेने की प्रेरणा व विशेष अनुरोध किया ही करते हैं परन्तु, **अपने लम्बे सम्पर्क काल में आपने केवल इसी ग्रन्थ के अध्ययन व क्रय करने की इतनी प्रबल प्रेरणा की। यह आश्चर्य का विषय है।** पूज्य महात्मा मुंशीराम जी को तो अवश्य अपने श्रम व अपने ग्रन्थ की अपूर्वता का ज्ञान था। वे जानते थे कि ऋषि जीवन तथा आर्यसमाज के इतिहास के लेखन के लिये यह ग्रन्थ एक बेजोड़ स्रोत है। यह इतिहास की कई गुत्थियों को सुलझाने वाला ग्रन्थ रत्न है। पं० लेखराम जी ने ऋषि जीवन के लिये जो श्रम किया उसका मूल्याङ्कन करने के लिये पूज्य पं० इन्द्र जी तथा श्रद्धेय युधिष्ठिर मीमांसक की कोटि के बीसियों विद्वान् चाहिये। उनके ऋषि जीवन को "विवरणों का पुलिंदा" बताने वाला व्यक्ति इसको क्या जाने? फ़ार्सी की सूक्ति है:-**'कदरे ज़र ज़रगर शनासद कदरे जौहर**

1. खुन्नीलाल 4th year B.A. का विद्यार्थी होगा। वह 'विद्यार्थी फोर्थ यीअर क्लास' में फ़ोर्थ टिप्पणी स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण के पश्चात् यीअर लिखना भूल गया। द्रष्टव्य महात्मा जी का ग्रन्थ पृ० 400

जौहरी' स्वर्ण तथा रत्न का मूल्य पारखी ही जानता है। महात्माजी ने अपने ग्रन्थ में जयपुर (राजस्थान निवासी) श्री बिहारीलाल जी मन्त्री वैदिक धर्म सभा का एक बड़ा महत्त्वपूर्ण पत्र प्रकाशित किया है। जोधपुर ऋषि के पहुँचते ही षड्यन्त्र होने लग गये। उपरोक्त पत्र के ये शब्द इस दृष्टि से पठनीय है, "यहाँ पर राज में एक मासिक पत्र जिसका नाम धर्म्म जीवन है लाहोर से प्रतिमास आता है। अब की बार मारच संबंधी पुस्तक एक अंक जो आया तो उसमें यह समाचार मुद्रित था श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज को महाराज जोधपुर ने जन्म भर के लिये कैद कर दिया है।"[1]

ऋषि को भी जोधपुर आना व्यर्थ लगा:-

ऋषि के पत्र व्यवहार में महर्षि के एक लम्बे पत्र की कुछ पंक्तियाँ पाठक इसके साथ जोड़कर पढ़ें। "अब मैं यहाँ बीस-पच्चीस दिन रहना चाहता हूँ यदि कोई नैमित्तिक प्रतिबन्ध न होगा। मैंने यह समझा है कि यहाँ आकर आपका धन व्यय व्यर्थ कराया, क्योंकि मुझसे आपका उपकार कुछ भी नहीं हुआ।"[2]

कमलनयन ने भी जोधपुर छोड़ने के लिये लिखा:-

श्री कमलनयन मन्त्री आर्यसमाज अजमेर के एक पत्र के ये शब्द और भी आँखें खोलने वाले हैं। आपने जोधपुर में श्री स्वामी जी महाराज **को सावधान करते हुये लिखा, "स्वामी जी महाराज मारवाड़ राज बड़ा विकट है बहुधा चोर उठाईगीर बस्ते हैं वह स्थान आप जैसे महात्माओं के निवास करने का नहीं है यदि राजा साहब चाहते तो क्या चोर न पकड़ा जाता, इस कारण यदि वहाँ कुछ लाभ नहीं दीखता तो उसको छोड़ शीघ्र पधारिये, मैं जानता हूँ कि यदि आप इतने दिन इन्दौर, कलकत्ता, मदरास, स्थानों में भ्रमण करते तो बहुत कुछ उन्नति होती।"**[3]

श्रीमान डॉ० वेदपाल जी द्वारा सम्पादित पत्र व्यवहार में यह पत्र नहीं है। इस पत्र की ओर विरले गवेषकों का ध्यान गया है।

मैं उपासक हूँ:-

'भारत मित्र' कोलकाता में किसी ने कांग्रेस के संस्थापक मिस्टर ए०ओ० ह्यूम तथा एक और व्यक्ति के लेखों की आड़ लेकर महर्षि के वेदभाष्य पर कुछ आक्षेप किये। प्रश्न उठाये। महर्षि ने 'भारत मित्र' के सम्पादक

1. महात्मा मुंशीराम जी के ग्रन्थ में पृष्ठ 88 पर यह पत्र पूरा छपा मिलता है। श्रीमान् डॉ० वेदपाल जी द्वारा सम्पादित पत्र व्यवहार के दूसरे भाग में यह पत्र पृष्ठ संख्या 658 पर छपा है। 'जिज्ञासु'
2. डॉ० वेदपाल जी द्वारा सम्पादित दूसरे भाग का पृष्ठ 585 देखिये। 'जिज्ञासु'
3. द्रष्टव्य महात्मा मुंशीराम जी प्रणीत ग्रन्थ पृष्ठ 192।

महाशय को एतद्विषयक एक पत्र में एक बहुत विचारणीय वाक्य लिखा जो कोई ऋषि मुनि ही लिख सकता है। गुरुडम को चलाने वाले ईश्वर तथा आत्मा के मध्य बिचोलिये का काम करने वाले तो ऐसा सोच ही नहीं सकते। ऋषि ने लिखा, **"मैं ईश्वर नहीं किन्तु ईश्वर का उपासक हूँ।"**

यह वाक्य ऋषि दयानन्द की सरलता, विनम्रता, महानता तथा ईश्वर के प्रति अटल श्रद्धा का प्रमाण है। आर्यसमाज में ईश्वर विषय पर आस्तिकवाद, worship, between Man and God तथा स्वाध्याय सन्दोह, उपनिषद् प्रकाश जैसे कई छोटे बड़े ग्रन्थ व ट्रैक्ट आदि छपे हैं। अच्छा होता यदि महर्षि का यह वचन किसी ऐसे ग्रन्थ के मुखपृष्ठ पर दिया जाता। खेद का विषय है कि इस विचार बिन्दु की ओर बहुत देर से हमारा ध्यान गया। एकेश्वरवादी आर्यसमाज को अपनी पूरी शक्ति से महर्षि की इस आध्यात्मिक सोच का प्रचार करना चाहिये। पैगम्बरवादी, अवतारवादी, मुर्दों तथा मर्दों की पूजा करने वाले और कबरवादी लोग, जड़-चेतन का भेद न जानने वाले महर्षि के इस चिन्तन व सोच का मर्म क्या जानें? नदी, नालों, पेड़-पौधों तथा मूर्तियों के उपासक महर्षि की इस विलक्षणता के सामने कतई नहीं टिक सकते। हमें इसका ध्वजवाहक बनना होगा।

इसी ग्रन्थ में ऋषि के नाम लिखे गये भाई जवाहरसिंह जी के एक पत्र की ओर विचारशील इतिहास प्रेमियों का ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक व उपयोगी रहेगा।

राजाओं से कुछ होता नहीं दीखता:-

भाई जवाहरसिंह महर्षि के बलिदान के थोड़ा ही समय पश्चात् आर्यसमाज को छोड़कर विरोधियों के साथ जा मिले। महर्षि के देहत्याग से मात्र सत्रह दिन पूर्व आपने स्वामी जी महाराज को जोधपुर में भेजे गये **एक पत्र में लिखा था, "यहाँ हमारी सबकी इच्छा है कि आप राजपूताने को छोड़कर पहले कलकत्ते में नुमाइशगाह (प्रदर्शनी[1]) देखें, फिर एक बार पंजाब में आकर मदरास या बंगाले। को पधारें, राजा लोगों से होता कुछ नज़र नहीं आता। जो कुछ उनती (उन्नति)[2] देस की होगी, वह असमदादिक[3] लोगों से ही होगी, ऐसा निश्चय होता।"[4]**

1.-2. कोष्ठक में शब्द हमने दिये हैं।

3. यह शब्द क्या है? किस भाषा का है। हम समझ नहीं सके।

4. द्रष्टव्य ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार महात्मा मुंशीराम द्वारा सम्पादित पृष्ठ 159।

आगे के इतिहास ने भाई जवाहरसिंह के कथन को सत्य सिद्ध कर दिया। तब देश भर में किसको पता था कि जोधपुर में महर्षि को विष दिया जा चुका है। राजा और उसके कुटिल सहयोगियों ने इस समाचार को बाहर निकलने तक न दिया। जब जोधपुर में आर्य मन्दिर से ओ३म् ध्वज उतारा गया तब वहाँ राज परिवार को तनिक भी दुःख न हुआ। कुछ करने का तो वहाँ प्रश्न ही नहीं था। जब धौलपुर राज्य (राजस्थान) में आर्य मन्दिर का अपमान करके आर्यों के हृदय घायल किये गये तब जोधपुर का राजपरिवार अथवा कोई अन्य राजवंशी व्यक्ति बोला? सबकी चुप्पी का अर्थ सब बुद्धिमान समझते हैं तब देश भर से विशेष रूप से उ० प्र० से ऋषि के शूरवीर दर्दीले सैनिकों की टोलियाँ अग्नि-परीक्षा के लिये-क्रूर निकम्मे शासक से टक्कर लेने धौलपुर की ओर प्रस्थान करने लगीं। उस घड़ी अहंकारी राजा का मान मर्दन करने के लिये **इसी ग्रन्थ का प्रणेता महात्मा मुंशीराम सिर तली पर धर कर अन्यायी शासन को धूल चटाने धौलपुर पहुँचा था।** जो कुछ भाई जवाहरसिंह ने तब ऋषि को लिखा था वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ।[1]

ऋषि के पत्र व्यवहार की सहायता से ऋषि जीवन तथा आर्यसमाज के इतिहास की कई गुत्थियाँ सुलझाई गई हैं और भविष्य में विद्वानों के हाथ में यह संस्करण पहुँचने से और भी **कई उलझी गुत्थियाँ सुलझेंगी।** हम इस सम्बन्ध में दो बहुत महत्त्वपूर्ण उदाहरण यहाँ देते हैं। माता भगवती आधुनिक काल के भारतीय इतिहास की पहली महिला हैं जिसे वर्तमान काल में देश के इतिहास की एक बहुत बड़ी घटना डी०ए०वी० शिक्षा संस्थान के जन्म के लिये आयोजित समारोह में व्याख्यान देने का गौरव प्राप्त है। माता भगवती की ऋषि दयानन्द से कब भेंट हुई? यह प्रश्न इतिहासकारों के लिये एक उलझी समस्या थी। पंजाब में ऋषि जीवन के जितने लेखक हुये उन्होंने इस पर प्रामाणिक प्रकाश ही न डाला। मेहता राधा किशन जी ने यथार्थ लिखा तो ऋषि जीवन में यथास्थान इस घटना का उल्लेख न किया। माताजी ने ऋषि दर्शन तो किये, यह सब लेखकों को मान्य रहा है।

न जाने कैसे यह भ्रामक कहानी प्रसारित हो गई कि आपने सन् 1875 में मुम्बई में ऋषि दर्शन किये।

हमारे मन में इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्न उठे। श्री पं० युधिष्ठिर जी के मन में भी वैसे ही शंका उत्पन्न हुई। उन्होंने इस सम्बन्ध में कुछ लिखा तो

1. माननीय डॉ० वेदपाल जी ने महात्मा मुंशीराम के ग्रन्थ से भाई जवाहरसिंह के इस पत्र को अपने ग्रन्थ में उद्धृत किया है। 'जिज्ञासु'

हम भी मुखरित होकर लिखने व बोलने लगे। पुरानी पुस्तकों को उलटते-पुलटते महात्मा मुंशीराम जी के इसी ग्रन्थ के पीछे जाकर पृष्ठ 450 से 457 तक छपे माई जी के दो पत्रों से घटना के–इस भेंट के वर्ष का ठीक ज्ञान हो गया।

माई जी की चर्चा आर्य पत्रों में होती रहती थी परन्तु, किसी ने माई जी से इस सम्बन्ध में कुछ पूछा ही नहीं। पंजाब के अलावलपुर कस्बा के एक आर्य पुरुष ने सन् 1893 में माता भगवती जी से इसी विषय में साक्षात्कार लेकर श्री महाशय कृष्णजी के साप्ताहिक 'प्रकाश' में प्रकाशित करवाया। खोज करते-करते हमें यह अंक कहीं से मिल गया। दुर्भाग्य से उसमें ऋषि-दर्शन के वर्ष का कतई उल्लेख नहीं है। इतनी और जानकारी अवश्य माई जी ने दी कि **उस भेंट के समय उनके साथ एक और देवी भी थी।**[1] परन्तु, इस साक्षात्कार से भेंट के वर्ष का एक सूत्र हाथ लग गया।

रही-सही कमी महात्माजी के ग्रन्थ ने पूरी करके सब कुछ स्पष्ट कर दिया। अब एक कृपालु ने गवेषक बनने के जोश में हमारे लेखों पर यह प्रश्न उठाया है कि यह कहाँ लिखा है कि माता भगवती विधवा थी। हम यह लिख चुके थे कि हमने उनके क्षेत्र के, उनके साथ समाज सेवा करने वाले आर्य नेता बद्रीदास जी, प्रथम पीढ़ी के आर्य नेताओं में से एक मेहता जैमिनि आदि व पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के मुख से जो सुना वह प्रखर सत्य है। वे हमारे पूज्य और प्रामाणिक नेता थे। महाशय चिरंजीलाल 'प्रेम' का कथन मिथ्या नहीं। हमने लिखा कि एक ही सम्पादकीय में महात्मा मुंशीराम जी ने माई जी को चार बार श्रीमती लिखा है। वह पीहर में (पिता के घर) रहती थी। वहीं निधन हुआ। विधवा नहीं थी तो पति के घर में वह क्यों न रही इत्यादि। उसके पति का, सास, श्वसुर तथा बच्चों का अता-पता श्रीमान जी बतायें। कहाँ लिखा है? इसका उत्तर लेखों से हमने तो खोजकर दे दिया। गवेषक बनने की सनक में, "कहाँ लिखा है?" की औषधि तो हर बार नहीं दी जाती। माईजी ने अपने पत्र में स्वयं को बेवा (विधवा) लिखा है। इसी ग्रन्थ में पढ़लें।

एक और घटना ऋषि के पत्र व्यवहार से जुड़ी यहाँ देते हैं। जब लगभग आधी शताब्दी पूर्व मूलराज वंश के प्रिं० श्रीराम शर्मा ने विषपान से महर्षि के बलिदान को झुठलाते हुये एक कुतर्क यह दिया था कि पाचक तो सर नाहर सिंह ने दिया था। वह कहते हैं कि वह मेरा आज्ञाकारी व विश्वस्त है। अब भी मेरे पास है। भला वह कैसे ऋषि को विष दे सकता है? प्रिं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित ने भी दोबारा श्रीराम का झण्डा उठाकर बड़ी चतुराई से पुनः पाचक विषयक नाहर सिंह जी के कथन का प्रमाण दिया। नाहर सिंह को झुठलाने

1. यह मेहता राधा किशन लिखित ऋषि जीवन में वर्णित है। 'जिज्ञासु'

के लिये किसी आर्य के पास कोई अकाट्य तर्क नहीं था। कुछ उसके विरोध में मौन ही रहना चाहते थे। इतिहास बोध सबको नहीं होता।

तब हमने उत्तर देते हुये कहा कि हम श्री नाहरसिंह को सच्चा मानें अथवा महर्षि दयानन्द जी को सत्यवादी जानें? राजाओं के लिये सब कर्मचारी उनके आज्ञाकारी, विनम्र, चाटुकार व सत्यवादी ही होते हैं। प्रजा से पूछो कि वे कैसे हैं। महर्षि अपने एक पत्र में नाहरसिंह जी के सब नौकरों को जो उसने ऋषि जी को दिये निकम्मे, झूठे व छलिये बताते हैं। **हमसे पूछा गया ऋषि का ऐसा कथन कहाँ है?** हमने हृदय की भरपूर श्रद्धा व विश्वास से लिखा ऋषि के पत्र व्यवहार में देखो। पं० लेखराम जी के ग्रन्थ में पत्र पढ़ लो। **नाहरसिंह जी को ही यह पत्र लिखा गया था।**

मथुरा की जन्म शताब्दी से नाहरसिंह के कथन को इतिहास प्रदूषण मण्डल के महारथी बार-बार उछाल रहे थे। **ऋषि के पत्र व्यवहार की सहायता से हमने ऐसे सब व्यक्तियों की बोलती बन्द कर दी।**

इस ग्रन्थ से अब दो और प्रसंगः-

इस ग्रन्थ की उपयोगिता तथा वैदिक धर्म प्रचार के लिये इसे अपरिहार्य होने के सम्बन्ध में दो और उदाहरण देकर हम अपनी लेखनी को विराम देंगे।

प्रयाग में बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में बाबा आलारम ने कभी सत्यार्थप्रकाश को राजद्रोह फैलाने वाला ग्रन्थ होने के कारण प्रतिबंधित करने के लिये हैरिसन महोदय के कोर्ट में केस किया था परन्तु, पिट गया। हम पीछे बता चुके हैं कि बाबा आलाराम कभी आर्यसमाज का उत्साही धर्मप्रचारक था। हमारे जन्म स्थान के समीप इसने आर्यसमाज की धूम मचा दी थी।

सिंध में कराची आदि नगरों में भी बाबाजी ने मूर्तिपूजा आदि अंधविश्वासों का उन्मूलन करके आर्यधर्म की धूम मचा दी। ऋषि जी के नाम सन् 1883 में (पृष्ठ 313 देखें) लिखा कि **कोई महा मूर्ख वहाँ यह कहता है कि "कांसी मै दयानन्द को पण्डितों पराजया कीया।"** इससे स्पष्ट है तब पौराणिकों का यह नया दूत काशी में पौराणिकों का पराजित होना ही मानता था। ऐसा ही लाला जगन्नाथ मुरादाबादी का मत था।

श्री लक्ष्मीनारायण कौन थे?:-

ऋषि जीवन तथा आर्यसमाज के इतिहास में लंदन के आर्यसमाज के संस्थापक मंत्री लक्ष्मीनारायण के नाम की चर्चा आती है। पत्र व्यवहार में तथा ऋषि जीवन में किसी विद्वान् ने किसी लेखक ने यह टिप्पणी नहीं दी कि लक्ष्मीनारायण विद्यार्थी सांपला रोहतक के ला० रामनारायण का सपूत और

महर्षि का पक्का भक्त था।[1] पं० युधिष्ठिर जी की आज्ञा पर कुछ सामग्री भेजी थी परन्तु, वे पत्र व्यवहार में उसका पूरा लाभ न उठा सके। ऋषि के साहित्य वेदभाष्य के अंकों के आप छात्र जीवन में ही सदस्य बन गये थे।

इस अनुपम ग्रन्थ के सम्पादन में हमारे कार्य में कई न्यूनतायें रही होंगी। जो विशेषतायें हैं उनका प्रचार होना चाहिये। न्यूनताओं को सुझाया जावेगा तो हम अगले संस्करण के लिये सब दोष दूर कर देंगे। जाने-अनजाने से तथा अल्पज्ञता के कारण जीव से चूक के होने की सम्भावना तो सदा ही बनी रहती है। हमें जब कभी किसी प्रेमी पाठक ने हमारी कोई भूल सुझाई या हमें स्वयं ही अपनी भूल का ज्ञान हो गया तो हमने बिना किसी के दबाव देने के अविलम्ब उसके लिये क्षमा माँग ली-खेद प्रकट कर दिया। यही आर्यत्व है।

दो बातों का ध्यान रहे:-

गुणी पाठक इस पुस्तक के सम्बन्ध में दो बातें और नोट कर लें। इसका एक ही भाग-एक ही बार प्रकाशित हुआ था यद्यपि **मुखपृष्ठ पर 'पहला भाग'** शब्द छपे मिलते हैं। इससे ज्ञात होता है कि महात्मा जी इसका एक और भाग भी निकालना चाहते थे परन्तु, ऐसा हो न सका।

महात्माजी को पूर्व आभास था:-

दूसरी विशेष बात स्मरण योग्य यह है कि महात्मा जी को इस ग्रन्थ की खपत के बारे पहले से ही कुछ शङ्का थी। सो यदा-कदा कुछ ही विद्वानों ने, गवेषकों, लेखकों ने इसका गम्भीर अध्ययन किया। इस दृष्टि से पूर्व के पूर्वजों में हम इस क्रम से 1. पं० भगवद्दत जी, 2. पं० चमूपति जी, 3. पं० लक्ष्मण जी, आर्योपदेशक 4. पं० युधिष्ठिर जी, मीमांसक का नाम ले सकते हैं। वह युग ही ऐसा था। आर्यसमाज के सामने अनेक कार्य थे। साधन बहुत थोड़े थे। इस कारण महात्मा जी ने जिस उद्देश्य से इस ग्रन्थ का सृजन किया वह पूरा न हुआ। परोपकारिणी सभा का किसी ने इतिहास लिखा था। उसका इस पुस्तक से मिलान कोई करे तो पता चल जायेगा कि **इस ग्रन्थ को देखे बिना मुँहज़बानी इतिहास लिखने वाले लेखक ने कितना अनर्थ किया है।** इतिहास प्रदूषण व इतिहास से खिलवाड़ इसी को कहते हैं। इस ग्रन्थ का सूक्ष्म अध्ययन करके जो कोई भी ऋषि जीवन तथा आर्यसमाज के आरम्भिक काल का इतिहास लिखेगा उसके ग्रन्थ की प्रामाणिकता व उपयोगिता निश्चित रूप से बढ़ेगी। ऋषि के पत्र व्यवहार की विशेषताओं पर यहाँ अधिक विस्तार

1. आप पं० लेखराम लिखित ऋषि जीवन के अग्रिम सदस्य थे। 'जिज्ञासु'

से तो लिखने की कोई आवश्यकता नहीं तथापि संक्षेप से कुछ निवेदन किया जाता है।

1. भारत का आधुनिक काल का इतिहास इस बात का साक्षी है कि ऋषि दयानन्द के व्याख्यानों में प्रायः करके देशोत्थान, देशोन्नति की चर्चा होती ही थी। देश की दीनता, दरिद्रता व दासता पर महर्षि रक्तरोदन करते हुये देशवासियों को देशसेवा, धर्मरक्षा व परोपकार की सत्प्रेरणायें दिया करते थे।

वे देश के ऐसे प्रथम महापुरुष थे जो धर्मप्रचार, समाजसुधार तथा अंधविश्वासों के उन्मूलन के साथ-साथ देश की पराधीनता पर अश्रुपात करते रहे।

2. आधुनिक काल में जिस भारतीय विचारक व नेता का पत्र व्यवहार सबसे पहले प्रकाशित हुआ वे महर्षि दयानन्द ही थे। आपके हर दूसरे तीसरे पत्र में देशोन्नति की चर्चा आपको मिलेगी।

3. आधुनिक भारत के एकमेव महात्मा संन्यासी आप ही हैं, जिनके पत्र व्यवहार में क्रान्तिकारियों के आपके नाम व आपके क्रान्तिकारियों के नाम लिखे पत्र मिलते हैं।

4. महर्षि जी के पत्र व्यवहार का सम्पादन करते हुये डॉ० वेदपाल जी ने यथार्थ ही लिखा है कि आप छोटे से छोटे व्यक्ति, धनी, निर्धन, विद्यार्थी, कृषक, विद्वान् सबके पत्रों का उत्तर देते थे। "पूना में महार-मांग आदि शूद्र अतिशूद्र व्यक्तियों द्वारा शूद्र अतिशूद्रों की पाठशाला मोमीनपुर (जूनागंज पेठ, पूना) में व्याख्यान की प्रार्थना करना। महर्षि ने इनकी प्रार्थना स्वीकार कर 16 जुलाई, 1875 को निर्दिष्ट स्थान पर जाकर व्याख्यान दिया था। **ऐतिहासिक दृष्टि से हज़ारों वर्षों के इतिहास की यह पहली घटना है कि कोई वेदज्ञ शूद्र अतिशूद्रों को वेदोपदेश प्रदान करता है।**"[1]

5. ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार में, व्याख्यानों में ग्रन्थों में परकीय शासकों के अत्याचारों, दमन, दलन की खुलकर निन्दा मिलेगी। ऋषि दयानन्द जी ने कभी भी 1857 के विप्लव को वाणी व लेखनी से ग़दर (Mutiny) न कहा और न लिखा। महापुरुषों में एक वही तो अपवाद हैं।[2]

6. ऋषि दयानन्द की सत्यवादिता, निर्भीकता, जन सम्पर्क व जनजागरण के अलौकिक प्रभाव को जब गोरे शासकों, चर्च तथा पश्चिमी जातियों ने गहराई से जाना तब महर्षि के रेवाड़ी-दक्षिण हरियाणा [तब पंजाब] में वेद सन्देश सुनाते समय अमरीका के एक प्रख्यात पत्र Sunday Magazine में

1. द्रष्टव्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (भाग-1) पृष्ठ 4
2. द्रष्टव्य ऋषि-जीवन में जालंधर की घटनायें तथा सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ।

The Martin Luther of India शीर्षक से एक लेख छपा था।[1] पश्चिम में विशेष रूप से अमरीका में किसी भारतीय मुनि महात्मा पर छपा अपने विषय व अपनी शैली का पहला लम्बा और सचित्र लेख है।[1] इस लेख में छपा ऋषि का चित्र इस ग्रन्थ में छापा जा रहा है। यह बहुत आश्चर्य का विषय है कि देश के स्वतन्त्र होने के लम्बे समय तक देश की सरकारों तथा इतिहासकारों को देश के एक महान विचारक सुधारक पर प्रकाशित इस प्रथम सचित्र लेख की भनक तक न लगी।

राव तुलाराम का नाम पत्रों में:-

ऋषिवर के पत्रों की अथवा पत्र व्यवहार की यह कोई छोटी सी विशेषता तो नहीं कि **केवल इसी पत्र व्यवहार में सन् 1857 के विप्लव के एक नेता-एक महान् योद्धा राव तुलाराम का नाम भी आता है।** तब राव तुलाराम का नाम लेते हुये बड़े-बड़े लीडरों के प्राण निकलते थे। ऋषि जीवन में प्राणवीर पं० लेखराम ने राव तुलाराम का नाम दिया है।[2]

और क्या कारण था?

अमरीका में ऋषि की कीर्ति पहुँचने का कारण राव युधिष्ठिर सिंह का ऋषि से पत्र व्यवहार तथा रेवाड़ी क्षेत्र की भोली-भाली जनता में ऋषि द्वारा उत्पन्न की गई जागृति के अतिरिक्त और क्या हो सकता है?

लिखने को तो और भी बहुत कुछ है परन्तु, हम अब अपनी लेखनी को विराम देते हैं। यह भी बता दें कि कुछ व्यक्तियों द्वारा ऋषि के नाम लिखे पत्र कुछ लाभप्रद न पाकर और इस ग्रन्थ का आकार नियन्त्रण करने के लिये इस संस्करण में नहीं दिये गये। पत्रों की भाषा जैसी थी, वैसी ही रहने दी है। उसमें कोई सुधार, काँट-छाँट नहीं की गई।

देश-धर्मप्रेमी जनता इस पत्र व्यवहार के प्रचार प्रसार में प्रकाशक संस्थान को दिल खोलकर सहयोग दे। यह भी देशहित एक महान यज्ञ है। धर्मप्रेमी जनता अगले संस्करण के लिये अपने उपयोगी सुझाव देकर हमें कृतार्थ करेगी। ऐसी हमें आशा है।

विनीत
आर्य जाति का सेवक
राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
नई सूरज नगरी, अबोहर
पिन-152116
मो० नं० 9417647133

राष्ट्रवीर लाला लाजपतराय
जन्म दिवस
28-1-2019

1. सर्वप्रथम इसी लेख में ऋषि जी को Martin Luther of India लिखा गया। कई वर्ष पश्चात् डॉ० गोकुलचन्द्र नारंग ने भी Luther of India नाम का एक ट्रैक्ट लिखा। 'जिज्ञासु'
2. द्रष्टव्य पं० लेखराम लिखित ऋषि जीवन।

ऋषि दयानन्द का अपूर्व पत्रव्यवहार

(अथ भूमिका)

ऋषि श्रेणी के महानुभावों के जीवन किसी देश वा मनुष्य समूह विशेष की सम्पत्ति नहीं। उनके सम्बन्ध में जो कुछ भी ज्ञात हो सके उसे सर्व साधारण के लाभ के लिए प्रकाशित करना सच्चे मानवी इतिहास की उन्नति का साधन समझना चाहिये।

यह पत्र व्यवहार मैंने पहिले पहिले 'सद्धर्म्मप्रचारक' नामी साप्ताहिक पत्र में छपवाना आरम्भ किया था और यह मेरे स्वप्न में भी न था कि इनको पुस्तकाकाररूप में पबलिक के सामने आने का सौभाग्य मिलेगा। किन्तु घटनाएँ ही कुछ ऐसी होती गईं जिनका परिणाम इन पत्रों का कुछ काल के लिए सुरक्षित हो जाना हुआ।

मैंने इन पत्रों को सद्धर्म्मप्रचारक द्वारा पबलिक करते हुये, 24 आषाढ़ सम्वत् 1966 के अंक में,[1] अपनी इस प्रवृत्ति का कारण यूं वर्णन किया था:–

ऋषि दयानन्द का पत्रव्यवहार

चिरकाल से ऋषि दयानन्द के अपूर्ण जीवन वृत्तान्त को पूर्ण करने का प्रयत्न हो रहा है किन्तु अब तक पण्डित लेखराम के ग्रन्थ के पश्चात् किसी आर्य महाशय ने भी **इस बड़े काम का बोझ उठाने का साहस नहीं किया।**

परोपकारिणी सभा ने अपने दिसम्बर 1906 के अधिवेशन में इस कार्य के गौरव को समझ कर ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र की पूर्ति के लिये आर्यसमाज तथा परोपकारिणी सभा के इतिहास लिखवाने भी आवश्यक समझे। इसके लिए रेजोल्यूशन भी पास हुआ, **किन्तु साल भर में काम कुछ भी न हुआ।** इसलिए दूसरे वर्ष अर्थात् 1907 के दिसम्बर वाले अधिवेशन में यह काम मेरे सुपुर्द हुआ। मैंने एक वर्ष तक बराबर समाजों तथा सामाजिक

---

1. तब सद्धर्मप्रचारक हिन्दी में निकलने लगा था। 'जिज्ञासु'

संस्थाओं के समाचार मंगवाने तथा इनके वृत्तान्त तैयार करने का प्रयत्न किया। दिसम्बर 1908 तक बहुत सा मसाला जमा हो गया था। उस अधिवेशन के पश्चात् मैंने ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार की पड़ताल की तो बहुत से पत्र फटे हुवे तथा चूहों के काटे हुवे पाए गए। कई पत्रों को कीड़े लग गए थे। जो कुछ भी पत्रादि मुझे मिले मैं उन्हें अपने साथ लाया और उनकी जाँच पड़ताल आरम्भ की।[1] गत वर्ष इस काम पर 55111)।। व्यय हुवे जो बिल देकर ले चुका हूं। इस वर्ष फिर 60) के लगभग व्यय हो चुका है, और मैंने सारा मसाला इस योग्य बना लिया था कि पूरा अवकाश मिलने पर आर्य्यसमाज का इतिहास तथा उसकी शिक्षा पर अपने विचार पुस्तक रूप में पेश कर सकता। किन्तु कुछ ऐसे कारण हो गए हैं (जिन का प्रकाश समय आने पर होगा) कि अब परोपकारिणी सभा की ओर से मेरा कोई पुस्तक तय्यार करके छपवाना कठिन है। इसलिए सारा तय्यार किया हुआ मसाला परोपकारिणी सभा के आगामी अधिवेशन में उक्त सभा के अधिकारियों के सुपुर्द कर दूँगा।

किन्तु ऋषि दयानन्द के पत्रव्यवहार को यदि अब खटाई में डाला गया तो फिर उस के सर्वथा गल जाने की ही सम्भावना है। अतएव इन सर्व पत्रों को एक साथ छाप देता हूँ जिस से आर्यसमाज का इतिहास लिखने वालों को सुगमता से एक ही स्थान में ऋषि के जीवन का ठीक हाल मिल जाय। बड़े आदमियों के जीवन किसी पुरुष वा जाति विशेष की जायदाद नहीं इसलिए उनके सम्बन्ध में जो कुछ भी पता लगे उस से सर्वसाधारण को लाभ पहुँचाना चाहिए। इस उद्देश्य को मन में रख कर मैं ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार को क्रमशः प्रचारक के इसी अंक में छापना आरम्भ करता हूं।

अभी पांच अकों में ही पत्रव्यवहार के 160 पृष्ठ निकले थे कि ग्राहकों ने सर्व विषयों के लेखों को देखने की चेष्टा फिर प्रकट की, जिस पर 10 भाद्रपद सम्वत् 1966 के अंक में पृष्ठ 6 पर निम्नलिखित लेख द्वारा उनका प्रचारक में छपना (32 पृष्ठ और देकर) बन्द करने का नोटिस दिया गया[2]:-

"ऋषि दयानन्द का पत्रव्यवहार जिस विचार से मैंने प्रचारक में निकालना आरम्भ किया था उसके समझने वाले भी प्रचारक परिवार के बहुत से सभासद हैं; किन्तु फिर भी बहुतों ने शिकायत की है कि **वे प्रचारक के कालमों में सर्व विषयों को देखना ही पसन्द करते हैं।** इसलिये मैंने उक्त

1. ऋषि के पत्रव्यवहार की सुरक्षा का यह पहला गम्भीर (serious) व बड़ा प्रयास था। 'जिज्ञासु'
2. यह ऋषि के पत्रों के प्रकाशन का प्रथम प्रयास था। 'जिज्ञासु'

पत्रव्यवहार केवल आगामी अंक के साथ मुद्रित करा भविष्यत के लिये इन कालमों में छापना बन्द कर दिया है।[1] अब पत्र जुदे छप रहे हैं और जब 500 पृष्ठ की पुस्तक तैयार हो जावेगी उस समय पत्र व्यवहार का प्रथम भाग मुद्रित कर दिया जायगा। ऋषि दयानन्द के भेजे हुवे पत्र कई महाशयों के पास होंगे। मैं उनसे अपील करता हूं कि वे असल पत्र रजिस्टरी करा के मेरे पास भेज दें। मैं उनकी ठीक नकल करके पत्र ज्यों का त्यों रजिस्टरी द्वारा लौटा दिया करूंगा, और साथ ही जो व्यय भेजने वालों का होगा उसके टिकट भेज दिया करूंगा।

जो पत्रव्यवहार मैं मुद्रित कर रहा हूं यदि इस समय भी मैं उसकी ओर ध्यान न देता तो ये सर्व पत्र भी कीड़ों तथा चूहों की भेट हो जाते। मेरा उद्देश्य किसी प्रकार के पत्र को भी पबलिक करने से रोकने का नहीं है। मेरी सम्मति यह है कि ऋषि दयानन्द का जीवन वृत्तान्त तैयार करते हुये भी **जिन महाशयों ने कुछ पत्र रोक रक्खे उन्होंने अधर्म्म का काम किया।** ऋषि दयानन्द के पत्रव्यवहार से यदि उनकी कोई निर्बलता भी प्रकाशित हो, वा किसी पत्र से हमारे जमे हुये संस्कारों तथा विश्वासों पर यदि किसी प्रकार की चोट भी लगे तब भी किसी **आर्य्यसमाजी का अधिकार नहीं कि वह इस पत्र व्यवहार में से एक शब्द भी न्यूनाधिक करे।**[2] मैं इसलिए आर्य्यसमाज के बड़े से बड़े विरोधियों से भी प्रार्थना करता हूं कि वे निश्शंक होकर अपने हस्तगत पत्र मुझे भेज दें। यदि उन को अविश्वास हो कि मैं उन के पत्र न लौटाऊंगा तो वे अपने हाथ से अपने अधिकार में आए पत्रों की नकलें करके अपने हस्ताक्षर कर दें और असल मेरे किसी विश्वासपात्र आदमी को दिखा दें, मैं फिर भी उनकी भेजी नकलों को छाप दूंगा। इस पत्र व्यवहार के मुद्रित करने से मेरा तात्पर्य यह है कि ऋषि दयानन्द का जीवन वृत्तान्त लिखने तथा आर्यसमाज का इतिहास तैयार करने वालों की सम्मतियों की पड़ताल करने तथा उनकी भूलों को ठीक करने की कसौटी सर्व साधारण के हाथ में मौजूद रहे।"

मैं अपने पाठकों से विशेष निवेदन करता हूं कि यदि उन के ज्ञान में कोई ऐसे भद्र पुरुष हों जिनके पास ऋषि दयानन्द के भेजे पत्र हों, वा ऋषि के नाम उनके भेजे हुये पत्रों की लिपि उनके पास हो तो मेरे पास भेजने के लिए उन्हें प्रेरणा करें।

---

1. पाठकों की रुचि अपने स्थान पर महत्त्व रखती है। 'जिज्ञासु'
2. महात्माजी कितने सत्यनिष्ठ थे। 'जिज्ञासु'

इन पत्रों में पाठकगण ऋषि दयानन्द के अपने भेजे हुए पत्र वा लेख कम देखेंगे, जिस के लिए उन के साथ मुझे भी बड़ा शोक है। यह आशा रखना कुछ असंगत न था कि वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ताओं तथा निरीक्षकों के नाम भेजे हुये पत्र हो, कम से कम, वैदिक यन्त्रालय में मिलेंगे। और जब यह देखा जाता है कि ऋषि दयानन्द पत्रोत्तर देने के लिए बहुधा स्वयम् केवल मसौदा बना कर ही देते थे और पत्र दूसरों से लिखवा कर भेजते थे, और साथ ही जब यह भी ध्यान में लाया जाता है कि ऋषि दयानन्द साधारण कामों में भी सावधान रहने वाले थे, **तो बड़े गूढ़ तथा आवश्यक पत्रों के मसौदे न पाकर** बहुत ही आश्चर्य्य होता है। वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ताओं तथा अन्य वैतनिक कर्मचारियों के नाम भेजे पत्रों के वैदिक यन्त्रालय में न मौजूद होने का कारण तो स्पष्ट है।[1] इन लोगों में कम थे जो निस्वार्थ हो कर काम करते रहे हों। उनके अपने आचरण ऐसे न थे कि वह अपने स्वामी की दी हुई शिक्षाओं को पबलिक के सामने रखने का हौसला कर सके। कुछ ऐसे भी होंगे जिन्हें अपने बचाव के लिए ऋषि के दिए हुये प्रशंसापत्रों की आवश्यकता थी। और शेष भाग ऐसा होगा जो ऐसे पूज्य विद्वान् के हस्ताक्षर से आए पत्रों को केवल आत्मप्रसाद रूप से ही अपने पास रखना चाहते हों। **किन्तु जो पत्र जर्मनी आदि देशों में भेजे गए और जो भारतवर्ष में निवास करने वाले श्रद्धालु विदेशियों के नाम लिखे गए होंगे, उनके मसौदे अवश्य परोकारिणी सभा के अधिकारियों के पास मिलने चाहियें थे।**

किन्तु इसके न मिलने के कारण का अनुमान करना भी कठिन नहीं है। मुझे विश्वासनीय साधनों से पता लगा है कि ऋषि दयानन्द की बहुत सी हस्त लिखित पुस्तकें तथा पत्रादि पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पण्डया अपने घर उठा कर ले गये थे। मुझे यह भी पता लगा था कि उक्त पण्डया जी आर्य्य पुरुषों को धमकियां दिया करते हैं कि यदि वह अपने काबू आई हुई चिट्ठियों को छाप देंगे तो आर्य्यसमाज को बहुत हानि पहुंचेगी[2] इसी धमकी को लक्ष्य में रख कर मैंने 10 भाद्रपद सं० 1966 वि० का लेख दिया था, जिसका कुछ भी परिणाम न निकलने का मुझे शोक है।

मैं यहाँ फिर अपने पहिले लेख को दुहराते हुवे श्री पण्डया मोहनलाल विष्णुलाल तथा अन्य ऐसे सज्जनों से, जिनके पास ऋषि दयान्नद का कोई पत्र हो, निवेदन करता हूं कि जिस शर्त पर भी सम्भव हो सके वे उन पत्रों

1. ऋषि को धर्मद्रोही स्वार्थी सेवक अधिक मिले। 'जिज्ञासु'
2. यह पण्डया बहुत कपटी व छलिया निकला। 'जिज्ञासु'

की नकल मुझे दान करें। मैं बिना इस विचार के कि उन के छापने से आर्य्यसमाज को हानि पहुंचेगी वा लाभ, उन्हें इस ग्रन्थमाला के द्वितीय भाग निकलते समय (यदि उस की मांग हुई) छाप दूंगा।[1]

इस पत्रमाला में कुछ पत्र कई एक सज्जनों को अनावश्यक प्रतीत होंगे और कइयों की भाषा उनको ऐसी अखरेगी कि उन्हें पढ़ते समय वे मुझ पर बहुत ही क्रुद्ध होंगे। ऐसे सज्जनों को समझ लेना चाहिए कि प्रत्येक पुरुष के आचार बहुत सी छोटी बड़ी घटनाओं के समूह से ही बनते हैं, जिन में से एक प्रकार की घटना को भी पाठकों से छिपाने पर वे उस पुरुष के जीवन पर ठीक सम्मति स्थिर नहीं कर सके। यदि मैं भी इस समय "पत्रमाला" के संग्रहीता के स्थान में जीवन वृत्तान्त का सम्पादक होता तो मैं भी कांट-छांट से न चूकता, किन्तु मेरा अधिकार इस समय यह न था और जब ठीक तथ्य (Facts) ही पाठकों के सामने रखने का कर्त्तव्य हो तो भाषा को बदलना भी एक प्रकार के अनअधिकार जमाने के तुल्य ही है।[2]

मुद्रित पत्रों पर एक दृष्टि

स्वामी आत्मानन्द के पत्रों से पता लगता है कि शिमला समाज के स्थापन करने वाले पण्डित परमानन्द वाजपेई तथा डाक्टर ठाकुरदास थे जो दोनों हमसे बिछुड़ चुके हैं। लाला खुशीराम जी भी बड़े पुराने आर्य्य हैं जो सं० 1883 ई० में कालिका आर्य्यसमाज के मन्त्री थे। पृष्ठ 5 पर इटावा वाले पण्डित भीमसेन के सम्बन्ध में निम्नलिखित विचारणीय है:-**"भीमसेन के होने से आप के पास कोई नहीं रहेगा।"** इस से ज्ञात होता है कि पण्डित भीमसेन की असलियत को श्री स्वामी दयानन्द जी के देहान्त समय से कुछ काल पहिले ही उनके कुछ सच्चे सेवकों ने समझ लिया था। कैसे शोक की बात है कि कुछ आर्य्य पुरुषों के बारबार की चेतावनी देने पर भी श्री स्वामी आत्मानन्द जी से उनके इतिहास सम्बन्धी अगाध ज्ञान को लेखनी बद्ध करने का किसी सज्जन ने भी प्रयत्न न किया जिसे आर्य्यसमाज के इतिहास का बड़ा अमूल्य भाग हमारे लिए अप्राप्त हो गया।

ईश्वरानन्द के पत्र बड़े ही मनोरंजक हैं। ज्ञात होता है कि यह महाशय साधारण भाषा लिखना भी आर्यसामाजिक पुरुषों के सत्संग से ही सीखे थे। इनके अन्तिम जीवनचरित्र को इनके यहां दिए पत्रों के साथ मिलाया जावे तो स्पष्ट सिद्ध होता है कि जो पुरुष बारबार पापों के लिए खुले दिल से प्रसिद्ध

1. महात्मा मुंशीरामजी का आत्म बल देखिये। 'जिज्ञासु'
2. महात्मा जी की यह पवित्र सोच वन्दनीय है। 'जिज्ञासु'

क्षमा मांगता है वह अपना सुधार **करने के स्थान में कई बार अपने आप को निर्लज्ज बना कर किसी सुधार के योग्य भी नहीं रहता।**[1]

स्वामी सहजानन्द के पत्रों से ज्ञात होता है कि उनको संस्कृत की योग्यता बढ़ाने की बड़ी लगन थी। अंग्रेज़ी सन्ध्या के अशुद्ध अर्थों के लिए शोक प्रकट करने तथा समाजों को पुनर्जीवित करने के जो विचार स्वामी सहजानन्द ने प्रकट किए हैं उनको पढ़कर शोक होता है कि ऐसे योग्य पुरुष को आर्यसमाज क्यों न संभाल सका। इनके पत्रों में मास्टर दयाराम, बाबू (वर्तमान रायबहादुर) मंगूमल, बाबू विष्णुसहाय तथा मास्टर मुर्लीधरादि के धर्म्मभाव तथा पुरुषार्थ का बहुत कुछ वर्णन आता है। इनके पत्रों से यह भी ज्ञात होता है कि स्वर्गवासी महाराज फ़रीदकोट वैदिक धर्म के श्रद्धालु थे।[2]

पडित भीमसेन के पत्रों से तो वही "टकाधर्म्म" की बू आती है, किन्तु उनके साथ पण्डित सुन्दरलाल जी (रायबहादुर) का पत्र व्यवहार मिला कर यह भी पता लगता है कि भीमसेन और ज्वालादत्त ने ही वेदांग प्रकाश के सर्व अंक बनाए थे, और इस लिए उन ग्रन्थों की अशुद्धियों के लिए ऋषि दयानन्द को जिम्मेवार ठहराना जहाँ अनुचित है वहाँ उन ग्रन्थों का वह मान्य भी नहीं करना चाहिए जो उन्हें ऋषि दयानन्द के नाम के सम्बन्ध से इस समय प्राप्त है। रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल के पत्र सं० ७ से विदित होता है कि सं० 1882 ई० से पहिले ही लाहौर आर्य्यसमाज के सामयिक अधिकारी वैदिक यन्त्रालय को लाहौर ले जाने के पीछे पड़े हुए थे।

(देखिए पृष्ठ 65)[3]

भारतमित्र के सम्पादक के नाम जो पत्र पृ० 68 से 73 तक छपा है वह न केवल थियासोफ़िस्टों की लीला के विषय में ही ऋषि दयानन्द की सम्मति का परिचय देता है प्रत्युत वेद विषय पर भी उनकी सम्मति को यथावत् प्रकाशित करता है। निम्नलिखित पंक्तियां बहुत ही शिक्षाप्रद है:—"और जो उन्हों ने यह लिखा है कि स्वामी जी ईश्वर वा ईश्वर की प्रेरणा युक्त हों तो उनका भाष्य निर्भ्रम हो सके; मैं ईश्वर नहीं किन्तु ईश्वर का उपासक हूं। परन्तु वेद मनुष्य के हितार्थ परमात्मा ने प्रकाशित किये हैं इस अभिप्राय से कि यहां तक मनुष्यों की विद्या और बुद्धि पहुंच सकेगी और इतने तक कार्य्य

1. महात्माजी का यह मार्मिक कथन कठोर सत्य है। 'जिज्ञासु'
2. महाराज विक्रमसिंह फ़रीदकोट को आर्यसमाज से तोड़ना अंग्रेज की पहली कुटिल कुचाल थी। 'जिज्ञासु'
3. यह पृष्ठ संख्याएं यत्र तत्र मूल संस्करण की हैं। 'जिज्ञासु'

मनुष्य कर सकेंगे इसलिए यावत् मेरी बुद्धि और विद्या है तावत् निष्पक्षपात होकर वेदों का अर्थ प्रकाशित करता हूं...**और सत्यार्थ होने से ही वेदों का निर्भ्रांतत्व यथावत् सिद्ध है।**"

ठाकुर रघुनाथसिंह के क्षत्रीत्व की उत्तेजक कहानी पृष्ठ 85 पर पढ़ने के योग्य है। यदि उस धर्म्मभाव का आर्य पुरुष पुनः स्मरण करेंगे तो **इस सन्दिग्ध समय में भी धर्म्म का बेड़ा पार ही होगा।**

ठाकुर नन्दकिशोरसिंह जी आज कल जयपुर की राजसभा के मन्त्री हैं। इनके पत्रों से विदित होता है कि आप वैदिक धर्म्म के बड़े श्रद्धालु भक्त थे। कैसे शोक की बात है कि ऐसे भद्र पुरुषों की योग्यता से धर्म्म की वृद्धि में सहायता लेने की शक्ति आर्य्य पुरुषों में लुप्त होती जाती है। इसके कारणों पर विचार करके उन्हें निर्मूल करना चाहिए।

गोरक्षा विषय में जो वृहत् कार्य ऋषि दयानन्द करना चाहते थे उसका वर्णन फुटकर पत्रों में कई स्थानों पर आया है। इन पत्रों से विदित होता है कि लाखों क्या करोड़ों हस्ताक्षर, गोवध रोकने के लिए, करा के ब्रिटिश गवर्नमेन्ट की सेवा में भेजने का वे विचार रखते थे, और इस कार्य में राजों महाराजों को भी सम्मिलित करना चाहते थे।

पं० दामोदर शास्त्री–(नाथ द्वारा वाले) का पत्र बड़ा मनोरञ्जक है।

भाई जवाहिरसिंह जी के पत्र बहुत ही शिक्षाप्रद हैं। भाई जी पहिले लाहौर आर्य्यसमाज के मन्त्री थे। जब मैं सं० 1942 वि० में आर्य्यसमाज का सभासद् बना उस समय भी आप उसी पद पर सुशोभित थे, और भाई दित्तसिंह जी के साथ मिल कर वैदिक धर्म्म प्रचार का कार्य बड़े उत्साह से करते थे। इनको ऋषि दयानन्द के शाहपुरा राज्य के लिए योग्य आदमी मांगने पर लाहौर आर्यसमाज ने भेजा था। इन पत्रों से लाहौर समाज के आरम्भिक विचारों का भी बहुत कुछ पता लगता है। भाई जवाहिरसिंह में एक गुण अन्य लाहौरी आर्यसमाजियों से बढ़ कर था। जहाँ कुछ एक अन्य लाहौरी आर्य सामाजिक लीडरों ने मरते दम तक आर्य्यभाषा का लिखना न सीखा वा उसका अभ्यास न किया वहाँ भाई जी ने जिस मत को ग्रहण किया था उसके प्रवर्त्तक की इच्छानुसार उस मत की साधारण भाषा का अभ्यास पुरुषार्थ से आरम्भ कर दिया था। पृष्ठ 125 पर का लेख आजकल के उन नवशिक्षित बूढ़ों और पुर्जोश जवानों के लिए विचारणीय है जो अंग्रेज़ी तथा उर्दू की लाठी से ही आर्य सामाजिक सर्व साधारण के गल्ले[1] को हांकना चाहते हैं।

1. समूह-भीड़

भाई जवाहिरसिंह के पत्रों के उत्तर में जो लेख ऋषि दयानन्द की ओर से आते रहे थे उन के प्राप्त करने का मैंने प्रयत्न किया था, और उन की प्रतिएं लेने की आज्ञा उक्त भाई जी से मांगी थीं। किन्तु भाई जी ने उत्तर में लिखा कि यद्यपि उन्होंने वे पत्र पण्डित लेखराम को दिखलाए थे तथापि अब वे पत्र किसी ऐसे स्थान में रक्खे जा चुके हैं कि उनका पता नहीं लगता। यदि वे पत्र मिल जाते तो ऋषि दयानन्द की बहुत सी सम्मतियों का विस्पष्ट ज्ञान हो सकता।

भाई जवाहिरसिंह जी के पत्रों से कई सन्दिग्ध मामलों पर प्रकाश पड़ेगा और उन लेखों से भिन्न-भिन्न प्रकृति के लोग भिन्न-भिन्न परिणाम निकालेंगे; इसलिए मैं उन सब यहां कोई विचार नहीं करना चाहता। केवल एक विषय पर मुझे कुल वक्तव्य है। यह बात प्रसिद्ध है कि आर्य्यसमाज के विषय में लाहौर समाज के स्थापित होने के दिन से ही "पुलिटिकल बाडी" होने का दोष लगना शुरू हो गया था। साथ ही यह स्पष्ट था कि उक्त आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य किसी आर्यसमाज पर यह दोष नहीं लगाया जाता था। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि जब सम्वत् 1947 में एक डिपुटी कमिश्नर के इस कहने पर कि आर्य्यसमाज एक "पुलिटीकल बाडी" है, मैंने उनके इस कथन का दृढ़ता से निषेध किया था तो उन्होंने उत्तर में यही कहा था कि जालंधर आर्य्यसमाज वा अन्य किसी आर्य्यसमाज को "पुलिटिकल बाडी" कोई नहीं कहता किन्तु लाहौर आर्य्यसमाज को प्राय: अंग्रेज़ राजनैतिक सभा समझते हैं। अब तक यह समझा जाता रहा है कि शायद इसके कारण आर्य्यसमाज लाहौर के आरिम्भक सर्व अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता होंगे। किंतु भाईजी के पत्र से ज्ञात होता है कि शायद लाहौर आर्य्यसमाज की इस बदनामी के मूल कारण आप ही हों। आप के दूसरे ही पत्र में (पृ० 120 पर) पाठक नीचे दिए वाक्य पाएंगे:-

"हां कुछ पुलीटिकल (Political) विद्या का स्वभाव से प्रेम है यांते समाज के सज्जन पुरुष यही कहते हैं कि तुम इस काम को अच्छा निबाहोगे।"

उपरोक्त लेख से यह भी सिद्ध होता है कि लाहौर आर्य्यसमाज के पहिले काम करने वालों में से केवल भाई जी ही राजनैतिक विद्या में निपुण समझते जाते थे। अब देखना यह है कि लाहौर आर्य्यसमाज का राजनैतिक प्रसिद्धी का कारण क्या था। भारतवर्ष में निवास करने वाले अंग्रेज़ों (Anglo-Indians) का यह स्वभाव है कि उन का एक भाई भी जिस बात को जिस प्रकार लिख दे उसी लकीर पर सब चल पड़ते हैं; अपने स्वदेशी

भाइयों के संदिग्ध लेख पर भी विदेशी युक्ति तथा प्रमाण को सुनने के लिये तैयार नहीं होते। मेरा अनुमान यह है कि आर्य्यसमाज के विषय में इस प्रकार के विचार मिस्टर जानकैम्पबेल ओमन साहेब (Mr. John Campbell Oman) ने फैलाये थे जो गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर में पदार्थ विज्ञान के अध्यापक (Science Professor) थे। पण्डित गुरुदत्त जी इन्हीं के शिष्य थे और जब शिष्य गुरु को बहुत पीछे छोड़ कर पदार्थ विद्या की अपेक्षा वेदों का अधिक मान करने लग गए तो गुरु को कुछ क्षोभ भी हुआ। इन्होंने एक पुस्तक सन् 1889 ई० के आरम्भ में लिखी थी जिस का नाम रक्खा था– Indian Life, Religious and Social

सबसे पहिले आर्य्यसमाज को पुलिटिकल बाडी सिद्ध करने का इस पुस्तक द्वारा प्रयत्न हुआ था। उस पुस्तक में नए हाल, जो प्रोफेसर साहेब को इंग्लैण्ड बैठे ही मालूम हुए, बढ़ा कर उस का नाम अब Cults, Customs and Superstitions of India

रक्खा गया है। इस नई पुस्तक का मुद्रण सं० 1908 ई० में शायद इसी लिए किया गया कि उस समय की पुलिटिकल हलचल के रौ में बहे हुए पुरुषों में इस पुस्तक का प्रचार होने की अधिक सम्भावना थी। इस पुस्तक का निम्न लेख ठीक तौर पर बतला देगा कि आर्य्यसमाज के विषय में राजनैतिक दल होने का मिथ्या प्रलाप किस प्रकार आरम्भ हुआ। पृष्ठ 141 पर मिस्टर ओमन साहेब लिखते हैं:–

एक अंग्रेज का कथन:–

"He (Dayananda) is also credited with the outspoken expression of an opinion about the present-day degeneration of Englishmen in India. I have been, the Swami is reported to have said to an English clergyman who came to visit him, I have been an early riser from my childhood. In the begining I saw that englishmen would get up early in the morning, and taking their children with them would go out for a walk. The excess of wealth has made them indolent since. They are seen stretched on their beds in their bunglows [1]till the sun is up, and I cannot but perceive that, like the old Aryas, the days of your fall are also coming. Without too much straining after the discovery of the more hidden causes of current happenings, we may perhaps be justified in

1. यहाँ 't' अक्षर छूट गया है। 'जिज्ञासु'

recognizing in this significant condemnation and equally significant prediction, uttered by or attributed to Dayananda, an encouragement of the later political activities of the sect which he founded; particularly as the reformer was intent upon the regeneration of *Aryawarta,* and the words patriotism and nationality constantly upon his lips. As early in the history of the Arya Samaj of Lahore as 1882, I find that the programme of the Anniversary celebration contains the following item: "A lecture in Vernacular by Bhai J...S....Secretary Arya Samaj Lahore, on "Nationality." and the subject has, I know, been always much in the thoughts of the samajists."

तात्पर्य्य यह कि एक अंग्रेज़ पादरी साहेब जब स्वामी दयानन्द को मिलने गये तो उनसे उक्त स्वामी जी ने कहा कि पहिले मैं अंग्रेज़ों को अपने बच्चों सहित प्रातःकाल ही बाहिर वायु-सेवन के लिए जाते देखता था। किन्तु अब सूर्य उदय होने के पीछे तक लेटे रहते हैं। इस से अनुमान होता है कि पुराने आर्य्यों की तरह तुम्हारे गिरने के दिन भी समीप आ रहे हैं। एक संन्यासी के मुंह से ऐसा उपदेश अपने अन्दर कुछ विचित्र घटना नहीं रख सकता, किन्तु ओमन साहेब को इसके अन्दर ही आर्य्य-सामाजिक मत की पुलिटिकल उद्योगता का बीज दिखाई देता है और उसकी स्पष्ट साक्षी वह इस प्रकार वर्णन करते हैं–"आर्य्यसमाज लाहौर के इतिहास में बहुत ही आरम्भ अर्थात् स० 1882 ई० उसके वार्षिकोत्सव के समय विभाग में निम्नलिखित विषय भी है; एक व्याख्यान भाई G....S... (मतलब जवाहिरसिंह से प्रतीत होता है) मन्त्री आर्य्यसमाज लाहौर की ओर से Nationality (कौमियत-स्वदेशीयता) पर–और मैं जानता हूं, कि यह विषय आर्य्यसमाजियों के ध्यान में अधिक रहता है" यदि प्रोफ़ेसर ओमन साहेब के टेढ़े कटाक्षों की पड़ताल किसी अन्य समय के लिए छोड़ दें तो भी स्पष्ट दीखता है कि उन के कटाक्षों के प्रबल कारणों में से भाई जवाहिरसिंह जी के एक व्याख्यान का विज्ञापन ही है। अब जब कि भाई जी को आर्य्यसमाज से जुदा हुवे 21 वर्षों से भी अधिक समय व्यतीत हो गया और आर्य्यसमाज के सभासदों ने बहुमत से अपने मन्तव्यों तथा कर्त्तव्यों का परिचय भी दे दिया तो उसी लकीर को पीटते जाना अन्य मतावलम्बियों का न्याय नहीं है। पण्डित कालूराम (सेठों के रामगढ़ वाले) के दो पत्र विशेष प्रकार से मनोरंजक सिद्ध होंगे। एक तो दीमक ने इन पत्रों को गूढ़ बना दिया है और उस पर पण्डित कालूराम की

भाषा विचित्र-मेरी सम्मति में जिन पाठकों का समय खाली हो उन्हें समय काटने का इससे बढ़ कर मनोरंजक साधन न मिलेगा कि पण्डित कालूराम के दोनों पत्रों की पहेलियों के बूझने में उसे लगावें।

पण्डित कालूराम ऋषि दयानन्द के बड़े श्रद्धालु भक्त थे। आपने रामगढ़ में एक स्थान बनवाया था जहाँ नित्य सत्यार्थप्रकाश की कथा बाङ्गड़ देश के सर्व साधारण में होती थी। इनके सैकड़ों शिष्य थे जिनकी विशेषता यह हुआ करती थी कि जो आज्ञा उन्हें सत्यार्थप्रकाश में दिखला दी जाय उसे वे शिरोधार्य्य समझते थे। कालूराम जी के स्थान में दो मेले प्रतिवर्ष होते थे जिन में भोजन का सत्कार सहस्रों पुरुषों का हुआ करता था। उनकी मृत्यु के पश्चात् न जाने उनके स्थान की वह महिमा रही वा नहीं, किन्तु उनके जीवन में आर्यसमाज का बड़ा उत्तम कार्य होता रहा।

अजमेर वालों के पत्र–विशेष विचार से देखने के योग्य हैं। कमलनयन शर्मा तथा मुन्नालाल के पत्रों से विदित होता है कि अजमेर आर्यसमाज में परस्पर का विरोध ऋषि दयानन्द के जीवन में ही आरम्भ हो गया था। **इस पत्र व्यवहार पर यदि आज की तिथि डाल दी जावे तब भी कोई अचम्भे की बात न होगी।** इस समय सर्व प्रान्तों के आर्य्यसमाजों में इसी दुर्घटना के दर्शन होते हैं। यदि आर्य्यसमाज को, उसके अग्रणी, जीवित रख कर वैदिक धर्म के प्रचार का साधन बनाना चाहते हैं तो उन्हें इस रोग की जड़ का पता लगाना चाहिए। स्वामी केशवानन्द न जाने कौन थे जिनका वर्णन कमलनयन शर्मा के पत्र में आता है। इन्हीं के पत्र सं० 4 में पृष्ठ 171 पर निम्नलिखित विचारणीय है:-"...सर्दार भक्तसिंह इंजिनियर हुए हैं। उन्हीं के दफ़्तर में मैं भी काम करता हूँ। वे कहते थे कि गुजरात में मूलराज M.A. हम से मिले थे और आर्य्यसमाजों को पक्षपाती कहते थे, इस कारण हमने और उन्होंने मिल कर एक संस्कृत पाठशाला जुदे होकर नियत की है।" रायबहादुर मूलराज जी इस समय पर बड़ा उपकार करेंगे यदि यह बतलावें कि **आरम्भ से ही आर्यसमाज के अन्दर किस प्रकार के पक्षपात ने घर कर लिया था।** जोधपुर से जो यह समाचार प्रसिद्ध होना लिखा है कि स्वामी जी का देहान्त हो गया यह तो एक बार नहीं कई बार कई स्थानों से सुनने में आता था परन्तु पृष्ठ 192 पर जो मरवाड़ राजा के विकट होने का लेख है उस **से स्पष्ट सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द निर्भय होकर धर्म्म का प्रचार करने वाले उपदेशक थे और इसलिए ऋषि पद के अधिकारी। पण्डित शुकदेवप्रसाद** के पत्र के साथ जो पण्डित शिवकुमार शास्त्री का पत्र अजमेर के पण्डित शालिग्राम के नाम का पृष्ठ 211 तथा 212 पर छपा है, उससे ज्ञाता

होता कि श्री पण्डित शिवकुमार जी बराबर श्री स्वामी दयानन्द जी का अत्यन्त मान्य करते तथा उनके उद्देश्यों के साथ अन्तरीय भाव से सहमत थे।

बलदेव के पत्र–सं० 3 व 4 से विदित होता है कि उन दिनों श्री स्वामीजी महाराज के इंग्लैण्ड की ओर प्रस्थान करने की अफ़वाह फैल रही थी। यदि ऋषि दयानन्द एक बार लन्डनादि नगरों में भ्रमण कर आते तो न जाने धर्म्मान्दोलन के काम को कैसा प्रबल पलटा मिलता? किन्तु यह होना ही न था। बेफ़िकरे बलदेव से रोटी पर सैर करने के शौक़ीन अब भी बहुतेरे घूमते फिरते हैं। पृष्ठ 220 पर वर्णित स्वामी गणेश जी का पता फिर नहीं मिला। पृष्ठ 221 पर बिल्हौर वाले "मंगीलाल" जी की बुझौती को जो बूझ दे उसे मैं भी कुछ पारितोषिक देने को तय्यार हूं।

गोरक्षा–की ओर प्रथम ध्यान आकर्षित करने वाले स्वामी दयानन्द ही थे। पृष्ठ 227 पर दिए, गोपीनाथ के, पत्र से विदित होात है कि रामगढ़ वाले पंडित कालूराम ने इस शुभ कार्य के लिए बड़ा परिश्रम किया था। एक सेठ ने मुझे ठीक लिखा था कि आज कल की सब गोशालाएं तथा पिंजरापोल श्री स्वामीजी की ही मंगल इच्छा के परिणाम है।

भिनगा के भया राजेन्द्रबहादुरसिंह–का पत्र पाठकों को बहुत ही विस्मित कर देगा। इस पत्र से विदित होता है कि पुराने सत्यार्थप्रकाश में किए मांस विधान की पुष्टि पंचमहायज्ञविधि के किसी आरम्भिक संस्करण से भी कुछ लोग समझते थे यद्यपि पुराने सत्यार्थप्रकाश से कुछ पहिले छपी पंचमहायज्ञविधि में मांस-भक्षण का निषेध है। मेरी सम्मति में इस पत्र से विस्मित होने के स्थान में सन्देह की निवृत्ति हो सकती है। जिन पुरुषों ने ऐसे पत्रों को दबाए रक्खा है उन्होंने अधिकतः संदिग्धावस्था उत्पन्न कर दी है। यह पत्र सम्वत् 1939 के चैत्र में लिखा गया, और कार्तिक सम्वत् 1940 वि० में स्वामी जी का देहान्त हुआ। उनकी मृत्यु के ।।/वर्ष पहिले तक ज्ञात होता है कि उनका ध्यान मांस विधान की भूल की ओर किसी ने आकर्षित नहीं किया। यही कारण मालूम होता है कि मृतकश्राद्ध के विरुद्ध विज्ञापन देते हुए भी स्वामी जी ने मांस विषयक अशुद्ध लेख का वर्णन नहीं किया।

उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह जी के यहाँ दोनों समय अग्निहोत्र होने का वर्णन जो पृष्ठ 239 पर हीरालाल अथर्वणी किया है उस से पता लगता है कि महाराजों की रुचि वैदिक कर्म्मकाण्ड की ओर बढ़ चली थी।

महाशय लक्ष्मण गोपाल देशमुख, असिस्टेन्ट कलक्टर ख़ानदेश, के पत्र

यद्यपि केवल घड़ी की ख़रीदारी के सम्बन्ध में होने से कई पाठकों को तुच्छ प्रतीत होंगे, किन्तु मेरी दृष्टि में वे बहुमूल्य हैं। इन से पता लगता है कि आर्य्यभाषा तथा संस्कृत के प्रचार को जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने पुष्टि दी थी, यदि उसका अनुकरण उनके शिष्य करते तो आज यह हीन दशा न दिखाई देती कि आर्य्यसमाज के कतिपय भूषणों को भी यह लिखते लज्जा नहीं आती कि यदि उनसे उत्तर प्राप्ति की इच्छा हो तो उनके नाम पत्र इंग्लिश वा उर्दू भाषा में ही भेजा जावे।

मुंबई आर्य्यसमाज के मन्त्री के पत्र में पृष्ठ 246 की समाप्ति पर कैसे हृदयबोधक शब्द हैं जो आज भी उसी प्रकार सर्व आर्यसमाजों में गूंज रहे हैं–"कार्य्य करनेवाले बहुत कम हैं कि अपना तन मन धन लगा के करें, वाक्य विलास करने वाले बहुत हैं" यह शिकायत उस समय तक दूर न होगी जब तक कि सदाचार को ही धर्म्मशीलता की जड़ न समझ लिया जावे।

मन्त्री सेवक लाल कृष्णलाल जी का पत्र सं० 6 जैनमत की पुस्तकों के विषय में बड़ा मनोरंजक है; इस मत की पुस्तकों के दर्शन भी स्वामी जी महाराज को इन्हीं सज्जनों द्वारा हुए थे। पृष्ठ 275 से ज्ञात होता है कि जून 1883 ई० में स्वामी आलाराम आर्य्यसमाजी बन कर मुम्बई पहुँचे हुए थे और उस समय तक संस्कृत कुछ भी नहीं जानते थे; किन्तु उस भाषा का अभ्यास दृढ़ता से कर रहे थे। उस समय श्री स्वामी जी के चरणों में पूरी श्रद्धा रखते थे, किन्तु आज अन्यों से बिगड़ने के कारण अपने पूर्व गुरु को गालीप्रदान कर रहे हैं। काल की विचित्र गति है!

लालजी बैजनाथ व्यास के पत्रों से (जो पृष्ठ 280 से 285 तक दिए गए हैं) विदित होता है कि स्वामी जी के इस पंचभौतिक देहत्याग करने से कुछ मास पहिले ही मुम्बई आर्य्यसमाज की अवस्था ढीली पड़ गई थी। अन्य कई आर्य्यसमाजों की निर्बलता का हाल भी इन्हीं दिनों के लिखे हुए पत्रों से विदित होता है। न केवल यही बल्कि अजमेर, लखनऊ, फर्रुख़ाबादादि के पत्रों से यह भी विदित होता है कि ऐसी अनुचित अवस्था बहुधा कुछ सभासदों के स्वार्थवश होने तथा परस्पर के विद्वेष से उत्पन्न हो चली थी। यह सच है कि ऋषि के परलोकगमन के कुछ वर्षों पीछे एक विचित्र प्रेम तथा पवित्रता की लहर उठी थी किन्तु परस्पर के द्वेष तथा सदाचार की अविद्यमानता ने उस लहर को भी बिलकुल बैठा दिया है। यदि वैदिकधर्म्म का पुनरुद्धार अभीष्ट है तो आर्य्यसमाज के अग्रणियों को आचार संशोधन का कोई विशेष उपाय सोचा चाहिए।

कवि सुखराम त्र्यम्बकराम का पत्र केवल एक नूमने का दिया है जिस से विदित होता है कि लोगों में उस समय धार्मिक विषयों के आंदोलन की जिज्ञासा केवल श्री स्वामी दयानन्द जी के उपदेशों से ही उत्पन्न हुई थी। पृष्ठ 292 पर जिस ग्रन्थ [दयानन्द सरस्वतिनुं भाषण] का "अहमदाबाद गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी" के पुस्तकालय में विद्यमान होना वर्णित है और जिस का मूल्य ।।।) लिखा है, क्या वह पूना वाले व्याख्यान ही थे वा उनसे भिन्न कोई पुस्तक थी? इसका पता लगाना चाहिए।

लाला मथुरादास का पत्र [पृष्ठ 305 पर] बतलाता है कि उन्होंने जो ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का संक्षिप्त अनुवाद उर्दू में प्रकाशित किया था[1] उसमें श्री स्वामी जी की सम्मति नहीं ली थी। उन्होंने कुल छपी हुई प्रतियां वैदिक यन्त्रालय में दे दी थीं। अच्छा ही होता यदि उन्हें न बेचता जाता जिससे बहुत सी भूलों से सर्व साधारण का बचाव होता।

धर्म्मवीर पण्डित लेखराम का एक ही पत्र, देवनागरी अक्षरों में लिखा हुआ, मिला है यह पत्र विचित्र है। लाला कन्हैयालाल अलखधारी तथा मुंशी इन्द्रमणि की पुस्तकों से इन्होंने अन्य मतों के खण्डन की शिक्षा ली थी इसलिए मुंशी इन्द्रमणि के साथ श्री स्वामी जी का बिगाड़ उन्हें सह्य न था। श्री स्वामी जी के जीवन-चरित्र में मुन्शी इन्द्रमणि के मामले पर जो कुछ लिखा है उसका इस पत्र के साथ मुक़ाबिला करने से विदित होता है कि पण्डित लेखराम जी सत्याग्रही बड़े दृढ़ थे। एक बात और विदित होती है। वैदिक धर्म्म में प्रेम उत्पन्न होते ही पण्डित लेखराम ने देवनागरी अक्षरों का अभ्यास आरम्भ कर दिया था और अपनी भाषा की अशुद्धियों के कारण अपने कर्त्तव्य-पालन में किञ्चित भी नहीं घबराते थे।

स्वामी आलाराम का पत्र पृष्ठ 312 तथा 313 पर उनकी विचित्र जीवनी पर बड़ा प्रकाश डालता है।

शंका समाधान का अवसर विरोधियों को तो बहुत मिलता रहा किन्तु बड़ा ही शोक है कि जिस समय आर्यसमाजियों के दिलों में धर्म्म विषयों के आंदोलन की जिज्ञासा उत्पन्न हुई उस समय ऋषि के परलोक गमन की तैयारियां हो रही थीं। पृष्ठ 314, 315 पर क्षेमकरणदास का पत्र मुक्ति विषय के प्रश्न युक्त कैसा हृदयबोधक है। उधर जोधपुर विष देने की तैयारी दुष्ट कर रहे हैं और इधर प्यासे हृदय धर्म्म का मर्म जानने की जिज्ञासा कर रहे

1. यह ग्रन्थ का अनुवाद नहीं, सार था। इसके नाम के साथ ही 'ख़लासा' (सार) शब्द था। 'जिज्ञासु'

हैं। किन्तु शोक यह है कि अभिमान और द्वेष के अन्धकार से अन्धे किए गए आर्यसमाजी अब तक भी अपने धर्म के मूल श्रोत-वेद पर विचार करने का उद्यते नहीं होते।

देहरादून के पण्डित ज्योतिःस्वरूप का एक लेख पृष्ठ 316 पर वैय्याकरणों के पढ़ने योग्य है।

ऋषि की स्वाभाविक शान्ति तथा सत्य प्रियता का नमूना देखना हो तो पृष्ठ 333 से 337 तक साधु अमृतराम नवीन-वेदान्ती तथा पण्डित गोपालराव हरि का पत्र व्यवहार अवश्य पढ़िए।

लखनऊ आर्यसमाज के आरम्भिक झगड़े के विषय में पृष्ठ 338 से 366 तक के पत्र, जो उभय पक्ष ने श्री स्वामी जी के नाम लिखे, इसलिए दिए गए हैं कि पाठक यदि वर्तमान समय की अव्यवस्था को दूर करने के लिए कुछ शिक्षा लेना चाहें तो ले सकें।

इन पत्रों में पृष्ठ 356 पर की निम्नलिखित पंक्तियां कुछ विचार साध्य हैं। महाशय रामाधार वाजपेई ने एक स्थान पर अपने आर्यसमाज के अधिवेशन से उठ जाने का कारण यह बतलाया था कि उनका सन्ध्या का समय हो गया था। उत्तर में हरनामप्रसाद जी मन्त्री लिखते हैं:-"और सन्ध्या वन्दन के विषय में तो समाज विषय भी अनेक प्रकार के धर्म्म सम्बन्धी देशोन्नतिकारक और परोपकारक होने के कारण न्यून नहीं वरन अधिक हैं और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामीजी ही महाराज को देखिए।"

आर्यसमाज में इस प्रकार की अविद्या अब तक फैली हुई है जिस से बड़ी हानि हो रही है। स्वामी जी महाराज संन्यासी थे। संन्यासी का दिनरात ही स्वाध्याय में व्यतीत होता है। संन्यास का अधिकार ही तब होता है जब स्वभावतः ही दिन रात ओ३म् का ध्यान रह सके। संन्यासी सर्व बाह्य बन्धनों से मुक्त होता है इसलिए उसके वास्ते कोई विशेष समय वा नियम सन्ध्योपासन का नियत नहीं। किन्तु प्रत्येक गृहस्थ के लिए तो दोनों कालों की सन्ध्या ही सर्वोत्तम स्वाध्याय है। इसे ब्रह्मयज्ञ कहा है और पाँचों महायज्ञों में इसका प्रथम पद है। इस समय भी आर्यसमाज में ऐसे उत्तर सुनने में आते हैं जिनसे अपने कानों को दुःख पहुँचता है-"हम सन्ध्या से भी उत्तम काम कर रहे हैं।"[1] क्या आज जो नास्तिकपन की सी लहर आर्यसमाज के किसी-किसी विभाग में उठ रही है वह इसी अनियम का परिणाम तो नहीं? विचारशीलों को अवश्य सोचना चाहिए।

1. यह अनर्थकारी सोच विनाशक है। 'जिज्ञासु'

महाशय भोलानाथ जी मन्त्री आर्यसमाज बरेली के पत्र (पृष्ठ 367 से 371 तक) के साथ यदि ऋषि दयानन्द का चौबे कन्हैयालाल के नाम का पत्र (पृष्ठ 384, 385) मिला कर पढ़ा जाय तो पता लगेगा कि वर्णाश्रम धर्म्म के जिस उच्च शिखर पर ऋषि हमें ले जाना चाहता था अब तक भी हम उससे बहुत नीचे खड़े हैं।

प्रश्न स्पष्ट शब्दों में यह है–"क्या आर्यसमाज ने उस आदर्श तक पहुँचने के लिए, जिस को लक्षय में रख कर ऋषि दयानन्द ने उसकी बुनियाद डाली थी, कोई पग आगे उठाया है?" ऋषि दयानन्द का लक्ष क्या था उनके निज कथित जीवन वृत्तान्त के अन्तिम शब्दों से भली भांति प्रकट होता है–"ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक स्थान में आर्यसमाज स्थापित हो कर मूर्ति पूजादि दुष्ट आचार बन्द हो जावें, वेद शास्त्रों का सच्चा अर्थ समझ में आवे और उन्हीं के अनुकूल लोगों का आचरण होकर देश की उन्नति हो जावे।" यह स्पष्ट है कि वैदिक ज्ञान का समझना और उसी के अनुकूल आचरण कराने का प्रयत्न करना आर्यसमाजों के स्थापित किये जाने का उद्देश्य था; अर्थात् कर्म को ज्ञान के अनुकूल सांचे में ढालना प्रत्येक आर्य का धर्म है। क्या इस धर्म के पालन करने में प्रयत्न हो रहा है? **जितना प्रयत्न ज्ञान और क्रिया को अविरोधी करने में होगा उतनी ही आर्यसमाज की सफलता समझी जायगी।**

वैदिक मर्य्यादा के अनुसार मनुष्य का अन्तिम उद्देश्य दुखों से छूट कर परमानन्द का प्राप्त करना है। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्णाश्रम धर्म्म साधन हैं। कर्मकाण्ड का सार वर्णाश्रम धर्म्म का पालन है। इसलिए यदि आर्यसमाज ने वर्णाश्रम धर्म्म के पालन में कोई पग आगे बढ़ाया है तो समझना चाहिये कि अपने लक्ष की ओर चल रहा है; अन्यथा उसकी दशा शोचनीय समझी जायगी।

पहिले आश्रमव्यवस्था के सुधार की ओर दृष्टि देना चाहिए। बिना संस्कार के सुधार होना कठिन है, और सारे संस्कार आश्रम व्यवस्था के अर्न्तगत हैं, इसलिए यदि हमारी आश्रम व्यवस्था सुधर न रही हो तो आर्यसमाज को अभी बाल्य वस्था में स्थित समझा जायगा।

पहिला आश्रम ब्रह्मचर्य है। क्या आर्यसमाज ने अपने गत 33 वर्षों के जीवन में इस आश्रम के सुधार के लिए कुछ प्रयत्न किया है? इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है। जिस वस्तु का अभाव हो उसका सुधार कैसे हो सकता है।

गृहस्थ और संन्यास का आभासपात्र तो ऋषिदयानन्द के उपदेशों से पहिले भी विद्यमान था; इस लिए उन का सुधार हो सकता था। किन्तु ब्रह्मचर्य्याश्रम का तो नाटक भी उड़ चुका था, इसलिए उसके सुधार के कुछ अर्थ ही न थे। हाँ, ब्रह्मचर्य्याश्रम को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता थी। इस समय ब्रह्मचर्य्याश्रम के पुनर्जीवित करने के लिए आर्यसमाजों की ओर से बड़ा प्रबल प्रयत्न हो रहा है। गुरुकुलों का स्थापित होना इस प्रयत्न का प्रत्यक्ष प्रमाण है। किन्तु फिर भी यदि गुरुकुलों के प्रबन्धकर्त्ताओं से पूछा जायगा तो के बतलावेंगे कि केवल पाठशाला तथा आश्रम खोल देने से ब्रह्मचर्य्याश्रम का भविष्य नहीं सुधर सकता।

पैत्रिक संस्कारों का सन्तानों पर बड़ा असर पड़ता है। माता के तो सर्व स्वभावों का सन्तान में पुनर्जन्म होता है। आचार्य कुल की रक्षा का पूरा फल तभी प्राप्त हो सकता है जब कि गुरुकुलों में प्रवेश करने वाले बालक तथा बालिकाओं के माता पिता अपने आचरणों के सुधार की ओर दृष्टि डालें और अयोग्यता की अवस्था में सन्तानोत्पत्ति की क्रिया को ही पाप समझें। मेरा यह मतलब नहीं है कि वर्तमान गुरुकुलों में आचार्य, अध्यापक तथा अधिष्ठाता आदर्श पुरुष हैं। मैं जानता हूं कि उनमें बहुत सी त्रुटियें हैं जिनके दूर हुये बिना पूर्ण फल की प्राप्ति नही हो सकती। किन्तु यदि छात्रों के अन्तःकरणों में पैत्रिक संस्कार उत्तम जमे हुये हों और उनके शरीर भी स्वस्थ ब्रह्मचारी माता-पिता के अङ्गों के भङ्ग हों तो उनके तेज से उनके संरक्षकों के अन्तःकरण भी आप से आप शुद्ध होते जायंगे। परिणाम यह निकला कि जब तक ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश करने वालों के पैत्रिक संस्कार शुद्ध न हों तथा उनके संरक्षकों के शरीर मन तथा आत्मा पवित्र न हों तब तक ब्रह्मचर्याश्रम का सुधार कठिन है; अर्थात् गृहस्थाश्रम की शुद्धि पर ही ब्रह्मचर्याश्रम की स्थिरता का निर्भर है। जहाँ ब्रह्मचारियों की उत्पत्ति का स्रोत गृहस्थ है वहाँ आचार्य अध्यापकादि भी गृहस्थाश्रम में पूर्ण शिक्षा लाभ कर के ही ब्रह्मचारियों को संसार मार्ग के कंटकों से बचाने में कृतकार्य हो सकते हैं।

तब गृहस्थ पर ही ब्रह्मचर्याश्रम का निर्भर है इसमें क्या सन्देह है, और इसमें भी कुछ वक्तव्य नहीं कि गृहस्थ ब्रह्मचर्य से ज्येष्ठ आश्रम है। किन्तु मनु भगवान् इस को सर्व आश्रमों में ज्येष्ठ (बड़ा) बतलाते हैं। यह माना कि समय के क्रम से गृहस्थ का दर्जा वानप्रस्थ तथा संन्यास के नीचे दिखाई देता है किन्तु सारे आश्रमों का स्रोत होने से इसे ज्येष्ठ आश्रम बतलाया गया है।

इसलिए इस की अवस्था के विचार से प्रथम अन्य आश्रमों की अवस्था पर थोड़ी दृष्टि डालनी चाहिये। वानप्रस्थाश्रम का इस समय सर्वथा अभाव है। गृहस्थ में आनन्द की इच्छा से लोग प्रवेश करते हैं। गृहस्थ स्त्री-पुरुषों की भोग क्रियाओं के बाह्य चित्र को देखकर मोहित हो सौन्दर्य की तलाश में आंख मूंद कर वर्तमान प्रणाली का गृहस्थ भोगना आरम्भ करते हैं। ठोकर लगते ही आंख खुलती है; तब पता लगता है कि गुलाब के फूल के सौन्दर्य के साथ कांटे भी हैं जिन से बचे बिना सर्व साधारण के लिए गृहस्थाश्रम नर्क धाम बन रहा है। जिन्होंने अविद्यारूपी निद्रा को त्याग दिया और अपने धर्म को समझ कर मृग तृष्णारूपी सौन्दर्य का पीछा छोड़ दिया उनके लिए तो वही गृहस्थ स्वर्ग लोक बन गया और उसके कर्त्तव्यों को पालन करने में ही उन्हें शान्ति मिल गई। उनके लिये सम्भव है कि वे गृहस्थाश्रम की अवधि को पूरा कर के वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करें और अपने गृहस्थ के निरीक्षणों पर पुनः विचार करके आगे चलने की तय्यारी करें। किन्तु जो पुरुष केवल सांसारिक सौन्दर्यरूपी मृग तृष्णा के पीछे ही आतुर हो कर भाग रहे थे वे वानप्रस्थाश्रम में "लोहे के चने चबाने" कब आसक्त हैं, वे सीधे संन्यासाश्रम की ओर दौड़ते हैं। इसलिए वानप्रस्थाश्रम को पुनर्जीवित करने के लिए भी पहिले गृहस्थाश्रम के सुधार की आवश्यकता है।

क्या संन्यासाश्रम की अवस्था ठीक है? आर्यसमाज के सभासद् कृतघ्न नहीं हैं और इसलिये वे आर्यसमाजिक उन संन्यासियों की प्रशंसा करते हैं तो वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य करते रहे हैं वा अब कर रहे हैं। किन्तु क्या हमारे संन्यासी महात्मा स्वयम् इस बात को अनुभव नहीं करते कि यदि वे आश्रमाताश्रम उन्नति करते हुये सच्चे ब्राह्मण बनने के पश्चात् संन्यास धारण करते तो संसार की भी भलाई होती। संन्यासी कर्म्मकाण्ड के सर्व बन्धनों से छूट जाता है। क्या उस प्रकार जैसे सिक्खों के गुरु "बन्धन तोड़" कर "निर्वान" हो गये थे? नहीं प्रत्युत उस प्रकार जैसे कि ब्रह्मवादियों ने वर्णन किया है। सूत्र, शिखा, सन्ध्या, अग्निहोत्र कोई बन्धन भी संन्यासी के लिये नहीं रहता। किन्तु क्यों? इसका उत्तर उपनिषदों में लिखा है:-

[1] सशिखं वपनं कृत्वा बहिः सूत्रं त्यजेद्बुधः।
यदक्षरं परंब्रह्म तत् सूत्रमिति धारयेत्॥

[2] वहिः सूत्र त्यजेद्विद्वान् योग मुत्तममास्थितः।
ब्रह्मभावमयं सूत्रं धारयेद्यः स चेतनः॥

[3] शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवीतश्च तन्मयम्।
ब्राह्मण्यं सकल तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः॥
[4] निरोद्धका ध्यान संध्या वाक्य काय क्लेश वर्जिता।
संन्धिनी सर्व भूतानां सा संध्या होक दण्डिनाम्॥

संन्यासी को शिखा सहित यज्ञोपवीत का सूत्र त्याग करने का क्यों आदेश है? इसलिये कि जिस मनुष्य को परमात्मा की सामीप्यता सर्व कालों में प्राप्त तथा ज्ञात है, जिस के रोम रोम में ओ३म् रम रहा है, उसके लिये चितावनी के किसी चिह्न की भी आवश्यकता नहीं। जिस का शरीर तो क्या, मन और आत्मा भी पवित्र हो गया हो और जिसके ब्रह्म रन्ध्र में ज्ञान का चक्र चल रहा हो उसे सूत के तागे तथा बालों के चिह्न से सहायता लेने की क्या जरूरत है और जो क्षण-क्षण में ब्रह्म के ध्यान में ही निमग्न रहने वाला, प्राणी मात्र को समदृष्टि से देखता हो, उसे काल विशेष में ध्यान लगाने की आवश्यकता क्यों? और योगयुक्त संन्यासी को अग्निहोत्र का बन्धन तो बांध ही नहीं सकता क्योंकि:-

लघुत्वमारोग्यमलोलुपत्वं वर्णप्रसादं स्वर सौष्ठवं च।
गन्धः शुभौ मूत्र पुरीषमल्पं योग प्रवृत्ति प्रथमां वदन्ति॥

दुर्गन्ध को दूर करने के लिए वह यत्न करे जो दुर्गन्ध फैलाता हो। जिसके समीप दुर्गन्ध नहीं आ सकती उसे दुर्गन्ध के दूर करने के प्रयत्न की भी आवश्यकता नहीं।

क्या आज कल के संन्यासी स्वयम् न मान लेंगे कि ऊपर की कसौटी पर चढ़ने के योग्य वे नहीं हैं। जो सांसारिक पुरुषों से भी बढ़ कर धनोपार्जन में लगे हुए हों, और इसलिए जिन को राग द्वेष में विवश होकर फँसना पड़े जो अज्ञान की निद्रा के वशीभूत होकर विषय भोग को ही आनन्द का साधना समझ रहे हों; जिनके मन और आत्मा तो दूर रहे, शरीर भी शुद्ध न हों क्या उनको शिखा, सूत्र अग्निहोत्र, सन्ध्यादि बन्धनों का त्याग करना योग्य है? ऊपर के प्रश्न पर दृष्टि डालते ही ऐसे पुरुष, जिनके विषय में गुसांई तुलसीदास लिख गये हैं कि:-

परहित हानि लाभ जिन्हकेरे। उजरे हर्ष विषाद बसेरे॥
हरिहर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहस बाहु से॥

आर्य्यसमाज के संन्यासियों को मेरे विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न करेंगे; किन्तु मैं इन महानुभावों को तनिक भी दोष नहीं देता। जब पाँच सहस्र वर्षों

से गिरते-गिरते गृहस्थाश्रम रूपी सागर की दशा वह हो गई है जो किसी से छिपी हुई नहीं तो तीनों प्रकार की एषणाओं से सर्वथा न मुक्त होते हुए भी आज कल के संन्यास-वेषधारी जो कुछ सेवा धर्म्म की कर रहे हैं वह भी थोड़ी नहीं है। तब क्या सन्देह है कि जब तक गृहस्थाश्रम का सुधार न होगा तब तक संन्यासाश्रम भी जो सर्व आश्रमों को मर्यादा में रखने का साधन है, अपना कर्त्तव्य पालन करने में समर्थ न होगा।[1]

अन्तिम परिणाम यह निकला कि सर्वआश्रमों के सुधार का निर्भर गृहस्थाश्रम पर ही है और उसके सुधार के लिए आवश्यक है कि वर्णव्यवस्था की प्रणालि ठीक हो। पश्चिमीय देशों में जो आपापन्थ तथा नास्तिकपन की लहर उठ रही है और मनुष्य समाज को निगल जाने के लिए तय्यार है उसे निर्बल करने का सिवाय वर्णव्यवस्था की ठीक स्थिति के और कोई साधन नहीं है। तब क्या यह परिणाम निकालना कठिन है कि वर्ण व्यवस्था को उसकी गिरी हुई अवस्था से जब तक न उठाया जायगा तब तक आर्यसमाज अपने उद्देश्य की ओर एक पग भी नहीं उठा सकता।

धर्म्म विषयों पर प्रमाणिक व्यवस्था की जैसी उस समय आवश्यकता थी अब भी वैसी ही है। शोक कि इन पत्रों के जो उत्तर ऋषि दयानन्द की ओर से दिए गए वह नहीं मिल सकते नहीं तो बहुत से सन्देहों की निवृत्ति आप से आप हो जाती।

खुन्नीलाल विद्यार्थी का पत्र (पृष्ठ 399 तथा 400) केवल यह दिखाने के लिए दिया गया है कि "तुकबन्दी का शौक" किसी विशेष जाति, पंक्ति वा आयु आदि की "मीरास"[2] नहीं है।

खड्गज्ञान का नमूना एक पृष्ठ 501 वाले पत्र से भी मिलता है।

महाशय प्रभुदयालु का पत्र, पृष्ठ 402, 403, सिद्ध करता है कि इन महानुभावों का दर्शनों के आर्यभाषा युक्त भाष्य का परिश्रम ऋषि दयानन्द के सत्संग का ही परिणाम था।

पण्डित ज्वालादत्त के पत्रों से न केवल यह विदित होता है कि ऋषि दयानन्द के नाम से जो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं उनमें बहुत कुछ हाथ अन्य पण्डितों का था, जिसके कारण उन ग्रन्थों में अनेक अशुद्धियां रह गई हैं; बल्कि यह

1. स्वामी श्रद्धानन्द जी सरीखे संन्यासियों द्वारा ही धर्म रक्षा व धर्मप्रचार सम्भव है। राज सत्ता हथियाने, धनोपार्जन, पांव पुजवाने की लालसावाले साधुओं की भरमार से यह आश्रम कलङ्कित हो रहा है। समाचार पढ़-सुनकर मन दुखी होता है। 'जिज्ञासु'
2. पैतृक सम्पदा।

भी पता लगता है कि इन लोगों के परस्पर के रागद्वेष तथा अन्तरीय कुटिल भावों के कारण भी उस महान आत्मा के उद्देश्य को बहुत कुछ हानि पहुंचती रही है। पण्डित ज्वालादत्त ने योग्यता कहाँ से सम्पादन की उसका पता 418 पृष्ठ से लगता है:—"अब मामा जी ने लिखा है कि तुम्हारा महाभाष्य हम भेज देंगे। ग़लती जो आपने निकाली मैं स्वीकार करता हूं, यह मेरा दोष है..." मुंशी समर्थ दान से इनकी बनती ही न थी और दिन रात जले बुझे हुए रहते थे। **इस असन्तुष्टता के कारण इन्होंने और क्या अनर्थ करना चाहा था उसका वर्णन तब करूंगा जब मुझे शेष पत्र व्यवहार छापने का अवसर मिलेगा।** इन लोगों की लीला का कुछ परिचय रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल के पत्र से मिलता है जो पृष्ठ 423 से 426 तक छपा है।

दानापुर के रामनारायणलाल का पत्र पढ़ने योग्य है, जिस से पता लगता है कि सं० 1882 ई० में आर्यसामाजिक पुरुषों में परस्पर का प्रेम बड़ा ही उत्साह जनक था। पृष्ठ 430 पर कैसे मनोहर शब्द हैं। इस पत्र से यह भी ज्ञात होता है कि ग्रन्थकर्तृत्व की टांग आर्यसमाज के मेम्बर उसी समय तोड़ने लग गए थे। पृ० 429 पर जो ग्रन्थ संशोधन के लिए सभा का प्रस्ताव पेश किया गया है उस की आज भी वैसी ही आवश्यकता है जैसी उस समय थी।

द्वारिकानाथ का पत्र पृष्ठ 432 से 439 तक इसलिए दिया गया है कि ऋषिदयानन्द के धर्म्मप्रचार के गौरव को लोग समझ सकें। जहाँ राजों, महाराजों, सेठ साहूकारों, धुरन्धर संस्कृत के पण्डितों तथा विदेशी विद्वानों में दयानन्द के सिंहनाद ने हलचल मचा दी थी, वहाँ साधारण पुरुषों को भी विद्योन्नति के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार कर दिया था।

समाप्ति के समीप जो माई भगवती तथा लाला जीवनदास के पत्र दिए हैं वे पहिले सद्धर्म्म-प्रचारक पत्र में छप चुके हैं। सबसे अन्तिम पत्र मुंशी समर्थदान जी के हैं जिन्हें केवल दिग्दर्शन मात्र समझना चाहिए। मेरे पास अब तक इतने पत्र बचे पड़े हैं कि यदि उन्हें छपाया जावे तो 500 पृष्ठों की एक ओर पुस्तक तैयार हो जावे। वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ताओं के लम्बे पत्र व्यवहार के अतिरिक्त बहुत से अन्य उपयोगी पत्र बच रहे हैं। इन सब के अतिरिक्त उन अंग्रेज़ी पत्रों के अनुवाद भी छपने चाहिएं जो वैदिक मैग़ज़ीन में निकल चुके हैं। किन्तु इन सर्व पत्रों के मुद्रित करने का विचार उस समय तक रोकना पड़ता है जब तक यह पता न लगे कि जो पुस्तक मैं आज समाप्त करके सर्व साधारण के हाथों में देने लगा हूं उसका कुछ आदर होगा

वा नहीं।

इस प्रकार की पुस्तकों का छपना दो तरह ही हो सकता है। या तो काफ़ी ग्राहक बन जावें जिनके अग्रिम भेजे धन से छपाई का काम हो सके, वा कुछ उदार पुरुष छपाई के लिए धन दे दें। पहिले ढंग में क्लेश बहुत रहता है जिसके कारण मैं उसको बर्त्ताव में नहीं ला सकता। दूसरे ढंग पर काम हो सकता है। यदि एक वा कई भद्र पुरुष मिल कर 50) जमा कर दें तो पत्र व्यवहार का दूसरा भाग भी छप जायगा।[1]

ग्रन्थ की समाप्ति पर मुझे अपने प्रिय भाई पण्डित ब्रह्मानन्द को धन्यवाद देना है जिन्होंने ग्रन्थ के संशोधनादि में मुझे सहायता देकर बाधित किया।

शान्ति भवन
जालन्धर शहर
प्रविष्टा १७ फाल्गुन सं० 1966 वि० **मुन्शीराम जिज्ञासु**

1. महात्मा मुंशीराम दूसरा भाग छपवाने का उद्यम कर देते तो ज्वालादत्त सरीखे पेटपंथियों की वास्तविकता का पूरा चित्र सामने आ जाता। इतिहास की लुप्त कड़ियों के सामने आने से समाज कुछ सीखकर लाभ उठाता। न जाने उस सामग्री में क्या-क्या मूल्यवान जानकारी से समाज वञ्चित रह गया। 'जिज्ञासु'

श्रीमत् परमहंस परिव्राजका चार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में

श्रीस्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी के पत्रः

(1)

23 जून फिलौर[1]

श्री स्वामीजी नमस्ते

विदित हो कि दो (2) मास हुए में शमलः पर्वत पर गया था वहाँ बहुत ज्वर और खांसी हो गया एक मास तक अन्न नही खाया बहुत दुःखी होकर नीचे को चला आया अंबला से लाहोर को जाता था फ्लोर के अस्टेशन पर बहुत दुःखी हो गया तब अस्टेशन वालों ने हस्पताल में पहुंचाया यहाँ ज्वर वा खांसी जाती रही है रोग सब जाता रहा है अब आपकी कृपा अच्छा हुं शरीर में अशक्ति है आप अपना विस्तारपुर्व समाचार लिखना लफाफे में पत्र भेजना

हः आत्मानन्द

(2)

ओ३म्

माननीयषु

सविनय निवेदन मिदम

विदित हो कि में अप्रैल मे शमलः पर्वत पर गया था वहाँ आर्य्यसमाज में एक मास तक रहा परन्तु शरीर दुःखी होने के कारण निचै आकर फिलौर में एक मास तक रहा अब अच्छा हो गया हूँ और शमलः आर्य्यसमाज*..... ने देश 10) रुपया मेरे*.....ने को भेजे*.....मे शमलः*.....को जाता हूँ आज कल कालिका*.....र रहा हूं यहां पर लाला र*.....गोपीनाथ के प्रबन्ध से आर्यसमाज*.....है और अब यहां से में कसोली आ*....माज*....जाकर उपदेश करूंगा फिर शमलः जावुंगा 6 अगस्त को शमलः की समाज का प्रथम

1. इस में सन मूल में ही नहीं छपा। हमारे विचार में सन् 1883 होना चाहिये। 'जिज्ञासु'

* जहां-जहां बिन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां-वहां असल पत्र फटा हुआ है अर्थात् उन भागों को दीमक चाट गई है।

वर्ष का उत्साह है और एक मास तक इस पर्वत में रहुंगा फिर नीचै आकर देखा चाहिये किस ओर जावुंगा और अप्रेल मासे मे इसी देश में उपदेश कर रहा हुं आपकी कृपा से कई स्थानों में आर्य्य धर्म्म मे कई मनुष्य प्रवर्त हुए हैं और यह संक्षेप से पत्र लिखा है पुनः जब कृपा-पत्र आपका आवेगा तब विस्तारपुर्वक अपना वृतान्त लिखूंगा अब कृपा करके शीघ्र ही कृपा पत्र विस्तापुर्वक अर्थात् कोन-2 आपके पास हैं और जोधपुर कब तक ब्राजमान रहोगे।

अब कृपा करके शीघ्र ही इस पत्र का उतर निचे लिखे पतः पर भेजना।

स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

आर्यसमाज मुकाम शमलः पहाड़

लाला ठाकरदास डॉक्टर तथा पंडित परमानन्द बाजपई के प्रबन्ध से स्थापित हुआ है आप की कृपा चाहिये आर्य्यसमाज प्रति नगर ग्राम स्थापित हो जावेगी यथा शक्ति उपदेश करता रहूंगा।

10 जोलाई सं 83 ई **हः आत्मानन्द सः**

(3)

ओ३म्

श्रीयुत सर्वोत्तम माननीय स्वामी जी

नमस्ते

महाशाय–

विदित हो कि इस पत्र से पहिले 10 जोलाई को मेने अपना वृतान्त लिख कर भेजा है सो आप के चरणों में पहुँचा होगा परन्तु आज विशेष आनन्द की बात हुई इस वास्ते पुनः निवेदन करता हुं आनन्द की बात यह है कि पण्डित सुन्दर लाल जी राय बहादर शमले.....र में.....*ले हैं और आर्य्यसमाज से.....*था.....र्म्म के प्रचार करने के विषय बहु*.....हुई परन्तु यह आज ही यहां से चले गये.....*इस वास्ते बहुत सत् संग न हुआ इनकी मे क्या प्रशसा करूं यह एक सज्जन पुरुष है और आर्य्यसमाजों के हितकारी हैं और आपके सच्चे भक्त हैं और मेरे को बड़े प्रेम से और निर्भिमान होकर सत्कार से मेले हैं में आशा रखता हूँ कि ऐसे पुरुषों से आर्य्यधर्म्म की उन्नति होगी

* जहां-जहां बिन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां-वहां असल पत्र फटा हुआ है अर्थात् उन भागों को दीमक चाट गई है।

और आपकी कृपा से अब मेरा शरीर अच्छा अब रविवार तक यहाँ उपदेश करके फिर जावुंगा एक मास तक शमलः आर्यसमाज में उपदेश करूंगा पश्चात नीचै उतर आवुंगा प्रथम करनाल जाकर फिर कही जावुंगा अब आप अपना.....*कृप का.....* विस्तारपूर्वक मंगल.....*समाचार.....*कि कोन 2 आपके पास हैं ओर योधपुर में कब तक ब्राजेंगे **और भीमसेन के होने से आपके पास कोई नही रहेगा**[1] अब शीघ्र ही कृपा करके कृपा पत्र लिखना

12 जुलाई स० 1883

हः आत्मानन्द सः

कालका ज़िला शमलः

और यहाँ से लाला खोशीराम मंत्री आर्य्यसमाज की नमस्ते पहुंचे इसी के यतन्न से यहाँ आर्यसमाज स्थापित हुई है।

श्रीमत् परमहंस परिव्राज का चार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्दसरस्वती जी महाराज की सेवा में

श्रीस्वामी ईश्वरानन्द सरस्वती जी के पत्रः-

(1)

ओ३म्

सिद्धश्री परमपूजनीय परमंहस परिव्राजकाचार्य्य असमद् गुरुचरण कमलेषु निवेदन मिदम्

निवेदन आप से यह कीया जाता है सो मालूम होय अव में सहर पानीपत मे व्याकरणाऽष्टाध्यायी पढ़ता हूं ओर सहर हेसार में उक्त पण्डित के पास पढ़ने का आप से कही थी सो पण्डित वहाँ पर नहीं है सो हे भगवन् जरूर जोधपुर के वास का समाचार सहर पानीपत में बाज़ार बजाजा दुकान कन्हैयालाला चिरंजीलाल की पर जरूर हस्तै रामानंद जी से भिजवा देना जी

श्रीयुत मद्रामानन्द ब्रह्मचारी जी को वहूधा नमस्ते

आ० व० 11

ईश्वरानन्द[2]

---

* जहां-जहां बिन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां-वहां असल पत्र फटा हुआ है अर्थात् उन भागों को दीमक चाट गई है।

1. भीमसेन की वास्तविकता जग ने जान ही ली। अब भी कई उसके प्रचारक हैं। 'जिज्ञासु'
2. इस कार्ड पर डाक घर का मोहर 1 जुलाई का है।

(2)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्रीसर्वोपमा योग्य परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य्य सद्धर्मात्मा परमदयालु सत्योपदेश सर्वजन हृदेषुप्रकाशक श्रीमान् ब्रह्मवित सर्वउपमायुक्त श्री 108 श्री स्वामीजी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती चरण कमलेषु प्रार्थनां निवेदयामि।

यह जीवन भर लुढ़कता रहाः–

हे स्वामिन् एक कार्ड आपके चरणकमल में निवेदन कर चुका हूँ परन्तु उसका मेरे को प्रत्युत्तर नहीं मिला हे गुरो आप जेष्ट वदी 10 शुक्रवार को सहर जोधपुर में विप्रवेश किया तथापि एक समाचार पत्र मुज को नहीं मिला हे भगवन परमपूजनीयमदीश्वर जरूर रामानन्दजी के हस्त पत्र भिजवा देना चाहिये और में अव आप की आज्ञानुस्वार अवश्यमेव बर्तूंगा कदापि आप की आज्ञा से बाह्य कभी नहीं चलूंगाजी और प्रयाग में जो मेरे सैं व्यवहार व्यतिक्रम हो गया था सो तो वार्ता अब सो 2 कोश पर गई अब तो आप की कृपापूर्वक मैं[1] कछू कहू वा चाहता हूं आगे प्राब्धानुकूल वार्ता है और हे भगवन् आप के पास तै जो मनै लेणा था सो ले लिया अब मैं आप के चरणकमल का आसरा रखता हूं जी और मेर को सहर पानीपत में लोक पूछते हैं कि तुम्हारा क्या धर्म्म है मैनै उत्तर दिया हमारा तो वैदिक धर्म्म है।

फेर लोग पूछने लगे तुहने धर्म को जान लिया अथवा नहीं मैनै उत्तर दिया कि हाँ मैंने धर्म को जाना है फेर विद्या काहे को पढ़ते हो उत्तर व्यवहार पारमार्थिक के सिद्धार्थ। प्रश्न तुह क्या करोगे परमार्थ को सिद्ध करि के उत्तर विविध दुःखूं से छूट कर अनतानन्द की सिध्द्यर्थ। प्रश्न भला तुह्मारा मत किस ने चलाया है उत्तर० मत्त 2 असा उच्चारण नहीं करना मत संज्ञा तो मतवारे की औ मतवालों की है जो मद्य आदिकों से मत सिधि होता है (आपः विदुः । ब्रह्म। जना।) धर्म कहो तुम्हारा क्या धर्म है। उत्तर असत्य के पक्ष का सर्वथा त्याग करना औ सत्य का पक्ष कभी नही छोड़ना और ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन करना है यह धर्म कहलाता है सो भगवन् कुतरकी लोग वहूत है परंतु मेर को लोग वहूत चाहत्ते हैं।

अष्टाध्यायी वेदाङ्गप्रकाश सहीत अध्ययन कर्ता हूँ हंसार में जो पंडित शाला पढ़ाते थे सो अब सहर अंवाले मैं पढ़ाते हैं 1 पत्र जरूर भिजवायोजी रामानंदजी के हस्तै

श्रीयुत रामानन्दजी ब्रह्मचारीजी को मेरी वहूधा नमस्ते पहूचै चिठी जरूर

1. कुछ व्यक्ति जीवन भर लुढ़कते रहते हैं। यह साधु ऐसा ही था। 'जिज्ञासु'

भेजीयोजी रामानंदजी आप से प्रार्थना करता हूँ कि समाचार की पत्री जरूर भेजीयो जी।

ठिकाना चिठी भेजने का।

जिला करनाल तसील थाना पानीपत वाजार वाजाजा मैं दुकान चिरंजीवलाल कन्हैयालाल की पर।

ईश्वरानन्द

(पानीपत मैं) सँवत् 1940 आषाढ शु-4

(3)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धश्री परमपूजनीय परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्री 108 श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु पापक्षयार्थ निमित्त केन प्रार्थनां निबे. ..*...(प्रार्थना आप *...कर्ता हूं कि पत्र दोय भेज चुका हूं परन्तु अब तक समाचार पत्र मेर को नहीं प्राप्ति भया सो हे भगवन् समाचार पत्र जोधुपुर का अवश्यकता से ही देना उचित ह हे दयानिधे क्या एक पत्र द्वारा भी मेरे को कृतार्थ न करोगे आपको अवश्य ही कर्तव्यता है कृतार्थता की

चिठी भेजैने का ठिकाना जिला करनाल तसील थाना पानिपत मैं बाजार बजाजा मैं दुकान चिरंजीवलाल कन्हैलाल की पर ईश्वरनंद को मिलै।

1. जोधपुर का निवास का समाचार
2. और रामानद जी कहाँ...पाय 'कै मि
3. ओर कोंन से रोज...*...और ऋग्वेद का कोन सा*...होता है।

अष्टाध्यायी का वहूत अच्छा वेदाङ्गप्रकाश सहीत पाठ हो रहा है और संधिविषय तो समाप्त हो गया अव शीघ्र ही उपदेशाधिकारी हो जाऊगा महाभाष्य विवरण और कैयठ सहित मगवाय लियी है रुपये 18

श्रीयुत ब्रह्मचारीजी रामानन्दजी को वहूधा नमस्ते अषाढ़शुदी 10

(4)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्री परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरणकमलेषु निवेदनमिदम्

* जहां-जहां विन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां -वहां असल पत्र फटा हुआ है अर्थात् इन भागों को दीमकें चाट गई हैं।

निवेदन आप से यह विदित होय पण्डित मेर को वहूत श्रेष्ठ मिला है जी व्याकर विद्या में पूरण गति है दयालु और धार्मिक भी मालूम होता है भीक्षा मांग खाता हूं लोक पानीपत के भुज को चाहैते हैं ओर मेर को आप दया दृष्टि से कछु आज्ञा कर दीजिगा जपनेमतपदानादिकू कि आज्ञा दीजियेगा।

रामानंदजी ब्रह्मचारी जी को बहूधा नमस्ते संवत् 1940 आ शुदी 13

(ईश्वरानन्द)[1]

(5)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धिश्री परमपूज्यनीय परमंहसपरिव्राज्यकाचार्य बर्य्य श्री 108 श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चर्ण कमलेषु निवेदनमिदम्

निबेदन आप से यह है के जो प्रथम पत्र आप के पास भेजा था उसमें पुस्तकों के नाम भ्रम से कछू अधिक वा न्यवन लिखे गये थे सो उक्त पुस्तक श्रीमानों को भी प्रकट हो जावें ऋग्वेदादीभाष्यभूमिका पुस्तक 2 वेदांत ध्वांत निवारण 4 पचमहायज्ञ बिधी 4 आर्य्यदेशरत्नमाला 4 सत्यार्थप्रकाश के अंक भी अपनी दयादृष्टी पूर्वक भिजवा देना चाहिये जी उक्त पुस्तकों के दाम वैदिक यन्त्रालय प्रयाग में श्रीयुत बाबू ज्वालाप्रशाद भेजा करैंगे तथा ऋग्यजूः के भी अंक भिजवा देने चाहियें जी उक्त रीति से दोनों वेदों के भी दाम उक्त बाबूजी भेजा करैंगे।। ठिकाना शहर पानीपत जिले करनाल शहर पानीपत में दूकान लाला चिरंजीलाल कन्हैयालाल बज़ाज़ की पर (पानीपत) **ईश्वरानन्द सरस्वती** सम्वत 1940 आ० शु० शुक्रवार।

गोकरुणानिधि की 2 वर्णोच्चार शिक्षा 1 संस्कृतवाक्य प्रबोध 1 अव्ययार्थ 1 सन्धिविषय 1 गणपाठ 1 धातुपाठ 1 और जो नामिक से आदि लेके शेष दामों में पुस्तक आवती हों तो श्रीमानों को उचित है कि अपने क्रिपापात्र कि तर्फ भेज देवैं और उक्त दामों से किराया भी पुस्तकों को का बिडा जाय

ईश्वरानन्द सरस्वती का श्रीयुतरामानन्द ब्रह्मचारीजी बहुधा नमस्ते

पानीपत जिला करनाल

बाबू ज्वालाप्रसाद का श्रीमानों के चरणकमलेषु वहुधा नमस्ते पहुंचे?

1. इस कार्ड पर डाक घर का मोहर 18 जूलाई का है।

(6)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्रीपरमपूज्यनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामीजी श्रीमद्दनन्द सरस्वतीजी चरणकमलेषु वहूधा नमस्ते समाचार सहर पानीपत के निवासकारियों का प्रश्न० सहर पानीपत के लोग अैसा प्रश्न करतें हें कि तुम्हारा धर्म क्या है और किस की सम्मति पूर्वक आचरण धर्म के करतें हें (उत्तर) (हमारा धर्म वैदिक है) और जो पूर्व सृष्टि में ब्रह्मा आदि महर्षि हूये थे जो कि वेद द्वारा ईश्वराज्ञा के पालक और सकल जगद्धितैशी थे सो अब तक सर्व मनुष्यों के बिदित ह कि चतुर्भिः वेद के ज्ञाता ब्रह्मा जी हूये हैं अंतएव ब्रह्मादि पूर्णाप्तों की सम्मतिपूर्वक आर्य्य लोगों का धर्म्माचरण (आज) प्रयन्त सनातन चला आया है (अन्यथा नही) पुनः उक्त लोगों का प्रश्न वैदिक धर्म क्या है (उत्तर) ईश्वरोपासना वेदाध्ययन सत्यभाषणादि कर्मों से शरीर कि आयु को व्यतीत करना होता है और आचार्य्य पितृ आदिकों को स्वपुरुषार्थ से संतुष्ट करना होता है इत्यर्थः।

(उक्त पोपों के पुनः प्रश्न) उक्त मनुष्य यह प्रतिपादन कर्ते हैं प्रथम मूर्तिपूजन का अधिकार वेद प्रतिपाद्य है तुम कसैं मूर्तिपूजा का निषेध कर्ते हो देखो शंकराचार्य्य जो थे मूर्तिपूजा को कही भी खण्डन नहीं किया किन्तु सर्वथा मण्डन करणे मैं चरितार्थ हूये हैं क्या शंङ्कराचार्य्य वेद के ज्ञाता नहीं थे जिन्होंने मूर्तिपूजन को कहिं भी खण्डन नहीं किया[1] तुम्हारे स्वामी जी वेद के कोन से मन्त्र से मूर्तिपूजा खण्डन कर्ते हैं सो कहो (उत्तर) नतस्यप्रतिमाअस्ति इत्यनेन मंत्रेण मूर्तिपूजानिषेधेत्यर्थः।

(पूर्वोक्त पोपों का पुनः प्रश्न) जो लौकिक धर्म ह सो वेदान्तरङ्ग है या वहिरङ्ग है जो वेद वहिरङ्ग लौकिक व्यापार को स्वीकार करोगे तो महद्दूषणापत्ति जावेगी क्यूकि जितने शरीरूं का व्यापार का परिणाम है सो सर्व वेद प्रतिपाद्य है यातैं वेदान्त रङ्ग है लौकिक नही यदि लौकिक हो तो वेद वहिरङ्ग है तद्यपि वेद विरुद्ध ह इस रीति से सर्वथा त्याज्यनीय है और वेद में लोक-लोकान्तर की प्राप्ति निमितक जो कर्म उपासना किये जाते हैं सो प्रवृत्ति के हेतु जो कर्मोपासना तिन का वेद में सर्वथा त्याज्य ही विदित है वेद का सिद्धान्त प्रवृत्ति में कहीं भी नहीं है किन्तु निवृत्ति मार्ग द्वारै जीव ब्रह्म की अभेदान्वय मैहि तात्पर्य्य है तुह किस्स प्रकार वेदों का आशय प्रवृत्ति मार्ग में लगाते हो और वेदान्त सूत्र जोकि व्यास भगवान् प्रणित हैं तिन सूत्रन का भि निवृत्ति मार्ग

1. एक पुस्तक में तो खण्डन किया है। 'जिज्ञासु'

हि मैं तात्पर्य्य है और व्यास भगवान् के जो मुख्य शिष्य जैमिनि थे तिन्होंने पूर्व मिमांसा नाम करिकशास्त्र बनाया तिस शास्त्र विषै जैमिनिमुनिजी ने कर्म्म को प्रधान मान्या है परन्तु प्रवृत्ति मार्ग को खण्डन करिके निवृत्ति ही मार्ग को मुख्य प्रतिपादन किया है यातै ऋषि मुनि प्रणित दश उपनिषत् तिन का भि केवल निवृत्ति ही में तात्पर्य्य है प्रवृत्ति मार्ग मैं किसी उपनिषत् का तात्पर्य्य नहीं है।

अैसे 2 प्रश्न वहूत्से पोप लोग करते हैं मैं तो सर्व का प्रहार कर देता हूं जी--

और अष्टाध्यायी अध्ययन वेदाङ्गप्रकाश सहित करता हूं।

व्याकरण को खूब जिह्वाग्र या पत्रस्थ अवश्य ही करूंगा जी

श्रीयुत् परमसतकाराधिकारी विद्वज्जन् श्रीमद्रामानन्द ब्रह्मचारी जी योग्य भिक्षु ईश्वरानन्द का वहुशः नमस्ते विदित हो आग पत्र आप का आया समाचार मेर को आप का ज्ञात हुवा आप का पत्र पठन करिके मैं बहुत प्रश्न हूवा जी दयादृष्टि पूर्वक पत्र देते रह्या करो मेरे पास पत्र भेजने ठिकाना जिला करनाल तहसील थाना पानीपत में वाजार वजाजा में दुकान चिरंजीवलाल कन्हैयालाल की पर पहुंचे।

भवच्चरणकमलेषु पत्रमिदम्--

ईश्वरानन्देन लिपिकृतम्

(संवत् 1940 श्रा० व० 8 वार शुक्र)

(7)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धिश्री परमपूज्य परमंहस परिव्राजकाचार्य वर्य्य श्री मच्छुद्धस्वरूप चिदाघ न सकल जगद्धितोपकारक मूर्तिषु स्वा श्रम धर्म्म मर्य्यादा पालन तत्परेषु श्री 108 श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु ईश्वरानन्द का मनसावाचा कर्मणा हस्ताभ्यां वहुशः नमस्ते।

समाचार आप से विदित हो कि आप करूणा पूर्वक पत्र स्विकार किया करो हे परम कारुणिक ववासीर की दवाई जरूर मेरे प्रति पत्र द्वारै प्रकट कियी जाय तो श्रीमानों का बड़ा भारी ही उपकार है।

समाचार दूसरा एक वावू सहर मुरादावाद के पास का सहर पानीपत में नौकर है सो वः पुस्तक मगवाया चाहता है रूपये किस प्रकार भेजे जायं तो जरूर लिखो जो मणीआडर करवा के भेज देवैं या और प्रकार से आप के चरण कमल में जिस रीति से रूपये पहूच जाज सो लिखो।

श्रीयुत मद्रामानन्द ब्रह्मचारी जी योग्य ईश्वरानन्द की वहूशः नमस्ते क्या रामानन्द जी आपने पत्र लिखने की मेरे प्रति प्रतिज्ञा करी थी सो कहां गयी सहर के लोगों ने मिल के डाकतर से ववासीर के मसे कटाय दीये और दस रूपये पब्च्वों ने हकीम को दीये लौन मिरच खट्टाई मिट्ठा दुग्धादि वगैरे सब खाने पीने की वस्तू बन्ध कर दी सो हे भगवन् अब तक कछू आराम नहीं हुवा है।

रूपय भिः खरचना मेरे अनुकूल ह जो रूपयों से ओषधी वन सकै तो सो भिः लिखो और दूसरा कोई और साधन हो सोभि आपणि करूणा पूर्वक लिखना जी रामानन्द जी यह लिखने की प्रार्थना आप से करी जाती है श्री स्वामी जी से श्रवण करिके जरूर लिख भेजना जिला करनाल तसील थाना सहर पानीपत वाजार वजाजा चिरंजीवलाल कन्हैयालाल की दुकान पर।

पठन पाठान अच्छा होता है जरा दुःख के सम्बन्ध से कम पढ़ता हू जी

ईश्वरानन्द

संवत् 1940 श्रा० शु०5

(8)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धश्रीमत् कृपासिन्धुष्वार्त्तिध्वान्तर विष्वलंभूरिशोमत्प्रणामाः स्युर्गुरूपाद् युगेष्वितः श्रीमान् परमपूज्यनीय श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य वर्य्य श्री स्वामी जी श्री 108 जगद्गुरू श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु मनसावाचा हस्ताभ्यामुक्त चरण कमलेषु वहुशः नमस्ते।

हे भगवन् समाचार आप से विदित हो 1) रूपये के टिकट इस पत्र के साथ भेजे जाते हैं श्रीमानों को पत्र सहित मिलैंगे सो हे स्वामीन् आप शीघ्र ही 1 रूपये कि पुस्तक जिला करनाल तहसील थाना सहर पानीपत में वाजार वजाजा में दुकान लाला चिरंजीवलाल कन्हैयालाल कि पर भेजैं।

उक्त पुस्तकों के नाम

1 सन्ध्या कि पुस्तक.

2. वेद विरूद्ध मत खण्डन कि पुस्तक

3. आर्य्यदेशरत्नमाला कि पुस्तक

4. वेदान्त ध्वान्त निवारण कि पुस्तक

हे कृपानिधे हमरा पठन पाठन का अनुष्ठान शीघ्र हि पूरा होय जाय हे परम कारूणिक हम लोगों का व्याकरणादि अनुष्ठान निरविघ्नता से समाप्त हो

जाय तो बहूत श्रेष्ठ है हे दयानिधे मेरा चित्त निस दिवस शरीराऽऽयु पर्यन्त श्रीमानों के चरण कमले में हिं बनारह इत्यभिवादन मिद्म्।

उक्त पुस्तकों का डाक मसूल सहर पानीपत में दिया जायगा वावू ज्वालाप्रसाद को अध्ययन करवाये जांवेंगी रहनें वाले सहर धनौरा के जिला मुरादाबाद। श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी जी से ईश्वरानन्द का वहुशः नमस्ते।

संवत् 1940 श्रा० शु० 7 **(ईश्वरानन्द सरस्वती)**

(9)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धिश्री परमपूज्यनीय परमंहसपरिव्राजकाचार्य वर्य्य श्री स्वामी जी 108 श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु निवेदनमिदम् निवेदन आप से यह कि एक साधु आप के समीप दर्शनार्थ के निमित्त आवता है सो उक्त महात्मा के मन में यह विदित्त होता कि पुनः संस्कार करवाके श्रीमानों के चरण कमल में सदैव बना रहूं या अभिप्राय तें यह पत्र चरित्तार्थ हो और बहूत सा वेद्दाऽध्ययन पर आस्तिकपना रखता है।

उक्त महात्माओं का ना विशुद्धानंद सरस्वती

श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी जी योग्य ईश्वरानन्द सरस्वती का वहुशः नमस्ते

संवत् 1940 श्रा० शु 14 **ईश्वरानन्द सरस्वती**

(10)

॥ ओ३म् ॥

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य स्वाश्रम धर्म मर्यादा परिपालतत्परेषु श्री 108 श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु प्रार्थना तथा निवेदन मिदम्।1। हे गुरो आप को विदित हो कि मेरा रोग श्रीमानों की पूरण कृपा सुदृष्टि से गुप्त हो गया है।2। आजकाल विद्याभ्यास सुविचार श्री मच्चरण कमलों में परम प्रीति का होना सो कुछ श्रेष्ठ प्रारब्ध फल की सहाय पहुंची है।3। सहर पानीपत के पोपों का समाचार।4। पोप लोग इन्द्र वरुणाग्नि सूर्य्यादिकों का परस्पर वाद विवाद वेद की सम्मति से मूर्तिमानों का कर्ति हैं।5। कि इन्द्र स्वर्ग में रहता है और अग्नि ब्रह्मलोक अर्थात् ब्रह्मा के पास रहता है और सूर्य्य लोक तो सर्व मनुष्यों को प्रत्यक्ष हि विदित है।6। सभ देव देहधारी हैं।। इन्द्र वरुणाग्नि सूर्य वृहस्पति विष्णु वायु शिव ब्रह्मा लक्ष्मी सावित्री सरस्वती गणेशादि देवों की मूर्ति वेदादि सत्य शास्त्रों में अनादि चली

आती है।7। उक्त पोप लोग कहते हैं कि तुह्मारे स्वामी जी मूर्तिपूजा को क्यूं निषेध कर्ते हें सो कहो। इन सब वार्ताओं के विषय में मैं नैं ओर श्रीयुत वावू ज्वालाप्रसाद जी ने पोपों का मत खण्डन किया।8। मृच्छिला धातु दार्णादि मूर्तावीश्वर वुद्धयः क्लिश्यन्ति तपसा मूढाः परांशान्तिन यान्तिते।।दोहा।। जो नर पूजहिं काष्ट पषाना।। सो उन से हैं अति अज्ञाना।।9।। पोपों ने बहुत सा गडवड मचाया परंतु श्रीयुत चौधरी चिरंजीवलाल तथा श्रीयुत वावू ज्वालाप्रसाद जी ने कार्य एक पोपों को शिक्षा सहित वाक्यूं से चुपचाप करि दिये हैं और यह भी विदित कर दिया है कि कोई पुरुष श्रीयुत परपूज्य श्री जगद्गुरु श्री स्वामी जी की वार्ता कहैगा या काई ईश्वरानन्द सरस्वती को स्वपीडा से क्लेशित करैगा तो सरकार कंपनी की कचःरी में हम लोग तुह्म हो दंडाधिकारी कारवा देवेंगे यातैं तुम सब लोकों को उचित ह कि वेद के अनुकूल हो के वार्तालाप करो सो हे परमपूजनीय परम सत्य गुरू आपके चरण कमलो की दया ईहां भी छाय गई।

मेरे पर भवच्चर कमलो की धूरि स्वप्न में वर्षि है सो मैंने खूब स्नान किया ईतनें मैं मेरे नेत्र खुल गये भाद्र पद वारस के रोज स्वप्न हुआ और त्रयोदशी के रोज पत्र आप के चर कमलों में भेजा गया भादवा वदी 13।

ईश्वरानन्द सरस्वती सहर पानीपत जिला करनाल तसील थाना सर पानीपत उक्त पत्ते से जब कहीं यात्रा की तैयारी होय तब एक पत्र मुज को भी श्रीमानों की यात्र विषय का मिलै

श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी जी से ईश्वरानन्द का बहुधा नमस्ते

संवत् 1940 भा० ब० 13 **ईश्वरानन्द सरस्वती**

(11)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धि श्री मत्कृपासिन्धु ष्वार्त्तिध्वान्तरविष्यलम्भूरि शोमत् प्रणामाः स्युर्गुरुपादयुगे ष्वितः। श्रीमत्परमंहसपरिब्राजकाचार्य्य वर्य्य श्री स्वामी जी 108 श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरणकमलेषु वहुशः नमस्ते।।

समाचार स्वचरण कमलेषु विदिहो पुस्तक महाभाष्य का मैंने 18) रुपयों से लयी थी सो मेरे पास तैं जाति रही।। जिला सिरसा ग्राम फतियावाद का विद्यार्थी मनोर्मा का पढ़ने वाला था सो चोर के ले गया और सन्धि विषय तथा नामिक को छोड कर वेदाङ्ग प्रकाश भि महाभाष्य के साथ ही ले गया ओर कभी 2 यह कहा कर्ता कि मै सहर वीकानेर जाउंगा सो हे स्वामीन् आप से वीकानेर तो कछु दूर नहीं स्यायत पुस्तक मिल ही जाय तो मगधीश श्रीयुत

ज्ञानानंदजी से कह कर पुस्तक की खबर सार जरूर मंगवायो जी।

शरीर से काल था।। मुख पर माता के रण थे। दक्षिण पर से कछू लगड़ाता चलता था। नेत्र बहुत बड़े 2 थे। नाम संज्ञा पोप की विंझा कह कर बतलाता था संवत् 1940 भाद्रपद शुदी तीज को पुस्तक लेगया पोप लीला समाप्त मिति

श्रीमानों को विदित हो कि संधि विषय और नामिक तथा बृद्धिरादैच् से ले के मुखनासिकावचनोऽनुनासिक।।1।1।8 के सूत्र तक भाष्य किया और उक्त दोय पुस्तक समाप्त हुये 2 अब इन्होंसे अगाड़ी सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर तथा हे परमपूज्य परमकृपालु परमैश्वर्य्यवान्। वेदविद्याद्वारैसनातन-धर्मस्थापिताधिष्ठान आप की अत्युत्म करुणा से मेरा सब काम सिद्ध होता है परन्तु इस काल में जैसा प्रत्यवाय पड़ा है कछू लिखने के योग्य नहीं पठन पाठन विषय पुस्तक विना सर्व वन्ध है आप आज्ञा देवो तो दीक्षतकृत सिद्धान्त कोमुदी पुनः प्रारंभ कर दूं वा नही जैसी श्रीमानों की आज्ञा होवे वसाही पत्र द्वारय शीघ्रहि विदित कर दीजियेगा जब तक परमपूज्य मानों की आज्ञा पूर्वक पत्र मुज को नहीं मिलेगा तव तक व्याकरण विषय पर पठन पाठन को कभि प्रवृत्त नही हुंगा वडा भारी प्रत्यवाय आय कछू लिखने के योग्य नहीं परमपूज्यनीय श्री मानों को उक्त वार्ता पत्र द्वारै सव विदित हों।

क्या कहु कछू कही न जाय अमृत तजि विषपीयोहि आय।।
देख्यो पोप एक बहुरङ्गी लयी चोर मम पुस्तक चङ्गी।
अैसो दुष्ट अधम कुल नाहिं हरी भाष्य पानीपत माहिं।।
सुनहू नाथ मम दीन दयालु वेदाङ्ग अन्य क्या पठूं क्रिपालु।।
उपज्यो यह मोकों संदेहा प्रभु ताको कीजै अव छेहा।।

श्रीयुत रामनन्द व्रह्मचारी जी से ईश्वरानन्द का वहुशः नमस्ते ऋग्वेद का कौंन सा अष्टक तैयार हो रहा है सो लिखना जी

भा० शु० 13 संवत् 1940 ईश्वरानन्द

(12)

।। ओ३म् ।।

श्रीमान परमपूज्यनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य वर्य स्वामी जी श्री 108 श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु वहुशः नमस्ते।

मेरा समाचार श्रीमानों को प्रकट हो विद्याभ्यास जैसा आषाढ़ वदी द्वितीया से लेके भाद्रपद वदी 19 तक चला जाता था वसा ही अब प्रारंभ हो गया है और स्वामी आत्मानन्द सरस्वतीजी सहर सिमलै सैं सहर पानीपत को आने

वाले हैं और मेरा व्यवहार पठन पाठन तथा पुस्तक खान पान आदि क्रिया वहुत रीति पूर्व मुज को सिद्ध है और बवासीर का रोग जाता रहा नीम की निमोली खाने से

आ० व० 9 ईश्वरानन्द[1]

(13)

ओ३म्

सिद्धि श्री परमपूजनीय परमउत्कृष्ट पूरणदयालु सकलमनुष्यरक्षक सर्व जगद्धितैषी चतुर्णां वेदांनामप्यवलोकनेषु सकल जगद्गुरु परमंहसपरिव्राजकाचार्य्य वर्य्य श्री मद्गुरु श्री स्वामीजी श्री 108 श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी परमपूज्य चरणकमलेषु वहूशः नमस्ते।

समाचार श्रीमानों को विदित हो कि इस वर्तमान समय पर सहर पानीपत के लोगों से आर्यसमाज की स्थापित होने पर अत्युत्मता पाई जाति है। अव इहां पर समाज भिः शीघ्र तयार होने वाला है। हे परमपूज्यनीय परमैश्वर्यवान् जगद्गुरु आपकी करुणापूर्वक इहा के लोगों का भी शीघ्र ही सुधार होने वाला है। परन्तु इस जगः पर पोपलीला बहुत दिवस से आर्य्यों के आर्य्य स्वभाव को आच्छादित कर रही थी। सो अव ईन लोगों का हाउ और को को निकले चले जाते हैं और एक हाउ दूसरी कोको ये दोनूं पोपलीला वाचक हैं इहा श्रीयुत लाला कसुंभरीदास जी समाज के स्थापित करने पर कटिवद्ध हैं 1 दूसरे लाला सालगराम जी समाज की उन्नति करने वाले हैं 2 तीसरे लाला ताराचन्द 3 चौथे लाला मुलीधर 4 पंचमे गणेशीलाल 5 षष्ठ में लाला ज्वालाप्रसाद बाबू 6 सातवे श्रीयुत पण्डित श्रीनिवास जो कि समाज के पण्डित सबके अध्यापक रखे गये हैं।

श्रीमानों को विदित हो कि एक नवा समाज सहर पानीपत में भी हो गया है। रुपये 5) ऋग्वेदभाष्यभूमिका आप अवश्य ही भिजवाय दीजियेगा 1 आर्यदेश्यरत्नमाला दोय प्रति= और सन्ध्या की 2 प्रति।।।) और सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्यजुर्वेदादिकों के अंक भि समाज में आय करैं वैदिक यन्त्रालय प्रयाग प्रबन्धकर्ता के हस्तै आया करैं आप आज्ञा दे दिजियेगा कि मुंशी समर्थदास ईस समाज में पुस्तकों के अंक भेजा करें और ईहों के लोग मणीआडर द्वारै रूपया भेजा करैंगे मेरा शिष्टाचार मुंशी समर्थदान से जेष्ठ मास मैं प्रयाग जाने से नमस्ते भी बंध हो गई।

1. इस कार्ड पर डाकघर का मोहर 23 सितम्बर का है।

श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी को वहुश नमस्ते

श्रीमानों के हस्तै पुस्तक तथा आपका पत्र सहर पानीपत के समाज में सदैव आवता जाता रहगा तो हम लोगों को वहूत ही लाभ पहूचेगा।

जिला करनाल तसील थाना पानीपत

दुकान श्रीयुत लाला मुसद्दीलाल तथा कसुंभरीदास के पास संवत् 1940 आश्वनी वदी 11

ईश्वरानन्द सरस्वती
सहर पानीपत

और सहर सिमेले से स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी आने वाले हैं

(14)

ओ३म्

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य श्रीमच्छुद्धस्व रूप विद्या विनोद केषु स्वाश्रम धर्म मर्य्यादा परिपालन तत्परेषु श्री स्वामी जी श्री 108 श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु वहुशः नमस्ते श्रीमानों के पास जो पत्र हमारी तर्फ से भेजा गया है और उक्त पत्र द्वारै ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मंगवाने की जो आपसे प्रार्थना करी गई है सो जब तक हम लोग रुपये नहीं भेजैं तव तक हमारी तर्फ सहर पानीपत को पुस्तक रवानै नहीं करना जी रुपये आश्वनी वदि अमावस्या को भेजे जायैंगे और आत्मानन्द जी सिमले से इधर तीस क्रोश कालिका में विद्यमान हैं

आश्वनि व० 14 रविवार

ईश्वरानन्द
सहर पानीपत

श्रीमत् परमहंस परिव्राज का चार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ओर से

श्री० स्वामी ईश्वरानन्द के नाम पत्र[1]

(1)

(ओ३म्)

स्वामी ईश्वरानन्द जी आनंदित रहो

1. सब यंत्रालय के पदार्थ और नौकरों पर दृष्टि रखना कि नियमाऽनुसार सब काम होते हैं वा नहीं।

1. इस पत्र पर श्री० स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के हस्ताक्षर नहीं हैं ज्ञात होता है कि यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जो स्वामी ईश्वरानन्द को भेजी गई थी।

2. जब कभी जिस किसी का व्यतिक्रम देखे तो जो शिक्षा करने से सुधर सकता हो तो वहीं सुधार देने न माने तो हम को लिखना।।

3. प्रति अठवारे वहां का वर्त्तमान, पत्र द्वारा हम को भेजा करना और यथाशक्ति जो कोई पुस्तक छपे उसको दूसरे के साथ मिल कर वा स्वयं शोधा करना।।

4. और जब कभी तुझ को व्यतिक्रम विदित हो तब वा जब हम लिखें तब अपने सामने डाक खुलवाना और पुस्तकालय तथा धन कोश और अन्य पदार्थों की सम्हाल से यथावंत् रक्षा करना।।

5. यावत्प्रबन्धकर्त्ता का व्यतिक्रम कोई विदित न हो तब तक उसके साथ मिल कर उसको सहायता देना और प्रीति प्रेम से यंत्रालय की उन्नति करते रहना 5) रुपये मासिक प्रतिमास यंत्रालय से मिला करेंगे **उनसे खान पानादि उचित व्यवहार करना और जब कभी अधिक व्यय की इच्छा हो तब हमको लिखना।।**

6. सदा व्याकरण पढ़ने में परिश्रम किया करना और नियत समय पर यंत्रालय का भी काम किया करना।

व्यायाम करना:-

7. **शरीर का सरंक्षण प्रातः व्यायाम भ्रमण सदा** शास्त्रों का चिन्तमन करना[1] और जब तक तेरे स्थान में दूसरा निज पुरुष न आवे तब तक कहीं न जाना धर्म से घर के समान काम किया करना। वैदिक यंत्रालय से वेदाङ्गप्रकाश के पुस्तक लेकर पढ़ा करना।

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में

श्रीस्वामी सहजानन्द सरस्वती के पत्रः-

(1)

ओ३म्

नमः प्रकृष्ट ज्ञानब्रह्म स्वरूपिणे

स्वस्ति श्री जगत्पुज्य गुरु गुरो जगद्गुरो परिव्राट् श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वामी दयानन्दसरस्वती चरणकमलेषु नरेन्द्रमुकुटमणिद्वितिरंजितेषु शिष्यसहजानन्दस्य प्रणतिराजयः

सम्भुलशंत्वत्र शम्पूर्वकमार्यजनैः सहसम्मेलनंजातं श्री मत्कृपयैव

1. ऋषि पठन-पाठन के साथ व्यायाम करने को भी उतना ही महत्त्व देते हैं। 'जिज्ञासु'

किमु श्रीमज्जगदुद्धारकर्त्तुस्ते चीत्रमिति सर्व स्वप्रकाशितस्य जगते न्यायाधीशस्याज्ञतमेमपि श्रीमतांकृपात्तयैव धन्योऽहम् किंजानाम्यहमज्ञोऽस्मि

सम्वत् 1939 फाल्गुन शुक्ल षष्ठ्यां बुधे सायं काले लिखितमिदम्पत्रमितिदिक्।

मार्च ता० 14 **अजमेर**

(2)

ओ३म्

नमस्ते जगदात्मने

फरीदकोट का महाराजा आर्यः–

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य दयानन्द सरस्वती स्वामिना महा विदुषां जगद्गुरुणाञ्चरणारविन्दम्भृशंवन्दे महत्पूज्य जगत्सुखप्रद मत्रशंश्रीमत्कृप-यैवययास्वर्प्रकाशितास्सर्वेसमुलसन्त्यहमपितयैवसैव मयि सदासतु। महाराज आप के अनुग्रह से इन दिनों में **महाराज विक्रम सिंह फरीदकोटाधीश के व्याख्यान श्रवण कराता** हूं उक्त वर राजवंसाधीश ने मुझको फीरोजपुर से बुलवाया है आपका समाचार प्रीतिपूर्व पूच्छ हम से अतिशय सन्तुष्ट लाभ हुये और कहने लगे कि मैं श्री स्वामीजी महाराज के संदर्शन के अभिलाषी हूं[1] और बड़े श्रद्धालु हैं तथा शूर वीरतादिक गुण संयुक्त है आगे जयसा इहां का समाचार होगा वयसा आप को लिखेंगे अन्तर्य्यामिष्वधिकं किम्

आप का दास–

सहजानन्द सरस्वती

श्री स्वामी जी महाराज एक पत्र का भी तो दास के उत्तर प्रदान कीजिए

सन् 1883 सम्वत् 1940 जेष्ठ शुक्ल 13

(3)

॥ ओ३म् ॥

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य दयानन्द सरस्वती स्वामिनां महाविदुषां चरणसरोजरजोऽहम्वन्दे

कृतशास्त्र विचक्षण वेदवरं वहुतेज प्रकाशक भाष्यदृढम्
क्षितिसूर्य्येवराजति धामशतं भववञ्चितज्ञानगवुद्धिप्रदम्।
भुविभुसुरवन्दितदिव्यमते भजतस्तवकिन्नहि मुक्तिपदम्

1. अंग्रेज़ ऋषिदयानन्द आर्यसमाज का गौरव न सह सके। 'जिज्ञासु'

दयानन्दसरस्वति पादयुगं प्रणमामिनिरन्तर भावमयम् 2
शुभदायक भद्रसरोजरजः परिपूरणवांच्छित कामवनम्
प्रणमामिनिरन्तरभावमयं दयानन्दसरस्वति पादयुगम्3
कविभिरिडितं नृपतेः सुखंद मुकुटार्च्चितवैद्युतभाप्रभवम्
मणिचित्रितभासितसत्सुखदं प्रणमामिनिरन्तरभावमयम्4
कुशलं यदितोटकवृत्तमिदं शरणेतवगच्छतुपत्रमलम्
परिव्राजगुरोजगतः परिधेसहजेरिमत्रलवापुरतः5
वाण भांति श्लोक को श्रीमत्पठनविहेत
मत्युनमानविवेक युत वदगतदीननकेत।।
लोधियाना संज्ञकपुरतः पत्रं नदत्तं यतोहिदिनैकं निवासः
कृतोऽमृतसरोत्सवं द्रष्टुं तत्रतोऽगमम् अमृतसरमिदानी लवपुर
तःपत्रंप्रेषितम् निघण्टुपुस्तकं मुद्रितञ्चेद्यदिप्रेषयतुमाचिरम्

मई ता० ६ सन् 1883 सम्वत् 1940

(4)

ओं

सिद्धश्री 7 सर्वोपमेययोग्य पूज्यपाद जगद्गुरु श्रीमत्परमहंस परिव्रजकाचार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती चरणार्विदेष्वितं सहजानन्द सरस्वतीकृत प्रणतीतयं समुलसन्तु आपके चरण कृपा से आनन्दित हैं आप तो आनंदित स्वरूप है छावनी मैं तो पांच व्याख्यान दे चुके हैं और कल से शहर फीरोज़पुर में व्याख्यान देता हूँ यदि आपके पास निरूक्त निघण्टु छपकर आ गया हो तौ मेरे पास भेज दीयिजे नहीं छपा होय तौ आप कृपा कर शीघ्र ही छपाकर मेरे पास भेज दीजिये[1] इसके बिना मेरे को बड़ा हर्ज है और सत्यार्थप्रकाश छपा या नहीं सो लिखना इहां मुझ को बहुत मनुष्य पूछते हैं और चौधरी साहब की प्रार्थना है कि आप की स्थिति साहपुर में कब तक है और यहाँ से किस जगह जायँगे। तुलारामेण लिखितम्। यदि आप इनको अपने पास लिखने को रखें तो यह ब्राह्मण रह जायगा आप इसके वास्ते जीवन लिख दीजिये सन् 1883 मई ता० 30

आपका शिष्य
सहजानन्द सरस्वती
विष्णुसहाय की नमस्ते
चौधरी मंत्री आर्य्यासमाज। फीरोजपुर

1. ऋषि ने साधुओं को विद्या-प्रेमी स्वाध्यायशील बनाने की लहर चलाई। 'जिज्ञासु'

(5)

ओ३म्

श्रीमन्महोदय जगतपूज्यपाद श्रीयुतपरमहंपरिव्राजकाचार्य्य जगद्गुरू दयानन्दसरस्वति स्वामिनां महाविदुषां चरणशरोजरजांसि शिरसादधामः श्रीमत्कृपयात्रभव्यामस्ति श्रीमन्तम्भव्यस्वरूपिणंध्यायामस्सदायतोऽस्माकं श्रेयएव फरीदकोटतोनोमुल्कतानोस्थिती मिदानामेदर्थं प्रेषितंपत्रं श्रीमतां संनिकटे श्रीमान्विजानातु फरीदकोटाधीशोऽजमेराख्यम्पुरंप्राप्तवान्स्वपुत्रपाठयितुमुक्तं गवर्णमेण्टेणस्वकीयम्पुत्रमानीयोक्तपुराख्येरक्षतुयतोहितेनसह पुराविचारोयातः मांप्रत्युक्तं भवानतिष्ठतु चतुर्मासंमयोक्तं कस्मिश्चित्काले आगमनं भवेत्तदास्थास्यामि इदानींनो सर्वान्तर्य्याभिनेष्वधिकं किम्

आप का दास **सहजानन्द सरस्वती** मुलतान से
सम्वत् 1940 जोलाई ता० 5

(6)

ओ३म्

सत्यधर्म्म प्रदम्वेद नित्यवेद प्रकाशकम् तत्सभाष्येण सदज्ञान नाशयन्तम्परि प्रजन् श्रीमन्महोदय जगद्गुरु परमहंस परिव्राजकाचार्य दिग्विजयार्कीय स्वामी दयानन्द सरस्वतीनां चरणसरोज मकरन्दं शिरसा दधामः महाराज आपकी कृपा से जौलाई ता. 27 को मुलतान से आर्यसमाज सक्खर पहुचे इहां का समाचार बहुत अच्छा है तथा मुलतान का भी परन्तु विदेशीय सब इहां का समाजस्थ हैं और इहां का स्थान अतिशय सुशोभित नदी विमानादिक से हो रहा है मैं व्याख्यान दे रहा हूं आपके कृपा से यदि इहां के रईश समाजस्थ हो जावें तो आश्चर्य नहीं क्योंकि पां चार 5-4 यहां के भद्र पुरुष नित्यप्रति प्रश्नोत्तर द्वारा संदेह निवृत्त कर रहे हैं महाराज और जो कुछ समाचार वह पीछे लिखेगे।

सम्वत् 1940 सन 1883 जोलाई-ता० 29

आपका दास
सहजानन्द सरस्वती
श्रीमत्प्रेषितंपत्रपठनेनैव महानान्दोजातः

(7)

ओ३म्

श्री मदन वद्यविद्यासन्धारभूयिष्टविद्वन्मानसराजहंसेषु वैदिकवाक्योपदेशेन पवित्रीकृतधरित्रीतलेषु श्री मत्परमहंस परिव्राजका चार्यदयानन्द सरस्वती

दिग्विजयार्क्कीय स्वामिषु मदीया भक्तितमा सदा भवतु यत ईश्वराख्यं लब्धम् विभोशिकारपुरस्थं विद्धि निवासं मदीयं शिकारपुर में भी समाज अस्थित होगआ आपकी कृपा से इहा का प्रधान चाण्डूमल भाटिआ जज साहेब का वकिल मसन्द प्रीतमदास मन्त्री विदित हो कि आपकी सन्ध्या बनाई हुई उसकी **उलथा अंगरेजी में भ्रष्टार्थ संयुक्त छपवाइ लाहोर वालेन उसमें अर्थ किआ है कि पूर्व दिशा में बैठ कर सन्ध्या करना ऐसे 2 अर्थों पर** बहुत मनुष्य संका करते हैं[1] उसमें वहुत जगह अनर्थ किया है आप एक प्रति मगवा कर देखिए सब विदित हो जाएगा आपका कर कञ्जाकिंत पत्र एक मेरे पास आया सं. 1940 अस्त 12

देशसिंध

आपका दास

सहजानन्द सरस्वती-सिकारपुर

(8)

ओ३म्

आश्चर्य मद्वितीयं हि पूर्ण विद्या निधिम्बिभो। जगद्गुरुद्धार कर्तार मखण्डन ज्ञान दायकम।1। धर्म्म सेतु नियन्तारं ज्ञानगम्यं सतां वसो। दिव्यमूर्त्तं समाधिस्थं निर्धूतमनोमलम्।2। नित्यमुक्त स्वभावस्थं सच्चिदानन्द लक्षणम्। सर्वबोधोदयं चित्रं नौम्यभिक्ष्णं जगज्जितम्।3। शिकार पुरतोऽगमंमूलत्राणे च संस्थितिः। जाताकिलाद्यकिञ्जाने गमिष्यामीति तद्विद।4। अत्रत्योहि समाचारो वर्त्तते शुभवत्तरः। सहजेरित मिदं चेद्गच्छत्वा सुजगत्पदम्।।5।।

महाराज सखर का भी समाचार अच्छा है अब आप की कृपा से यदि झंग से लोगों ने बुलवायां तो मैं झंग जाऊंगा वहाँ पर भी समाज स्थापित लोगों ने करने को चाहता है अयसा श्रवण करन में आया तब मुलतान सभासद से एक पत्र लिखवा कर भेजा है परन्तु जबाब नहीं आया है और शिकरापुर में जो समाज हो गया सो तो आपके चरणाविन्द में पत्र द्वारा अर्पण हुआ है।

सर्वान्तर्यामिनि किम्वदामीत्यलम्

आपका दास

सहजानन्द सरस्वती

सं० 1940 सितम्बर ता. 11 मंगल

1. पूर्व दिशा में बैठकर सन्ध्या करने का अंधविश्वास न जाने किसने फैलाया। 'जिज्ञासु'

(9)

ओ३म्

सत्यधर्म्म नियन्तारं यथान्यायं नचान्यथा
जनेभ्योहि दयालुत्वं प्रकाशयन्वै स्वभाजम्1
सर्वबोधोदयं नौमिगीः पतिं शरणं सताम्॥
ततानविजयं यश्च विरूद्धवेदधर्म्मतः2
देवार्ह देव पूज्यंतं सर्वज्ञं ब्रह्मसाक्षिणम्॥
नित्यशक्त्या गुणैर्वापिभ्राजमान मखण्डितम्3
जगद्गुरो जगज्ज्ञानं जगत्सुख प्रदायकम्॥
जगदाधार जगत्सार महदूषण छेदक्4

महाराज इन दीनों में गुजरात में हूं यहा का समाज भी बहुत हीं टुट गई थी परन्तु श्रीयुत वावू दयाराम मास्टर मुलतान से आकर बहुत तरकीव की है गुजरात समाज की, और झेलम समाज भी टूट गइ है और ओजिरावाद[1] की समाज भी टूट गई क्योंकि विना उपदेशक समाज क्योंकर अस्थिर रहै यहा पर कोई समाज ऐसी नहीं जो एक उपदेशक समाज से रखकर समाज से उसको उपदेशार्थ खर्च दे। जो हरेक समाज में उपदेश करता रहै तो कभी समाज में हानी नहो दिन प्रति दिन उन्नत्ति होती जाए कभी समाज ऐशी दशा की प्राप्ति हो कभी नहीं यह सब प्रबन्ध लाहोर समाज को करना चाहिए क्योंकि सब समाज उसी के आश्रय है इस वास्ते आप वहां के प्रधान को लिखिए कि जो समाज टूटती जाए उसको समाज से खर्च दे उपदेशक भेज वहा पर उपदेश करावे कि समाज में दिन 2 उन्नत्ति हो वाबू दयाराम जी के जैसा तन मन धन से प्रीति समाज की उन्नति में है वैसा दो चार पुरुष पुरुषार्थी हो तो ये समाजैं क्या अनेक समाज नवीन न होती जाए पंजाब भर में जैसा कि वावू मग्गूमल शखर में और वावू विष्णु सहाय फीरोजपुर में फीरोजपुरस्थ सभासदों के पुरुषार्थ से महाराज फरीदकोट के उपदेश हुआ जब ऐसे 2 **श्रद्धालु हो तो अवश्य सर्वत्र लाभ हो और अमृतसर मे मुरलीधर[2] अत्यन्त श्रद्धा इन सबको देखने** मे आई देशोपकार तथा समाजिक विषय में श्रीयुत महाराज फरीदकोट ने नमस्ते आपको की है और मुझे 50 रुपै दिआ सो फीरोजपुर में जमा है समाज में

सम्वत 1940 सन 1883 अक्टूबर ता० 9

आपका दास **सहजानन्द सरस्वती**

1. यह महाशय कृष्ण जी का नगर वज़ीराबाद था। 'जिज्ञासु'
2. यह उस युग के कर्मठ विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी थे। 'जिज्ञासु'

(10)

॥ ओ३म् ॥

आप्तं चिन्तश्रवस्त मोनिरस्तंसत्यं परंधीमहि वेदादिष्वपलब्धिकारणतमं सूर्य्येवविभ्राजकम् विद्यासुसकलासुपूर्णप्रभुतांशान्तं यतीनांयतिम् निर्जीत्यखलुसत्यशास्त्रविद्रुहः काशीस्थजान्दिग्जान् नीत्यास्वस्सकृतास्त एवतस्मिन्नारूढसत्पन्थिनः कारूण्यैकनिधिं समस्त जगता मेकं विशुद्धं वरम् निर्धूतंसकलंभ्रमंहिमहताम ज्ञानजं कल्मषंदत्ता तेभ्योऽविद्यया विरहिता विद्याचतत्संछिदा 2 आर्य्यावर्त्त पतिंहियेन कुशलं लब्धंविलुप्तंधनं तन्नित्यंसमदर्शिनंचसततं सेब्यं जनैः संर्वदा संत्यज्य मदमोह मान सहितमागच्छत तत्पदं पाण्डित्यं किमुब्रह्मशास्त्र रहितं कस्तेन संस्पर्द्धते। 3 ब्रह्मस्थसद्गुरोनुनंमूलत्राणा-ज्जगत्पते गुजरावालकेवासः जातोममसुनिश्चितः 4 शमत्रकृपाचार्विनुवर्त्तते श्रीमतः किल सहजेरित्मिदम्पत्रंगच्छत्वासुजगत्पदम्॥5॥ झंगतः पत्रं न प्रेषितं तत्रस्थैः अतएवतत्रगमनं न कृतम् श्रीमतः दर्शनंकदाभविष्यति ममचित्तस्य वृत्तिर्महत्पदरजप्रवृत्ता सं० 1940

आप का दास
सहजानन्द सरस्वती
गुजरावाला अकतूबर ता० 2

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में श्री पण्डित भीमसेनजी के पत्रः-

(1)

सम्वत् 1938 आश्विन शु० 6 गुरु

श्रीमन्महाराज बहुशोऽभिवादये

जो 2 पुस्तक आपने मंगाये हैं वे भेजे जाते हैं रसीद में संख्या भी लिख दी है। और आपकी प्रथम पारसल कि जिस की अब विलटी भेजी है मिल गई उसकी रसीद भी भेज चुका था ऋ० यजु० के पत्रे और अव्ययार्थ आये उनकी भी रसीद आपके निकट भेज दी पहुँची होगी। और यजुर्वेद के पत्रे 162 से 187 तक भेजता हूं। और स्त्रैणताद्धित के थोड़े से पत्रे भेजता हूं कि आप देख लेवें। इस विषय में मैं लिख भी चुका हूं कि इन पुस्तकों के इस प्रकार शोधने में वेदभाष्य की भाषा बनने में हानि होती है। अब आप विचारलें

कि शोधना चाहिये वा नहीं। जो वेदभाष्य का सा शोधना इन व्याकरण के पुस्तकों का भी हो तो मैं भाषा बना सकता हूं कि जितनी आप **चाहते हैं और देख के प्रसन्न रहें। मुझ को बड़ा शोक यह है कि आप मेरे काम को देखते नहीं। दिनेशराम आदि लोगों ने जैसा काशिका में लिखा है वैसा ही इन पुस्तकों में लिख दिया बहुधा तो काशिका का संस्कृत ही रख दिया है।** उस में बहुतेरा महाभाष्य से विरुद्ध भी है। किसी वार्त्तिक वा कारिका का अर्थ नहीं लिखा बहुतेरे सूत्र जो मुख्य लिखने चाहिये नहीं लिखे बहुत से वार्त्तिक कारिका भी छूट गई हैं कि जो अवश्य लिखनी चाहिये यह हाल मेरे बनाये संधि विषय नामिक और कारकीय मैं भी कही आपने देखा बराबर लिखने योग्य बातों लिखता गया। अब छप गये पर भी परीक्षा हो सकती है कि सामासिक और कारकीय में कितना अन्तर है। आप मेरे काम को देख के एक बार अकस्मात् जयपुर में प्रसन्न हुए तब इनाम दिया और कहने लगे कि ले भाई भीमसेन चाहे रहो वा जाओ यह देते ही हैं फिर अजमेर में चलते समय इस प्रतिज्ञा पर कुछ दृष्टि न की अस्तु मुझ को इन बहुत बातों से प्रयोजन नहीं। अब आप जैसी आज्ञा देवें मैं करने को उद्यत हूं। आज्ञा पालन भी मैंने बहुत दिनों से की और अब भी जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूंगा। जो भाषा ठीक-ठीक चाहें तो वेदभाष्य का सा शोधना इसका भी कर सकूंगा। वेदभाष्य में इतना शोधना होता है कि भूमिका कही छूट गई किसी मंत्र का अन्वय छूट गया बना दिया। किसी पद का अर्थ पदार्थ में रह गया रख दिया। बहुतेरे पद पदपाठ में नहीं होते मंत्र देख के रख देता हूं। बहुतेरे स्वर अशुद्ध होते हैं बना देना। वाकी कम्पोस में जो अशुद्धि हो। अब आप उत्तर शीघ्र देवें। और मैं यहां दिन का और 8 घंटे का ही नियम नहीं समझता रात्रि को भी बराबर काम करता हूं। और बिगड़ना बनना भी इस काम का यही जानता हूं कि मेरा ही है। इति शमस्तूभयत्र।

भवदनुग्रहाकांक्षी
भीमसेन शर्म्मा

[1]यजुर्वेद की संहिता के 3 पुस्तक जो रावसाहब बहादुरसिंहजी के समीप भेजने को लिखा सो मूल लखनऊ के छापे का वा महीधर का टीका वाला कलकत्ते के छापे को भेजा जावे सो लिख दीजिये। और राव सा० जी के लिये जो पुस्तक लिखे सो इसी वंडल में भेजते हैं उनको आप देदीजिये। आगे जो 2 छपेंगे भेजा करूंगा। प्रबंधकर्त्ता **दयाराम शर्म्मा**

1. पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही वैदिकयन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता दयाराम शर्म्मा की ओर से पण्डित भीमसेन जी के अक्षरों में इस पैरे का लेख है।

[1]पंडित सुन्दरलाल वा वालमुकन्द वा दयाराम की नमस्ते ता 28.8.81

(2)

वैदिक यन्त्रालय प्रयाग

संख्या 275 ता० 27 फ० सन् 1882

नमस्ते!

भगवन् प्रतिष्ठित आचार्य्य अभिवादये

पत्र आपका आया हाल विदित हुआ। रामाधार वाजपेयी लखनऊ ने जो हिसाब जमा खर्च और वाकी का भेजा है उस हिसाब के रजिष्टर यहां नहीं हैं मेरठ में हैं वे रजिष्टर आवें तो मेल किया जावे। छपने के विषय में भैरों कम्पोजीटर जब से चला गया तब से कम्पोजीटरों का प्रबन्ध ठीक-ठीक नहीं चला इसी से कम छपा अब ता० 1 मार्च से पं० देवी प्रसाद ने स्वीकार किया है कि हम प्रतिदिन देखकर प्रेस का प्रबन्ध करेंगे। सो अब अगले महिने से जिस महिने से जितना छपेगा सकारण आप को लिखा जावेगा। और इस महिने के भी हिसाब के साथ लिखेंगे। अब आप भी कापी शीघ्र भेजा करें ऋ० की कापी के लिये आप को कई बार लिखा अब तक नहीं आई जब कापी न होगी तो भी छपने में हानि हो सकेगी। पुस्तक मंगाने के विषय में आपका एक ही पत्र आया था। उसको देखकर शीघ्र ही पुस्तक भेज दिये आपके पास पहुंचे भी होंगे। परन्तु प्रथम पत्र में बीस-2 लिखे थे अब दश 2 लिखे हैं गोकरुणानिधि अब नहीं रहा। और शिक्षापत्री नहीं भेजी थी सो अब 1 भेजते हैं। वेदभाष्य का मासिक अंक यजु० 34/35 और यजुर्वेद के पत्रे भाषा बना के 338 से 363 तक भेजता हूं बाकी पीछे भेजूंगा।

भवदाज्ञानुसेवी

भीमसेन शर्म्मा

[2]पहले पत्र मे शिक्षापत्री नहीं लिखी थी दूसरी चिट्ठी मे हे सो जाननो-और सेवकलाल जी को कागज का हिसाव भेजदीना है जो बिनो ने मागा था और मुंशी इन्द्रमणी से मे ने तगदा किना तो विनो ने जवाब दीया कि हम ने पार साल के अघन तक का हिसाब आगरे में स्वामी जी से कर

1. यह पैरा दूसरे प्रकार के अक्षरों में है
2. पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही इस पैरे का लेख अन्य प्रकार के अक्षरों में है। लेख के अन्त में लेखक का नाम नहीं है परन्तु अनुमान से ज्ञात होता है कि यह लेख वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता का होगा।

लिना है सो आपने क्या वसूल वाकी कीना है और मै विन से कब से हिसाब रखू सो लिखना और लाला मदनसिंह वी०ऐ० शाहावाद[1] जिला अम्वाले के कहते है कि स्वामी जी को लाहौर में आये थे तब मैंने 2।) विन को दीया था सो आप कृपा करके लिखना मेरे यहां ना अंक में छपा ना वही मे जमा है ता० 11 अप्रेल सन 80 से लेके आज की है वही जमा खर्च की आगे कि मेरठ में है–

(3)

(ओ३म्)

श्रीस्वामी जी महाराज पत्र आप का आया हाल विदित हुआ आप की शिक्षा तो मेरे लिये अमृत है। भाषा के पत्रे बना के एक मास में एक बार मासिक अङ्क के साथ भेजा ही करता हूं शिथिलता यही है कि गत महिने में भाषा कुछ कम भेजी सो श्री महाराज आप के लिये कई बार लिखा कि सब व्याकरण के पुस्तकों को देखकर आख्यात की नवीन रचना करनी पड़ी है। यह भी विचारा था कि शोधकर दूसरे से शुद्ध नकल करवा लूं तो मुझ को कुछ काल विशेष मिले और दो चार पत्रे शोधकर लिखवाये भी उस में मेरा परिश्रम तो कम न हुआ विशेष व्यय होने लगा तब अपने आप ही लिखने लगा दिनेशराम का लिखा नहीं शोधा उस के 2 पत्रे परीक्षार्थ भेजता हू ऋग्वेद के पत्रे जो आपके यहाँ से छपने को आते हैं उनमें विशेष अशुद्धि निकलती है और यजुर्वेद में इतनी नहीं इसका कारण आप जान सकते हैं ऋग्वेद के भी 2 पत्रे भेजता हूं देखिये इन में भी कुछ समय लगता ही होगा। मैं इस बात को निश्चय कहता हूं कि यदि यंत्रालय के कार्य के काल का जो नियम है उसी समय जो मैं काम किया करूं तो कभी काम न चले और बहुत सी गड़बड; हो अब मैं 364 से 415 तक यजुर्वेद की भाषा के पत्रे भेजता हूं आगे यजुः और ऋ० के पत्रे छपने के लिये जो तय्यार हों आप भेजिये। और इन मेरे भेजे पत्रों की परीक्षा करके लौटा दीजिये। गोकरुणानिधि छप रहा है अगले महिने में आप के पास पहुंचेगा और सब प्रन्नता है। आगे जो आज्ञा हो सो लिखिये। आख्यात के 12 फारम छप चुके हैं भ्वादिगण में थोड़ा ही वाकी है।

भवदनुग्रहापेक्षी

भीमसेन शर्म्मा

1. यह लाहौर समाज के स्तम्भ रहे। देशभक्त लाला रामप्रसाद आर्य नेता के ज्येष्ठ भ्राता थे। 'जिज्ञासु'।

श्रीमन्महाराज स्वामिन्नभिवादये

भगवन्—आप का एक कार्ड आया समाचार लिखा सो ठीक है मैं अपना काम सचेत किया करता हूँ। आप को भी मैंने एक कार्ड भेजा है उसमें स्पष्ट अभिप्राय लिख दिया है अनुमान है कि अवश्य पहुँचा होगा। ऋ० के पत्रे छपने को और भाषा बनाने के पत्रों के लिए लिखा था सो अभी तक नहीं आये जो कदाचित् भाषा बनाने को पत्रे न भेजें तो व्याकरण छपने के लिए यथावकाश शीघ्रतया करने परन्तु ऋ० के पत्रे के लिये शीघ्र अवश्य भेजने चाहिये। जितने पत्रे आपने यजु० अ० 14 भेजे थे वे सब वना लिये भेजता हूं 416 से 447 तक। विशेष आज्ञा हो सो लिखिये (ह० भी० श०)

[1]दयाराम—मासिक हिसाव और पुस्तकों के विक्री का और मा० वेदभाष्य का अंक और गोकरुणानिधि जो नई छपी है वह: और मुम्बई समाज में से किसी ने करनेल आलकट साहब कि खत कितावत छपवाने के लिये ये कागज भेजा है अङ्गरेजी का कि इस को तुम अपने यंत्राय में छपवाकर सब जघे भेजो और =) आन फी० पुस्तक वेचो सो यह कागज आप के पास मुलाजे के वास्ते भेजता हूं के इसलिये आप का पत्र मेरे पा कोई नहीं आया है ना इस्मे आपके हस्ताक्षर है मै विना आप की आज्ञा कैसे छपवा सकता हूं जो आप की आज्ञा छपने की होय तो आप इस कागज अङ्गरेजी पर हस्ताक्षर अपना करके यंत्रालय को लौटार दीजिये छापने को जब मैं छपवा सकता हूं जो आप की इच्छा ना होय छपवाने की तो आप इस कागज को मुम्बई समाज को देजिजियेगा और आपने वल्लभदास की चिट्ठी देखलीनी होय तो आप कृपा करके लौटार दीजिये।

ता० 4 । मई-सन 1882 ई०

(4)

भगवन् श्री स्वामिन् महाराज आप के निकट से अभी ऋ० के पत्रे छपने को नहीं आये कापी भेजने में ऐसी देर हुआ करेगी तो छपने में हानि होगी अब आप कृपा करके ऋ० की कापी छपने के लिये अति शीघ्र भेजें। और यहां अक्षर बन के यथार्थ काम कभी नहीं चल सकता क्योंकि यहां कम से कम चार पांच महिने में तो अक्षर तैयार होंगे और खर्च में कुछ बहुत भेद

1. पं० भीमसेन जी के उक्त पत्र पर ही अन्य अक्षरों में इस पैरे का लेख है पैरे के आरंभ में ही दयाराम का नाम है इस से ज्ञात होता है कि यह लेख वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता दयाराम का है।

भी नहीं पड़ेगा इसलिये सवासौ वा डेढ़ सौ रुपयों का दो फांड पूरे का अक्षर अवश्य लेना चाहिये और शीशा की भी अपेक्षा है जो अक्षर जिस समय कम पड़ता है वह मिस्त्री उसी समय ढाल देता है। इसके लिये शीशा भी अवश्य भेजना चाहिये। अब काम बहुत यथार्थ चलता है कर्त्ता और कर्म का वैगुण्य विशेष नहीं है केवल साधन के वैगुण्य से कमती है जब साधन भी यथार्थ होवें तो एक फारम प्रतिदिन निकल सके। इति। इस पत्र का उत्तर अति शीघ्र दीजिये क्योंकि आप के ही काम हानि होती है। तनखा अधिक दी जाती और काम कम होता है।

ता० 10 मई
ह० भीमसेन शर्म्मा
यन्त्रालय

श्री स्वामिन महाराज आपके 2 कृपापत्र आये उत्तर नहीं देसका पीछे से सब बात का उत्तर लिखूंगा आपने शीशे के भेजने का जो प्रबन्ध कि सो तौ ठीक है पर यहा का ढला हुआ अक्षर ऐसा अच्छा न होगा जैसा मुम्बई का इस्से प्रार्थना यह है कि यदि हो सके तौ नीचे लिखा हुआ टैप भिजवादैं तो वहत उत्तम होगा और जो संयुक्त अक्षर हुआ करेगे वा जिनकी कमी पडा करेगी वह यह वन जाया करेगे–पं० ज्वालादत्त को कल पत्र लिख भेजा है वह यहां रह कर 1 मांस पं० भीमसेन के साथ काम करे फिर यह प्रबन्ध रहा करै कि 1 पंडित आपके साथ और 1 यंत्रालय में और वर्ष दिन पीछै बदली हो जाया करे इस मै हमारा काम भी निकल जाया करैगा और वह भी 1 वर्ष तक अपने ग्रहस्थ में रह लिया करेगै।। शेष दूसरे पत्र में लिखूंगा और आप कृपा करकें श्याही भेजवा दीजिय छपने के लिये विलकुल नहीं है सो आप सेवकलाल कृष्णदास से कह दीजिये वें भेज देयेंगे।।

चरण सेवक
सुन्दरलाल

*जीविका शब्द का अर्थ मुख्य करके किसी प्रकार का उपकार होना है। प्रतिकृत्ति। प्रतिच्छाया। प्रतिबिम्ब। प्रतिरूपक। प्रतिछन्दक। प्रतिमा। इत्यादि शब्द पर्य्यायवाची हैं। और अन्य देशीय भाषाओं में (तश्वीर) (फोटोग्राफ) भी

* पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही इस पैरे का लेख है जिस्के अन्त में चरण सेवक सुन्दरलाल लिखा है। ज्ञात होता है कि यह वही रायबहादुर सुन्दरलाल हैं जिनके निरीक्षणाधीन वैदिक यन्त्रालय अनेक दिनों तक रह चुका है।

कहते हैं प्रयोजन यह है कि जिन स्त्री पुत्र आदि सम्बन्धी वा मित्रादिकों के साथ अत्यन्त प्रेम होता है उन के वियोग में उन के प्रतिविम्ब देखते और गुण कर्म तथा उपकार आदि का स्मरण करते हुए अपने चित्त में संतोष करते हैं और इस प्रकरण में यह बात विचारना चाहिये कि संसार में जितने दृश्य पदार्थ हैं उन सबके प्रतिबिम्ब होते हैं बहुतेरे घोड़े हाथी आदि जीवों की अतिदर्शनीय मृन्मय आकृति बना 2 कर बेंचते हैं वे जीविकार्थ पण्य होते हैं। और बहुतेरे द्वीप द्वपान्तर देश देशान्तरों तथा स्थान विशेष कि जो अतिदर्शनीय हैं उनके प्रतिबिम्ब मकान आदि में यंत्रित करा रखते हैं। उनके यथार्थ स्वरूप देखने में धनादि पदार्थों का अति गौरव होता है इस लिये उनके प्रतिबिम्बों को देख समझ के प्रसन्नता हो जाती है। और उन प्रतिबिम्बों में यथार्थ स्वरूपों का-सा व्यवहार भी करते हैं। और इस प्रतिबिम्ब विद्या से संसार के बहुत काम सिद्ध होते हैं परन्तु परमार्थ के साथ इस विषय का कुछ सम्बन्ध नहीं। इस सूत्र से बहुतेरे वैयाकरणों का यह अभिप्राय है कि जीविका के लिये जो पदार्थ हो और वह बेंचा न जावे तो उस अर्थ में कन् प्रत्यय का लुप् हो जावे। और (लुम्मनुष्ये) इस सूत्र से मनुष्य शब्द का भी सम्बन्ध यहां नहीं करते। सो ब्रह्मा आदि देवताओं की प्रतिमा जो कि मन्दिरों में बना 2 कर रखते हैं। उन से जीविका (धन का आगमन) तो है परन्तु वे प्रतिमा बेंचने के लिये नहीं हैं इसलिये उन्हीं का ग्रहण होना चाहिये। और इस सूत्र में महाभाष्यकार ने भी लिखा है कि जो धनार्थी लोग शिव आदिक की प्रतिमा बनाकर बेंचते हैं वहाँ लुप्त् नहीं पावेगा। क्योंकि सूत्रकार ने अपण्य शब्द पढ़ा है कि जो बेंचने के लिये न हो। अस्तु वहां लुप् न हो (शिवक) ऐसा ही प्रयोग रहे परन्तु जो वर्तमान काल में पूजा के लिये ही हैं वहां तो लुप् हो ही जावेगा। इस माहभाष्य से भी उन्हीं देवतों की प्रतिमा सिद्ध करते हैं। इस विषय में हम लोगों का भी यह अभिप्राय नहीं है कि ब्रह्मा आदि देवता नहीं हुए और उनकी प्रतिमा रखने और देखने में अधर्म्म होता है। किन्तु उन प्रतिमाओं की यथार्थ स्वरूप के समान सत्कार पूजा धूप दीप आदि से करते हैं और पूजा तथा दर्शनादि से परमार्थ सिद्धि और मुक्ति समझते हैं सो ठीक नहीं क्योंकि श्रुति और स्मृति दोनों से यह विपरीत है कि जो विद्या और आत्मज्ञान के बिना मुक्ति हो सके हां उन प्रतिमाओं को देख के उन लोगों के गुण कर्मों का स्मरण करके आप भी वैसे ही गुण कर्मों को धारण करें। कि जिस से उत्तम कहावें। देवता शब्द भी जहाँ चेतन व्यक्तियो के साथ सम्बद्ध होता है वहाँ मनुष्यों की ही संज्ञा होती है और वैदिक शब्द सब योगिक ही हैं देवता शब्द भी वैदिक है। इस सूत्र में मनुष्य शब्द की अनुवृत्ति जयादित्य आदि लोगों ने नहीं की। वे लोग देवता शब्द को मनुष्य से व्यतिरिक्त समझते हैं परन्तु

सामान्य ग्रहण होने से जो 2 प्रतिमा जीविका के लिये हो और बैंची न जावें तो उस 2 सबके अभिधेय में प्रत्यय का लुप् होना चाहिये। हस्तिकान् दर्शयति। कोई मनुष्य प्रतिबिम्बों को दिखाता फिरता अपनी जीविका करता है। बहुतेरे लोग प्रतिबिम्बों को दिखा कर ही जीविका करते हैं। वहां भी लुप् होना चाहिए। यह दोष जयादित्य आदि लोगों के अभिप्राय में मनुष्य शब्द की अनुवृत्ति न करने से आता है। और पूजा का अर्थ भी आदर सत्कार ही होता है सो चेतन के होने चाहिये। फिर महाभाष्यकार ने जो लिखा है कि जो इस समय पूजा के लिये है वहाँ लुप् होगा इस का भी यही अभिप्राय है कि जो मनुष्य की यथार्थ प्रकृति पूजा के लिये हैं उन से प्रत्यय करने में तो लुप् हो जावेगा। क्योंकि अच्छे पुरुषों की जो प्रतिकृति हैं उनके वेचने में सज्जन लोग बुराई समझते हैं। उन प्रियजनों की प्रतिमाओं को रखते और उनको देख कर संतुष्ट होते हैं। राम कृष्ण आदि भी इस संसार में एक अपूर्व पुरुष हुये हैं उनकी भी यथार्थ स्वरूप की बोधक प्रतिमा कोई पुरुष राखे और उनके गुण कर्मों का स्मरण करके अपने आचरण सुधारे तो कुछ बुराई नहीं परन्तु उन प्रतिमाओं से परमार्थ सिद्धि समझना ही अच्छा नहीं है। पाणिनि आदि ऋषि लोगों का अभिप्राय भी वेदों से विरुद्ध कभी नहीं हो सकता इस प्रकरण को पक्षपात छोंड़ वेदानुकूल सब लोग विचारें।।[1]

[2]जो कोई नोट वा विज्ञापन शास्त्रार्थ खंडन मंडन और धर्माधर्म विषयों का ज्ञापक हो वह हम को दिखलाये बिना कभी न छापना चाहिये यह मेरे पास भेजा सो बहुत अच्छा किया **जो दिखलाये विना छाप देते तो हमको इसके समाधान में बहुत श्रम करना पड़ता भीमसेन जो व्याकरणादि शास्त्रों को पढ़ा है उतना ही उसका पांडित्य है अन्यत्र यह बालक है इसको इस बात की खबर भी नहीं है कि इस लेख से क्या 2 कहां विरोध होकर क्या 2 विपरीत परिणाम होंगे।**[3] इसलिये यह नोट जैसा शोध के भेजा है वैसा ही छपवाना किमधिक लेखेन बुद्धिमद्वर्य्येषु

1. यह उस लेख का प्रूफ़ है जो पण्डित भीमसेन जी छपवाना चाहते थे जिसके कई स्थलों को काटकर तथा कई स्थलों में नई पंक्तियां जोड़ कर श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने शुद्ध किया है। यह शुद्ध हुआ लेख आगे पृष्ठ 74 पर छपा है। और यही शुद्ध हुआ लेख किञ्चित परिवर्तनों सहित वेदाङ्ग प्रकाश के स्त्रैणताद्धित नाम भाग के प्रतिकृत्यधिकार के पृष्ठ 144 में छपा है। शोक है कि श्री० स्वामी जी महाराज के शुद्ध किए हुए में भी परिवर्तन किया गया! न मालूम किस ने यह परिवर्त्तन किया।
2. उक्त प्रूफ के पृष्ठ पर यह पैरा लिखा हुआ है जो श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का है जो भविष्यत के लिए प्रबन्धकर्त्ता वैदिक यंत्रालय को सावधान करता है।
3. पं० भीमसेन व्याकरण जानता था, सिद्धान्त नहीं। यह ध्यान में रखना होगा। 'जिज्ञासु'

जीविका शब्द का अर्थ मुख्य करके जीवनोपाय करना है इस प्रकरण में सिवाय प्रतिकृति और मनुष्य के दूसरे की अनुवृत्ति नहीं आती। यहाँ प्रयोजन यह है कि जिन स्त्री पुत्र आदि सम्बन्धी वा मित्रादिकों के साथ अत्यन्त प्रेम होता है उनके वियोग में उनकी प्रतिकृति देखते और गुण कर्म तथा उपकार आदि का स्मरण करते हुए अपने चित्त में संतोष करते हैं। परन्तु इस प्रकरण में यह बात विचारना चाहिये कि संसार में जितने दृश्य पदार्थ हैं उन सबकी प्रतिकृति होती है वा नहीं। बहुतेरे घोड़े हाथी आदि जीवों की अतिदर्शनीय मृन्मयादि की प्रतिकृतियां बना 2 कर बेंचते हें वे जीविकार्य पण्य होते हैं। और बहुतेरे द्वीप द्वीपान्तर देश देशान्तरों में पति स्त्री पुत्रादि की प्रतिकृतियां रखते हैं परन्तु परमार्थ के साथ इस विषय का कुछ सम्बन्ध नहीं। इस सूत्र से बहुतेरे वैयाकरणों का यह अभिप्राय है कि जीविका के लिये जो पदार्थ हो और वह बेंचा न जावे तो उस अर्थ में कन् प्रत्यय का लुप् हो जावे। और (लुम्मनुष्ये) इस सूत्र से मनुष्य शब्द का भी सम्बन्ध न करके ब्रह्मा आदि देवताओं की मूर्त्तियां जो कि मन्दिरों में बना-बना कर रखते हैं। उनसे जीविका (धनका आगमन) तो है परन्तु वे प्रतिमा बेंचने के लिये नहीं हैं इसलिये उन्हीं का ग्रहण होना चाहिये। और इस सूत्र में महाभाष्य कार ने भी लिखा है कि जो धनार्थी लोग शिव आदि की प्रतिमा बना कर बेंचते हैं वहां लुप् नहीं पावेगा। क्योंकि सूत्रकार ने अपण्य शब्द पढ़ा है कि जो बेंचने के लिये न हो। सो ठीक नहीं क्योंकि यहां प्रतिकृति और मनुष्य शब्द ही की अनुवृत्ति है अन्य की नहीं । देवता शब्द भी जहां चेतन व्यक्तियों के साथ सम्बद्ध होता है वहां मनुष्यों ही की संज्ञा होती है और वैदिक शब्द सब यौगिक ही हैं देवता शब्द भी वैदिक है। जो इस सूत्र में मनुष्य शब्द की अनुवृत्ति जयादित्य आदि लोगों ने नहीं की यह उनको भ्रम है क्योंकि वे लोग देवता शब्द को मनुष्य से व्यतिरिक्तार्थ वाची समझते हैं परन्तु सामान्य ग्रहण होने से जो प्रतिकृत जीविका के लिये हो और बैंची न जावें तो उस सब के अभिधेय में प्रत्यय का लुप् होना चाहिये। और जहां कोई मनुष्य प्रतिकृतियों को दिखा वा बेंच के अपनी जीविका कोई मनुष्य प्रतिकृतियों को दिखा वा बेंच के अपनी जीविका करता है वहां लुप् न होना चाहिये। और पूजा का अर्थ भी आदर सत्कार ही होता है सो चेतन के होने चाहिये। फिर महाभाष्यकार ने जो लिखा है कि जो इस समय पूजा के लिये है वहां लुप् होगा इस का भी यही अभिप्राय है कि जो मनुष्य की प्रतिकृति पूजा सत्कार के लिये है उस से प्रत्यय करने में तो लुप् हो जावेगा। क्योंकि अच्छे पुरुषों की जो प्रतिकृति है उसके बेंचने में सज्जन लोग बुराई समझते हैं। **विश्वेदेवा सं आगत**

शृणुतेमꣳरुवम्। यह यजुर्वेद का प्रमाण है। **विद्वांꣳसोहि देवाः।** यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। **मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य देवो भव। अतिथि देवा भव।** यह तैत्तिरीय आरण्यक का वाक्य है। इत्यादि सब प्रमाण वचनों से विद्वद्व्यक्ति आदि का ग्रहण देव शब्द से होता है इसलिये पाणिनि आदि ऋषि लोगों का अभिप्राय भी वेदों से विरुद्ध कभी न होना चाहिये इस प्रकरण को पक्षपात छोड़ वेदानुकूलता से सब लोग विचारें।।[1]

(5)

ओ३म्

श्रीयुत महाराज गणशोऽभिवादये। ता० 3 नवम्बर

आपका पत्र आया समाचार विदित हुए यहां सब लोग प्रसन्न हैं आप भी होंगे।

ऋग्वेद के पत्रे जो आपने भेजे थे उनकी भाषा संस्कृत के अनुकूल कर दी उन 813 से 850 पत्रों को भेजता हूं और यजुर्वेद के 12 अ० में भी दो चार पत्रों की भाषा बनी है सो इस महिने की 15 ता० तक जहाँ तक होगा शीघ्र भेजूंगा और यह तो बात ठीक है कि मेरे पास से भाषा बन कर जब तक पत्रे न पहुंचेंगे तब तक वहाँ भी भाषा नहीं बन सकती। मैं जितना कर सकता हूं उसमें कालात्यय कभी न करूंगा। मेरे परिश्रम को आप छपे हुए पत्रे और कापी का मेल करने जान सकते हैं। इस बात का अहंकार नहीं करता किन्तु यह भी चाहता हूं कि आप जैसे ज्वालादत्त की भूल मुझ से निकालवा कर भेजा करते थे वैसे अब **मेरी भी भूल किसी से निकलवा कर भेजा करें जिससे आगे को सचेत होऊं।** और कार्य्य भी विशेष अच्छा होवे और अभी छपने के लिये यहाँ कापी विशेष है जब मंगाने की आवश्यकता होगी तब मैं आप ही विदित कर दूंगा। और यंत्रालय के सब प्रबंध निर्विघ्न चले जाते हैं।[2]

[3]आगे इस महीने की 1 तारीख से यह प्रबंध हुआ है प्रतिमास 25 फरमै और 2 टैटिल पेज छपा करें इसमें कमी होगी तौ नौकरो पर जुरमाना होगा और अब कुछ खच यन्त्रालय को अमले का 110) महीना हे और वनारस मैं 127।।) का खर्च था और 10 तथा 12 फरमे से अधिक किसी मास मैं नहीं निकले सो जो कुछ इसका नफा नुकसान है आप निश्चय करते रहैं।।

चर्ण सेवक **सुन्दर लाल**

1. पण्डित भीमसेन जी के भेजे हुए प्रूफ़ का श्री स्वामीजी महाराज द्वारा शोधा हुवा यह लेख है।
2. इस पत्र का अक्षर तो पण्डित भीमसेन जी का है परंतु पत्र के अंत में हस्ताक्षर उनका नहीं है।
3. पण्डित भीमसेन जी के पत्र के नीचे एक ही काग़ज़ पर यह पत्र राय बहादुर पण्डित सुन्दरलाल जी का है।

(6)

ओ३म्

सम्वत् 38 पौ० कृ० 11 — ता० 18 दिसम्बर

वैदिक यंत्रालय

प्रयाग

श्रीमहाराज अभिवादये

पं० भीमसेन की चिन्ताः–

पत्र आपका आया मेरे विषय में आपने लिखा सो ठीक है फिर ऐसा तो नहीं हुआ कि कुछ भी भाषा बना कर न भेजी हो पीछे जो 7 ता० दि० को पत्रे यजु० अ० 12 के और वेदभाष्य स्त्रैणताद्धित और हिसाब भेजा है उसकी पहुंच आपने नहीं लिखी कदाचित् पीछे पहुंचा होगा। और यजु० 12 अध्याय भी बड़ा है। स्त्रैणताद्धित की कापी यहाँ सब रक्खी है कदाचित् आप देखा चाहें तो भेज दिये जावें। और अभी स्त्रैणताद्धित छप चुकें कोई 15 दिन हुए हैं आप[1] 1।) महिना किस विचार से लिखते हैं उसका शुद्धि पत्र बनाया उसमें भी कुछ काल ही लगता है। अब आख्यातिक के 3 फारम छप चुके हैं। शोधना इसी का नाम है कि जैसी कापी हो उसमें प्रति पृष्ठ ड्योढ़ा तक काटा बनाया जावे। और जब 30 सूत्र लिखे हैं वहां (1) 28 सूत्र लिखे गये तो यह बिल्कुल लौट जाना नवीन बनाना है। **मुझ को इस बात की बहुत चिंता रहती है कि आप के नाम से जो पुस्तक बनते हैं। उनमें कुछ अशुद्धि न रहजावें और सबसे अपूर्व होवें। मेरे काम को देखने वाले पं० सुन्दरलाल जी। पं० देवी प्रसाद। और पं० दयाराम जी हैं परन्तु ये लोग शुद्ध अशुद्ध व्याकरण वा वेदभाष्य को नहीं देख सकते[1] इन बातों को आप अवश्य देखा करें स्त्रैणताद्धित को ही देखें कि इसका पूर्व रूप कैसा है और अब कैसा छपवाया गया जब तक व्याकरण के पुस्तकों के छपने में गड़ बड़ रहेगा तब तक वेदभाष्य की भाषा कम बनेगी।** अब इस महिने के अन्त में भी जो कुछ भाषा तैयार हो सकेगी भेजूंगा आगे आप जैसा कहैं उपस्थित हूं।

आप के लेखानुर कृदन्त आख्यातिक की अन्त्य में ही छपवाया जावेगा परन्तु इस विषय में पण्डित देवीप्रसाद आदि का विचार यह है कि जो विषय छपवाया जावे वह पूरा 2 छपे कुछ छूटे नहीं। सो कृदन्त विषय में भी कृदन्त

1. पं० भीमसेन को भाषा की शुद्धता की चिन्ता तो बहुत थी परन्तु धर्मच्युत होते देर न लगी। मनुष्य की गति। 'जिज्ञासु'

के सब सूत्र यथा क्रम से छपने चाहिये इस में जैसी आपकी आज्ञा हो सो किया जावे। और आख्यातिक को कुछ रोक कर बीच में अव्ययार्थ छपवा दिया है। बहुत शीघ्र इस महिने में आप के पास पहुंच जावेगा। परन्तु इसका नम्बर ताद्धित के आगे नवम पुस्तक रहेगा वा आख्यातिक नवम रहेगा सो आप कृपा करके आज्ञा शीघ्र देवें इति–

आपका सेवक
भीमसेन शर्म्मा

श्रीगुरुचर्णेषु न तयः

[1]आप के 2 पत्र और 1 कार्ड आया और श्रीयुत आर्य्य कुल दिवाकर महाराणा जी ने जो सतकार किया उस के सुन्ने से अत्यन्त आनन्द हुआ अब के मास के अंक मैं उनकी प्रसंनसा का विज्ञापन दिया जायगा और जो पुस्तकें आपने मगाई है आज इन्दौर को भेजी जायगी माघ के मेले मैं जो कोई विद्यमान पुरुष मिलैगा तौ उसको नोकर कर लैगे

आपने जो भीमसेन के मध्ये लिखा था सो उसका पढ़ कर वह वुहत उदास हुऐ थे पर मैंने उसको समझा कर राजी किया असल वात यह है कि वुह बैठा नहीं रहता है न सुस्ती करता है पर जो पुस्तक व्याकरण की आती है उनको उसको फिर कर लिखना पढ़ता है यह काम हर ऐक मनुष्य का नहीं जिस ने आप से विद्या पढ़ी होय और आपका अभिप्राय जाने वह ही इन पुस्तकों को शोध सकता है और आप को यह भी लिखना मुनासिव नहीं कि 5) महीना शोधने का मिलता है जब ज्वालादत चला गया उस समय मैं सिर पटक कर गया और कोई योग्य पुरुष पुरुफ शोधन को 10) वा 15) महीने को भी न मिला और जितना काम भीमसेन करता है उतना काम करने वाला अब 20) तथा 25) महीने से कम को नहीं मिलेगा इससे मैं उसको बड़ी प्रीत से रखता हूं आपके पास जब कुछ भाषा आदि वस्तु न पहुंचे आप निश्चय लिख भेजा कीजिये कि अमुक वस्तु नहीं आई सो जल्दी भेजो और जहां तक होगा वुहत शीघ्र आप की आज्ञा का पालन किया जायगा परन्तु यह न लिखना चाहिये कि अमुक मनुष्य कमचोर है वा हरामखोरी करता है क्योंकि ऐसे अप शब्द के सुन्ने से उसकी प्रीति आप से हट जाती है और वैमनस होकर वुह चला जाता है फिर हम को वैसा मनुष्य मिलता नहीं इस

1. पण्डित भीमसेन जी के पत्र के नीचे एक ही काग़ज़ पर यह पत्र राय बहादुर पं० सुन्दरलालजी का है

में यन्त्रालय के प्रवंध मे हरज होता है नही आप सर्वस्य मालक ही है जिस का अपराध देखै निश्चय लिखें कोई क्यों न हों पर आप एसा पत्र अलग मेरे नाम भेज दिया करैं जब मैं उस का उत्तर लिखू और मेरा उत्तर यथोचित न समझा जाय तव आप जी चाहै जिस को वैसा लिखै। **महाराजा हुलकर ने 1 वर्ष से वेदभाष्य वंद कर दिया और जो रुपैया चाहिये सो भी नहीं भेजा**[1] यदि उनके कारवारी से मुलाकात होय तो जिकर कर देना।

आपका चरण सेवक

सुन्दरलाल

(7)

वैदिक यन्त्रालय प्रयाग

संख्या 48। ता० 1 फरवरी सन् 1882

श्री स्वामी जी महाराज जी योग्य पं० सुन्दरलाल वा दयाराम तथा भीमसेन का अभिवादन विदित हो।

पत्र आप का आया हाल जाना। अब कुछ पुस्तक 20 पोंड के कागज पर छपते हैं। पहिले 24 पौंड पर वेदभाष्य और 20 पोंड पर अन्य पुस्तक छपते थे सो ज्ञात हो। और आप की आज्ञानुसार वर्ष 2 का पुस्तकों का हिसाब तैयार करके भेजा जावेगा। परन्तु प्रयाग में यन्त्रालय 1 अप्रैल सन् 1881 को आया है सो अब 30 अप्रैल सन् 1882 को वर्ष पूरा होगा। सो 1 मई तक मैं हिसाब तयार करके भेजूंगा। लाल वल्लभदास जी का हिसाब पिछले रजिष्टरों में मिला नहीं है इस से नहीं लिखा अब फारसी के रजिष्टर जो लाला शादीराम के लिखे हैं उनको पं० सुन्दरलाल जी आप खुद देखकर अब के पत्र में आप को लिखेंगे। और हमने छब्बीस 26 फरमें का ठेका जो दिया था सो न चल सका इसमें पं० देवीप्रसाद और विश्वेश्वरसिंह जी ने भी बहुत प्रयत्न किया तथापि न चल सका सो अब 20 फारम से अधिक एक महिने में नहीं छप सकते। तथा अव्ययार्थ के पुस्तक में कोठे बनाने से और भी देरी हुई। और अब आख्यातिक का भूमिका सहित छ फारमा छप गये हैं आगे को छपता जाता है। और इस पुस्तके बिलकुल लौटने और नवीन बनाने में सब महाभाष्य सिद्धान्त और काशिका पुस्तकों का होता है इस से छपने के लिये नवीन कापी बनाने में देर होती है और आप के यहां के ठीक-ठीक शुद्ध कापी आवे तो इतनी ढील न हो।

कागज का प्रबन्ध मुम्बई से हो जाना बहुत ही अच्छा है। इसका प्रबन्ध

1. राजों महाराजों की लीला न्यारी ही थी। गोरों का दबाव सब पर था। 'जिज्ञासु'

आ निश्चित कर लीजियेगा और अपने सामने एक वेल कागज का जिस में 24 रीम होते हैं वह भेजवा दीजियेगा। चाहे जैसे पौंड का जैसा आप मुनासिब जानें। और मेरे पास कागज वाले का पता लिख भेजिये कि मैं आगे को उसी से कागज मंगाया करूं। और छपने की स्याही का भी प्रबन्ध वहीं से कर दीजिये वहां से कागज के साथ श्याही भी आजाया करे। आपने जो 2 पुस्तक जब 2 जहां 2 मंगाये बराबर भेजे। वे पुस्तक कौन से हैं कि आपने मंगाये और यहां से न गये। जो आप की भेजी चिट्ठी ही मेरे पास न आई हो तो मैं लाचार हूं जैसे कि आपने महाराजे उदयपुर का इश्तिहार भेजा और मेरे पास आज तक नहीं आया है कहीं डाक मैं मारा गया मैं लाचार हूं। अब उस विज्ञापन को कृपा करके शीघ्र भेज दीजियेगा। मेला अच्छा हुआ भीड़भाड़ 3000000 तीस लाख करीब बहुत हुई। फिर वीमारी हैजे की अमावास्या को जो फैल हुई इस से सब मेला उठा दिया गया। मासिक हिसाब 24 जनवरी को आप के पास भेजा है सो पहुंचा होगा। देर या हुई कि आर्य्यभाई बहुत लोग वैदिक यंत्रालय में ठहरे थे उनके आदर सत्कार से तयार न कर सका। सो माफ करना और सब लोग यहां से प्रसन्न गये। हम लोगों को महाराजे उदयपुर की पदवी ठीक 2 मालूम नहीं थी और आप का भेजा विज्ञापन आया नहीं फिर सज्जन कीर्त्ति सुधाकर जो अखबार उदयपुर से आता है उसके आदि में जो महाराजा की पदवी लिखी है वही हमने छपवादी सो आपके देखने को भेजते हैं सो देख लीजिये। आगे आप जैसी आज्ञा करें उनके विषय में फिर छपवा दिया जावे। जब तक आपके वेदाङ्गप्रकाश और दूसरी बार सत्यार्थप्रकाश न छप जायगा तब तक इस यंत्रालय में दूसरा पुस्तक नहीं छपेगा। और जो आवश्यक होगा उसमें आप की आज्ञा ली जावेगी। और मेले में कोई पं० वा मुंशी नहीं मिला।[1]

आगे हम को टैप अधिक ढलवाने के वास्ते सीसा और सुरमा चाहिये विलायती देसी जो मिलता है उससे काम नहीं चलता यदि मुंमई से उसके मंगाने का प्रबंध हो जाय तौ बहेतर है।। आगे मुनसी और पंडित की हम को भी बड़ी तलास है पर ढव का कोई मनुष्य नहीं मिलता है। लाहौर से लाला जवाहिरसिंघ मंत्री आर्य्यसमाज के आये उनसे भी कहा उन्होंने कहा कि प्रयाग मै तो नहीं पर लाहौर मैं वुहत मिल जायंगे और उन्होंने यह भी कहा कि जो यह यंत्रालय लाहौर मैं उठ जाय तौ वहां के समाज के मेमवर बड़ी उन्नती करें मैंने कह दिया कि मुझ को कुछ उजर नहीं है श्री स्वामीजी

1. यहां तक यह पत्र पण्डित भीमसेन जी के अक्षरों में लिखा हुवा है इसके आगे राय बहादुर पण्डित सुन्दरलाल जी के अक्षरों में अङ्कित है।

महाराज की आज्ञा मंगालो सो निश्चय है कि इस मध्ये मैं आर्य्यसमाज के लोग आप को लिखैं।। हिसाब आप को सब चीज का वुहत दुरुस्ती के साथ भेजा जायगा पर हाल में कोई मनुष्य ऐसा नहीं हे कि जो अछे प्रकार से काम करे जब तक वाबू यहां थे तब तक तौ वुह खुद देखते भालते थे जब से वुह चले गये हैं तव से सिरफ दयाराम ही है सो लिखने पढ़ने का काम जैसा चाहिये वैसा नहीं होता है मैं भी इस बात को खूब जानता हूं पर जब तक तो मुनसी अच्छा नहीं मिलेगा तब तक यह ही दिक्कत रहेगी—और पं० भीमसेन भी कहते है कि हमारे पास काम बुहत बढ़ गया है सो यदि आप की आज्ञा होय तौ ज्वालादत को फिर वुला लै 15) महीना लेगा पर उसको आप की आज्ञा विना बुला नहीं सकते है।।[1]

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की सेवा में

श्रीयुत महाशय मनोहरदास क्षत्रिय अवैतनिक कार्य्यसम्पादक भारतमित्र कलकत्ता का पत्रः—

भारतमित्र कार्य्यालय।
नं 60 क्रौस ष्ट्रीट कलकत्ता, 188
ओं श्री 105 मान् स्वामि दयानन्द सरस्वती
स्वामि समीपेशु नमोनमः

महाशय!

निवेदन यह है कि आप के भेजे हुए दो पत्र पहुंचे-गोरक्षा एक बड़ा उत्तम और आवश्यक काम है आशा है कि सर्व शक्तिमान आपके इस शुभ परिश्रम को सफल करेंगे जिस्से गवादिक पशु इस दुःस्सह दुःख से बचें और जगत का अतीब उपकार होगा हमारे यहां एक ज्ञान वर्द्धिनी नामक सभा है उसमें आपके भेजे हुए कागज विचारार्थ पढ़े गये सो सब सभासदों की यही तजबीज हुई कि एक दिन केवल इसी शुभ कम के निमित्त सभा की जावे और उसमें शहर के माननीय देश हितैषी महात्मा निमन्त्रित किये जावें—क्योंकि इसमें बहुत लोगों के दस्तखत उनके द्वारा हो जावेंगे।

सो स्वामिन् यह सभा होने ही वाली थी कि हम लोगों को एक झंझट सी आ पड़ी जिसे यह शुभ और अत्युत्तम काम कुछ दिन के लिये रुक

1. एक एक पत्र की एक एक पंक्ति पर महात्मा जी ने जो श्रम किया है वह वन्दनीय है। मनुष्य तो बहुत थे परन्तु भले मनुष्यों का अकाल था। 'जिज्ञासु'

गया–वृत्तांत यह है कि 16 मार्च के अखवार में हमने एक प्रस्ताव हुगली पुल के ठकेदार की बाबत छापा है जिस पर ठेकेदार साहब नालिश करने पर तैयार हैं–इसमें एक शब्द रामफटाका धारी लिखा है यह लोग इस शब्द से अपनी मत निन्दा समझ बैठे हैं आप भी अवश्य कृपा करके इस प्रस्ताव को देखें और यह भी लिखें कि "रामफटाका" तिलक विशेष का नाम है वा नहीं–नहीं तो यह कैसा शब्द है और जो अनुमति लिखने योग्य हो सो अवश्य लिखें और यह भी लिखें कि कलकत्ते आने की भी इच्छा रखते हैं वा क्या–इस स्थान में सदुपदेश की बहुत जरूरत है जब हम लोग आपके श्रीमुख से उपदेश सुनेंगे तो अपना भाग्योदय समझेंगे और कृतार्थ होंगे–

झंझट दूर होने पर उक्त काम में अच्छी तरह से मनोयोग है उद्योग किया जावेगा।

रामफटाका शब्द का निर्णय कृपा पूर्वक शीघ्र लिख भेजें और गोरक्षा का एक-एक पत्र निम्नलिखित महाशयों के पास भी सीधे बम्बई से भेजदें।

1. महाराजा ज्योतेंद्र मोहन ठाकुर कलकत्ता
2. राजा राजेन्द्रमलिक बहादुर० "
3. राजा कमलकृष्ण बहादुर० कलकत्ता
4. इंडियन एसोसीएशन० "
5. बृटश इंडियन एसोशीएशन० "
6. साधारण ब्राह्म समाज० "
7. महर्षि दिवीन्द्रनाथ ठाकुर० "
8. सेक्रेटरी फेमली लिटरेरी कलब० "

इत्यलं

आपका दास
मनोहरदास क्षत्री
अबैतनिक कार्य्य सम्पादक, भा० मित्र

ऋषिजी का मार्मिक ऐतिहासिक पत्र

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की ओर से

श्रीयुत महाशय सम्पादक भारत मित्र कलकत्ता के नाम पत्रः–

ओ३म्

भारतमित्र संपादक महाशय निकटे निवेदनम्।।

महाशय आप के संवत् 1940 आषाढ़ी शुदी 8 गुरुवार के छपे हुए पत्र

में किसी ने वेद पर आक्षेप पत्र छपवाया है उस लेखक का अभिप्राय यही विदित होता है कि वेद ईश्वर की वाणी और अभ्रान्त नहीं है परन्तु इस प्रश्न के करने वाले ने प्रश्न मात्र ही किया है अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने के लिये कोई विशेष हेतु नहीं लिखा अर्थात् उत्तर उस बात का होता है **जो किसी वेद वचन पर भ्रान्तपन दिखलाता तो उसका उत्तर उसी समय दिया जाता है।** जैसे कोई कहे कि यह 1000) एक हज़ार रुपयों की थेली सच्ची नहीं दूसरे ने उस से पूछा क्या मैं तुम्हारे कहने मात्र ही से थेली को झूठी मान सकता हूं जब तक तुम झूठा रुपया इसमें से एक भी निकाल के सिद्ध नहीं कर देते, तब तक थेली को झूठी नहीं मानूंगा। वैसा ही मिष्टर ए ओ ह्यूम साहेब और जिस ने आप के पत्र में छपाया है इन दोनों महाशयों का लेख है, यहां उनको योग्य था और है कि किसी एक वा अनेक मंत्रों को अपने अभिप्राय के अर्थ सहित वेद अध्याय मंत्र संख्या पूर्वक लिख कर पश्चात् कहते कि वेद ईश्वर की वाणी और अभ्रान्त नहीं हैं, तो प्रत्युत्तर के योग्य प्रश्न होता भी यदि उत्तर जानने की इच्छा हो तो इसी प्रकार करें नहीं तो कुछ भी नहीं है किन्तु इस में इतनी बात को समाधान देने के किसी प्रकार योग्य है कि वेदों में मतभेद क्यों हैं अब देखिये यह भी इनकी गोलमाल बात है! क्योंकि वेदों में किस ठिकान और किन मंत्रों में किस प्रकार के मत भेद हैं हां, विद्या भेद से कथन का भेद होना तो उचित ही है जो व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष, वैद्यक, राजविद्या, गान, शिल्प, और पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त की अनेक विद्याओं की मूल विद्या वेदों में हैं इन के संकेत शब्दार्थ और संबंध भिन्न-2 हैं जैसे व्याकरण विद्या से ज्योतिष विद्यादि के संकेत परिभाषा और पदार्थ विज्ञान पृथक्-2 होते हैं वैसे इन सब विद्याओं के वाचक अर्थात् प्रकाशक मंत्र भी पृथक्-2 अर्थ के प्रतिपादक हैं यदि इन्हीं को मत भेद कहते हैं तो प्रश्नकर्ता का कथन असंगत है और जो दूसरे प्रकार के मत भेद मानते हैं तो उनका कथन सर्वथा अशुद्ध है इसलिये प्रश्न कर्ताओं को उचित है कि पूर्वोक्त प्रकार से चारों वेदों में से जो कोई एक मंत्र भी भ्रांत प्रतीत होवे वह आप के पत्र में मिष्टर ए ओ ह्यूम साहेब छपवावें उन का उत्तर भी आप ही के पत्र में उचित समय पर छपवा दिया जायगा और उनको वेद के निर्भ्रान्त होने के जानने की पक्की जिज्ञासा हो तो मेरी बनाई ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका को देख लेवें यदि उनके पास न हो तो वैदिक यंत्रालय प्रयाग से मंगा कर देखें और जो उनको आर्य भाषा का पूरा ज्ञान हो तो किसी सत्यवक्ता दुभाषिये पुरुष से सुनें इस पर जो उनको शंका रह जाय तो मुझ से समक्ष मिल के जितनी शंका हों उन सबका यथावत् समाधान लेवें क्योंकि पत्रों से शंका समाधान होने

में विलंब होता और अधिक अवकाश की भी अपेक्षा है और मुझ को वेदभाष्य बनाने के काम से अवकाश न मिलने के कारण विशेष प्रश्नोत्तर करने का समय नहीं है और जो उन्होंने यह लिखा है कि स्वामी जी ईश्वर वा ईश्वर की प्रेरणा युक्त हों तो उनका भाष्य निर्भ्रम हो सके, **मैं ईश्वर नहीं किन्तु ईश्वर का उपासक हूं**[1] परन्तु वेद मनुष्यों के हितार्थ परमात्मा ने प्रकाशित किये हैं इस अभिप्राय से कि यहां तक मनुष्यों की विद्या और बुद्धि पहुंच सकेगी और इतने तक कार्य मनुष्य कर सकेंगे इसलिये यावत् मेरी बुद्धि और विद्या है तावत् निष्पक्षपात होकर वेदों का अर्थ प्रकाशित करता हूं और वह अर्थ सब सज्जनों के दृष्टिगोचर हुआ है, होता है और होगा भी। यदि कहीं भ्रांति हो तो उक्त साहेब प्रकाशित करें। बड़े शोक की बात है कि आज पर्यन्त एक भी दोष वेदभाष्य में से कोई भी नहीं निकाल सका है फिर भी इनका भ्रम दूर नहीं हुआ ऐसी निर्मूल शंका कोई भी किया करे इस से कुछ भी हानि नहीं हो सकती और सत्यार्थ होने ही से वेदों का निर्भ्रांतत्व यथावत् सिद्ध है यदि इस मेरे बनाये भाष्य में मिष्टर ए ओ ह्यूम साहेब को भ्रम हो तो इसमें से भ्रांति मंत्र किसी मंत्र के भाष्य द्वारा आपके पत्र में छपा देवें मैं उत्तर भी आप ही के पत्र द्वारा देऊंगा और जो थियोसोफ़िष्ट के अध्यक्ष ऐसी बातें करें इस में क्या आश्चर्य है क्योंकि वे अनीश्वरवादी बौध मतावलंबी होकर भूत, प्रेत, और चुटकलों के मानने वाले हैं। बड़े शोक की बात है कि सर्वथा विद्या सिद्ध परमात्मा को न मान कर भूत, प्रेत, मृतकों में फस कर और भोले मनुष्यों को फसा अपने को सुधारने वाले मानना यह कितनी बड़ी अनुचित बात है इन को तो नास्तिक मत जो कि ईश्वर केा न मानना है वही प्रिय लगता है परन्तु इसमें इतनी ही न्यूनता है कि भूत प्रेतों ने इन को घेर लिया सच है जो सत्य ईश्वर को छोडेंगे वे मिथ्या भ्रम जाल भूत प्रेतों और बन्ध्या पुत्र वत्कुतु हूंबीलालसिंह आदि में क्यों न फसेंगे। **बहुत से समाचारों में छपवाते हैं कि इतने सौ इतने हज़ार मनुष्यों को मिष्टर एच ए करनेल ओलकाट साहब ने रोग रहित किया यदि यह बात सच हो तो मुझ को क्यों नहीं दिखलाते और मनवाते, और मेरे सामने कि जिस को मैं कहूं उस एक को भी नीरोग कर दें तो मैं थियोसोफीष्टों के अध्यक्ष को धन्यवाद देऊं**[2] इसमें मुझ को निश्चय है कि जैसे एक थियोसोफीष्ट दंभ के मारे लाहौर में अपनी अंगुली कटवा के अंग भंग हो

1. गुरुडम वाले विचोलिये Mediator इस वाक्य का मर्म क्या जानें? 'जिज्ञासु'
2. ऋषि की चुनौती पर मौन साध बैठे। 'जिज्ञासु'

गया कहीं ऐसी गति मेरे साम्हने इनकी न हो जावे और करामात कुछ भी काम न आवेगी मैं प्रसिद्धी से कहता हूं कि यदि उनमें कुछ भी अलौकिक शक्ति वा योग विद्या हो तो मुझ को दिखलावें, मैंने जहां तक इनकी लीला सिद्धि और योग विषयक देखी है वह मानने के योग नहीं थी अब क्या नई विद्या कहीं से सीख आये मुझ को तो यह विषय निकम्मा आंडबर रूप दीखता है। अलमिति विस्तरेण बुद्धि मद्वर्येषु।।[1]

(2)

ओ३म्

श्रीयुत भारतमित्र संपादक समीपेषु।।

महाशय आपके संवत् 1940 मिति श्रावण शुदी 6 गुरुवार के दिन के छपे हुए पत्र में जो विविध समाचार के दूसरे कोष्ठ में यह छपा है कि मुसलमानों के मझब का मूल अथर्ववेद है, सो बात असंगत है क्योंकि उसके नामनिशान का एक अक्षर अथर्व वेद में नहीं है जो शब्द कर्तृम अल्लोपनिषद् नामक जो कि मुसलमानों की पादशाही के समय किसी थोड़ा सा संस्कृत और अरबी फ़ारसी के पढ़ने वाले ने छोटा सा ग्रन्थ बनाया है वह वेद, व्याकरण, निरुक्त के नियमानुसार शब्द अर्थ और संबंध के अनुकूल नहीं है और अल्ला रसूल अकबर आदि शब्द चारों वेदों में नहीं हैं किन्तु जो अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है उसमें भी यह उपनिषद् तो क्या किन्तु पूर्वोक्त शब्द मात्र भी नहीं है पुनः जो कोई इस बात का दावा करता है वह अथर्ववेद की संहिता जो कि। बीस कांडों से पूरण है अथवा उसके गोपथ ब्राह्मण में एक शब्द भी दिखला देवे वह कभी नहीं दिखला सकेगा यदि ऐसा होता तो उस पुरुष का कहना भी सत्य होता अन्यथा कथन सच क्यों कर हो सकता है कहां राजा भोज और कहां गांगा तेली वेदों के आगे यह ग्रंथ ऐसा है कि जैसे अमूल्य रत्न के सामने भूड़ा यही एक बात नई नहीं है किन्तु स्वार्थी लोगों ने वेदों के नाम पर ऐसे 2 निकम्मे बहुत से ग्रन्थ बनाये हैं जिन का मिथ्यात्व वेद के देखने से यथावत् विदित होता है। यदि वालादत्त शर्मा हेडमास्टर रियासत टिहरी गढवाल की इच्छा[2].... जाने वा शास्त्रार्थ करने की इच्छा हो तो इस बात

1. इस पत्र के अन्त में महर्षि दयानन्द का हस्ताक्षर नहीं है और न अगले पत्र के अन्त में उनका हस्ताक्षर है परन्तु इन दोनों पत्रों के साथ एक और सादा कागज़ नत्थी है जिस पर लिखा हुआ है "भारत मित्र कलकत्ते वाले के नाम जो पत्रादि स्वामी जी की ओर से लिखे गये उनकी प्रती"
2. जहां-जहां विन्दियां अर्थात् लीडर हैं वह भाग असल पत्र में से कट कर नष्ट हो गया है।

के लिये यहां सब दिशाओं के दरवाजे खुले हैं। अलमति विस्तरेण बुद्धि मद्वर्य्येषु।[1]

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्दसरस्वती जी महाराज की सेवा में

श्रीयुत महाशय श्रीकृष्ण जी खत्री
सम्पादक ज्ञानवर्द्धिनी सभा कलकत्ता का पत्र

काटन स्ट्रीन न० 94
कलकत्ता।

पुज्यपाद श्रीमत् स्वामी दयानंद सरस्वती।
श्री चरण कमलेषु।

महानुभव!

मेरी-अभिलाषा है कि एक पुस्तक ऐसी बने जिसमे निम्नलिखित विषयों का संग्रह रहे यथा:-

1। सनातन आर्य्य धर्म्म के प्रयोजन।
2। आर्य्य धर्म्म के अनुसार ईश्वर स्तुति।
3। आर्य्य के नित्य कर्म्म और धर्म्माचरण के नियम।
4। स्वामी जी की संक्षिप्त जीवनी।
5। एक सामान्य पंचाङ्ग जिसमें अंरेजी पार तारिख, हिन्दी-बार तारिख तिथि ओर नक्षत्र आदि का बिवरण रहे।
6। आर्य्य समाज सम्बन्धी-विशेष घटनावली।
7। आर्य्य समाजों की तालिका जिसमें नीचे लिखे विषय रहें-

(क) समाज का नाम (ख) कब स्थापित हुआ
(ग) मन्त्री का नाम (घ) सभासदों की संख्या
(ङ) वार्षिक उत्सव का दिन।

8। विद्यालय, पुस्तकालय ओर चिकित्सालयों कि तालिका जो कि आर्य्य जन द्वारा स्थापित हुये हैं वा उनसे जिन द्वारा स्थापित हुये हैं वा उनसे जिनका कार्य्य निर्वाह होता है।

1. इस पत्र के अन्त में महर्षि दयानन्द का हस्ताक्षर नहीं है और न इस से पूर्व पत्र पर उनका हस्ताक्षर है परन्तु इन दोनों पत्रों के साथ एक और सादा कागज़ नत्थी है जिस पर लिखा हुआ है "भारत मित्र कलकत्ते वाले के नाम जो पत्रादि स्वामी जी की ओर से लिखे गये उनकी प्रति"

9। (संवाद) पत्रों का तालिका जो आर्य्य जन द्वारा प्रकाशित होते हैं। उनका नाम ठिकाना मूल्य।

10। पुस्तकों की तालिका (आर्य्य धर्म्म वा समाज सम्बन्धी उनका नाम मूल्य ओर ठिकाना।

11। एक मान चित्र जिसमे वे नगर वा ग्राम विशेष कर लिखे जावें जहां आर्य्य सभाएं स्थापित हैं।

12। अन्यान्य आवश्यकीय विषय जैसे वैज्ञानिक राजनैतिक और भाषा वा शिक्षा विषयीनी सभाओं के नाम। स्टेम्प मनिआर्डर टलीग्राफ, रजिस्ट्रि आदि के नियम।

मैं इस पुस्तक का नाम "आर्य्य पंचाङ्ग" रखना चाहता हूं। और आशा है कि प्रति वर्ष एक ऐसा पंचाङ्ग आपकी आज्ञानुसार निकला करे। मेरी इच्छा है कि मैं एक ऐसी पुस्तक इस वर्ष की प्रकाश करूं; परंतु आपकी सहायता के बिना इसका सुफल होना असम्भव है मैं इस विषय में अनभिज्ञ हुं। यदि आप कृपा कर के मेरे इस मन्तव्य को समस्त आर्य्य जन ओर समाजों से प्रचार कर दें जिससे कि मैं उन समाजों के विवरण संग्रह करने में समर्थ हो सकुं तो मेरा मनोर्थ सिद्ध हो जावे। इससे समस्त आर्य्य जनों का उपकार हो सकेगा मुजे पूर्ण आशा है। यदि आपकी अभिरुचि होवे तो उत्तर दान से इस अधीन को वाधित कीजिएगा।

मेरे मन्तव्य के दोष गुण विचारने का भार आप ही के हाथ रहा। मैं इस विषय में आपकी सम्मति प्रार्थना करता हुं। अन्त में मै यह भी आपसे निवेदन करना उचित समझता हुं कि इस मन्तव्य से सम्पादक भारत मित्र की विशेष सहानुभूती है। इति–

प्रार्थी विनयावनत
श्रीकृष्ण क्षत्री
सम्पादक "ज्ञानवर्द्धिनी सभा"

जुलाई 28.1883

कृपापत्र इस पते से लिखियेगा।

श्रीकृष्ण क्षत्री
94 न० काटन स्ट्रीट कलकत्ता।
To Srikrishan Khattry
94 Cotton Street
Calcutta

श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्य
श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की ओर से

श्रीयुत महाशय मनोहरदास जी खत्री, भारत मित्र कलकत्ता, के नाम पत्रः-

(1)

ओ३म्

श्रीयुत मनोहरदास खत्री संपादक भारतमित्र आनंदित रहो-आपने मेरे भेजे पत्र को प्रसन्नतापूर्वक छाप दिया उसका उपकार मानता हूं परन्तु शेष विषय भी छापने के योग्य जान कर मैंने लिखा था क्योंकि इस पूर्व पक्ष के संबंधी थियोसोफ़ीकल सुसायटी के प्रधान हैं इसीलिये यह विषय लिखा था और मैं आप को सुहृदभाव से लिखता हूं कि यदि आप अपने भारतमित्र समाचार की विद्वानों में प्रतिष्ठा चाहें तो करणल ओलकाट आदि के करामात वा मिसमिरेजन से अनेकों के रोग निवारण आदि नितांत मिथ्या विषयक भी न छापें, नहीं तो समाचार की प्रतिष्ठा नष्ट हो जायगी अब थोड़े समय में करणेल ओलकाट लाहौर में गये थे उनका रोग निवारणादि सामर्थ्य अत्यंत झूठ बड़े-2 बुद्धिमान् लाहौर निवासियों ने निश्चित करके लिखा कि इन का यह सब ऊपर का ढोंग है और जितना व्यवहार बाहर वा भीतर का थियासोफ़ीष्टों का मैं जानता हूं इतना आर्यावर्तीय लोगों में बहुत थोड़े लोग जानते हैं जब इन **लोगों ने झूठे दांभिक मिथ्या छल व्यवहारों में मेरी संमति लेनी चाही मैंने नहीं दी तभी से वे अपना प्रपंच पृथक् करने लगे और मैं उन से पृथक् हो गया** अस्तु थोड़े ही लेख से आप बहुत समझ लेंगे एक श्रीकृश्न खत्री वे ता० 28 वीं जुलाई सन् 1883 को लिखकर हमारे पास भेजा है और उन्होंने बहुत से सनातन आर्य धर्म के प्रयोजनादि विषयों में आर्य पंचांग बनाने के लिये मुझ से सहाय चाहते हैं तथा आर्यसमाजों से भी जिस पत्र पर लेख किया है वह पत्र भारत मित्र कार्यालय का है इसलिये मैं आप से पूछता हूं कि उक्त महाशय किस प्रकार के गुण कर्म स्वभाव वाले हैं और जैसा उन ने लिखा है कि इसमें भारतमित्र संपादक की भी विशेष सहानुभूति है आप इन को योग्य समझते हैं यदि इस कार्य के योग्य समझते हों तो इस पत्र को देखते ही मुझ को प्रत्युत्तर लिखिये तत्पश्चात् आर्यसमाजों को उचित होगा, लिखा जायगा और जो एक पत्र बहुत दिन हुए मैंने लिखा था जिस में गोरक्षार्थ अर्जी

देने का मसोदा वहां के वकील वारिष्टरों से पूंछ के आप लिखें उसका क्या हुआ अब उसमें अधिक विलंब करना उचित मैं नहीं समझता यहां जोधपुर पर समाचार पश्चात् लिखा जायगा'

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की ओर से

श्रीयुत महाशय श्रीकृष्ण जी खत्री सम्पादक भारतमित्र कलकत्ता का पत्र।

भारतमित्र कार्यालय

न 60 क्रौसष्ट्रीट कलकत्ता, 18 आगष्ट 1883

महानुभव!

आपके कृपा पत्र से कृतार्थ हुआ। आप "भारतमित्र" के यथार्थ हितैषी–हैं–इसलिये भारतमित्र आपके पास ऋणी है। हम आपको अनेक धन्यवाद देते हैं। परंतु इस अवसर पर इसका कुछ विवरण आपसे कहना उचित समझता हूं।

देश हित के लिये कई मित्रों ने मिलकर 'भारतमित्र, पत्र प्रकाशित कीया है। इस में किसी का कुछ-स्वार्थ-नहीं है। मित्रगण अपना 2 अवसर समय इस पत्र की सेवा में लगाते हैं। इन ही मित्र वर्ग ने एक कमेटी स्थापित की है उसी-भारतमित्र कमेटी से सब कार्य्य निर्वाह होता है। वावु मनोहरदास खत्री भारतमित्र के सम्पादक नहीं है जैसा की आप जानते हैं परंतु मैनेजर (कार्य सम्पादक) हैं। पं. छोटुलाल मिश्र-इस पत्र के सम्पादक है। कई मास से विषय कर्म्म में व्याप्तत रहने के कारण यह भारतमित्र का सम्पादन नहीं कर सकते। इनके एक मित्र श्रीकृष्ण क्षत्री ने सम्पादन का भार लिया है। भारतमित्र मे अब सब लेख उन्हीं का है। वास्तव में अव वही-भारतमित्र सम्पादक हैं। अवशय इन सब लेखों में छोटुजी की सम्मति रहती है। वही श्रीकृष्ण क्षत्री "ज्ञानवर्धिणी" सभा के सम्पादक भी हैं जिन के विशेष परिश्रम से गोरक्षा

1. इस पत्र के अन्त में श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का हस्ताक्षर नहीं है परन्तु इस पत्र में श्रीयुत महाशय श्रीकृष्ण जी खत्री कलकत्ता के 28 जूलाई 1883 के पत्र का वर्णन हे जो श्रीस्वामी जी यह के नाम""उक्त महाशय जी ने भेजा था।

विषय के शाक्षर यहां से आप की सेवा में गये थे। यह महाशय अरेजी मे भी व्युतपन्न हैं। इस पत्र के लेखक भी वही श्रीकृष्ण क्षत्री हैं।

अव में (श्रीकृष्ण क्षत्री) आपसे परिचित हो गया। आप भारतमित्र-पत्र को देख कर जैसी कुछ मेरी योग्यता समझें। "आर्य्य पंचाङ्ग" बनाने से मेरी यह इच्छा है कि इस से सर्व साधारण को आर्य्य समाज के बेभव का ज्ञान हो जायगा। इन समाजों से भारत वर्ष की-कांहा तक उन्नति हुई ओर होने की सम्भावना है-**यथार्थ मे स्वामी दयानन्द जी से आर्य्य मुनि का कैसा हित हुआ,** सबको "आर्य्य पंचाङ्ग" से घर बैठे इस विषय का ज्ञान हो जायगा। इसी अभिप्राय से मैंने आप की सहायता मांगी है। अब आप जैसा उचित समझें। लाहोर "आर्य्या" के सम्पादक अजमेर, प्रयाग, परुखाबद, साजिहानपुर[1] इत्यादि नगरों के आर्य्य समाजों के मंत्रि हम लोगों पर विशेष कृपा रखते हैं।

गोरक्ष विषय के आवेदन पत्र के लिये आपने लिखा सो उस का यत्न हो रहा है। यथा समय मे आपको लिखुंगा।

कार्नेल आलकट साहब के विषय में आपके उपदेश के लिये मैं कृतज्ञ हुं। ऐसा कोई विषय भारतमित्र मे नहीं रहता जिसका विशेष प्रमाण हमे न मिला हो। परंतु जब वात वात मे हमे दूसरे संबाद पत्र ओर मान्य मनुष्यों पर निर्भर करना होता है तो किसी समय मे होना असम्भव नहीं है। अंत में 'आर्य्य पंचाङ्ग' के विषय में आपकी इच्छा जानने की आशा लगी रही।[2] आपकी अभिरुचि जानने पर इस विषय का एक विज्ञापन भारत मित्र में दूंगा। कृपाकर इस पत्र का उत्तर शीघ्र दीजिएगा।

आपका कृपाकाङ्क्षी
श्रीकृष्ण क्षत्री
सम्पादक "भारतमित्र"

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा मे राजस्थान से सम्बन्ध रखने वाले महाशयों के पत्रः-

1. शाहजहांपुर (उ० प्र०) को ऐसा लिखा गया है 'जिज्ञासु'
2. आर्य्य पंचाग की योजना सिरे चढ़ी नहीं लगती। इसका कोई प्रति कहीं नहीं देखी गई। महाशय राजपालजी तथा करनाल के समाज ने इस दिशा में ठोस कार्य किया किया।
'जिज्ञासु'

श्रीयुत महाशय विहारीलाल जी मन्त्री वैदिक धर्म्म सभा जयपुर के पत्र

ओम् तत्सत्

श्रीमन् महाराज शोभित समाज जगदुद्धारक श्री स्वामी जी महाराज–नमस्ते वृत्तांत यह है कि इस सभा को स्थापित हुये एक वर्ष हो गया था इस कारण सभा ने संमति की वार्षिक उत्सव होना उचित है सो अंतरंग सभा में यह बात विचारी गई सभा का मनोरथ तो यह था कि सर्वविज्ञापन देकर सभासदों को अन्य नगरों से बुलाया जावे परंतु कुछ मनुष्यों ने यह संमति दी कि यह प्रथम उत्सव है और द्वितीय यहां पर महाराज के गुरु ब्रह्मचारी जो मथुरा के रहने वाले हैं विद्यमान है इस कारण अन्य नगरों से सज्जन पुरुषों का वुलाना तो उचित नहीं परंतु इस नगर मों प्रधान 2 पुरुषों को विज्ञापन देकर बड़ी धूम धाम के साथ उत्सव होना चाहिये। सो वैदिक यत्रालय में 200 विज्ञापन पत्र छपवा कर चैत्र शुक्ला 2 सोमवार संवत् 1940 का उत्सव विदित किया उन विज्ञापन पत्रों में से एक पत्र आप की सेवा में भेजा जाता है।। सो उक्त तिथि पर प्रातःकाल के 7 बजे से 10 बजे तक वडे उत्साह के साथ अग्निहोत्र हुआ जिसमें 5 आर्य्यों संस्कार भी कराया गया जिस समय अग्निहोत्र हुआ तो समीप 60 या 70 मनुष्यों के विद्यमान थे और उस समय प्रत्येक मनुष्य के अंतःकरण में आप ही का ध्यान हो रहा था खैर विशेष कहां तक वर्णन करूं संध्या के पांच वजे से 10 बजे तक उपदेश हुआ जिस में सभी 700 मनुष्यों के विद्यमान थे यह उपदेश का समय ऐसा आनंदायक था जिस को हम वर्णन नहीं करते।

संपूर्ण शहर में सभा के उत्सव का ऐसा धन्यवाद हुआ कि यथार्थ में वेदानुकूल कर्म यही है।।

इस परमानंद के नगर में प्रचरित होते ही पोप लोगों का श्मशान चैतन्य हुआ और हाय तोवा करते हुवे ब्रह्मचारी के पास जाकर पुकारे वहां पर अविद्या तथाधंकार पूर्ण विराजमान था उन्होंने प्रथम गोरीशंकर तथा प्रधानादिकों के नाम अनुक्रम से लिख कर समीप 25 मनुष्यों के छांटे और उनके साथ एक पत्री महाराज को लिखी तू गोपालाजी का भक्त है और यह दयानंद सरस्वती की सभा के मनुष्य प्रतिमा का खंडन करते हैं इस कारण इन मनुष्यों का भद्र करा कर राज से वाहर निकाल दो और एक विज्ञापन भी इसके साथ भेजा कि इस प्रकार का विज्ञापन देकर लोगों को नास्तिक करते हैं।

यह संपूर्ण समाचार महाराज के पास पहोंचा और उन्होंने देख कर ठाकुर गोविंदसिंह तथा रघुनाथसिंह जी को बुलाया और कहा कि यह क्या बात है उस समय ठाकुर रघुनाथ सिंह की क्षात्रवृत्ति ने प्रकाश किया और निश्शंक होकर कहा कि महराज वेशक इन लोगों का भद्र करा कर निकालने चाहियें **परंतु मेरा नाम इस पत्र में अवश्यक प्रथम होना चाहियें और जो कुछ इनके वास्ते हुकूम हो सोई मेरे लिये होना चाहिये क्योंकि में इस शहर में स्वामी दयानंद सरस्वती का प्रथम शिष्य हूं खैर में कुछ चिंता नहीं अब तक आप की आज्ञा वा कृपा से राज किया अब आपकी आज्ञा से इस स्वरूप को धारण करैंगे।**[1] अब महराज ने यह समार सुन कर कहा कि तुम भी दयानंद सरस्वती के शिष्य हो ठाकुर रघुनाथ सिंह जी ने कहा कि में इस शहर में उनका प्रथम शिष्य हूं और मूर्ती पूजन को मैं भी नहीं मानता हूं क्योंकि यह वेदोक्त नहीं है अब जो कुछ आप इस पर आज्ञा देवें सो तामील की जावे।। महाराज ने कहा कि स्वामी जो को मैंने भी सुना है यह कोई वात रज्य को हानिकारक नहीं है ब्रह्मचारी जी को किसी ने वहका दिया है रखो इस पत्र को फिर देखा जावेगा इतने में ठाकुर रघुनाथ सिंह अपनी कचहरी के कमरे में चले आये और ठाकुर गोंदिसिंह भी आ गये तो ठाकुर रघुनाथसिंह ने कहा कि जब तक इसाई तथा मुसल इस राज से नहीं निकाले जावेंगे तव तक इस सभा को कभी नुकसान न होना चाहिये ठाकुर गोविंद ने कहा कि इसमें क्या संदेह है नाना प्रकार के मनुष्य मूर्त्ति का खंडन करते हैं यहां तक यह समाचार हुआ है सो हमने आपकी सेवा में निवेदन कर दिया है अव प्रार्थना यह है कि इस विषय में एक धन्यवाद पत्र ठाकुर रघुनाथसिंह जी के पास आप भेज देवें ताकि वोह और सहायक हो जावें आगे आपकी संमति है और हम लोगों को भी आज्ञा दी जावे कि हम इस विषय में क्या यत्न करै सभा तो हम प्रति शुक्रवार को निश्शंक करैंगे और किसी प्रकार से भी पुरुषार्थ में हानि नहीं है परंतु तदपि आपसे आज्ञा लेना उचित है और विशेष क्या लिखें

और हम यहां प 40 मनुष्य ऐसे दृढ हो रहे हैं कि हमारे वास्ते चाहे कुछ ही विपत आ जावे परंतु हम भयभीत होने वाले नहीं है[2]

आपका सेवक

विहारीलाल मंत्री

Nandkisor Singh

1. ऋषि के जीवन काल में किसी देसी राज्य में यह आर्यों की पहली अग्नि-परीक्षा थी जिसमें वे उत्तीर्ण हुये। 'जिज्ञासु'
2. संघर्ष व्यक्ति व संगठन को और निडर व साहसी बनाता है। खरे खोटे का संघर्ष में ही पता चलता है। हिन्दू विधर्मी लोगों का नहीं आर्यों का विरोधी है। 'जिज्ञासु'

(2)

ओ३म् तत्सत्

महाशय!

नमस्ते

चैत्र शुक्ला द्वितीया सोमवार संवत् 1940 मुताविक तारीख 9 अपरैल सन् 1883 ईसवी को वैदिकधर्म्मसभा सवाई जयपुर का वार्षिक उत्सव है जिस में प्रातः काल के 7 बजे से 10 बजे तक वेदानुकूल अग्निहोत्र और संध्या के 5 बजे से आठ बजे तक वेदोक्त व्याख्यान होगा।

इस कारण सभा की प्रार्थना है कि आप उक्त समय पर उपस्थित हो कर सभा को सुशोभित और कृतकृत्य करें। अत्यन्त कृपा होगी।।

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः।
शरीरेण समं नाशं सर्व मन्यद्धि गच्छति।। मनुः 8

आपका शुभचिन्तक

विहारीलाल
मंत्री "वैदिकधर्म्मसभा" सवाई जयपुर
दरवाजे सागानेर रास्ते कोठियारान
नहोरा चंदरावत जी

(3)

।। ओ३म् ।।

श्रीमन्महाराजाधिराजेषु। शोभितसमाजेष्व स्मदुद्धारकेषु।।
श्रीमत्स्वामीदयानद-सरस्वती ष्वस्मत् कृत्ता नतिततेयाधाराः सदोल्लस्तु कोटिशः।।
उदत्तस्त्वेषः।।

यहां पर राज में एक मासिक पत्र जिसका नाम धर्म्म जीवन है लाहोर से प्रतिमास आता है। अव की वार मारच संबंधी पुस्तक 1 अंक 3 जो आया तो उसमें यह समाचार मुद्रित था श्रीस्वामीदयानंद सरस्वती जी महाराज को महाराजा जोधपुर ने जन्म भर के लिये कैद कर दिया है। यहां के जयपुर गजट वालेने भी इस समाचार को अपने पत्र में मुद्रित कर दिया इस असत्य समाचार को देख हमारी सभा को बड़ा शोक हुआ क्योंकि यह प्रतिष्ठा भंग समाचार जिसको ताजीरात हिंद में इजालै हैसियत उर्फी लिखा है साक्षात विदित है इस कारण यहां की अतरंग सभा से प्रबंध होकर एक पत्र इसका उत्तर लेने के लिये लाहोर धर्म जीवन के पास भेजा गया है और लाहोर

समाज तथा मेरठ समाज को भी इस विषय में संमति लेने के लिये लिखा गया है क्योंकि इस सभा का मनोरथ इस विषय में नालिश करने का है इस कारण आप के चरणार्विंद में प्रार्थ है कि इस विषय में क्या अनुष्ठान होना उचित है।।[1]

ओ३म्तत्सत्
बिहारीलाल
मंत्री वैदिक धर्म्म सभा
सवाई जयपुर

(4)

ओ३म् तत्सत्

श्रीयुत्परमहंस परिव्राजकाचार्य अनेक गुण संपद्विराजमान श्रीमद्वेदविहिताचारधर्म्म निरूपक श्रीमत्स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज नमस्ते।

प्रार्थना यह है कि डेढ वर्ष से पडित गौरीशंकर यहां पर विराजमान हैं इनकी सहायता तथा पूरुषार्थ से हमारी सभा को अत्यंत उन्नति हुई है और आगे को आशा है कि हम अपने मनोरथ को पहोंच जावेंगे क्योंकि इनका शुद्धांत:करण आर्य धर्म्मानुकूल और उपदेश की युक्ति इस प्रकार की है कि इस नगर में विख्यात है और आशा है कि यह उपदेश द्वारा हमारे देश के मनुष्यों को बहुत लाभ पहुंचावेंगे परंतु इस डेढ वर्ष के अंतर में इनको यहां पर कुच्छ सुख नहीं हुआ क्योंकि प्रथम महकम इमारत में ये नोकर हुये थे **इस सभा में आने के कारण ही वहां के हाकिम ने इनको पृथक किया था और पश्चात् सभा के पुरुषार्थ से अंग्रेज के पास नोकर हुये परंतु पोप लोगों ने वहां पर भी अत्यंत विरोध किया और साहब से यहां तक कहा कि यह पुरुश हमारे धर्म्म की निंदा करता है** और महाराज के धर्म्म तथा इसाई धर्म्म का भी निंदक है और स्वामी दयानन्द सरस्वती की तरफ से नोकर होकर यहां उपदेश करने आया है और आप के यहां भी नोकरी करता है इत्यादिक कथनों से साहब का चित् प्रथम ही बिगाड दिया था परंतु अब एक कारण यह हुआ कि गौरीशंकर एक दिन के लिये कह कर गत

1. विरोध तो ऋषि का सर्वत्र हुआ। जोधपुर में जुड़े ऐसे ऐसे सच्चे व झूठे समाचार इस बात का प्रमाण हैं कि वहाँ दाल में कुछ काला-काला अवश्य था। लक्षण शुभ नहीं थे। 'जिज्ञासु'

आदित्यवार को अजमेर की सभा में उपदेश करने को गये थे अगले दिन रेल न मिलने के कारण समय पर उपस्थित न हो सके इस कारण अनुपस्थिति दोष में इनका नाम पृथक कर दिया गया है[1] अब इनका आजीवन विनाश होने के सबब से हम को अत्यंत शोक है और सभा की बहुत हानी है क्योंकि यह सभा इन ही के रहने से नगर में बिख्यात तथा स्थिर है।।

इस कारण आप कि सेवा में प्रार्थना है कि कुछ सहायता आप करें और अवशेष हमारी सभा दैवें तो यह भी एक उपदेशक हो जावें कुच्छ काल जयपुर में भी रहा करें और अवशेष रजवाडे में तथा अन्यत्र उपदेश करते रहैं क्योंकि हमारी सभा अभी सारा खरच नहीं उठा सक्ति है यद्वा जो एक उपदेशक के लिये महाराजा शाहपुर ने सायता दइ है उस स्थान पर इनको रखा जावे इनको अंग्रेजी फारसी के होने से नोकरी ओर अन्यत्र भी अवश्य मिल जावेगी परंतु इनका आजीवन सभा की तरफ से होना अत्यंत गुण दायक है क्योंकि अेसे पुरुषार्थी शुद्धांतःकरण का मिलना इस समय किंचित् कठिन है और पोप लोगों से हमारा काम नहीं चल सकता और इनकी व्याख्यान शक्ति तथा योग्यता की अजमेर समाज तथा अन्य आर्य पुरुष जिनों ने इन को देखा और सुना होगा अच्छी प्रकार शाक्षी दे सकता है आशा है कि आप इस विषय को कृपा दृष्टि से अवलोकन करके इसका अच्छा प्रबन्ध कर देंगे और उत्तर से शीघ्र अनुमोदित करेंगे।।

पुनर्नमस्ते
आपका सेवक **बिहारीलाल मंत्री**
वैदिक धर्म्म सभा जयपुर
भा० कृ० द्वादशी स० 1940
Nand Kishore Singh
Pradhan

(1)

श्रीयुत ठाकुर जालिमसिंह जी
रूपधनी के पत्र–

ओ३म् तत्सत्

श्रीयुत पूज्यवर विद्वज्जन भूषन श्री 6 पण्डित दयानंद सरस्वतीजी महाराज को अभिवादन आपु की क्रपा से मैं प्रशन्न हूं आपुकी प्रशन्नता उस सर्व

1. पग-पग पर विरोध का सामना करने वालों ने आर्यसमाज का इतिहास बनाया। 'जिज्ञासु'

शक्तिमान् से नित्य वा चाहता हूं मैं मैनपुरी से व सवव मुकदमैं भरोलि के हाजिर होने से रह गया कि भारोलि वालो ने अपने मुकदमैं की पेरवी को कहा उसकी पत्री मैनपुरी भेज चुका हूं आशा है कि पहुंची होगी अपना दास मुझ को समझ कर क्रपा का पात्र वनाऐं हिऐ विनती यह है मैंने सुना है कि मोहनलाल साहूकार वहीं हैं उनसे आपु क्रपा करिकै आज्ञा दै देवे कि एक जेवघडी मेरे वास्तै खारीदि करिकै भेजि देवै उसे वासतै 30) मैं भेजता हूं ओरु जो कुछ जादा लगि जावै सो उस पता ठीक 2 लिखै वहा को भेजिं दूंगा ओरु 40) आपु के पास धरमार्थ में भेजता हूं उसमें 20) खास मेरे ओरु 20) अमरचंद कोठीवाल रुपधनी के कुल्लि 70) रुपैया का मनीआर्डर करिकै भेजता हूं

तारीख 25 फरवरी फालगुण सुदी 8 सम्वत् 1938

आपुका दास
जालिमसिंह रुपधनी का

(2)

श्रीयुत मान्यवर विद्वज्जन भूषन भक्त गुरु महाराज
पण्डित श्री स्वामी दयानंद सरस्वती जी

अभिवादन दो विज्ञापन पत्र गौरक्षया विषय में हस्ताक्षर करिकै आपु पास भेजता हूं ऐतौ कोटिला की **ठकुरानी साहिवा ने 9303[1] नौ हजार तीन सौ आठ मनुष्यों की सही** करिकैं उसकी पीठ पर लिखा कर भेजा है उसके ऊपर मेने सही लिखी है ओरु उसी कितावै भी मेरे पास ठकुरानी साहिबा ने भेजदी है कि जिनमें हस्ताक्षर उक्त मनुष्यों के लिखे है मौजूद है ओरु दस हजार (10000) मनुष्यों के हस्ताक्षर यहां से करा कर उसकी सही मैने ओरु मेरे भतीजे गुलावसिंह ने की है भेजता हूं डाक सरकारी में रजष्टरी कराकर ओरु मुझे ऐक छोटा सेवक अपना समझ कर कार्य मेरे योग्य सिवकाई का लिया करै जादा सुभ भाद्रपद सुदी 11 सम्वत 1939

आपुका आज्ञाकारी–
जालिमसिंह रूपधनी
डाकखाना धुमरी
जिलै ऐटा

1. आगे शब्दों में नौ हज़ार तीन सौ आठ छपा है। श्री डॉ० वेदपाल जी द्वारा सम्पादित पत्र व्यवहार भाग दो पृष्ठ 254 पर यह पत्र पं० चमूपति जी के ग्रन्थ से उद्धृत किया गया हे वहाँ यह संख्या नौ हजार तीन सौ आठ ठीक छपी है। 'जिज्ञासु'

(3)

ओ३म्

श्रीयुत मान्यवर विद्वज्जन भूषन
श्री महाराज पण्डित स्वामी दयानंद जी

नमस्ते मैं आपुकी क्रपा से आनंद से हू आपुक आरोग्यता ओरु प्रशन्नता से सदां चाहता हूं आपुके पत्र आने से बडा ही आनंद हुआ उत्तम धार्मिक मनुष्य का मिलना दुर्लभ है। यह तो बहुत ही ठीक है ओरू सम्मति मेरी तो आपुके सामुने सूर्य को दीपक दिखाना है ओरु आपुका अनुमान भी मेरे प्रत्यक्ष से वढ कर है निस्संदेह दोनों गुण मिश्रत है परन्तु खुलां वजां कोई पोपलीला नही की है ओरु अब तक कोई काम आपुके विरोध भी नहीं प्रगट किया यदि आपुकी मरजी होवै तो फिरि भी अवकी वार उनके लिखने ओरू प्रतिज्ञा को देखि लीजिये यदि आपुकी आज्ञनुसार न चलें निकाल वाहर कीजिये आपुकी कुछ हानि न होगी उनकी हानि ओरू हंसी होगी यदि अव की वार भी अपने कहे की भूल जावै तौ फिरि विश्वास कभी न कीजिये ओरू चरित्र वदरीका देख कर तौ यह समझ लिया कि पूरा विश्वास तौ अपना भी समझ कर आपुको लिखोंगा ओरू जोधपुर में विराजमान रहने का कब तक अनुमान है सब जोधपुर का बरताव उदयपुर के ही समान है वा कुछ नूनाधिक

मिति भाद्र सुदी 10 सम्वत् 1940

आपुका शिष्य
जालिमसिंह रूपधनी

(4)

ओ३म्

श्रीयुत मान्यवर विद्वज्जन भूषण श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य
श्री पण्डित स्वामी दयानन्द जी महाराज

अभिवादन आपुकी क्रपा से मे आनंद से हूं आपुकी प्रशसता परमात्मा से चाहता हूं पत्र आपुका मेरे पास आया वड़ा हर्ष हुआ आपुके लिखने माफक कहार तलाश क्या ऐक ने नोकरी करना चाहा परन्तु नोकरी 3) रु महीना कहिता है मै 2) कहे थे ओरू यह भी कहा है कि का अच्छा देने पर 3 भी हो सकते है ओरू भीमसेनि को मेने यह पत्र आपुका आया था वह सुना कर समझा दिया उन्होंने इकरार किया है कि मैं श्रीयुत यानी आपुकी नाराजी

किसी तरह से न करूंगा जदि करेंगे तौ अपने किये को पहुंचेगे

मिती कुआर सुदी 1 सम्वत 1940

आपुका आज्ञाकारी

जालिमसिंह रूपधनी

(1)

श्रीयुत ठाकुर नन्दकिशोरसिंह जी

जयपुर के पत्र–

ओम् तत्सत्

जगदुद्धारक परमार्थ दर्शक श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते जिस पंडित का विज्ञापन देशहितैषी में दिया गया था उस का समाचार यह है कि आजकल वोह कुछ दिनों के लिये पाठशाला मिशन देहली में एवजी हो रहे हैं पश्चात् पूर्ण होने इस एवजी के जो आप को आवश्यकता हुई तो उनसे पूछ कर फिर उत्तर दिया जावेगा यद्वा मैं स्वयं उन से पूछ कर आप से निवेदन करूंगा।

यहां का समाचार यह हे कि आजकल चतुर्भुज भी उपदेश कर रहा है और इधर वैदिक धर्म्म सभा ने भी एक विज्ञापन जयपुर गजट में छपवा दिया है कि प्रति शुक्रवार को वैदिक धर्म्म सभा में चतुर्भुज के कथन का खंडन होगा इस कारण सब सज्जन पुरुषों को उचित है कि उभयत्र श्रवण करके सत्य की धारणा और असत्य का परित्याग करैं। सो इस प्रकार पाक्षिक उपदेश को श्रवण करने से लोगों को चतुर्भुज का जाल प्रकाशित होता जाता है और लोगों के संस्कार वदलते जाते हैं।

हम को विदित हुवा है कि आप महाराजा जोधपुर ने निवेदन पूर्वक वुलाये हैं।। और आप वहां पर पधारे हैं इस कारण प्रार्थना है कि आप वहां के मंगल समाचार अवश्य लिखें जिनसे हम को और विशेष हर्ष होगा।

रामानंद ब्रह्मचारी जी महाराज यहां पर आये थे उन से संपूर्ण वृत्तांत यहां का कहा गया था सो आप को भी। मालूम हुवा होगा। और विशेष क्या निवदेन करैं।। पुनर्नमस्ते।

रामानंद ब्रह्मचारी को मेरी तरफ से नमस्ते पहोंचे

श्री स्वामी जी महाराज को गौरीशंकर का अत्यंत प्रेमपूर्वक नमस्ते पहोंचे।।

आप का सेवक

नन्दकिशोरसिंह

उपप्रधान सभा जयपुर

ज्येष्ठ कृष्ण 30 भौमवार।। संवत् 1940

(2)

ओउम्

तत्सत

परमहंस परमबिराकाचार्य श्रीमन स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज नमस्ते क्रपा पत्र आप का आया और जोधपुर में आप के व्याख्यान होने का वृतात और अन्य शुभ समाचार जान अत्यन्त आनंद हुआ आप की आज्ञा अनुसार बाईबिल के पूर्वापर विरुद्ध का उल्था हिन्दी में हो रहा है तैयार होने पर भेजा जायगा।[1]

चतुर्भुज पौराणिक का दुराचारण यहां पर भी लोगों को भले प्रकार प्रकाशित हो गया क्योंकि वह सत्यार्थप्रकाशादिक वेदोक्त ग्रन्थों में **बादी के प्रश्नों को आप का कथन बतला कर लोगों को धोखा देते थे** सो उन्की यह दग़ाबाज़ी उनके श्रोताजनो को स्पष्ट मालूम हो गई और वह बड़े निरादर से रुख़सत किये गये।[2]

थोड़े दिवस से पंडित गौरीशंकर बहुत बिमार है लेकिन अब आराम होता जाता है और आप की क्रपा से सभा बदस्तूर जारी और दिन बदिन उन्नति पर है कि आजकल सप्ताह में दो बार अर्थात् शुक्रवार व सोमवार हुआ करती है।

और यह तजवीज़ हमारे सभासद डाक्टर किशनलालकी सम्मति से हुई है और यह आजकल बड़े परोपकारी पुरुष हैं महाराज के ख़ास दफ़्तर में नौकर हैं और सभासदों की सेवा और सभा की उन्नति में अत्यन्त कटिबध मालूम होते हैं।

आप के उपदेशों की प्रशंसा महाराज साहब जैपुराधीश के निकट कैईवार हुई और उन्होंने उसकी सत्यता पर सम्मति भी की परंतु और कुछ विशेष वार्ता न हुई।

प्रयाग से मुद्रत किया हुआ धन्यवाद पत्र आया था उस पर आज्ञानुसार हस्ताक्षर करके उदयपुराधीश की सेवा में भेज दिया गया परंतु अभी तक उत्तर नहीं आया सो जवाब आने पर जैसा हाल होगा निवेदन किया जायगा।

और सर्व सभासदों की प्रेमपूर्वक नमस्ते मालूम हो

आपका शिष्य

नन्दकिशौरसिंह

जैपुर मिती आषाढ शुक्ला 3 शनी सं० 40

1. अमरीका से छपी इस अंग्रेज़ी पुस्तक का पंजाब में भी एक आर्य ने उर्दू अनुवाद प्रकाशित करवाया था। 'जिज्ञासु'
2. वैदिक धर्म के विरोधियों के प्रत्येक वार का तत्काल उत्तर देने से समाज का यश फैला 'जिज्ञासु

(3)

ओम् तत्सत्

स्वामी जी महाराज नमस्ते।।

समाचार यह है कि बाईबिल का पूर्वा पर विरुद्ध तर्जुमा जो आपने मंगाया था उसके विषय में प्रार्थना यह है कि कुछ तो हो गया है और कुछ अवशेष है विलंब का कारण यह है कि जिसकी वोह किताब थी उसने किसी मित्र को दिखलाने के लिये ली थी हमने और किताब मंगवाई है वोह अभी आने वाली है और उस किताब वाले ने भी आज या कल ही देने की प्रतिज्ञा की है इस कारण अब मैं आपकी सेवा में प्रार्थना करता हूं कि बहुत शीघ्र तर्जुमा करके आप की सेवा में समर्पण करूंगा। और जो कुछ तर्जुमा हो चुका है उस में से दो चार खंडन आपकी सेवा में भेजता हूँ।

प्र० 1. परमेश्वर का अपने कामों से राजी होना।

फिर परमेश्वर ने हर एक वस्तु पर जिसे उसने बनाया था दृष्टि कि और देखा कि बहुत अच्छी है। (उत्पत्ति विषय पर्व। आयत 31।।

परमेश्वर का अपना कामों से नाराज होना।

तब मनुष्य को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पचताया और उसे अति शोक हुवा। उत्त्पत्ति वि० प० 6 आयत 6)

5 परमेश्वर का थकना और आराम लेना।।

परमेश्वर ने छ दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन आराम पाया। (पात्रा वि० प० 31 आयत 17)

क्षमा करने से मैं थक गया हूं।। (यर्मिया) प० 15 आयत 6

तूने मुझे अपने कुकर्म्मों से थका दिया। (यसिइयाह) प० 43 आ० 24

परमेश्वर न कभी थकता है न आराम लेता है।

क्या तूने नहीं जाना और क्या तूने नहीं सुना कि परमेश्वर सनातन का ईश्वर है पृथि के सिवानों का सृष्टिकर्त्ता वोह न निर्बल होता न थकता है[1] (यसिइयाह) प० 40 आ० 28)

आप का दर्शनाभिलाषी

नन्दकिशोरसिंह

जयपुर 24 जोलाई 83

1. अमरीका से छपे नवीनतम संस्करण यह आयत ऐसे है, "He will not growthred or weary," संस्करण 2006 ई० पृष्ठ 1089 देखें।

(4)

ओउम् तत्सत्

श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते

अत्यंत शोक का समाचार है कि श्रावण शुक्ला 7 शुक्रवार तदनुकूल 10 अगस्त सन वर्तमान को प्रातःकाल के समय मुंशी गंगाप्रसाद जी वैश्य निवासी चौमुका कि जो इस वैदिकधर्म्मसभा के प्रधान थे हैजे के उपद्रव से स्वर्गवास हो गया इस कारण हम को अत्यंत ही शोक हुवा है कि ऐसे पुरुषार्थी तथा धर्म्मानुयायी पुरुष का समागम होना अत्यंत कठिन है इनका आर्य्यत्व वा पुरुषार्थ तथा वेदानुकूलाचरण इस नगर में विख्यात हो चला था और उस से उन्नति की अत्यंत आशा होती थी परंतु क्या किया जावे इस में दैव ही प्रबल है। ऐसी युवा अवस्था में ऐसे श्रेष्ठ पुरुष का वियोग अत्यंत दुःखदायक होता है अब आशा है कि आप पत्र द्वारा शीघ्र ही अनुमोदित करैंगे।

आप का सेवक
नंदकिशोरसिंह
जयपुर
श्रा० शु० 10 सोमवार

(5)

॥ ओं तत्सत् ॥

नं० 60

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य अनेक गुण संपद्विराजमान वेदविहिता चारधर्म्म निरूपक श्रीमत्स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते।

पत्र आप का मिति भाद्रपद शुक्ला 1 सं 1940 का आया समाचार विदित हुवा उसके उत्तर में प्रति नियम यथा संख्या निवदेन किया जाता है।

(1) पं० गौरीशंकर जब सहारनपुर में नोकर थे तब रु 32।।) मासिक पाते थे और जब यहां आये तो राज में तथ अंग्रेज के यहां भी रु 15) मासिक पाते रहे प्रन्तु इस मासिक पर वे यहां इस आशा पर ठरे थे कि शीघ्र ही कहीं अच्छी तंक्की हो जावेगी क्योंकि उस समय यहां विदेशी के रखने की आज्ञा नहीं थी इसलिये हाकिम ने यह भरोसा दिया था के कुछ समय के पश्चात् जब तुमारा हक हो जायगा तो तुम को बड़ी नोकरी पर नियत कर देंगे इस आशा पर उक्त पंडितजी अपने पांच आदमियों का बडी कठिनता से निरबाह करते थे बल्कि

संस्कारादि कर्म्म द्वारा सभा में भी सर्हयता पहुंचा करती थी।

(2) इन के ग्रहस्त के खरच को देख कर हम निश्चय करते हैं कि न्यून से न्यून 25/- मासिक में इनका निरवाह सुगमता से हो सक्ता है।

(3-5) आपने ज्यो दरयाफ्त किया के इस प्रबन्ध में तुम क्या सर्हयता करोगे इत्यादिक के उत्तर में प्रार्थना यह है के अभी इस सभा में केवल 3 तथा 4 पुरुष दृव्य से सर्हयता करने वाले हैं केवल इन ही के पुरुषार्थ से यहां का मासिक खरच अर्थात् किराया मकान स्थान रक्षक का मासिक वार्षिक उत्सव का आर्य्य जन का सत्कार तथा फरश पुस्तकादिक चलता है और अन्य सभासद वे नोकर अथवा पराधीन होने के कारण कुच्छ सर्हयता नहीं कर सक्ते इस कारण इस समय यह सभा कोइ विशेष खरच नहीं उठा सक्ती हां आशा है कि किसी समय पर यहां ऐसी उन्नति होगी के फिर अन्यत्र से दृव्य सर्हयता की आवश्यकता न रहेगी प्ररन्तु जो आप पंडितजी को उपदेशक नियत कर केवल यहां रखना चाहें तो सभा कुच्छ देसक्ती है यदि आप इनको एक उपदेशक नियत कर के अन्यत्र समाजों में धूमाना चाहे तो न्याय से किसी समाज पर इनके मासिक का भार न होना चाहिये और इनके यहां रहने और अन्यत्र घूमने के विषय में प्रार्थना यह है कि जब इनको आपने समाजों का 1 उपदेशक रखा तो इनका घूमना, आप के मनोर्थानूकुल होगा हां इतनी प्रार्थना है के यहां ऐसे उपदेशक की अत्यन्त आवश्यक्ता है क्यों के इनके यहां पर न रहने से उन्नती में हानी हो जावेगी द्वितिय पण्डितजी ग्रहस्ती हैं 12 महीने नहीं घूम सकेंगे इस कारण 6 महीने तो इनको अवश्य 1 जगह रहना होगा इस 6 महीने में यह जैपुर रहकर उपदेश तथा पढ़ाना वा **देश हिप्यादिक**[1] आर्य पत्रों को सर्हयता दिया करें और वर्ष के द्वितीय भाग में आप के नियमानुकूल घूमा करे।

(4) आपने ज्यो लिखा के इनके भोजन तथा रेल का खरच समाज से मिला करेगा इस विषय में प्रार्थना है कि ज्यो समाज शब्द से भिन्न-भिन्न समाज का अभिप्राय है के जहां जावे वहां से मिले तो हमारी सम्मती में सब समाजों में यह भार उचित नहीं है और ज्यो समाज शब्द से

1. यह **'देश हितैषी'** मासिक पत्र अजमेर का उल्लेख लगता है। 'जिज्ञासु'

उपदेश नैमितिक कोष का अभिप्राय है तो ठीक है और भोजन खरच के लिये ऐसा प्रबन्ध होना उचित है के इन के घूमने के समय में 5) तथा 7) रु० मासिक भत्ते के तौर से अधिक मिला करें अन्यथा नही।

सम्पूर्ण सभा की सम्मती पूर्वक आप की सेवा में प्रार्थना है के उपर के लिखे हुवे नियमोत्तरों को दृष्टिगोचर कर के शीघ्र प्रबन्ध कर देंगे पंडित गौरीशंकर से इस बात में दरयाफ्त किया गया तो उन को भी यह सभा का विचार माननीय है और ज्यो कुच्छ सम्मती तथा अज्ञा आप की होगी वहो सभा तथा पंडितजी को सर्वथा माननीय है प्ररन्तु इनकी आजीविका का प्रबन्ध शीघ्र हो जावे क्यों के आज कल यह बेकार हैं और खरच विशेष है इसलिये इन को इस समय आर्यसमाज से सर्हयता पहुंचनी आवश्यक है।

मुन्सी गङ्गाप्रसाद की अुनपस्थिति में सभा का यह प्रबन्ध हूवा है।

(1) प्रधान डॉक्टर कृष्नलाल वैश्य
(2) उप० ठाकुर नन्दकिशोरसिंह
(3) मंत्री श्यामसुन्दरलाल शर्म्मा
(4) उप० जगन्नाथ शर्म्मा
(5) कोशा० रामशरण शर्म्मा
(6) पुस्त० गोपीनाथ शर्म्मा

वर्षा यहां बहुत हूइ है और हो रही है और सब प्रकार कुसल क्षेम है। संपूर्ण सेवक जनों का आप को नमस्ते पहुंचे
उत्तर से शीघ्रऽनुमोदित किजियेगा

आप का सेवक
श्यामसुन्दरलाल मंत्री
वैदिक धर्म्म सभा
सवाई जयपुर
मिति भाद्रपद शुक्ला 9 सं 1940

श्रीयुत महाशय उज्वल जयकरणजी उदयपुर के पत्र

(1)

॥ श्रीपरमैश्वरजी ॥

स्वस्ति श्री जोधपुर शुभस्थानस्थ सर्बोपमा विराजमान स्वामीजी महाराज श्री 108 श्री दयानन्दजी सरस्वती के चरण कमलेषु उदयपुरस्थलिषितं उज्वलजयकर्ण

का शाष्टांक नमस्ते निवेदन होवै अपर।। क्रपा पत्र आप का आया जिस मैं लिखा मेरै पिता के ओर महाराज प्रतापसिंघ जी सैं अैक्यता करादी सो तो आप करुणानिधि है यावत आर्यावर्त का आप उपकार कर्त्ते हैं इस मैं हमारा उपकार कीया सों आप की अधिकाइ अधिक तो अेक जिह्वा सैं क्या लिखुं परंतु जिस कार्य के वस मैं पांच वर्ष सें यहां तपस्या करता हुं सो इतना तो सांवलदासजी नै किया कि यहा स्थापत कर दिये परंतु मन की भ्रांती यावत थी तावत् कुछ न था सो आपनै शुभ दृष्टी करकै मिटादी अब अके प्रताप से तथा यावदार्यकुलदिवाकर महाराणा जी के प्रताप से जन्मभर आनंदित रहेंगे नहीं तो बड़ा कष्ट था इश्वर आपकों चिरंजीवी करै।। ये व्रतांत मेरे पिताजी ने पहलै भी लिख दिया था फेर आप परोपकारी है जो न्याय की रीति से हमारा उपकार वनै सो करोइगें।। ओर माष्टर के विषय मै कृश्न जी नैं उत्तर लिखाइहै।। संमत् 1940 का श्रवाण शुक्ला 2 द्वितीय।।

(2)

।।श्रीरामायनमः।।

सिध श्री गढ जोधपुर शुभस्थानस्थ सर्बोपमा विराजमान स्वामी जी महाराज श्री 108 श्री दयानन्द जी सरस्वती चरण कमलेषु उदयपुरस्थ लिषिंत उज्वल जयकरणस्य नमस्ते

अपर।। कविराजा सांवलादासजी[1] इंदौर सैं याहां आये ओर किंचित वायू के कारण सै तथा धर्म सै नेत्र मैं पीड़ा हो गई दूजा नेत्र मैं सो पुनः इंदोर जाणै का विचार है सो कल जावेंगे और कविराज जी नैं कहा है कि स्वांमी जी माराज कुं लिख दो कि हुलकर साब कुं हमनै गोकरुणानिधी के विषय मैं कया तो उनाँनैं कहा कै स्वामीजी महाराज यहां पधारैंगे तब मै जरूर लिख दूंगा ओर तुम कुं नहीं ओर। रतलांम विकानेर जेसलमेर के वास्ते मुरादिान जी कुं लिख दिया है सो वे उद्योग करैगा पुनः आप वी आज्ञा करते रहियै अैसा सावलदासजी नै कया है आर मेरी प्रार्थना ये है कि आप यहां कितने दिवस विराजैंगे कारण यहो लोक पूछते है और श्रीदरबार के हृदय मैं आपकी भक्ती जैसी थी वैसी हैं ओर अब भादवा के शुक्ल पक्ष मैं मेरा ही विचार आणै का है सो याद रहै संमत 1940 का भाद्रपद कृष्णा 7 सप्तमी

1. उदयपुर मेवाड़ राज्य के कविराजा श्यामलदास को ही सांवलदास कहा जाता था। 'जिज्ञासु'

श्रीयुत दामोदर शास्त्री नाथ द्वारा का पत्र

श्रीमान् जगद्विहारी विचरताम्

(1)

दिन	समय	स्थल
श्रीनृसिंह जयंती	माध्यान्ह	श्रीनाथ द्वारा

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

जयंतु श्रीश चरणाः सर्वे सर्वैः समं सदा

ईशेयथा चैकवचः प्रयुज्यते तथैव चास्तां त्वयि माननीये।
प्रयुक्तमेतद्वहुलार्थदं मे स्वामिन् दयानंद नमो नमस्ते।
यद्यप्ययं नास्तिभवच्छ्तीनां पात्रोऽथवा नेत्रपथं प्रयातः॥
तथापियुष्मद्गुणदर्शनैर्वा आकर्णनैर्यः परिपूज्य बुद्धिः
काश्यां दृष्टतनूः पूर्वं मोहमय्यां च दर्शने॥
संप्रत्युत्कोपि भावत्कमतवन्मूर्त्यदर्शनः॥3॥
स्वतोपिच्यान योगेन पुरुषार्थार्थदर्शनः॥
भवन्मूर्तिं ध्यायमानः सदा भाष्यादि लोकते॥
मोहनलालवचोभिः संस्मृतिमेव प्रयाति नित्यंयः॥
स्वस्मृतिपात्री मवने प्रार्थयते स्वांत (भवता मितिशेषः) कोणतः स्थानां॥4॥
भवेत्कदातत्सुदिनं सुखाय यस्मिन्कृपास्यात् भवतां तु दर्शने॥
हरेस्तथावः, प्रणयानुबद्धे विद्यावतां विद्वद्वर सूरिणां भोः॥5॥
सदा कृपापत्रहृतैः दीनदामोदरस्य मे प्रष्टव्यं कुशलं चायं
बोधनीयतस्तथात्मनः॥6॥

श्रीमदीयः
दामोदर शास्त्री

अनुवाद

जिस प्रकार ईश्वर में एक वचन का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार मेरे कल्याण करने वाला एक वचन आप में प्रयुक्त हो, हे स्वामि दयानन्द, तुझे नमस्कार है।

(2)

यद्यपि आपने इस को (मुझे) कभी सुना नहीं है, और नाहीं कभी देखा है, तथापि आपके गुणों के देखने या सुनने से ही इसमें (मुझे में) आप के लिये पूज्य बुद्धि उत्पन्न हो गई है।

(3)

काशी में इसने आप के शरीर को देखा है और यद्यपि मुम्बई में भी यह (मैं) आप की मूर्ति को देखना चाहता है तथापि देख नहीं सका जैसे आप के मन में मूर्ति का दर्शन नहीं होता।

(4)

(तथापि) अपने ध्यान से ही मैंने, पुरुषार्थ के साध्य रूपी आप के दर्शन को ही पा लिया है, आप की मूर्ति का ध्यान करता हुवा सदा वेदभाष्यादि पढ़ा करता है (मैं पढ़ता हूं)

(5)

आप मोहनलाल की बातों से नित्य याद आते रहते हैं, मैं आप के हृदय में थोड़ा स्थान चाहता हूं जिससे मैं भी याद आता रहूं।

(6)

वह सुख देने वाला कौन सा शुभ दिन होगा जिस दिन, आपके दर्शन के लिए, इस स्नेह से आप में लगे हुवे जन में महा विद्वान् आप की और परमात्मा की कृपा होगी।

(7)

सदा कृपा कीजिये, पत्ररूपी दूत से इस दीन दामोदर का कुशल पूछते रहिये, और इस अपने (जन) को समझाते रहिये।

श्रीमदीयः
दामोदर शास्त्री

श्रीयुत दवे धुड़राम जी श्रीमाली जालोर का पत्र।

(1)

॥ श्री परमेश्वर जी सत्यछ ॥

॥ श्री विश्वंतराय नमः ॥

॥ स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रे सर्व गुण निधान सर्वोपमालक्तृत् ॅश्री ॅश्री ॅश्री 108 ॅश्री ॅश्री ॅश्री दयानंद सरस्वति जी योग्य जालोर से लिषितं ब्राह्मण श्रीमालि आवसति पुष्कर दबे घुड़ा राम का प्रणाम नमो नारायण बंचणा अत्रकुशलं तत्रामीकुशलं अप्रंच समाचार बाचणा कि आप मरुस्थल देश मे मधैहत्पुर श पधारे सो देश पावन किया ओर आप कि कीर्त्ति ईदर वोहोत सुंणे मे आई हे कि सनतान वेद धर्म्म मे वर्त्तते हे और पासंड मतां कु बेदन करते हे सो अबी इस वषत मे कलु के विच में शंकर स्वामि कैलाश पधारियां पिछै अेसा कोई महत्पुरुश प्रगट्या नहिं था ने पाशंड मत बहोत चला हे सो अब हमने तो अेसे

बीचारा के आप सनातन वेद धर्म प्रवृतमान करणे के अर्थे ओर अंधे मनुष्यां कै नेत्र प्रकाश करणे के वास्ते परमेश्वर जी ने आपकु स्त्रीष्टि मे भेजे हे सो आप जरूर जगत का सुधारा करोगे एशि बशबो ईदर कि तरफ आई है परंतु अबी वषत ऐसा हे के गउ ब्राह्मणकु बेदन करते हे फेर सनातन धर्म केसे चलेगा फेर गउ ब्राह्मण केसे हे प्रत्यक्ष कामधेन कल्पवृक्ष हे जिण से सर्व स्त्रिष्टि का भरण पोशण होता है इसका घृत शे श्रौतस्मार्त्त कर्म होता हे ओर गौउ का पुत्र शे सर्व नाज निपजता हे वृशभ जेशे फेर कोई बलवान् न जानवर हे नही ईस का नाम बलहद। जगत केते हे फेर जीस वृषभ की माता गउ स्सो सर्व जगत कुं दुद ग्रीत सर्व तरे का आनंद देवे वो आप तो घाश षावे ओर जगत कुं दुद पिलावे एसी पर उपगारी गउ जीश कु जीश कु बध करणे लगे जीश मे कोई मना करणेवाला समर्थ नहि ओर गउ ब्राह्मण का जोड़ा हे परंतु कोई ऐसे हकेगा की **ब्राह्मण ने ब्रह्मत्व पणा छोड दिया जीस से ब्राह्मण का मान्य कम हाये गया परंतु गउ ने तो गउ पणा छोड़ा नहि घाश खाति हे ने दुद देती हे फेर गउ वध किऊं होति** हे हम ने गउ ब्राह्मण का अधीकार लीखा सो एशा नहि के एहिज धर्म्म सबाहे परंतु एशे जानते हे के वेद शबहि वेद के सूत्र। स्मृतियां में पंडित कहते हे के श्रौत्रस्मार्त अग्निहोत्रादिक कर्म्म कहा हे तिण शे गउ ब्राह्म कि कथा आप कु लिषी है सो गेलि गुगि लिखि होय तो गुना माफ करणा सत्य असत्य कि जो आप जानो सो षरि हे सतगुरु मिले तो संशे मिटे

1 प्रश्नः 1 ओर आपकु प्रश्न पुछते हे सो आप संदे मिटाणा हमारा। कोई एसा कहते हे के वेद मे पशु वध करणा कहा है परंतु हमारे मांनणे मे आई नहि तब उसने कहा के वेद प्रमाण हे

वेद प्रमाण देते हे ईश मंत्र शे होता यक्षदग्निꣳ स्विष्टकृतम याडग्निरश्विनोश्छागस्य हविष प्रिया धामान्ययाट् सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया धामान्ययाडिन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामान्ययाडग्नेः प्रिया धामान्ययाट् सोमस्य प्रिया धामान्ययाडिन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामान्ययाट् सवितुः प्रिया धामान्ययाड्वरुणस्य प्रिया धामान्ययाड्वनस्पतेः प्रिया पाथाꣳस्ययाड् देवानामाज्यपानां प्रिया धामानि यक्षदग्नेर्होतुः प्रिया धामानि यक्षत् स्वं महिमानमायजतामेज्या इषः कृणोतु सो अध्वरा जातवेदा जुषता ꣳ हविर्होतर्यज।। इश मंत्र से प्रमाण देते हे।

2 प्रश्न 2 ओर वेद मे अहंब्रह्मास्मि। लिषते हे ओर कोई ना बोलते हे अहं ब्रह्मास्मि ये बात किलाप हे ओर वेद में लीषते हे हिरण्ययेन पात्रेण सत्यास्यापि हितम्मुखम्। योसावादित्ये पुरुष सोसावहम 2 ॐम् खंब्रह्म प्रथम तो

कहा के सो सावहम् परब कहारक खंब्रह्म सो ये बात केसे हे। ओर ईश मंत्र मे हिरण्ययेन पात्रेण हे के हिरण्मये न पात्रेण हे तिश का प्रत्युतर:

3 प्रश्न 3 ओर वेद मे श्रौतस्मार्त्त कर्म्म करणा कहते हे फेर कोई कर्म्म कि नास्तिक कहते हे सो अब आप महत् पुरुषो के पास विणती भेजी हे सो निरधार कर पिछा प्रत्युतर भेजणा ओ आप कबीर से बिचारो के उदर बेखई प्रश्न का उत्तर लिया चाहाते हे आप तो ज्ञानी हो सो एसा कबि विचारो नह। परंतु हम तुछ बुद्धी वाले हे सो ऐसा छीरते हे ओर हमारा प्रणाम तो एसे रहता हे के माराज के पाश उरुबरु जाय के माराज के श्री मुष के वचन सुणे ओर अेसे पुरुषां के चरणारवंद मे रहे मन तो ऐसे रहता है परंतु माया के पास मे बंधे हे सो आणेकु फुरसत नहीं कारण के गरीब आदमि हे भिक्षा मांग के गुजर चलाते हे परंतु आपकु जोधपुर मे पधारे सुणे जीस दिन से आप के दरसण कि अभिलाषा लग रहि हे

फेर कबि आप एसे बिचारो के ये मूर्ष ने क्या गड़बड़ रासो भेज दिया हे सो हम कुछु पंडित हे नही ओर बुद्धीमान बि हे नहि जेसी जगत मे विष्यात वातां सुण्णे मे आई तेसी अरजी आपकु भेजा है सो अक्षर आगा पाछा के ज्यादा कमति लिषण मे आया होय तो गुना माफ करणा ओर आप बड़े हो जेसी बडि विचार के प्रश्ना का प्रत्युतर भेजणा

ओर हमारा मन ईहा तो एसे रेता हे के आप के पाश वेद पढे ओर गुरु की बंदकी करे परंतु भरण पोशण का कोई तरफ से उपाय लगावो तो आपके पास चले आवे वेद पढ़ाणाये उपगार का काम हे इति

आप करिपा करकै पत्र भेजो तब गांम जालोर मध्ये शारी माली ब्राह्मण धुडाराम पोकरदास के पास पोछे ठीकीणा ब्रह्मपुरी मे

धुडाराम की उमर बरश 25 की

पुसकर की उमर बरश 25 की

।संवत् 1940 रा मिति भाद्रपद सुद 1 ये

श्रीयुत भाई जवाहरसिंह जी (लाहौर तथा शाहपुरा) के पत्र

(1)

ओम्

No...617

Arya Samaj Office, Lahore

Dated 17th Febury 1883

To

श्रीमत्परिव्राजकाचार्य
श्री 108 मद्दयानन्द सरस्वती जी
महाराज योग्य "नमस्ते"!

SRI,

आपके दोनों कृिपा पत्र आये पढ़कर बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ; अब आप के प्रश्नों का क्रम से उत्र दिया जाता है।।

कारीगरी का स्कूल हम नहीं खोलना चाहते कितु तत्व अर्थात् पदाथ्र विद्या का स्कूल खोलना चाहते हैं।। द्वितीय श्रेष्ठ है।।

लाला शालगराम सम्पादक आर्य यंत्राल्य में समाज के प्रति देने को कहा है उसकी लिखाई इसी स्थान में होगी अन्यत्र नहीं।। मैंने पूरब पत्र में यह लिखा था पूर्वोक्त सम्पादक समाज को दान देकर कलकत्ते में स्वकार्यार्थ चले गये हैं। जब आवेंगे तो लिखा पढ़ी हो जायगी। सो वह महाशय अब आ गये हैं।। दुष्ट लोग उसको भ्रमा रहे हैं। ऐक पत्र धन्यवाद का यदि आप उनके नाम भेजें तो लाभदायक हो।।

आप का येह कथन कि हम मद्रास्यों[1] को भूल रहे हैं सत्य है निस्सन्देह आप का उस दिशा में उपेदशार्थ रटन करना बंगाल हाथे से उत्तम होगा।

आप के द्वितीय पत्र से सिद्ध होता है कि आप दो स्त्रीयों के वास्ते मुझे इससे पूर्व भी लिख चुके हैं परंतु इस विषय में मेरे पास कोई अन्य पत्र नहीं आया। दो स्त्री जो पतीवाली शुद्ध आचरण वाली कसीदा अर पढ़ाना जाणने वाली हो तथा दो पुर्ष एक अन्तरंग मंत्री जो स्वदेश हितैशी धार्मिक राजनीति में निपुण[2] इंगलिश भाषा का पण्डित अर कोई विष्म हो उसके लिखने में भी निपुण तथा परिश्रमी अर घर के समान काम करने वाला स्वामी भक्त कृतग्य आदि हो।। अर द्वितीय "ओवर सीयर जो अपने कार्य में निपुण आदि हो मागते हैं। इसमें दास के बहुत बिचार हैं थाहिः-

1 देश की दुर्भाग्यता से प्रथम तो अैसी स्त्रीयों का मिलना बहुत ही कठन है। जो ढूढ़े से मिलें भी तो पतीवाली का होना भी कठन हुआ। शुद्ध आचरण मे संदेह रहा तो भी ठीक न हूआ। यदि पतिवाली भी अैसी कोई स्त्री हुई तो वह इतनी दूर जाकर नौकरी न करेंगी यावत काल उसका पती भी राजस्थान में सङ्ग न जावे। अर अैसा पती भी कोई न होगा जिस की स्त्री

1. (तामिलनाडू के निवासी) 'जिज्ञासु'
2. जवाहरसिंह की विशेष सोच थी। 'जिज्ञासु'

अैसी होने पर वह आप निकम्मा होगा अर स्वपतनी को द्रव्य के लिये परदेश भेजने पर राजी होगा इससे पती अर पतनी दोनों को राजस्थान में नोकरी चाहिये।। तब काम चले।।

2 स्त्रीयों का मासिक आपने नहीं लिखा? ओर न येह लिखा कि वह उदयपुराधीश तथा शाहपुराधीश के किसी देशी पाठशाला में पढ़ायेंगी या उनके राज ग्रह में? अैसी स्त्रीयें हम ढूढ रहे हैं शीघ्र ही इसका व्योरा लिख भेजेंगे।।

पूर्वोक्त गुण युक्त अंत्रंग मंत्री ढूढ़े से मिल तो सकता है परंतु 50 मासिक पर मिलना कठन है।। यह बात आप पर प्रगट होगी कि रेल के मिस्त्री वा त्रखान 30) वा 40) मासिक पाते हैं अर सामानय इंगलिश के ज्ञाता 50) वा 60) मासिक पाते हैं। तो अैसा पुरुश जैसा आप चाहते हैं 50) मासिक पर भला कब आ सकता है? हां येह भी सत्य है कि 50) पर सैकड़ों आने को तैयार हो जांवेगे परन्तू जैसे आप चाहते हैं कि वह पुरष हास्य का कारण न होवे अैसा 50) को नहीं मिलेगा इस दास के विचार में तो यह आता है कि पूरण गुण युक्त 150) मासिक पर मिलने से भी ससता है।। तथापि हम सब अैसे गुण्यवान पुरष की परताल रखेंगे।।

निम्नलिखित बातें प्रष्ठव्य हैं इससे सहज से कोई मनुष्य मिल जावेगा कृपा द्रिष्ठ से उत्र लिख भेजें।। तथाहिः-

1. अन्तरंग मंत्री उदयपुराधीश वा शाहपुराधीश को चाहये?
2. पश्चिमोक्त राज्य की विभूती कितने लक्ष की है?
3. मासिक में बड़ती कब 2 अर कहां तक होगी?
4. मासिक से भिन्य रसद कितनी मिलेगी?
5. निवास स्थान गत असबाब राज्य से होगा वा नहीं?
6. सवारी के सारे खरच नोकर आदि के किसके जिम्मे होंगे?
7. मासिक ह महीने मिलेगा या नहीं?
8. राजा की आयू अर स्वभाव अर विद्या?

इस विषय में प्रधानादिकों से जहां तक विचार हो चुका है वह यद्यपि मैं अपनी लेखनी से नहीं लिख सकता तथापी सारांश येह कह देता हूं कि प्रधानादिकों का विचार है कि यदि मासिक अधिक हो जावे अर स्वामी जी भी संमती इस बात पर दे दें कि येह बात उत्तम है तो मैं इस नौकरी को कबूल करलूं।। परंतू मैं अभी तक कुच्छ नहीं कह सकता किउ कि 50) मासिक मुझे अपने घर में मिल जाते हैं जो बाहर के 100) के वराबर हें।। अर यहां कानून का पड़ना समाजों में व्याख्यान देनें सब रह जावेंगे अन्य परकार से भी संकोच है कि देशी राज की नौकरी कबी नहीं करी अर न

देशी राज प्रबंध की उपमा किसी पत्र में देखी जे कर देखी तो बहुत कम देखी।। अैसे समें में अपनी योग्यता की प्रशंसा करनी भी महां अयुक्त हौगी अर न वास्तव से किसी योग्य हूं मैं।। **हां कुच्छ पुलीटकल विद्या का स्वभाव से प्रेम है यांते समाज के सज्जन पुरुष यही कहते हैं कि तुम इस काम को अच्छा निबाहोगे।**[1] परंतू मैंने हां या नां नहीं कही अबी विचार हो रहा है देखये परिणाम। क्या होता है।।

हां आप के कृपा पत्र में इक बात अैसी हे जो आकरषण कर लेती हैं अर्थात **"देश के हित का काम"** व **"जिनके भाग्य होंगे वह आयेगे"** इस से मन में आती है कि कुच्छ काम करना चाहये।। अच्छा देखा चाहये क्या होता है।। बहुत जलद आपके प्रत्युत्र आने पर उत्र लिखा जावेगा।। अर हम सब अैसे पुरष की तलाश मे हैं।

"ओवरसीयर" भी 30) मासिक पर नहीं मिलेगा। हां "स बओवरसयिर" मिल जायेगा। इस विषय में भी प्रयत्न होगा इस पत्र में जो प्रश्न हैं उनके उत्र लिखने में आप को जो परिश्रम होगा उसके लिये क्षिमा मांगता हूं।। येक दो प्रश्न तो सामान्य हैं परंतू उनके जाणने की भी आवशक्त हुई है।। इतिः जः सः।

आज से 15 दिन हुये कि राय बिश्नुलाल ऐमः ऐः ववील[2] हाईकोर्ट इलाहाबाद ने लाहौर में ऐक व्यख्यान दीया था जिस का विषय येह था कि "आर्यसमाज अर थीओसोफीकल सुसायटी के मिलाप की आवश्यकक्ता।" उसके साथ कूतहूमीलालसिह का ऐक अवतार भी था जिसने येह कहा कि योग बल में व लाल सिंह की सहायता से वह सभ काम कर सक्ता है जो काम ईसा मुहम्मद नानक राम कृश्न न कर सके।। वह आज कर देनें को प्रस्तुत हैं अरे येह भी कहा कि समाज व सोसायटी के प्रधानों को जो परस्पर झगड़ते हैं दूर करके सभासद मिलाप करलें इस से आर्यवरत की उन्नती होगी। इत्यादिक कहकर कहा कि योग की महमां दिखलाने के वासते हम आज अैसे अचम्भे की बात दिखलाते हैं कि कोई आंगुली हमारी काट लेवे यदि किसी में समार्थ हो। ओर यदि कट भी गई तो उसी समें हम अंगुली अच्छी कर लेवेंगे।। फिर इकरारनाम लिखा गया।। उङ्गली काटी गई।। वह टुकड़ा मांस का अर इकरारनामा समाज में रखा है।। इकारानांमे पर येह लिखा था कि "अगर आंगुली काटी गई तो निश्चे से थीउसोफीकल सोसायटी में कोई योगी नहीं" शरम खाकर वह दोनों काशमीर चले गये और फिर योगी बन

1. भाई जवाहरसिंह राजनीतिक अधिक सिद्ध हुये, महत्त्वाकांक्षाय तो हैं ही। 'जिज्ञासु'
2. यह शब्द 'वकील' होना चाहिये। 'जिज्ञासु'

गये। वहां राजा ने बड़ा सतकार कीया है।। शोक है कि लाला शालग्राम के इंगलिश परचे के बिना किसी दूसरे पत्र में येह पांज नहीं प्रगृ हुआ।

आपके पास (रीजिनेटर[1] ओफ आर्य्यवरत) इंगलिश पत्र आता है उसमें विस्तारपूर्वक निर्णय कीया है उनको आवश्यक देखना। यहां इतने बड़े भारी जलसे में कई पत्रों के इडीटर विद्यमान थे परंतु बड़े ही आश्चर्य की बात है कि इस पाखण्ड **को किसी अखबार वाले ने नहीं छापा उलटा कलकत्ते के पत्रों में छप गया है कि जब "किसी से उंगली न काटी गई तब योगी ने कहा कि अच्छा अब काटो तब कट गई"**।। यहां येह हाल गुजरा है। क्या झूठ की महमा हो रही है।

मुद्रित स्वाकार पत्र की ऐक प्रति जो आपने यहां भेजी है यदिआज्ञा दें तो इस को लोकों में प्रगृ कर दिया जावे?

अैसा विचार में आता है कि "मैडिम्ब्लैक्टस्की" ने सर्व साधार्ण पत्र वालों पर अपना असर डाल रखवा है। नहीं तो इतने बड़े झूठे को किसी दूसरे ने छापा किउना मैं बड़ा आश्चर्यमान हो गया हूं।[2]

लाला रत्नचंद बेरी सम्पादक "आर्य्य" का समाज संबंधी विहार बहुत अनुचित है। (इन्द्रमणी दूसरा मानो कभी होगा)[3] वेह सभासदों को परस्पर चुग्ली झूठ से लड़ाते हैं।। लाला शालगराम को जा जा कर भ्रमाते हैं।। अन्तरंग सभासदों की निन्दा करते हैं अर आप पक्के आर्य बनते हैं।। युक्ति येह देते हैं कि "आर्य में कोई बात आर्य धर्म्म के विरुद्ध आज तक नहीं छपी।। परंतू हमारा तो येह विचार है कि जिस में उसके पत्र के ग्राहक आर्यसामजियों के बिना इतने हो गये जो उसका पत्र चल निकले तो वह उसी में विरुद्ध हो जावेगा ब्लैवटस्की की चिट्ठीआं उसके पास आती हैं अर जाती हैं अर हम को पीछे उसने कहा था कि "मैंने सोसाइटी को इस्तीफा लिख भेजा है" **पर जगह-जगह अपने नाम के पीछे "F.T.S." लिखता है जिसका अर्थ यह है कि वह सोसायटी का सभासद है।**[4] जब आर्यसमाज व थी: सोसायटी का संबंध टूटा था उसमें रत्नचंद को कहा था कि "तुम कुच्छ अपनी ओर से छापो" इसका तात्पर्य येह था कि रत्नचंद के पास अैसी चिट्ठीआं हैं जो वह छप जातीं तो उस सोसायटी की आर्यवरत से जड़ उखड़ जाती परंतू रत्नचंद ने यही कहा कि "वह चिट्ठीयां यदि छाप दूं तो "मैडिम" मुझ पर नालिश कर देंगी" बस येह उत्र देकर टालदीआ!।। अच्छा

1. रीजिनीरेटर शब्द होना चाहिय।
2. पाखण्ड का फैलाना भी एक कला है। 'जिज्ञासु'
3. आप इन्द्रमणि जी से भी आगे निकल गये। 'जिज्ञासु'
4. घुसपैठिये आर्यसमाज में मूलराज जैसे और भी थे। 'जिज्ञासु'

देखये कहां तक कारवाई होती है!!

चिट्ठी के उत्र लिखने में देर इस कारण से हुई है कि मैं अमृरतसर चला गया था। वहां पहला वारषिक उत्सव हुआ था वहां के मंत्री जी ने येह कहकर कि "उत्सव हमनें पहले कभी कीया नहीं कोई दिन के वासते यदि भाई जवाहरसिंह पहले आ जावें तो अच्छा हो" मुझे बुलवाया था। उत्सव अच्छा हो गया। वहां मेरठ के पं. विहारीलाल ने "थीयोसोफीकल सोसाइटी" की खूब गत बनाई थी।

आज रात अंत्रंग सभा हुई आप के दोनों पत्र सुना दीये स्त्रीयें मिल जाने की संभावना हूई परंतू विधवा होंगी। निर्णय येह अंत्य में हुआ (कि स्त्रियों के स्कूल मासटर से पूच्छा जावे कि वह अैसी दो स्त्रीयें दे सकता है जैसी चाहये) "ओवरसीयर" "अंत्रंग मंत्री" के विषय में भी येही फैसला हुआ कि (तलाश की जावे अर यदि मंत्री की नौकरी भाई जवाहरसिंह स्वीकार कर लें तो बहुत अच्छा हो; ये दोने फैसले जबानी हुये लिखे नहीं गये किउकि असल में ठीक फैसला कोई नहीं हुया अर न हो सकता था इस पत्र के उत्र आने पर फैसला होगा।

"Aryan Science Institution" जो हम खोलना चाहते हैं उसको आर्य भाषा में (आर्य प्रकृति विद्या अनुष्ठान) कह सक्ते हैं।

अंत्य में पुना इस बात को लिखना "कि आर्य भाषा के लिखने में बहुत अशुद्धिये हो जाती है क्षिमा कीजिये" गौरव है जब कि आप का अमृतवत मधुर वचन कि (जो तुमने इतनी बड़ी चिट्ठी आर्य भाषा में लिखी यही हमने तुम्हारी शुद्धी जानी मेरे पास विद्यमान है।।

नमस्ते।। लिखी बुद्धिवार 18 अप्रेल सं: 1883 ई

आपका दास
जवाहर सिंह
मंत्री आर्य समाज। लाहौर

P.S.

(यदि अनुचित न हो तो) आप से संमती मांगता हूं अर वह थोड़े अक्षरों में है कि "यदि मैं इस नौकरी को स्वीकार कर लूं (जैसे कि प्रधानादिकों का विचार है) तौ कैसा हो" यह बात मैं पीच्छे पूच्छनी चाहता थां परंतू न रह सका।।

आपका दास
जवाहर सिंह
लाहौर

वह योगी का स्वांग जिसनें उंगली कटाई थी मद्रासी मालूम होता है अर कई कहते हैं कि येह वही नौकर है जो मैडम के साथ लहौर में आया था। मुझे भी अैसा ही प्रतीत होता है।

ज: सिंह

(2)

No.

Arya Samaj Office, Lahore
Date....16th...March....1883

To

श्रीमन्महाराज श्री 108 स्वामि पण्डित दयानन्द सरस्वति जी
(चितौड़ गढ़)

।।श्री विश्वंतराय नमः।।

Sir

महाशय!
नमस्ते!!
आपके अनुग्रह पत्र को आये 8 दिन हो गये।।

प्रत्युत्र में जो देर लगी इिस का कारण है।। जो मुख्य करके रुपये देने वालों से कुछ बात चीत करनी थी। सो यह है। कि यहां से 5 पुरुषों ने 330) रुपये दीये थे इस क्रम से:-लाला सांईदास 100); लाला जीवनदास 100); लाला राम सहाय 50); लाला मङ्गूमल 50); लाला दिलबागराय 30); कुल 330); इनमें से लाला सांईदास जी ओर लाला जीवनदास जी ने अपनी उदारता से अपना 2 रुपया वेद भाष्य के सहाय में दे देना स्वीकार कीया है।[1] दोनों महाशय पर उपकार में सदा युक्त रहते है।। परशंसनीय हैं।। बाकी रहे 130) रुपये; सो इस प्रकार सोचा गया है कि यंत्रालय में लहोर समाज के नाम 130) जमा कर लीये जांवे और यहां जो पुस्तक यंत्रालय से आये हूये हैं उस हिसाब में से 130) क्रम पूर्वक लाला रामसहाई मङगुमल; और दिलबागराय को दिये जांवे।। आगे जिस प्रकार आपकी आज्ञा हो वैसी की जायगी। दोनों पत्र येक आर्य्यसभासद के हैं जिसका नाम लाला सालगराम है। आर्य्य यंत्रालयाध्यक्ष वही हैं। बहुत उतसाही हैं।। इसने अपनी सारी जायदाद का चौथा हिस्सा; तथा आयुष प्रयंत 1/4 आमदनी दे देना स्वीकार कर लिया

1. ऋषि जी ने आग्रहपूर्वक इनका उधार लिये धन को लौटाना चाहा इन दोनों ने वापिस नहीं लिया। परोपकारार्थ दे दिया। ऋषि की अर्थ शुचिता व सिद्धान्त निष्ठा ऐसी ही थी। 'जिज्ञासु'

है; अर सारी जायदाद 1½ लाख रुपये की बताई है; प्रंतू येह लिखत नहीं हूई।। लाला सालगराम कलकत्ते से अब आवेंगे तब लिखत हो जायगी। जायदाद पर समाज का कबज़ा सवाकार पत्र द्वारा होगा अर्थात उसकी म्रत्यू पश्चात।।

श्रीमान् उदयपुराधीश का उतसाह पढ़ कर परम हरष प्रकाशित हुआ। ईश्वर भारतवरष गन सगल राजा गण को इसी प्रकार सद मारग प्रयुक्त करे।।

येक परम हरष की बात है कि हमारी समाज से येक Aryan Science institution (शिलपादि विध्यालय) खुलने वाला है येह हमारे देश में पहली बात होंगी। इसमे सब प्रकार की विध्या हसत क्रया से करके दिखाई जायेंगी बिजली तार रेल आदि कारीगरी सब सिखाई जायेंगी सब असबाब विलायत से मंगवाया जायगा।। 400) चंदा हो गया थेढ़ी जगह से।। और कोशश की जायगी। परंतू समाजो से नहीं किउ कि वैदिक मिशन फंड के वासते 1 लक्ष रुपये की आवशकता है।। उधर बी घ्यान है।।

पुना येह बात आप पर विदित होगी कि यहां पर लड़कीओं का सकूल है 1 बरस व्यतीत हो गया अब 30 लड़की पढ़ती है।। स्कूल समाज के मन्दर के अंदर है।। हिन्दी की पड़ाई होती है।। अर दसताने जुराब अर गलूबंद बुनती हैं।। अर कसीदा काड़ती हैं।। प्रीक्षा पूर्व्वक इनाम बी दिये जाते हैं। अब उनन्ती बी है।।

लाला साईदास जी कहते है कि आपका जैसा कोई पत्र नहीं आया जिसमें रुपयों की बावत आपने कुछ पूछा हो।।

मंत्री आर्य्यसमाज के पत्र से विदित हुआ कि महाराजा फरीदकोट ने 1000) अनाथालय के सहाय में देना स्वीकार कीआ है।[1]

आपके दरशनों की अभिलाषा पंजाब में लग रही है आप कब तक दर्शन देंगे?।।[2]

बंगाल हाता समाजो से शुन्य पड़ा हैं कलकत्ते की ओर जाना भी आवशक प्रतीत होता है।। अब आपके ईरादे किस तरफ है।। हमको तो इस तरफ़ आने से दर्शन का लाभ है उस तरफ़ जाने से अपने बंगाली भ्रात्री वाबा की उनन्ती का लाभ है।

मुझे हिन्दी लिखनी नहीं आती यदि लिखता हूं तो बहुत अशुध लिखी जाती है जैसे इसी पत्र से विदित होगा इस कारण उर्दू वा अंग्रेज़ी में पत्र

1. अंग्रेज़ की कूटनीति से ऐसा परोपकारी महाराजा समाज से कट गया। 'जिज्ञासु'
2. मनुष्य के मन को कौन जान सकता है? जवाहर सिंह जी का मन बदला तो समाज के घोर विरोधी बन गये। 'जिज्ञासु'

लिखता रहा हूं ओर अब बी अंग्रेज़ी में लिखने लगा था। प्रन्तू जैसे आई वैसे लिख दी इस कारण कि शायद तकलीफ़ न हौवे।

और सब ईश्वर की किरपा से कुशल है।।

आपका दास
जुवाहरसिंह

(3)
ओम्

No...110

Arya Samaj Office, Lahore
Dated 11th May 1940 वि० 1883

To

श्री 108 मत परमहंस प्रविराजकाचार्य
श्री 108 पं० दयानन्द सरस्वती स्वामीजी।।
शाहपुरा, देश मेवाड़, राजस्थान

Sir,

इससे प्रथिम तार के द्वारा लिख चुका हूं अब पत्र द्वारा अपने आशय को प्रगट करता हूं।

जब से मैं आर्य्य भाषा में पत्र विवहार करने लगा हूं तब से कोई न कोई अैसी भूल रह जाती है जिसको पीछे देख कर शोक होता है। मेरा तातपर्य येह नहीं कि लिखने में अशुद्धयें ही रह जाती हैं किंवा लिखने में तो रहें हीगी प्रन्तू भावार्थ में भी रह जाती देख कर शोक होता है।। यद्यपि येह मन में आता है कि यावत आर्य भाषा में पंडित न हो जावें तावत पत्र विवहार इंगलिश वा उरर्दू आदि में रख लिया जावे।। तथापि येह बात अयुक्त नाण कर[1] इसी भाषा में लिखना उचित प्रतीत होता है। मुझे अैसा स्मरण होता है कि मैंने प्रथिम पत्र में लाला शालग्राम का कलकत्ते में जाना स्वकार्य नमित्त से लिखा था प्रन्तू उस लेख में कुछ भ्रम रह गया। पुना।। चैत्र शुक्ल 3 मंगल का लिखा पत्र जो आपका मेरे पास आया उससे विदित होता था कि स्त्रियों के विषय में आप उससे पहले भी लिख चुके हैं उस पर मैंने अपने पत्र में लिख दीया था कि अैसा पत्र आपका कोई मेरे पास नहीं आया परन्तू फिर आपके अन्तयम् पत्र से अनुमान होता है कि कोई टुकड़ा कागज का उससे पूर्व पत्र

1. यहां 'जानकर' शब्द समझें 'जिज्ञासु'

में आपसे लफाफा बंद करने के समय रह गया होगा। नहीं तो आप का यह लेख कि (हमारे पत्रस्थ दो बातों का उत्तर तुमने नहीं दीया, एक तो लाला मूलराज के भाई आदि) अैसा न होता, जिसका अर्थ यह है, कि आपने तो मुझे लिखा था परन्तू मैंने उसका उत्तर न दीया।। अर वास्तव में मुझे श्रीराम के विषय में इससे प्रथिम कोई आपकी आज्ञा नहीं आई।। नहीं तो मैं अवश्य लिखता येह सारी ख़राबी मेरी अशुद्धीयों के कारण से होगी। पत्रस्थ तातपर्य्य प्रगट करने योग्य सरवत्र नहीं होते इससे किसी से शुद्ध भी नहीं करते। अर्थात् जैसा आता है वैसा लिख देता हूं।।

मेरे पूर्व्व पत्र में येक अशुद्धि यह रह गई कि लाला रत्न चन्द बेरी स्थान-स्थान में अपने नाम के पीछे F.T.S. अर्थात् थीयोसोफीकल सोसायटी का सभासद कहलाता है। अैसा नहीं बाकी सब हाल ठीक है।। यह बात लः जीवनदास से विदित हुई।

दोनों पत्र जो आपके पास आते हैं वह लाला शालग्राम के हैं जैं अैसा लिख चुका है।। परन्तू जब दान की लिखा पड़ी हो जायगी तो वह समाज के ही समझे जायंगे।। **"देशोपकारक व रीजिनरेठर"।।**

लाला रतनचन्द बेरी ने लाहोर आर्यसमाज के साथ जो अनुचत विवाहर कीया है वह आप पर विदित था इस पर भी न जाणें कि यूं वेदभाषय के ऊपर उसकी उसतती छाप दीं गई। यहां सरब्ब साधार्ण को उसका शोक है। लाला समर्थनदास से इसका जवाब मांगा गया है।।

आपके पत्र के उत्तर लिखने में बहुत विलंब हो गया जो लाला रामशराणदास प्रधान आर्यसमाज मेरठ अैसे बीमार हैं कि जान का रहना भी दुर्षट सा प्रतीत होता है।। तार पर तार चली आती है अर चली जाती है इससे बहुत शोक हो रहा है। अैसा "भद्र पुरुष" "आर्य" "सरब गुण युक्त" बहुत ही कठनता से मिलेगा **"ईश्वर उनको बचावे"।।** आनन्दलाल जी[1] मेंठ से यहां डाक्ट्रों को बुलाने आये थे पीछे से तार ओर आ गई कि डाकट्रो को न लाओ वापस चले आओ।। इससे ओर भी दुखी हो रहे हें।। क्या करें।।

मुंशी इन्द्रमणि भी बैठे-बैठे निन्दत विवाहर करने लग पड़ा है।। **लाला रामशरणदास** और **आप यह दास** तीनों ने उसके मुकदमे में बहुत मददद्दी थी जिसका बदला उसने अब दीया है आर्य्य देश की दुरवश अैसे पुरुषों ने ही कर रक्खी है। क्या करें पं० उमराउसिंह रुड़की से मुझ को लिखते हैं कि उस पर तुम नालिश कर दो।। परन्तू मेरी सलाह नहीं।। आपकी इसमें स्मती

1. मेरठ समाज के एक कर्मठ अधिकारी थें 'जिज्ञासु'

क्या है।।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी यहां आये हूये हैं जो कुछ यहां हो रहा है मैं जबानी आकर कहूंगा। अब सक्षेप से मुख्य बातों का उत्तर लिखता हूं।।

मूलराज के भाई श्रीराम एम.ए. M.A. नहीं है।। अर न बी. ए. B.A. किन्तू बी. ए. B.A. की प्रीक्षा आगामी वरष को देवेंगे। यह समाज उनको उस पद के योग्य नहीं समझती है। एम. ए. M.A. हैं तो बहुत पर हमारे मतलब के अर्थात् आर्य्य थोड़े हैं अर जो थोड़े हैं वह अपनी-अपनी जगह युक्त हैं आने वाले नहीं। इसकी तलाश है। मूलराज, द्वारकादासादिकों को भी लिख भेजा है कि वह भी तलाश करें।। क्या बी.ये को आप स्वीकार कर लेवेंगे।।1।।

सबओवरसीयर के वासते पं. उमराउसिंह को लिखा है आपका पत्र भी उनके पास पहुंचा है। यह काम उनके जिम्मे दीया गया है। हमको भी तलाश है पठित स्त्रीयें मिल तो गई हैं उनके आचर्ण की प्रीक्षा बाकी है उनका मासिक 25) वा 30) रोक का होना चाहिये। यह हमारी अपनी तजबीज़ है।

रहा अन्त्ररंग मन्त्री सो पं. उमराउसिंह को भी लिखा वह भी न आ सके अन्य कई पुरुषों को भी कहा सब मासिक थोड़ा जाण कर नहीं आते मैंने भी अपने संबंधिओं से कहा कि मुझ को जाने दो परंतू माता-पिता का यह कथन हैं "कि ईश्वर ने घर में सभी कुच्छ दीया है 50 मासिक भी मिल जाते हैं। फिर इतनी दूर क्यूं जाते हो।" उपकार अपकार को वह समझते नहीं आर्य्य धर्म्म को सराहते नहीं।। पर सारी लाहौर **समाज** अर **अन्य** समाजस्थ **मन्त्री** मुझको लिखते हैं कि तुम जरूर चले जाओ आर्य्यधर्म्म राजस्थान में खूब फैलेगा। पिछली सभा में मैंने ऊंचे स्वर से कहा कि कोई निकले वा मेरे जाने में किसी को शंका हो तो प्रधानादिकों से कहे सभ ने मेरे लिये स्मती दी। पं० उमराउसिंह जी ने मुझे लिखा हे कि तुम चले जाओ आनन्दलाल जी की भी यही स्मती है।

इसकी इत्तला मैंने तार में आपको दी थी कि यहां मेरा जाना सभ स्वीकार करते हैं और अपनी अंत्यम् समंती लिख भेजिये सो अभ मैं आपके अम्रवत वचनों से पूरत पत्र को आदर सहत स्वीकार करता हूं अर शाहपुराधीश की **सहयोग्यता** बड़ी प्रसन्ता पुरब्बक ग्रहण करणे की इच्छा प्रगट करता हूं। तार द्वारा मुझ को विदित कर दें कि कब तक आजाऊं।। हां 15 दिवस आने से प्रथिम विज्ञापन आना चाहिये ताके तयारी की जाये। अर मेरी इच्छा है कि जाती बेर मारग में व्याख्यान देता जाऊं। आगे आपकी जैसे आज्ञा हो वैसे

करूं।। गोरक्षा के लिये जो बहुत से हस्ताक्षर इधर-उधर हैं उनको इकत्र करना उचित है या क्या, सम नमस्ते कहते है।। अलं।।

आपका दास-
जवाहरसिंह।।मंत्री।।

(4)

लाहौर आर्य्यसमाज
30 मई सं. 1883

श्री 108 स्वामी जी महाराजा।। नमस्ते

गत रात्री को अन्त्रंगसभा का जलसा हूआ।। पहले लाला सांईदास जी ने मेरी 3 वा 4 बरष की समाज सेवा की बहुत प्रशंसा की अर लाला मदनसिंह ने उस प्रौढ़ता की। पश्चात् इस पर ऐक प्रशंसा पत्र लिखकर समाज पुस्तक मे लिखवा दिया गया तथा लाला मदनसिंह जी को आज्ञा हुई कि वह इस प्रशंसा पत्र की ऐक प्रति श्री 108 स्वामी जी महाराज के पास भेज देवों। यह भी समाज में निश्चय हूया कि लाला साईदास जी (जो आज अम्रतसर में किसी संबंधी के विवाह पर जाते हैं) अपने हस्ताक्षर का अधिकार लाला जीवनदास को देवें जैसे अन्य समाजिक विवहारों में होता है आप के पत्र न पहुंचने के कारण यही मान्य पत्र समझा गया, मैं परसों चल दूंगा। अवकाश न होने से कारड लिख भेजा है।।

आपका दास
जः सिंह

(5)

"ओ३म्"

श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री 108 मद्दयानन्द सरस्वती जी, नमस्ते

मैं इह पत्र श्री हजूर की आज्ञानुसार लिखता हूं। मैं अपनी प्रतिज्ञानुकूल रूपाहेली के स्टेशन पर 5 जून को पहुंच गया था। दोनों ज्येष्ठ भ्राता मेरे संग थे, परन्तु अपनी अभाग्यता से वहां पर स्वारी का कोई बन्दोबसत न था। कारण यह था कि श्री हजूर को मेरे आने की 8वीं तारीख की समभावना रही; और दोनों पत्र, वा तार, आप के पास चले गये, इससे सवारी के वासते बड़ा क्लेश प्रापत हूआ। दोनों भाई वापस हो गये, अर मैं थोड़ा सा पैदल अर बाकी टूटी फूटी स्वारी पर आ पहुंचा।। येह मेरे मंद भाग की अवधि थी कि आप अचेत ही मुझे दर्शन दिये बिना इहां से पधार गये। जो कुच्छ आप के चले

जाने से मेरे चित्त में आया होगा उसका अनुमान आप कर लेवें।। चिरकाल के बिछड़े सज्जनों को जिस प्रकार मिलाप करणे की आशा होती अर फिर टूटती है वह दशा मेरे साथ भई, इस का वर्णन करना मेरे वासते असम्भव है मैं सर्व शक्तीमान जगदीश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह शीघ्र आप के दर्शन से मुझे त्रिप्ती प्रदान करें।।

आप की आज्ञानुसार लवपुरीय आर्य्यसमाज से ऐक मान्य पत्र ले आया हूं जो आप के अवलोकनार्थ इस पत्र के साथ भेजता हूं। इस पत्र को श्रीमान शाहपुरेश अवलोकन कर चुके हैं।।

श्रीमान को उत्तम स्वभाव इस योग्य है, कि उस की प्रशंसाकरणी कठिन है। आप जैसे विद्वान्, गुणिक, धार्मिक, अर दयाशील, सुने गये थे, वेसे देखे गये। उनके साथ बातचीत करणे से चित्त में अनुमोदता, व प्रसिन्नता, बहुत हूई। यद्यपि मेरे यहां रहने में अनेक प्रतिबंध हैं जैसे माता, पिता, अर भ्राता, का वियोग से संताप मानणा; अर पहली सरकारी नौकरी से जहां से 4 मास की रुखसत लेके आया हूं अर जिस के वासते 1 जूलाई से 75) मासिक देने की हाकम ने प्रतिज्ञा की थी उनका उस से वियोग न करणे देना आदि 2 रूप प्रतिबंध हैं, तथापि श्रीमान शाहपुरधीश का मृदु स्वभाव, अर सहयोग वरतना, इन सभ प्रतिबंधकों के नाश करने वाली प्रतीत होती है ईश्वर अैसा करे कि मुझ से अपने "स्वामी" वा देश वासियों का कुच्छ उपकार हो, अर ईश्वर से, व समाज से, व आप से, व "श्रीमान" से, व अपने देश वासीयों से, खाली रहे; अर अैसा न हो कि सब का देनदार रह जाऊं, यही प्रकट हो कि मैंने यहां आकर अच्छा काम कीया।

आप श्रीमान शाहपुराधीश को लिखते हैं, कि मैं आप के चले आने से उदासीन न हो जाऊ. सो कृपानिधे! जिस प्रकार आप इस दास पर अनुग्रह करते चले आये हैं अर करते हैं उसी प्रकार श्रीमान भी अपने आतमा से मुझ पर दया रखते हैं अर अधिक से अधिक भविष्यत काल में रखने की आशा है। यह बात मेरे बड़े उत्साह की कारण है। तथापि आप के दर्शन के न होने से उदासीनता जो ऐक बार उत्पन्न हूई वह अभी तक दूर नहीं हुई!।।

वेद भाष्य की बात छीत्र दत्त जी को कह दी गई।

नमस्ते!

ह: आप का दर्शनाभिलाषी
जवाहरसिंह
अं: मं: श्री: श: पु: मे:

9 जून सं: 1883
शनिवार

श्रीमान इस पत्र
को अवलोकन
कर चुके है।।
कोई अैसा कारण हो जिससे आप
के दर्शन हो जायं।। 5 वा 7
रोज को यहां से 2 वा 3
पुरुश राज की ओर से आप के
पास समाचार लेने आप से यदि
हो सका तो मैं आज्ञा मागूंगा।

(6)

ओ३म्

श्री स्वामीजी महाराज! नमस्ते

कल ठाकुर सवलसिंह जी समाचार लेने के नमित्त से आप के पास राज्य की ओर से आवेंगे, सवारी आदि का प्रबंद्ध न करें यही यहां पर सोचा गया है।।

मै कल रिजिष्ठरी करा के ऐक पत्र भेज चुका हूं इसलिये आज कुच्छ लिखने योग्य बात नहीं हैं।।

मेरठ वाले जिस "ब्रह्म स्वरूप" को सबओवरसीयर के वासते यहां भेजते हैं वह **आर्य्य नहीं** किन्तू **आर्य्य** का **भाई** हैं उस को हम स्वीकार करें वा नहीं? मेरठ समाज वाले **सामान्यता** से उसकी सफारश करते हैं साफ 2 नहीं करते

आप मेरे पत्र को सवलसिंहजी को न दिखलावेंगे येह मुझे आश्य है। उन से सुन लेना पर मेरी बाबत बताना नहीं शेष जो योग्य हो वह करें।।

गो रक्षा का एक पत्र भेजता हूं पटयाला में ऐक पुर्ष ने 60,000 पुरषों[1] के हस्ताक्षर कराये हैं। इस विषय में समाजों ने बहुत सुसती करी, नहीं तो आज तक काम बहुत हो जाता बूंदी महाराज का हाल फिर नहीं सुना।

देवीदत्त बोरा आपको बहुत करके नमस्ते कहता है आप के दर्शन की अभिलाषा लग रही हें।

रामानन्दजी को नमस्ते

आपका दास
जवाहर सिंह

1. उस परमोत्साही गो-रक्षक ने तो इतिहास रच दिया। 'जिज्ञासु'

(7)

ओ३म्

सिद्धि श्री श्री 108 सर्व सुगुण सम्पन्न कारुणिक परमहंस परिब्राजकाचार्य श्री मद दयानन्द सरस्वति जी की सेवा में

दास जबाहरसिंह की कोटवार नमस्ते पहुंचे पत्र आप का तीन चार रोज से आया है अधिक काम होने से उत्तर नहीं लिखा गया था। शाहपुरेश भी इसी कारण से उत्तर नहीं लिख सके थे। कल को मैं राजाधिराज के साथ "काछोला को जाऊंगा वहां से हजूर ऐक पत्र भेजेगें उसमें सम्पूर्ण ब्रितान्त लिख दिया जायगा। स्वामीजी महाराज आप के पत्र अविलोकन से जो कुछ दिल पर गुजरा था उसके प्रकट करने मे तो कुछ लाभ नहीं, परंतू यह सत्य है, कि उस से मैं अपना "अब" उपकार समझता हूं **मासिक के विष्य में मैंने निस्सन्देह बहुत दफै लिखा था, परन्तु "स्वामीजी" जो मैं आपको" न लिखता तो किसको लिखता?** यहां आपके बिना मुझे हुल्लास देने वाला कौन था वा है। जिस हाल से निकल कर मैं लाहौर से आया हूं वह अैसे थे कि उनका अब लिखा व्यर्थ है केवल इतना ही कह देता हूं कि आपके सहारे होकर ही आया हूं नहीं तो मुझे समाज वाले तथा संबंद्धी कदापि न आने देते; आप भत्ते आदि के विष्य में लिखते हैं सो हरी इच्छा, अब दांत हिलाने से मुझे कुच्छ नफा न होगा 5) मिलें, व 50) मिलें उस से मेरा परदेश में गुजारा हो वा न हो, अब तो रहूंगा ही, ओर जो कुछ हो सके करूंगाही रोटी अलग करने के विष्य में आधीश से प्रार्थना पूर्वक कहा गया, तथा वह पत्र भी जो इस विष्य में आप की ओर से आया था श्रीमान को दिखलाया गया उन्होंने कहा कि अब तो इसी प्रकार से चलने दो फिर देखा जायगा।

मैं यहां अकेला हूं कोई संबंद्धी नहीं लाया जब लाऊंगा तो फिर वैसा प्रबंध कर लिया जायगा जैसा हजूर (आप) आज्ञा करते हैं; ओर जो यह भी स्वीकृत न हो तो आप मुझ को फिर ऐक बार आज्ञा पत्र भेजै मैं आप रोटी बना लिया करूंगा।

मैंने अब यहां समाज बनाने की चेष्टा की है आशय है कि 15 दिवस तक समाज नियम कर दूंगा। लाहौर से नियमोपनियमादिक मंगाऐ हैं ताके दूसरे पुरुष समाज संबंद्धी उपनियमों से ज्ञानी हो जायें ईश्वर ने चाहा तो मेर व्याख्यानों से साधारण को बहुत लाभ होगा यह ऐक राज पुस्तकालय, बनाया जायगा जिस में अच्छे 2 पुस्तक रखे जायगे ओर साधारण के अवलोकभार्थ वह पुस्तकालय खुला रहा करेगा।

यहां यह बात देखी गई है कि हजूर जो कुछ करना चाहें वह योग्य हो चाहे अयोग्य दूसरे पुरुष उसकी बड़ी उपमा करने लग जाते हैं। मैं इस बात के विरुद्ध हूं: ऐक दो बार मैंने श्री जी को किसी खेल के खेलने से मना किया था, लोगों ने बुरा मनाया होगा, यह मैं नहीं जानता: परंतू आधीश जी ने दो तीन वार के कहने सुनणे से उसका प्रतियाग कर दिया। यह बात उत्साह दायक है। अब तो समाज बनाने का ख्याल लग रहा है काछोला से आते ही प्रारंभ होगा।

मैं जब लाहेर से चला था तो 5 मोहर सोने की हजूर की नजर वासते अर 25 रु० श्री हजूर (आप) के वासते लाया था। परन्तू हजूर ने नहीं ली थी। प्रार्थना पूर्वक आप से पूछता हूं कि वह 25) रु. जो इसी नमित्त से लाया था श्री जी स्वीकार क लेवे ओर आज्ञा करें ते मनीआरडर करके भेज दियो जावे।

आश्य है कि दास पर अपनी कृपाद्रिष्टी सदीव रखेगे।

मिती अ० वि० 5 सं 1940 **दास जवाहरसिंह**

शाहपुरा

(8)

सं: 16 **शाहपुरा ता: 20 जून सं 1883**

॥ ओ३म् ॥

श्री मत्परमहंस प्ररिव्राजकाचार्य श्री 109 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी योग्य

दास जवाहरसिंहस्य

नमस्ते॥

आपका पत्र परम् उत्साह के देने वाला कल मुझ को मिल जिस के अवलोकन से महोप्रकृति हूआ। आप की दया का में कहा तक धन्यवाद करूं॥ आप के उपकारों अर दयामय कारयों के केवल मेरी आतमा ही अनुभव करती है, अक्षरों से प्रगट नहीं कीया जाता। ईश्वर सर्वशक्तिमान आप को इसी योग्य रखवे॥

॥2॥ आर्य्यावर्त्त गत देशी राजाओं का प्रथम सुदार करना रूप भाव आर्य्य जनों से आद्रणीय है ओर इस आदर अर धन्यवाद के आप पात्र हैं। निश्चय से हम लोग आप के इस कर्तव्य को बड़े आदर वा सनमान्न से देख 2 कर अनुमोदित होते हैं। मेरा इस स्थान पर नियुक्त करण भी आप के **नैतिक कारयों** का एक भाग है।

।।3।। आप के सत्योपदेश से तो आतमा तृप्ति हूई थी, पर संसारक द्रष्टी से भी शरीर पोशन के साधन आपने उपस्थित कर दिये। हम अभाग्य होंगे यदि उस से उपयोग न लेवेंगे।। अब में जी खोल कर अपना हाल लिखता हूं।। क्षिमा करें।।

।।4।। संक्षेप से केवल इतना लिख देना ठीक होगा, कि मेरा मासिक बहुत थोड़ा है: बाकी सब शिकायतें इसी की शाख़ उपशाख़ होंगी जिसके पद पर मैं आया हूं, वह 150) मासिक पाता था मेम साहिब जिसका बहुत थेढ़ा काम है, 150) मासिक पाती हैं: यह आक्षेप अधिक करके अपने संबंद्वीयों की द्रिष्ठि से है अपनी से नहीं।।

मैं आपको निश्चय दिलाता हूं कि जब मासिक वासिक का नाम मुझ को लिखना पढ़ता है तो शरम् से पानी 2 हो जाता हूं।। जानता हूं, कि जिस को यह बात सुनता हूं, उसने परोपकारार्थ क्या 2 काम किये हैं। ओर मासिक का बार 2 लिखना उसकी द्रिष्टि में मुझ को कितना हलका बनाऐगी, तथापि लिखने से न रह सका। कारण केवल यही है, कि ग्रहस्थ कर चुके हैं, रुपये बिना काम नहीं चलता है। यदि अैसा न होता तो मैं अैस्री बात करना वा लिखना "अनार्यपन" समझता अत ऐव, मैं अैसा लिखते हूऐ शरम खाता हूं।। पर रुकता नहीं।।

।।5।। राजाधिराज ने रामलाल की मारफेत मुझ को कहा है कि तुम को 25 राज्य से व 25 निज से मिला करेंगे, ओर अबी अपनी नौकरी प्रसिद्ध नहीं करनी होगी, क्यूंकि पुलिटिक्ल ऐजिंट के पास लोग शिकायत न करें इसमें सन्देह यह रहता है, कि क्या मेरा पद अैसा है, जो छिपा रह सके, वा पुलिटिक्ल ऐजिंट को खबर न हो।। वरन आप कर देनी चाहीये अर क्या जाने कर भी दी हो।

।।6।। इन 50 से भिन्न रोटी ऊपर से आती है, परन्तू बीच के लोग अैसे हैं कि 2 वा 3 दिन तो अच्छा भोजन मिला अब ठीक नहीं मिलता है। मैं देखता हूं कि राज्य में बहुत लूट मची है। और इन्तिजाम बहुत थोड़ा है। इन दोषों को दूर करणा अवश्य है।। श्रीमान को तो लाभ बहुत करा दूंगा, अन्य इन्तिजाम में हाथ डालना अच्छा नहीं मालूम होता। मैं सुनता ओर समझा हूं कि "पुलिटिक्ल ऐजिन्ट्" रयासत् को सुद्धरने वा उठने नहीं देते। जो पुरुश योग्य होता है वह ठहर नहीं सकता। यह भी एक डर है, परन्तू कहां तक

यह सत्य है, यह नहीं कह सकता हूं।।[1]

।।7।। 15 मई सं 1883 से राज्य के पत्रानुकूल मैं नोकर समझा गया था, और 1 जून को लवपुर से चल के 6 को शाहपुर पहुंचा; अपना ओर ऐक नौकर का मारग खरच 25) आये; अब देखिये किस तारीख से नोकरी मिलेगी, अर मारग खरच कहां तक मिलेगा येह बात परसंग से लिख दी गई है।। नहीं तो कुछ काम न था।

।।8।। समाज का स्थापन करना वा व्याख्यानों का देना आदि इस रियासत् में कठिन हैं क्यूंकि फिर यह बात पुलीटकल हो जायगी, यदि मैं इस में बहुत दखल दूं तो।। विशेष अनुमति होने से विशेष लिखा जायगा।

।।9।। राजाधिराज ने रामलाल की मारफत येह भी पूछा था कि तुम को 50) की नौकरी कबूल है वा नहीं। मैं इस ओर ऐसे प्रश्न से घबरा गया था, जवाब दे भेजा था कि सोच के थोढ़े दिनों को बता दूंगा। इतने में आपका पत्र परम हरष ओर उत्साह के बढ़ाने वाला आ गया। मैंने उसी में महाराजाधिराज को कहला भेजा कि स्वीकार करता हूं। यहां के आधीश अब प्रसन्न बहुत हैं।। मासिक के विष में मैं अब आप को कबी नहीं लिखूंगा। (परन्तु आवश्यकता से)

।।10।। मैं अपने शिर पर "ईश्वर" को अर फिर "आप" को समझता हूं; अब मैं निरशंस होकर यहां काम करूंगा अर वापस न जाऊंगा परन्तू 3 मास से पहले 2 यदि कोई अैसा और कारये हो जावे जिससे चले जाना अच्छा समझूं तो झूठ न समझा जायगा हां अपनी ओर तें तो निशचय से ठहरना ही उत्तम जान लिया है।

।।11।। आधीश की ओर मेरी कवी अैसी स्वर नहीं मिली जैसे मैं चाहता हूं कि मिल जावे। यह बात होगी तो सही, परन्तू धीरे 2।। यदि आप का यहां पर ओर ठहरना होता, तो सब काम अच्छे हो जाते। पर अब क्या कीया जावे।। इस लेख से यह सिद्ध न होवे कि वह मुझ से अभी शंका किसी प्रकार की रखते हैं वा दिल खोल कर हास्य पूर्वक बात चीत नहीं होती। हां मेरा तातपर्य्य ओर है वह येह, कि मुझ से अबी कई पुरुषों की अपेक्षा बहरंग समझते हैं।

।।12।। मेरी आशय है कि आधीश को "पुलीटिक्ल" विद्या पढ़ाऊ जिस

1. पोलिटिकल एजेन्ट व रोजीडन्ट अंग्रेज सरकार के हित का ध्यान रखने के लिये होते थे। कोलाहपुर में शाहूजी महाराज के निधन के पश्चात् अगले महाराज ने आर्यसमाज को Resident के संकेत पर वहां से उखाड़ फेंका। 'जिज्ञासु'

से राज्य संबंद्धी आंखे खुल जावे।। अर गवरनामेंट की सीमा विदित हो जावे।[1]

।।13।। मैं जब तक आप का दर्शन नहीं कर लूंगा तब तक आतमा में शान्ति कदापि नहीं आयगी। ओर यह बात अब अपने बस से बाहर चली गई है। क्या करूं।।

।।14।। आर्य समाज मेरठ से **ब्रह्म स्वरूप के** मान्य पत्र आये हैं परन्तू कोई समाचार पत्र नहीं आया: उन मान्य पत्रों से विदित होता है, कि वह "सब ओवर सियर" के पद पर आकर अच्छा काम करेंगे। मैंने उनसे आने को लिख दिया है। प्रत्युत्र आने पर आप को विदित कर दिया जायगा।

।।15।। अग्नि शाला में होम प्रति दिन होता है। प्रारम्भ में तो पोप लीला खूब मची थी। गणेश हाथी की मूर्त्ती की पूजा आदि विवहार भी हुआ। जिस से मेरी आतमा में बहुत खेद हुआ। **श्रीमान प्रतिदिन मूर्त्ति पूजा करते हैं परन्तु निश्चय से नहीं करके येह पालुसी है अरथात नीति है।।**

।।16।। जो मान्य पत्र मुझ को आर्य समाज लाहौर ने दिया था आप के पास पहुंचा होगा अर अवलोकन कीया होगा यदि अयोग्य न हो तो वह मुझ को ही दे छोड़ें, मेरे पास रहेगा ओर यदि उसको अपने हस्ताक्षरों से भी प्ररिभूषत कर देंगे तो वह मेरे पास ऐक संनद के परकार रहेगा, अर अपने काम मुझ को याद रहेंगे अर न भूलेंगे।।

।।17।। मेरी ऐक प्रार्थना है, कि मैं राजपूताने की सैर कीया चाहता हूं उसके पूरा करने के उपाय भी आप के हाथ में हैं।। मेरी इस प्रार्थना को याद रखे अर जब अवसर कोई निकले, तो आज्ञा का देना, इससे मुझे आप कृत्य 2 कर देंगे।।[2]

।।18।। इस पत्र लिखने में कई बातें उलट पुलट हो गई है अर्थात् प्रसंग से निकली रही हैं, आप क्षिमा करेंगे।[3]

ब्रह्मचारी जी को नमस्ते कर देना। मेरे नाम का पिछला पत्र आधीश के नाम से आया था।

आपका द्रासानुदास
दर्शना भिलाषी
जवाहरसिंह

1. जवाहरसिह जी की महत्वाकांक्षा तो बहुत ऊंची थी। वह स्वयं को बहुत बड़ा राजनीतिक विचारक मानता था। 'जिज्ञासु'
2. जवाहरसिंह शाहपुरा में राज गुरु बनना चाहता था। ऋषि के साथ राजस्थान में घूमकर Image बनाने प्रतिष्ठा पाने का उसका सपना साकार न हुआ। 'जिज्ञासु'
3. जवाहरसिंह जी के अरमान तो बहुत थे। सब कुछ उलट पुलट कैसे हो गया? 'जिज्ञासु'

(9)

श्रीमत्परपहंस परिब्राजकाचार्य श्री 108
मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी जी महाराज नमस्ते

बिन्य पूर्वक प्रार्थना है कि लाहौर आर्यसमाज मुझ से मदनसिंह जी के विष्य में पूछती है कि उदयपुर मैं वह हैडमासट्र के पद के लिये स्वीकार किये गये कि नहीं।

2 ऐक सब ओवरसियर मेरठ समाज वाले भेजते हैं परंतु वह आप आर्य नहीं है किंतु वह ऐक आर्य का भाई है और पं. उमराउसिंह जी रूढ़की से लिखते हैं कि सब ओवरसियर 30) मासिक पर कोई नहीं आता अधिक मांगते हैं। आज पण्डित जी से फिर पूछा है कि क्या अधिक मांगते हैं? इस में जो कुछ आप की आज्ञा हो, वह कीया जायगा।

3 ऐक पत्र रिजिष्ठरी कीया हूआ महाराज की ओर भेज चुका हूं उस का उत्तर आपने नहीं दिया, उसकी चिंत्ता है, कि वह पहुंच गया हो। क्या कः सवलसिंह जी के हाथ ही उत्तर आयेगा।

4 आधीश यहां के आनन्द में हैं।

5 विशेष समाचार मेरे पूर्व पत्र के उत्तर आने पर निरभर है उस से पूर्व नहीं लिख सकता।

6 ईश्वर मुझ को आप के दर्शनों से कब त्रिप्ति प्रदान करेंगे।[1]

आप का दास व दर्शनाभिलाषी
जवाहरसिंह उ. म, म. श. पु.
देश मेवाढ़

(30 जून सं 1883)

(10)

ओं श्रीसर्वोपकारक कारुणिक श्रीमत्परमहंसपरिब्राजकाचार्य्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामीनां दास जवाहरसिंहस्य बारम्बार नमःस्तेस्तू।। अपरंच।। यहां आप की कृपा से आनन्द मंगल है और सर्व शक्तिमान जगदीश्वर से नितान्त प्रार्थना है कि वह आप के शरीर को सर्वोपकारार्थ सदा नीरोग रखें।।1।। बड़ा समाचार यहां का येह है कि अब दास यहां से चलने को उपस्थित हुआ है!!! यह समाचार कारण जाने बिना यदि मेरे पूर्व पत्र गत समाचारों के संग मिलाया

1. कई लोग सार्वजनिक जीवन में बहुत बातें बनाते हैं परन्तु जो अन्त तक भला रहे उसे ही भला जानो। ऐसे-ऐसे पत्रों को पढ़कर यही शिक्षा मिलती है। 'जिज्ञासु'

जावे तो इस में केवल मेरा अविचार ही समझा जायगा और आप को निश्चय होने की संभावना भी रहेगी कि मैंने यहां न रहने में जलदी की है और समाज तथा आप की इच्छा के प्रतिकूल आचरण कीया है वा उनके कहने को कम सुना है और अैसा जानणा कुछ असंगत भी प्रतीत नहीं होगा किउं कि इस से पूर्व अपने यहां रहने में मासिक की न्यूनतादि की शंका [जो पीछे निरमूल सिद्धि की गई थी] आप से में कर चुका हूं। और अब भी श्री शाहपुरेश ने अपने अंत्यम पत्र में मुझे सीख देने का यही मुख हेतू बताया है तथा यह ज्ञान से कि मेरी सरकारी छुट्टी में भी थोड़ा सम्य बाकी रह था उर्दू लिखित निश्चय को दृिढ़ता होती है कि मैंने अविचार पूर्वक यहां से रुखसत मांगी है परन्तु मैं निमृता पूर्वक बेनती करता हूं कि आप अैसा विचार न करें।।2।। मैं आपको निश्चय दिलाता हूं कि जोधपुर से शिक्षक पत्र आने के पश्चात् मैंने मासिक वासिक का समूल ही विचार छोड़ दिया था और दृढ़ता से रहने का विचार कर लिया था!! इस लेख से मुझे निश्चय है कि अब आप को यह जानणे की आकांक्षा हो गई होगी कि फिर चले जान का ठीक कारण क्या है? इस का उत्तर संक्षेप से तो यह है कि मेरे चले जाने का मुख्य कारण वह है जिसको श्री शाहपुरेश स्वपत्र में दूसरा कह कर लिखते हैं।। असल यह हूई है कि ऐजिण्ट साहिब के यहां आने से 15 दिन पहले नाथासिंह आदिक जागीरदारों ने देवली में सहिब को रियासत के विरुद्ध कई बातें लिखी उनमें एक यह थी कि मोहनकृिष्ण का भेजा हूआ जवाहरसिंह आयां है और कामदारी करेगा! जब साहिब यहां आये तो 8 दिन रहे मुझको श्री शाहपुरेश ने उनसे नहीं मिलने दिया।[1] उस से मेरा मिलना इस हेतू से बंद किया गया कि यदि विशेष सरदारों की रीति से मुलाकात हो गई तो साहिब ऐजिण्ट को नाथोसिंह की शिकायतें सारी सच्ची परतीत हो जायेगी, यांते मिलना बंद रहा इस विवहार से मेरी कमर टूट गई कि कब तक छिपा रहूंगा।।3।। ऐक दिन साहिब ने आप शाहपुरेश से पूछा कि जवाहरसिंह कौन है और किस काम के वासते बुलाया है? अब यह समय था कि जो कुछ कहा जाता मैं उसको पूर्ण रूप से अपने ऊपर बरतने योग्य निश्चय करता सो श्री शाहपुरेश ने उस समय येह जान कर कि प्राईवेट सैक्ट्री, कहने से नाथोसिंह का कहना त्य वा सत्य के निकट 2 हो जायगा, तथा यह भी कि अैसा कहने से कोई ओर बात न निकल आवे साहिब को उत्तर दिया कि हमने जुवाहरसिंह को क्षात्र

1. राजाओं की अपनी सीमायें थीं जवाहरसिंह की उड़ान इतनी ऊंची थी कि उसका वहाँ खपना असंभव था। 'जिज्ञासु'

पाठशाला के वासते बुलाया है, रियासत के काम से उसका कोई बासता नहीं है!!! जब यह समाचार राजाधिराज की जुवानी मुझ पर खुला तो मेरी रही सही कमर टूट गई! और निश्चय हूआ कि किसी प्रकार का शुभ काम अब नहीं हो सकेगा।।4।। यद्यपि इस विवहार से मुझ को बहुत खेद हूआ तथपी कहने की हिमत न की। परन्तु इस पर और भी दुख होने लगा कि साहिब चले जाने के पीछे मेम ने जो 2 मास की रियासत से छुट्टी ली उसका पड़ाने का काम मेरे हवाले हुआ।

सो यहां तक तो कुछ तकलीफ न थी परन्तू ढीकोला जब राजकुमार जाने लगे तो मुझे भी ऐक (अध्यापक) मुअलम की हैसीयत समझ साथ भेजा और बाकी के पड़ने वाले लढ़के भी साथ कर दिये कि सफर में भी उनको मैं पड़ाऊं।। सोचने की बात है, कि अध्यापक व प्राईवेट सैक्रेरी के क्या-क्या काम हैं! जब आदमी का दिल किसी कारण से उटकता है तो फिर जरा-2 सा बातां में भी नुकस दिखाई देते हैं; मदररसे के काम में लगने में दरबार की समीपता में फरक आया, और छोरों की संगत प्रापत हुई।।5।।

साहिब आने से पहले तो हजूर इस प्रकार की मुझ से बातें करते थे कि साहिब आजाने के पीछे हम तुमहारी राय भी लिया करेंगे और कोई काम भी देंगे; इससे मैंने 9 रोज साहिब के चले जाने के पीछे श्री शाहपुरेश से अरज की (यह अरज दिल की असल तस्वीर उतारने वाली न थी क्युकि मैं आपको निश्चय दिलाता हूं, कि मैं तकलीफ अपने को कम कहा करता हूं) दिल में तो यह था कि नाम मात्र के प्राइवेट सैकट्री रहना अच्छा नहीं लहौर में रहकर तो सामाजिक उनन्ती भी करते थे यहां समय व्यर्थ जाता है।। द्वितीय वह मान जिसका पूर्व पत्रों में व्याख्यान हो चुका था, देखने में न आया अर साहिब वाली काररवाई से भी दिल टूटा था यांते रुखसत मांगने को दिल ने चाहा परन्तू आप का उपदेश भूला न था इससे रुखसत भी मांग न सकता था और दिल शिकसतगी भी प्रगट नहीं करनी चाहता था, यांते मैंने गोल मोल अक्षरों में अरज की कि मुझे कोई काम करने को मिल जावे विंयु कि बिना काम मासिक लेना में आतमा से शरमिंदा होता हूं।। और साथ यह भी अरज की कि आप एजिंट साहिब को अैसे कह चुके हैं। "इस से मुझ को कोई काम भी आप नहीं दे सकेंगे] तो फ़रमाने लगे कि सोचकर जवाब देंगे सो 10 दिन पीछे वह पत्र मेरे पास भेज दिया जो परसों आपके पास भेजा गया है और जिस में मुख हेतु मेरा मासिक रखा है, और जागीरदारों का पेंच गवन।। और जिसमें लिखा है कि जवाहरसिंह की लियाकत के मुकाबले का मासिक अबी नहीं दिया जा सकता।।6।।

मैं निश्चय करता हूं कि मैंने संक्षेप से अपना असली हाल कह दिया है। इस से सिद्ध होता है कि मैंने आप सीख नहीं मांगी वरन मेरी अरज के उत्तर में मुझ को रुखसत मिल गई!!7।। इस सफर में मेरा 300) खरच आया और जाती दफे 250) मिलेगे 100) सफर खरच और तीन महीने की तनखाह 50) के हिसाब से 150)।।8।।

बैसाख सुदी 9 मंगलवार मुताबिक 15 मई सं 1883 को रियासत की चिठी अनुसार नोकर हुआ था। 15 दिन तयारी में लग गये थे 5 दिन सफर में, 6 जून को यहां पहुंचा था जिस तारीख से जो कुछ मिलना होगा असतू कह कर ले लूंगा9।।[1]

।। इस सफर में बड़ा लाभ यह हूआ कि श्री शाहपुरेश को बहुत प्रसन्न रखां, और हमेशा के वासते मुलाकात रही।। द्वीतीय बंदूक चलानी अच्छी सीख ली, तीसरे अमनचेन से सुरखरोई हासल हुई, और आपके पास राजाधिराज के भी मेरी प्रशंसा में लेख पहुंचे।।10।। मेरे निश्चय में दो बातें हैं।। ऐक तो येह कि यदि मेरे आने तक आप यही ब्राजमान रहते तो सब काम ठीक हो जाते द्वितीय यदि हजूर से उस वकत साहिब को ठीक उत्तर दिया जाता तो भी ठीक था। पर अब खैर?? क्या है।।

यदिपी मैं यहां से कुछ तो हरष से और कुछ शोक से जाता हूं तथापि ऐक बहुत बड़ा शोक जो मुझे है और कुछ काल तक रहेगा भी, वह यह है कि मैं इतनी दूर आकर भी आप के दर्शन न कर सका। इस से मैं अपने को बहुत अभाग्य समझता हूं।।12।। आज से मैं 12 रोज तक रहूंगा [अैसा मैं ख्यान करता हूं] और आप का उत्तर इस विषय में यदि मुझ को प्रापत होगा तो मेरे अहो भाग्य होंगें आज कल यहां अछी बारश हो रही है आशय है कि जोधपुर में भी होगी।

भाद सुदी 2 सोमवार — ह० आपका दास
शाहपुरा — **जवाहरसिंह**

(11)

।।ओ३म्।। सिधिश्री सर्वोपकारार्थ--कारुणिक परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री 108 मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी जी महाराज दास जवाहरसिंहस्य नमस्तेस्तू अपरंच।। ईश्वर की कृपा से मैं आनन्द सहत यहां पहुंच गया। परन्तू यहां

1. इन पत्रों से भारतीय राजों की विवशता दीनता का पता चलता है। 'जिज्ञासु'

आत्ते ही हवा के बदलने से शरीर में स्वेदसा हो गया था जिस से मैं आप को पत्र न लिख सकता था अब आराम है।। मैं शाहपुरा से 13 सित्मबर को चल के अजमेर में आया।। 16 तारीख को वहां पर व्याख्यन दिया विष्य "आर्यसमाज के स्थापन की क्या आवश्यकता थी," था, बहुत उत्तम रीत्त से व्याख्यान दिया गया। फिर जेंपुर समाजस्थ आर्य्य पुरुषों से मिलना हुआ उनको बहुत उतसाह दिया गया। एक व्याख्यान दिल्ली में गुरद्वारे के बीच दिया। वहां से सीधा लाहौर चला आया।

इस गत यात्रा में श्रीमानों के मिलने का और बंदूकदि शस्त्र चलाने का लाभ हूआ, जो बहुत भारी है, और नुकसान केवल 250) रुपये का हूआ।। दूसरा यह कि अपने साहिब ने जो तरक्की देनी कही थी और जिस बात के पुना 2 लिखने से आप को भी मेरे समझाने नमित्त एक पत्र लिखना पड़ा था बंद हो गई!! यह करना अङ्ग्रेज़ों का धर्म है!! परन्तू शोक का स्थान नहीं, क्यूंकि इसके बदले ऐक बड़ा लाभ यह हो गया है कि मुझ को देशी राज काम के सब ढंग मालूम हो गये। देशी विदेशी प्रणाली के सब भेद खुल गये। अब राज प्रबंध करना सहज प्रतीत होता है यह बहुत लाभ की बात हो गई।

राजाधिराज ने मुझ को आते हूये ऐक मान्य पत्र प्रदान किया जिस मे मेरी प्रशंसा कही है।। उस मे यह भी लिख दिया है अर जबानी भी बहुत कहा है कि "तुम को जलदी अछ काम पर बुलावेंगे" अब देखना चाहीये कि कब तक याद करेंहगे।।

यहां समाज में ईश्वर की ओ आप की दया से बहुत उनत्ती है है नवंबर के अंत्त में उत्सांव होगा। **उस से पृथम बिजली आदिक विद्या सिखलाने वाला सकूल खोल दिया जायगा।**

यहां हमारी सब की इच्छा है कि आप राजपूताने को छोढ़ कर पहले कलकत्ते में "नुमाइशगाह देखें, फिर ऐक बार पंजाब में आकर मदरास या बंगाले को पधारें। **राजा लोगों से होता कुछ नजर नहीं आता!** जो कुछ उनत्ती देस की होगी, वह असमदादिक लोगों से ही होगी। ऐसा निश्चय होता।

लाला सांईदासजी आप के पत्र का उत्तर इस कारण से न दे सके कि लाला मथरादास साहिब यहां नहीं मिले थे। अब उन से पूछ कर लिखा जाता है कि जैन मत्त खंडन की 200 अलग प्रति छपाई जावें उसकी अलग कीमत देदी जायेगी और ह्यूमसाहिब के प्रश्न का उत्तर भी छपा दिया जावेगा।

शाहपुरा में जो दूसरा ओवरसीयर चाहीये वह पंडित गैरी शंकर जैपुर वाले लिये जावें तो अच्छा है। इस विषय में मैं आज शाहपुरा लिखता हूं यदि

उनकी इच्छा हूई तो वह जैपुर से पत्र भेज कर मगवा लेवेंगे।

अजमेर में मैंने आप के चोरी हो जाने का समाचार सुना बहुत शोक हुआ था। क्या कुछ पता लगा था नहीं–मसूदा जाने का विचार है वा नहीं वा कहां जाने की इच्छा है? सब आर्य्य पुरुष आप को नमस्ते कहते हैं।

ह० आपका दास

जवाहरसिंह

प्रः सः आर्य्य समाज लाहौर

13 अक्टूबर सन 1883

श्रीयुत कालूराम जी रामगढ़ के पत्र

(1)

॥ ओ३म् ॥

श्रीयुत प्रतिष्टित्ता चार्य्य परम गुरू अतीदयाल पूजनीय० महाशय! स्वामी जी श्री दयानन्द सरस्वति जी महाराज नमसते नू प्रग् हो कि आपके जोधपुर पधारने की खबर पक्की मिली हः॥ सो सर्व शक्तिमान० कि कृपया ते हमको विश्वास है कि ए कार्य्य शिघ्र ही शिद्ध होवेगा जी०। ओर मेरी अल्प वुद्धि में अैसा आता है कि कधी! परतापसिंहजी के ईसाई मत की आग्रे होवे तो आ...म ताके साथ अैसिरित्ती से खण्डन किजिये इस मत का अ...फेर कवीनै जमः॥ ओर हमने अैसा सुना है कि ये सच्चे सूर...दातार पूरे देश हितैषिक है॥ सो इनों को अैसा उपदेश हो...फेर। कोई भेद नैं हो अप्नि तरफ। इसी रिती से॥ ओर ईसाई म० खण्डन हो ज्याय; ओर हजूर कै. परतापसिंह जी का सनातन मत दृढ निश्चय होते ही ए मंगल समाचार मय कृपा पत्र आप लि० देवदत्त ब्राह्मण जे. कृ. 9 मी को साहपुर को रवन्ने हुआ 1 कोथली साङ्गरीन्की आप के वास्ते भेजी सो मिलने स देवेगा जी॥ और पुस्त...दत्त० डाक द्वारा घर भेजने दे गया पार्सल बनाके सो मुन्शी 2॥)...लेके तो रसीद दे देगा नहिं तो 1 रु० चार आना) सवा में पहुंच शक्ति है...र रसीद लिये सो इस विसय म जो देवदत्त कि मर्जि हो सो 2...॥ रसीद ढाई रु०) खरचे मिलैगी ओर रसीद विगर लिये सवा रु०...सो सर्वाभिशय अवश्य जरूर 4 लिखवावे आप ही...के मिलन से बूजकर॥ ओर 1 विनय पत्र साहपुर...कल दिई सो जाने आप क पास पहुँचः बाना। परञ्च॥ सर्वाभिशय संयुक्त कृपा पत्र आप अवश्यहि लिखवावें जी॥ जपुका तलटा ईलाका शीकर आर्य्यसमाज सेठों का रामगढ़.स.प.प. कालूराम, नमस्ते केदार्कि. जे. शु. 4 सं. 1940

(2)

॥ ओ३म् ॥

श्रीयुत पूजनियोतम प्रतिष्टिता चार्य्य श्रीमान सर्वोपमालायक ॥ महाशय! स्वामी जी श्री दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते 3 प्रगट हो कि॥ देवदत्त ब्राह्मण आप के पास पहुंचा होयगा जी कोथली साङ्गर की आप को भेजी सो पहुंची होवेगी जी लिखना...र छाछ फीटकड़ी की साधन जो शिरकार कः मनुष्य करी...उस्का आजार मिटा वा न मिटा सो लिखना जी॥ यहां पर तो. ..मनुष्य को एक साधन उसी रोग पर कराया था सो गुण हुआ इस वास्ते आप को लिखा॥ हमने साहपुरा से आया पीछे॥ ओर। शीकर का समंचार पक्का होने से लिखैंगे जी॥ ओर नई जूति ह कि गत आप कृपा करके लिखवांवे जी ओर हमारे तो आप को इष्टह॥ ओर गउओं के विषय में हस्ताक्षर करवावेंगे॥ ठाडी बरखा होने से॥ ओर हजूर से...री नमस्ते कहणा जी॥ कृपा पत्र अवश्य जरूर 3 लिख...जी॥ ओर देवदत्त से नमस्ते कहणा वे पुस्तक भेज...को देवदत्त देगा था सो सीमने में पारसल बना दई सो...॥ डाकमुन्शी लेके रवैन्ने करेगा जद तो रशीद देवे...ओर नहिं तो बिगर रसीद लिये सवा रु० में पूच शक्ति है...देवदत्त का जो अभिप्राय होवे सो 2 लिखवाना जरूर 4 जैपुर्कि तलैटी ईलाका शीकर आर्य्य समाज सेठों का रामगढ़ स. प. प. कालूराम जी लिखतमाज्ञा कारिक शिष्य केदारबल्लभ ओर यहां के सर्व सभासद वा समाजस्थों कि अभिवादन धन्यवाद ज्ञातम् पत्र दिजिये जी...शु. 3 सं० 1940॥

श्रीयुत मन्त्री जी आर्य्यसमाज अजमेर के पत्र

(1)

ओ३म्।

आर्य्यसमाज अजमेर

28.3.83

श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते।

आगे निवेदन यह है कि आपकी आज्ञानुसार सहजानन्द सरस्वती जी को जयपुर समाज में उनकी इच्छानुसार भेज दीये अवकाश न होने से पत्र लिखने में विलंब हूआ क्षमा करिये-यहां पर सब प्रकार से आनन्द है आप अपनी सर्व व्यवस्था से दास को सूचित करते रहिये। आपने मुन्शी इन्द्रमणि का हिसाब अभी तक नहीं भेजा इस्का क्या कारण है-हमारा उत्सव बड़ी धूमधाम से हुआ और आनंद रहा पंडित् लक्ष्मीदत्त जी फरुख़ावाद से और कानपुर से

श्रीनरायण खन्ना मेरठ से भोलनाथ पंडित् और जयपुर से वहां के पंडित् आदि आये थे जिसकी व्यवस्था आप को देशहितैषी द्वारा भलीभांति से विदित होगी इस पत्र का उत्तर शीघ्र प्रदान कीजिये एक दुष्ट सम्पादक ने आपके प्रति बहुत कुछ लिखा है जिस्के विषय में हम उस्के उपर नालिश करने वाले हे आप उत्तर शीघ्र दें तब सर्व हाल लिखुंगा।[1]

आपका दास
मुन्नालाल ।

(2)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं० 403

ता० 7.6.83

श्री स्वामी जी महाराज नमस्ते

कुछ दिन हुये पोष्ट कार्ड आप का आया था और जिस विषय के वास्ते आप ने मुझ को मितीवार लिखने को लिखा है मैं उस की फ़िक्र में प्रथम ही दिन से लगा हुआ हूं परन्तु कालेज की छुट्टी होने से अभी तक उसका ठीक-ठीक पता नहीं लगा क्योंकि जिन मनुष्यों से पूछा जाता वह यहां है हीं नहीं यद्यपि मैंने अन्यत्र स्थानों से बहुत कुछ दरयाफ़्त किया जिस से आशा होती है कि वह दिन जिस दिन उक्त साहिब का असबाब नीलाम हुआ था तारीख वार एक दो दिन में निश्चय हो जायगा उस से अनुमान 10, 12, दिन घटा कर उनके जाने की मिती निकल आवेगी सो इस को मैं आप की सेवा में शीघ्र ही भेजूंगा।

यहां पर 6 तारीख को पं० चतुर्भुज आये हैं और अपनी निकृष्ट बुद्धि के अनुसार आर्य्यों का यश और कीर्तन कर रहे हैं और बड़े लंबे 2 डीग मारते हैं और कहते हैं कि अब हम स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने को जोधपुर जांयगे और यहां अजमेर नगर में बड़े-बड़े विज्ञापन लगा दिये हैं।

आपने जोधपुर का हाल नहीं लिखा महाराजा साहिब से मुलाकात हुई वा नहीं।

स्वामी केशवानन्द जिन्होंने आप सेबाग में वार्तालाप की थी जोधपुर आने को तैयार हैं और कहते हैं कि जब तक हम स्वामी जी के पास 6, 7 महीने

1. इस कार्ड के पृष्ठ पर लिखा है "श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी योग्य शाहपुरा राजपुताना।"

न रहलें तब तक हम अपने मन की दृढ़ता नहीं कर सके अब इनके विषय में जैसी कुछ आप आज्ञा दें वैसा किया जावे।

प्रिय बन्धु अमरदान जी को बहुत-बहुत नमस्ते पहुंचे और ज्ञात हो कि आपने भी अभी तक वहां के कुछ समाचार नहीं भेजे जैसा कि मुझ से प्रतिज्ञा की थी इस कारण आप से निवेदन है कि उक्त प्रतिज्ञानुसार सप्ताहिक चिट्ठी पत्री भेजते रहें और मुन्शी कन्हैयालाल को मेरा बहुत 2 नमस्ते कहना-और सब सभासदों की ओर से स्वामी जी की सेवा में नमस्ते पहुंचे।

आप का दास
कमलनथन शर्म्मा
मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

(3)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं०

ता: 17.6.83

श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते-

कृपा पत्र आया जोधपुर के समाचार ज्ञात होने से अत्यानन्द हुआ। ईश्वर इन राज पुरुषों को प्रतिदिन देश उन्नति कारक करे।

ऋषि का तेज

पं० सुखदेव और पं० दामोदर जी अजमेर में हैं परन्तु पं० शालिकराम[1] जी छुट्टी पर गये हैं छुट्टी से आने पर आप को खबर दी जायगी। आप का यह कृपा पत्र पं० छगनलाल वा बृतीचन्द अन्य श्रेष्ट सभासदों के सामने पढ़ा गया था। इसमें जो आपने तीन पंडितों के वास्ते लिखा है उसका पूरा वृत्तान्त नहीं मिला कि इन पं० के वास्ते क्यों लिखा है क्योंकि इन लोगों का प्रगट और आत्मिक अभिप्राय में सदैव ही भेद रहता है **जिस को समाज के सभासद आप की अपेक्षा अधिक जानते हैं क्योंकि आप के तेज के सामने तो विरोधी मनुष्य भी हां में हां मिलाने लगता है इस कारण आप उनका आत्मिक अभिप्राय नहीं जान सक्ते यह विचार एकत्रित सभासदों की यह राय हुई** कि स्वामी जी महाराज को ऐसा लिखो कि जिस किसी पुरुष को बुलाना चाहैं तो प्रथम वहां के समाज से उसके चाल चलन और

1. फ़रुखाबाद निवासी यह पण्डित अजमेर में प्रोफेसर थें काशी के पण्डितों से पं० श्रीगोपाल के लिये ऋषि के विरुद्ध व्यवस्था आप ही क्रय करके लाये थे। अब ऋषि भक्त थे। 'जिज्ञासु'

आत्मिक अभिप्राय के विषय में पूछ लिया करें ऐसा करने से समाज का भी मान्य होगा और जानेंगे कि ये भी किसी खेत की मूली है और एकाएकी समाज में विघ्न भी न डालेंगे यदि सदैव ही से आप ऐसा करते और मुंशी वख्तावरसिंह और इन्द्रमणि के विषय में वहां की समाजों से राय लेते तो आज के दिन यह धोखा न खाते पं० सुखदेव ने जैसा कुछ इस समाज में विघ्न डाला और ठौर 2 हजरत ईशा को आप की अपेक्षा उत्तम ठहरा निन्दा करता फिर क्या यह वृत्तान्त आप को सांगोपांग से विदित नहीं है यहां यदि कोई ऐसा कार्य्य हो कि ऐसे मनुष्यों के सिवाय काम नहीं चले तो कुछडर नहीं परन्तु जब आप इनके साथ कुछ सहायता करना चाहें तो प्रथम इस आर्य्यावर्त में जितने सामाजिक सभासद जो तन मन धन से समाज उन्नति में तत्पर हैं जिनके ऊपर वर्तमान पोप मतावलम्बियों और कुटुम्बियों के घोर प्रहारों को सह चुके हैं उनका हक हे आगे आप सर्वोपरि बुद्धिमान हैं जैसा उचित जानें वेसा करें मुरादाबाद समाज से एक पत्र आया है जिसमें लिखा है कि मुं० इन्द्रमणि प्रधान, और जगन्नाथदास पुस्तकाध्यक्ष अपने भ्रष्ट आचारों से इस समाज से दूर किये गये जो आगामी **देशहितैषी** में छपेगा[1] स्वामी केशवानन्द जी कहते है कि जब तक हम चार पांच मास स्वामी जी के पास रहकर मन की दृढ़ता न करलें तब तक प्रतिज्ञा नहीं कर सकते आप जैसा लिखें वेसा किया जावे पं० चतुर्भुज यहां पर 1 दिन व्याख्यान दे दुर्दशा सहित चल दिये इन की निष्फल बकवाद यहां के पोपों को भी अच्छी नहीं लगी इनके पश्चात् पं० रामलाल जी ने जिन्होंने आप से मुकाम बंबई में शास्त्रार्थ किया था चार पांच व्याख्यान दिये। परन्तु व्याख्यान शक्ति इन की अच्छी नहीं थी। जिस वस्तु का खण्डन करते थे इन्हीं के मंह से उसका मंडन हो जाता था। ये भी यहां से बिना कौड़ी पैसे के गये, और समाज में सब आनन्द है। सब सभासदों की ओर से आप को बहुत-बहुत नमस्ते पहुंचें।

मऊ कालिज से लेंगसाहिब का असवाव उनके जाने से तीन मास पीछे 30 जोलाई सन् 1880 ई० को नीलाम हुआ था इस्से आप उनके जाने का दिन निकाल सकते हैं और जोधपुर के वृत्तांत से सूचित करते रहें।

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

1. न जाने कैसे-कैसे कुटिल व्यक्ति ऋषि मिशन में घुस जाते रहे। 'जिज्ञासु'

(4)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं० 426 ता० 3.7.83

श्री स्वामी जी महाराज नमस्ते–

कुछ दिन हुये आपका कृपा पत्र आया था कई कारणों से मैं उसका उत्तर नहीं दे सका। आपके जोधपुर जाते समय गाड़ी का न मिलना वास्तव में शोकदायक है और इस क्रम से कितने एक सभासदों का मन आपके लिखने से प्रथम ही उदास है परन्तु समाज में जुदी 2 प्रकृति के मनुष्य होते हैं इस कारण इस क्रम के भी कुछ भागी होंगे। इसमें विशेष लिखना नहीं चाहता। आप जो कुछ अनुचित हुआ क्षमा करें।

पंडितों अथवा और किसी मनुष्यों का समाज की मार्फ़त बुलाने से ईस समाज का यह अभिप्राय था कि उक्त मनुष्यों का चाल चलने आपको भली भांत प्रतीत हो जावेगा जिस्से आगे को कोई विघ्न न पड़े।

पंडित दामोदर दास और स्वामी केशवानन्द आप की सेवा में पहुंचे होंगे स्वामी केशवानन्द जी ने मार्ग का ख़र्च इस समाज से मांगा था परन्तु समाज ने यह विचार कर कि दो मनुष्य तो इनके साथ में हैं दूसरे आर्य्य समाजों के नियम अनुसार वैदिक धर्म पर इनकी दृढ़ता भी नहीं है वृथा धन जाते देख नहीं दिया और कहा गया कि यदि स्वामी जी के पास जाने से वैदिक धर्म पर आपकी पूर्ण दृढ़ता हो जावेगी और स्वामी जी हमको लिखेंगे तो हम पूर्ण रीति से आपकी सेवा करेंगे। सो अब जैसा कुछ हाल इनका आपने देखा हो उससे सूचित करें।

पंडित सालिकरामजी छुट्टी से आ गये हैं उनको पंडित के वास्ते पूछा कि काशी में क्या वंदोवस्त कर आये उन्होंने कहा कि मैं तो काशी नहीं गया परन्तु पंडित रामचन्द्र जो हमारे कॉलेज के नायब पं० हैं वे गये थे उनसे जो पूछा तो उन्होंने कहा कि **काशी** में और तो कोई पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती के पस जाने को उद्यत नहीं हुआ परन्तु एक पंडित राम निरंजन नाथ त्रिपाठी 30) मासिक पर आने को उद्यत हुआ सो यदि आप को स्वीकार हो तो लिखें आप के लेख आने पर उनको काशी से बुला लिया जावेगा। पं. शालिकराम जी[1] ने यह भी कहा यदि स्वामी जी उक्त पं. को स्वीकार करेंगे तो हम काशी के पंडितों से उक्त पं. जी की विद्या की और भी निश्चय कर लेंगे। इसमें जैसा आप उचित समझें वैसा लिखें मेव कॉलेज डिवीजन के जो

1. अजमेर के यह विद्वान् काशी शास्त्रार्थ से कुछ पहले से परिचित थे। पहले वैदिक विचारधारा के नहीं थे। ऊपर इन्हीं का सालिकराम लिखा है 'जिज्ञासु'

इन्जिनियर साहब थे वे शिमले को बदल गये उनकी जगह पर सरदार भगतसिंह इन्जिनियर हुये हैं उन्हीं के दफ्तर में में भी काम करता हूं वे कहते थे कि **गुजरात में मूलराज ए० मे० हम से मिले थे और आर्य्य समाजों को पक्षपाती कहते थे इस कारण हमने और उन्होंने मिलकर एक संस्कृत पाठशाला जुदे होकर नियत की है परन्तु आपने जो उदयपुर में 23 मनुष्यों से सभा नियत की है उसमें इन्हीं महाशय मूलराज ए० मे० का दूसरा नम्बर**[1] है यह देखते हुये हमको आशा नहीं कि वे आर्य्य समाजों को पक्षपाती[2] बताते हों। यह केवल सिरदार साहब का कथन मालूम होता है यहां एक सभा देश उन्नति के लिये नियत हुई है जिस में बहुधा प्रार्थना समाज के सभासद हैं उस सभा के सभापति सरदार भगतिसंह जी हुये हैं—शोक है कि ऐसे योग्य पुरुष इस आर्य्य समाज के कोई सहायकारी नहीं हैं। जोधपुर के समाचार लिखिये। सब सभासदों की ओर से नमस्ते।

रामानन्द ब्रह्मचारी और अमरदान जी को बहुत प्रकार से नमस्ते।

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री आर्य्य समाज अजमेर

(5)

आर्य्य समाज अजमेर

नं० 454 ता: 21.7.83

श्री स्वामी जी महाराज

नमस्ते

इससे प्रथम एक चिट्ठी आप की सेवा में भेजी गई थी। जिसमें पंडितों और स्वामी केशवानन्द का आपके पास जाने का हाल लिखा था पर न जाने आपने उत्तर क्यों नहीं दिया। आज काल इस नगर में पोप लोगों ने यह गप्प उड़ा रक्खी है कि जोधपुर में स्वामी जी से फौजदारी हो गई है यद्यपि हम जानते हैं कि यह सर्वदा असत्य ही है तथापि अल्पज्ञता के कारण कितने ही प्रकार के संकल्प विकल्प उठते हैं। इस कारण आप कृपा कर इसका सत्य वृत्तान्त लिखें।

1. मूलराज को ऋषि के जीते जी कुछ आर्यों ने पहचान लिया। मूलराज एम.ए था ए.म नहीं। ऐसे कई वेद निन्दक अपनी प्रतिष्ठा के लिये ऋषि जी को चिपके। 'जिज्ञासु'

12वीं जोलाई सन् 83 ई० का भारतमित्र आप की सेवा में पहुंचा होगा उसमें ए.ओ. होम साहब ने जो थियोसाफिष्ट के मेम्बर हैं; वेद भ्रान्ति अभ्रान्ति का वृत्तान्त लिखा है और आप से उत्तर मांगा है सो उत्तर अवश्य देना चाहिये।

और जोधपुर का वृत्तान्त भी लिखें कि वहां के लोगों को कैसी भक्ति है। और महाराजा साहब का कैसा स्नेह है। किमधिकम्।

रमानन्द ब्रह्मचारी, अमरदान जी कन्हैयालाल जी महाशयों को नमस्ते पहुंचे। और सब सभासदों की और से आपकी सेवा में नमस्ते पहुंचे।

आपका दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्य स. अजमेर

(6)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं० 465 — ताः 29.7.83

श्री स्वामी जी महाराज

नमस्ते–

आपका कृपापत्र आया सब को आनन्दित किया। मिष्टर ए.यू. होम साहब के कथन का खन्डन जो आपने दे० हि० में छपने को भेजा है सो पहुंचा। दे० हि० के भाद्रपद मास के मसौदे में जो कि 10 अगस्त को छपने को जावेगा उसमें लिखा गया।

भारत

मित्र और अन्यत्र पत्रों में आपने मुद्रितार्थ भेज दिया। अच्छा किया क्योंकि उनमें शीघ्र प्रकाश होगा। सब सभासदों की ओर से नमस्ते पहुंचे।

आपका दास
कमलनेयन शर्म्मा
मंत्री, आर्य्य. स. अजमेर

(7)

समय ½ घंटा

ऐन्द्र सानसिंरयिं सजित्वांनं सदासहम्।। वर्षिष्टमूतयेंभर।।1।। नियेनं मुष्टिहुत्ययानि वृत्रारुणधांमहै।। त्वोतांसो न्यर्वंता।।2।। इन्द्रत्वोतास आवयं

1. यह सन्स्कृत शब्द अशुद्ध छपा है। 'जिज्ञासु'

वज्रं घनाददीमहि॥ जयेम संयुधिस्पृधः॥3॥ वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजावयम्॥ सासह्याम पृतन्यतः॥4॥ महाँ इन्द्रः परश्चनुमहित्वमस्तु वज्रिणे॥ द्यौर्नप्रथित्रा शवः॥5॥ समोहेवाय आशत नरस्तोकस्यसनितौ॥ विप्रासोवाधियायवः॥6॥ यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते। उर्वीरापो न काकुदः॥7॥ एवाह्यस्यसूनृता विरप्शीगोमतीमही॥ पक्काशाखानदाशुषे॥8॥

हस्ताक्षर बालकराम वाजपेई

श्री स्वामी जी म्हाराज नमस्ते

उपर यह बालकराम ने वेदभास देख कर आध घंटे में लीखा है लेख ईस्का अछा है परन्तु संस्क्रीत[1] को बोध नहीं है समाज ने इस्को आठ रुपे मासिक पे नोकर रखाया है ईस कारण बिना समाज की आज्ञा के बालकराम के विश्व में कुछ नहीं लिख सकता था ईसी कारण उत्तर में बिलम्भ हुवा अब समाज में ईस्का निरणे हो गया है।

समाज की आज्ञा

यद्यपि बालकराम स्वामी जी के पास बोहत थोड़े दिन ठेरेगा क्योंकि ईसमें पोप लीला और बाजारू चालचलन और सुस्ती अधिक है ईसी कारण समाज भी अप्रसन्न है परन्तु आजकल प. मुन्नालाल के काम छोड़ने से और पं. कमलनयन के नागरी अक्षरों में शीघ्र न लिखने से और दुसरा आदमी न मिलने से ईस को रख रखा था इसके जाने से समाज के कार्य्य में हानी तो होगीं

परन्तु स्वामी जी के पास बालकराम के जाने से यदी वेदभाष्य में अधिक सहायता मीले तो हम ईस हानी को कुछ नहीं गिनते।

अब ईस पे आप बिचार करके बालकराम को बुलालें मुन्नालाल ने कार्य्य क्यों छोड़ दिया ईस्के लिखने की मुझ को समाज की आज्ञा नहीं है परन्तु ईतना तो अवश्य लिखता हूं की ऐसा करने से समाज में हानी होती है दुसरा समाचार यह है कि वह ईसाई ओरत जिस्का मेने आप से अजमेर में जीकर कीया था 26 तारीख आगस्त को आर्य्यसमाज में प० भागराम और सरदार भगतसींघ इत्यादि पुर्षो के सामने जो कि उक्त तारीख समाज में रक्षाबन्धन के उत्सव में सुसोभित हुये थे अपने दो बच्चों सहित ईसाई मत छोड़ वेदमत्त स्वीकार कीया ईस पे उक्त सज्जन महाशय बोहत आनन्द हुये अब ईस्का पालन पोषन करना समाज को करतब्य है पढ़ी लिखी कसीदे के काम में

1. यह सन्स्कृत शब्द अशुद्ध छपा है। 'जिज्ञासु'

अती निपुण है जोधपुर के मंगल समाचार लिखये सब सभासदों की नमस्त पोहचे ईस ईसवी का पुरा ब्रीतांत दे. हि. न. 5 में लीखा जावेगा।

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मन्त्री आर्य्यसमाज अजमेर

ता: 31.8.83

(8)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं. 529 ता: 6.9.83

श्रीयुत स्वामीजी महाराज,

नमस्ते,

आपका आनन्द पत्र आया समाचार विदित हो अत्यानन्द हुआ।

1. पंडित मुन्नालाल को आपका पत्र दिखाया गया लिखना व न लिखना उत्तर का उनकी मर्जी पर निर्भर है।

2. बालकराम बाजपेई को भी पत्र दिखा दिया।

3. इस स्त्री के विषय में जो आपने पूछा है उनका उत्तर यह है।

1. यह ईसाई की लड़की नहीं थी। आठ मास से ईसाई हुई थी।

2. इसका जन्म बम्बई का है प्रभू अर्थात् कायस्थ जाति की है—

3. इसकी अवस्था 22 वर्ष की है इसके बड़े लड़के की अवस्था 8 वर्ष की छोटे की 6 वर्ष की।

4. दोनों लड़के हैं।

5. इसका चालचलन जहां तक हमने देखा है कोई दोष दृष्टि नहीं पड़ता। दूसरे विवाह की भी इसकी इच्छा नहीं है क्योंकि वो कहती है कि यदि मुझ को दूसरा विवाह करना होता तो मैं ईसाई मत में बिना रोक टोक के कर सकती थी, इस स्त्री पर यह आपत्काल का समय है दो वर्ष हुये कि इसके पति की मृत्यु हो गई है इसका पति अजमेर में 100 मासिक पर नौकर था। अपनी गुजरान अच्छी तरह से करते थे। परन्तु यही मेम लोग जो घर 2 पढ़ाती फिरती हैं इनके घर भी जाया करती थी इनके सत्संग से पति के मृत्यु के पश्चात्। ईसाइयों ने बहका कर इसको इसके लड़कों समेत ईसाई कर लिया था। अब आर्य्य समाज के उपदेश से वह मत छोड़ दिया ईसाई औरतों में यह उपदेश किया करती थी आशा है कि यदि इसको सत्यार्थप्रकाश और अन्य आर्य्य ग्रन्थों का अवलोकन कराया जावे तो अच्छी उपदेशका होजा वेगी—

इस स्त्री के वेद मत स्वीकार करने से यहां के ईसाइयों में बड़ी हलचल मच रही है। और परस्पर ईसाई मत में उन्हीं को शंका उत्पन्न होने लगी। आशा है कि वर्ष दिन के भीतर और भी कितनेक ईसाई मनुष्य औ स्त्रियें वेद मत को स्वीकार करेंगे। परन्तु यह पहला नमूना है यदि अच्छा बन गया और इसकी सुदशा और मान्य दूसरे ईसाई लोग जब देखेंगे तो शीघ्र ही वेदमत को स्वीकार करेंगे।

पंडित दामोदर शास्त्री अपनी पहली जगह पर नौकर हो गये। धन्नालाल का कुछ हाल मालूम नहीं।

पं. भागराम जी तथा सरदार भगतसिंह जी को आपका पत्र दिखाया। उन्होंने बड़ा आनन्द माना और सरदार भगतसिंह जी ने कहा कि मेरी ओर से स्वामी जी को लिख दें कि जब आप जोधपुर से गमन करें तो अजमेर होकर जावें। जिस्से हम को भी दर्शन हो जाय–

वर्षा यहां भी प्रतिदिन होती है, पं० मुन्नालाल जो आपको लिखें वह हम पर भी प्रघट होना चाहिये।

सब सभासदों की ओर से बहुत 2 करके नमस्ते पहुंचे, स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी ने भी एक आर्य्यसमाज शिकारपुर पंजाब[1] मे स्थापित किया। किमधिकम्।

मिती भादवा सुदी 5 संवत् 1940

आपका दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

(9)

॥ ओं ॥

अजमेर

7 सितम्बर सन् 1883

श्रीयुत सकल गुणालंकृत श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते–

आप के कृपा पत्र को अवलोकन करने से बड़ा आनंद प्राप्त हूआ आपने जो कृपा करकें दास से मंत्रीत्व का पद त्यागन करने के विषय में प्रश्न कीया है वास्तव में मेरे लीये अतीव लाभदायक हूआ कि जिसके कारण मुझको आपकी सेवा में अपने दुःख की व्यवस्था निवेदन करने का समय हस्तगत हूआ इसलिये में ईश्वर सर्व शक्तिमान न्यायकारी को मध्यस्थ मान आपकी सेवा सत्य 2 निवेदन करता हूं यदि इस में तनिक भी असत्य लिखू ईश्वर मुझ को अवश्य दण्ड दे और आप के सन्मुख भी दोषी ठहरूं–

स्वामीजी महाराज! यह वृतांत इस प्रकार से है जिस समय आप द्वितीय

1. शिकारपुर सिंध प्रान्त में है। पंजाब में नहीं। 'जिज्ञासु'

समय अजमेर में सुशोभित हुये थे पं० सुकदेवप्रशाद को मंत्रीनियत कर मुझ को उपमंत्री स्थापित कीया था परंतु पं० सुकदेवप्रशाद ने जब मंत्री की पदवी छोड़ी तो समाज ने मुझ को मंत्री नियत कीया इसके उपरान्त में बराबर अपने नियमानुसार अथाशक्य समाज का कार्य बड़े उत्साह से करता रहा अब इसी उत्साह में मैंने विचार कीया कि इस समाज से एक पत्र [माषिक] निकला करे जिस्से इस समाज की उन्नति और समाचारादि पत्र आया करे और जो कुछ पत्र से धन का लाभ होय वह समाजोन्नति में व्यय होय मेने एसा विचार ठान इस विषय को अंतरंग समाज में निवेदन कीया परंतु समाज कोष में इतना धन नहीं था कि एक माषिक पत्र निकाल सकें परंतु मुंशी पदमचंद जी वा पं० कमलनयन जी की भी यही अभिलाषा थी की अपने यहां से माषिक पत्र निकले तो बहुत अच्छी बात होय, तब मेंने कहा कि जो होय में पत्र निकालुंगा तिसपर अंतरंग सभा ने अंतको वादानुवाद होते यह नियम ठहराया कि अच्छा तुम पत्र निकालो इसके लाभ हानि के तुम्ही मालक हो में ने इस बात को स्वीकार कर अपने जी में यह कहा कि कुछ चिन्ता नहीं लाभ समाज को और हानि में दुंगा [इस बात को में ने केवल दो एक सभासदों पर प्रकट भी कर दीया था और वे इसके साक्षी भी है तब मैंने देशहितैषी का आरंभ कर दीया और आप की कृपा से बड़े आनंद से चलता रहा–परंतु आप जानते है कि यह देश ईर्षा से ही नष्ट हूआ है, नो दस माष तक देशहितैषी में बड़े उत्साह से चलाता रहा परंतु समाज के सभासदों ने एक भी आकर मुझ को अणुमात्र भी सहायता इतनी भी नहीं दी देशहितेषी के ग्राहकों के नाम एक लिख दें [हां पं० कमलनयन जी ने दो एक विषय मुझको छपने को दिये थे] में ही केवल विषय बनाता ग्राहकों को उत्तर देता देशहितैषी को छपवाने भेजता जब छप कर आ जाता था तब में ही उनको प्रत्येक ग्राहक के पास भेजने को उन पर कागज चढ़ाता उनके ऊपर नाम लिखता रिजष्टर करता इत्यादि सर्व काम में ही करता अणुमात्र भी किसी से सहायता नहीं ली थी "[हां मेरी स्त्री मुझ को वास्तव] बहुत दे० हि० के काम में सहायता देती थी जिस्के कारण में किसी की सहायता लेने की परवा नहीं करता था] इसी प्रकार से बड़े आनंद से कार्य चलता रहा और समाज का अन्य काम भी करता रहा, इसी अवसर में **पाड़े श्यामसुन्दर** मेरठ समाज के उत्सव में मेरठ गये औ वहां पर यह वार्ता हुयी कि [श्यामसुन्दरा के कथनानुसार] जो पत्र समाज की ओर से निकलते हैं परन्तु कोई मनुष्य ही उसका मालिक है सो ऐसा करना उचित नहीं वह पत्र समाज का होना चाहिये और समाज ही उसके लाभ हानि

की मालिक रहे] इत्यादि वाते जब श्यामसुन्दर मेरठ से लोट कर यहां आये तब उन्होंने मुझ को छोड़ दो एक और सभासदों से इस बात को कहा जब उन लोगों ने इस बात को स्विकार कीया कि ऐसा ही होना चाहिये, तब एक दिन प्रथम अंतरंग सभा होने के श्यामसुन्दर ने मुझ से कहा कि समाज दे० हि० को अपना करना चाहती है। मैंने इस बात के सुनते ही उसी समय कहा कि हां! बड़ी अच्छी बात है यदि मेरठ समाज ने इस बात को नियत करना चाहा है तो में कभी नकार न करूंगा, अंत को दूसरे दिन अंतरंग सभा हुई और मुझ से पूछा गया कि समाज दे० हि० को अपना करना चाहती है तुम इस पत्र को समाज ही को दे दो मैंने कहा कि बहुत अच्छी बात है यदि मेरठ समाज ने इस बात को नियत करना चाहा है तो मैं कभी नकार न करूंगा, अंत को दूसरे दिन अंतरंग सभा हुई और मुझ से पूछा गया कि समाज देश हितैषी को अपना करना चाहती है, तुम इस पत्र को समाज को दे दो मैंने कहा कि बहुत अच्छी बात है और मैं इस बात से बड़ा खुश हूं कि अब समाज का पत्र होने से मुझ को सहायता भी मिलेगी, वस स्वामी जी महाराज! जब से यह पत्र समाज का हूआ-और जितना धन मेरे पास देश हितैषी के मध्ये का था कोषाध्यक्ष को सोंपा, और में उसी उत्साह से अपना कार्य करता रहा-

(2) अब इसी अवसर में पांडे श्यामसुन्दर ने पं० कमल नयन जी और मुंशी पदमचंदादिजी को यह विपरीति बुद्धि सुझायी कि मुन्नालाल के पास जो डांक रोज अती है सो उसके पास न जाया करे दूसरी जगह आया करे और चार सभासदों के बीच खुला करे जब मुन्नालाल के पास डांक भेज दी जाय, क्योंकि एसा न होय कि मुन्नालाल, कही कोई किताब वा मनीआर्डर चुराले, अंत को एक दिन यह हूआ कि अकस्मात न तो मुझको सूचना कि कि आज से तुम्हारे पास डांक न आया करेगी बस आपस में बातें कर डाक अपने पास मंगवाली और मैं वांट ही देखता रहा कि डांक अब तक नहीं आई, परंतु उस दिन ऐसा हूआ कि मुंशी पदमचंद जी ने जो डांक घर उस आदमी को भेजा दैव योग से चह डांक घर में पहुचा और डांकिया कुछ देर पीछे मेरे पास डांक लाया और डांकिये के पीछे 2 मुं० पदमचंद जी का नोकर भी आया और मुझ से कहने लगा कि डांक तुम मत लो मुं० पदमचन्दजी ने कहा है तब मैंने यह जाना कि मुं० पदमचंदजी ने इस चपड़ासी से न जाने क्या कहा है यह समझा नहीं है तब मैंने मु० पदमचंदजी के चपड़ासी से कह दीया कि अच्छा जाओ मु० प० चं० जी से फिर पूछ कर आओ-यह चपड़ासी गया ही था कि पं. कमलनयन और पं. श्यामसुन्दर आये और मुझ से [एक प्रकार से]

कहने लगे कि अब से तुम्हारे पास डांक न आया करेंगी ओर दो वा चार सभासदों के बीच में खुला करेगी, मैंने कहा क्यों? यह प्रबंध कब हुआ और क्यों हूआ? इसका क्या कारण है? तो कहने लगे कि समाज की मरजी, यह तो अच्छी बात है तब मैंने कहा कि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता क्या समाज में मेरी कोई चोरी पकड़ी वा मैंने डांक में से कुछ चुराया यदि ऐसा है तो आप उसका प्रमाण दें अन्यथा ऐसा प्रबंध करना मानो मुझ को चोर बनाना है तब पं० कमलनयन जी ने कहा कि तुम एसा आग्रह क्यों करते हो समाज की यही इच्छा है जब मैंने यह सुना तो बस आप सत्य जानिये कि मेरी आखों में आश्रुपात भर आये और मुझ से उस समय इन दोनों पुरुषों से कुछ कहते न बना, जब वे अपने घर को चले गये तब मुझ को इतना खेद हुआ कि लेखनी द्वारा आपके सन्मुख प्रकट करना असम्भव है–केवल थोड़ी देर के रोने के और कुछ न बना और अपने को धृकारा कि जब इन लोगों को मेरा इतना भरोसा नहीं है तब इस समाज का मंत्री होना मानो प्रतिष्ठा का एक दिन खोना है इत्यादि पाश्चाताप कर मेंने अपने जी को ढाढ़स बंधाया–और डांक पं० कमलनयन जी के घर पर जाने लगी, जब वे देखलें तब मेरे पास भेज दें, कहां तो में प्रातःकाल उठा कि नित्य नियम कर देशहितैषी के काम में प्रवृत हो जाता कि इतने में डांक आती उसको देख जो कुछ होता ठीक-ठाक कर देता था फिर इतने में दफ़्तर का समय आ जाता और दफ़्तर चला जाता था। अब जब डांक मेरे पास न आने लगी और मेरे ऊपर काम बढ़ने लगा कि जो काम में आज कर लेता था दूसरे दिन होने लगा तब मुझ को बहुत भारी काम होने लगा उधर निर उत्साह ने घेरा अब काम कैसे होय फिर भी लष्टम पष्टम् करता चला गया–

अब तीसरी उपाधि यह उठाई [जब देखा कि मुन्नलाल डांक में से तो कुछ नहीं ले सकता] कि तुम आरम्भ से देश हितैषी की आमद और खरचा का हिसाब दो मैंने वह भी स्वीकार कीया [परंतु समाज को आरंभ से हिसाब लेने की कुछ अवश्यकता नहीं थी जब से दे० हि० लीया था तभी से हिसाब मांगना उचित था] और आरंभ से सब स्पष्ट **2 हिसाब दे दीया ईश्वर का कृपा से एक कोड़ी की भी भूल न रही और न निकली परन्तु** स्वामी जी महाराज! इस स्थान पर मुझे को बड़ी हंसी आई, कारण यह सब उपाधि श्यामसुंदर ने उठाई थी जब मैंने ठीक-ठीक हिसाब दे दिया [तब श्यामसुन्दर ने जो पं० कमलनयन जी वा मुं० पदमचंद जी आदि को मेरी ओर से वहकाया था] पं० कमलनयन जी ने श्यामसुन्दर से कहा कि तुम तो कहते थे कि मुन्नालाल ने कुछ दे० हि० की आमद में से जरूर खाया है जिस्से इतनी महनत करता है सो उसका हिसाब भी ठीक है अब तुम उसके हिसाब में क्यों नहीं भूल निकालते तब श्याम सुन्दर ने कहा कि हम भूल क्या

निकालें उसने हिसाब ही ऐसा दीया है कि हम उसको नहीं पकड़ सकते पं० क० नै० जी ने कहा कि वही बात बताओ तब श्या० सु० कहने लगे कि जो **टिकट चिट्ठीयों** में उठ हैं उनका ठीक-ठीक हिसाब नहीं है कि क्या जाने उसने चिट्ठी नहीं भेजी होंय और टिकट लिख दीये होयं इसमें उसने खाया होय तो कोन जाने–

जब में पं० कमलनयन जी से दूसरे दिन मिला तब ईश्वर की कृपा से बातों ही बातों में उनके मुख से यह बात निकल आई तब पं० क० न० जी से मेंने कहा कि पाडे श्याम सुन्दर का यह कहना भी जो आपने सत्य माना और मेने टिकटों ही द्वारा दाम खाकर अपना ईमान बिगाड़ा है तो रिजष्टर में चिट्ठी गिन कर हिसाब लगा लो द्वितीय यह भी न हो सके तो अब जो हमने तीन माष में टिकट उठाये है उनके हिसाब से वर्ष भर का हिसाब लगा लो अंत को इसका कुछ भी उत्तर न देसके और चुपके हो गये–

अब वर्तमान वृतांत सुनिये कहां तो यह प्रबंध था कि मुन्नालाल सम्पादक है उसके पास डांक न जाय अन्यऽस्था में खुला करे, सो जब से पं० कमलनयन जी मंत्री और सम्पादक नियत हुये है तब से सीधी डांक पं० क० न० जी के पास आती है और वे बराबर डांक खोल लेते है अब कोई भी कुछ नहीं कहता एक दिन मैंने यह कहा कि तुमने बिना किसी को आये डांक क्यों खोली तो कहने लगे कि अखबार खोले है और यह कार्ड धरे हैं–तब मेंने कहा कि क्या अखबार डांक में गिनती नहीं होते! तब झुंझला के चुपके हो गये और मेरे पर नाराज़ हूये–शारांस यह है कि जो मेरे लीये प्रबंध कीये थे वे पं० क० न० जी के लीये नहीं वर्ते जाते–

विशेष क्या निवेदन करूं जैसा इन लोगों ने मेरे साथ वर्ताव कीया और मुझ को खेद पहुंचाया ईश्वर इसका साक्षी और देखने वाला है यदि मुझ को देशहितैषी में से अपना निज के लाभ उठाने का लोभ होता तो में दे० हि० को समाज को क्यों देता–और उसी समय 40) रुपये जो मेरे पास दे० हि० के जमा थे क्यों एकबार के कहने से दे दैता, स्वामीजी महाराज बड़े खेद की बात है कि आज आपके सन्मुख मुझ को अपने आप यह बात कहनी पड़ी "कि में कुछ ऐसे ग़रीब पुरुष का पुत्र वा एसे कुल का नहीं हूं कि रुपये के लोभ में फसूं ईश्वर की कृपासे मेरे घर में सब कुछ है मेरे माता पिता सब प्रकार से भरे पूरे हैं, यदि मेरी बालावस्था और आज तक की ईमानदारी और मेरे चालचलन के विषय में कोई जानना चाहै तो [मुंशी जमना दास पत्थर वाले जो कि **गोकलपुरा** आगरे में रहते और विलायत तक जिनका नाम विख्यात है] उने पूछ देखें–

स्वामीजी महाराज! फिर जिसपर आपकी सिक्षा का होना यह कोई

सामान्य वात नहीं है–ईश्वर से में वारंवार यही प्रार्थना करता हूं कि जिस प्रकार से मेरी दृढ़ भक्ति आपके चरण कमलों में है इसी प्रकार से सदैव वृद्धि को प्राप्त होती रहै और जो आपकी सिक्षा ज्ञान मेरे हृदय में स्थिति है वे मरण पर्य्यंत मेरे हृदय से नहीं निकल सकते, बस और आपके सन्मुख क्या निवेदन करूं।

पूर्वोक्त विषय को पढ़ कर आप ही न्याय कर लीजिये कि में किस प्रकार से इस समाज के मंत्रीत्व के गृहण करने के योग्य हो सकता हूं। इसलिये में आपसे क्षमा मांगता हूं कि ऐसे मंत्री से में केवल साधारण सभासद ही अच्छा रहूंगा–

परंतु मुझ को खेद यही है कि पं० कमलनयनजी 10 नियमों में से एक का भी पूरा वर्ताव नहीं करते, हमारे प्रधान मुंशी पदमचंद जी का यह हाल है कि जैसा जिसने जिस किसी के विषय में जा सुनाया झठ मानलीया उस पर प्रधान की तरह कुछ भी विचार नहीं करते श्याम सुन्दर पांड़े के विषय में आप पं० कमलनयन जी से ही पूछलें कि यह पुरुष स्वप्रयोजन सिद्ध करने और आपस में विरोध डालने में कैसा चतुर है–जब तक इन बातों का प्रबंध न कीया जाय समाज की वृद्धि होना दुर्लभ है।[1]

आपका सेवक
मुन्नालाल पूर्व मंत्री
आर्यसमाज अजमेर

न जाने भारतमित्र की क्या प्रक्रति हो गयी है कि जो विषय आर्य्य लोग भेजते हैं क्यों नहीं छापता–मैंने एओ ह्युम साहब का **उतर** लिखा था वह भी नहीं छापा **दूसरा** वालादत्त शर्म्मा जो गढ़वाल में रहते है उन्हो कुछ तर्क उठाया था और अपनी विद्वता भा० मि० में प्रकाश की थी उस्का उत्तर भी मैंने भा० मि० के सम्पादक को भेजा था सो भी न छापा और मुझ को लिख दीया की तुम सीधे वालादत्त जी से पत्र व्यवहार करो भा० मि० में ऐसे विषय नहीं प्रकाश होंयगे न जाने भा० मि० को क्या हो गया हमारे विरुद्ध विषय तो प्रकाश करे और उनके उत्तर नहीं छापता कही कोई भा० मि० सभा में पोपजी तो नहीं आ घुसे–

1. यह महर्षि जी के बलिदान से कोई दो मास पूर्व ही उनको अजमेर से भेजा गया पत्र है। इसमें समाज हित चिन्तन अथवा धर्म प्रचार विषयक कुछ भी नहीं। परस्पर ईर्ष्या द्वेष के सिवा कुछ नहीं। पत्र लेखक निर्दोष ही लगता है। इस मनोवेदना से भी पाठक कुछ शिक्षा लेकर धर्म की सेवा कर सकते हैं। अजमेर वालों का दुर्भाग्य! 'जिज्ञासु'

[2] यहां पर पानी 7 दिन से खूब पड़ता है दुर्भिक्ष का भय जाता रहा विशूचिका रोगादि भी शांत हो गये–

[3] में जन्माष्टमी पर आगरे गया था सो वा० भगवानदास जो कि "भारतीविलास आगरे" के सम्पादक है उनके 12) रुपये कल्दार भर पथरी निकली में जब उनसे मिला तब वे पलंग पर लेटे हुये थे और उन्होंने मुझ को उक्त पथरी दिखलाई मानों उनका पुनर्जन्म हूआ–

स्वामीजी महाराज यह वृतांत मेंने अपने समाज से मंत्रीत्व के पद के छोड़ने का सुक्षम रीति से लिखा है अन्यथा सर्व व्योरेवार व्यवस्था कि जैसा 2 मुझ को इन लोगों ने खेद पहुंचाया है लिखता तो पांच सात प्रष्ट और भर जाते इस कारण सूक्ष्म रीति से ही लिखा गया–

मुन्नालाल

(10)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं. 566 ता: 25.9.83

श्रीयुत स्वामीजी महाराज,

नमस्ते,

आपका रजिष्टरी चिट्ठी पहुंची थी और उसका प्रबन्ध भी अर्थात् उस मनुष्य का हुलिया पुलिस में लिखवा दिया था और कोतवाल ने भी सब सिपाहियों को सुना दिया था कि जो कोई उसको पकड़ के लावेगा 50) पारतोषिक पावेगा, पं० भागराम जी से जो पूछा गया तो उन्होंने कहा कि स्वामीजी की रजिष्टरी चिट्ठी हमारे पास नहीं आई। केवल आध आने की आई थी। उसमें चोरी का हाल लिखा था हमने उसी दिन उसका विज्ञापन ठौर 2 लगवा दिया परन्तु अभी तक कुछ पता नहीं लगा–

मारवाड़ कैसा?

स्वामीजी महाराज मारवाड़ राज बड़ा विकट है वहुधा चोर उठाईगीरे बसते हैं वह स्थान आप जैसे महात्माओं के निवास करने का नहीं है यदि राजा साहब चाहते तो क्या चोर न पकड़ा जाता, इस कारण यदि वहां कुछ लाभ नहीं दीखता तो उसको छोड़ शीघ्र पधारिये, मैं जानता हूं कि यदि आप इतने दिन इन्दौर, कलकत्ता, मदरास, स्थानों में भ्रमण करते तो बहुत कुछ उन्नति होती।[1]

1. जोधपुर की कीर्ति! 'जिज्ञासु'

भारतमित्र में जो काशी के पंडितों का विचार छपा हे वह आप पर विदित हुआ होगा। उसका उत्तर देना भी योग्य है, कलकत्ते की धर्मसभा से एक पत्र "धर्मदिवाकर" निकलता है उस में भी आपके विषयों पर तर्कणा छपा करती है, आगरे में ज्वाला प्रसाद भार्गव ने भी वेदभाष्य करना आरम्भ किया है देखिये ये मन्डलियां क्या करती हैं, पं० मुन्नालाल इस समाज का पूरा विरोधी हो गया है और इसका सहायक कृपण नाथूराम हुआ है। "राम मिलाई जोड़ी एक अन्धा एक कोढ़ी" यह कहावत इन पर खूब फबती है गत सप्ताह के मित्रविलास में पं० मुन्नालाल ने अपने एक मित्र "कल्यानसिंह" की आड़ लेकर मुझ पर और आर्यसमाज पर और पत्र देशहितैषी पर अक्षेप किया है। इस कारण इस समाज का मन उसकी ओर से बिगड़ गया है। पत्र मित्र विलास को आपके अवलोकनार्थ भेजता हूं अवलोकन करने के पश्चात् वह पत्र इस समाज को लौटा दें, क्योंकि इस पत्र का समाज में रहना भी अवश्य है। अब आप लिखिये कि अजमेर में कब तक पधारेंगे और आपकी कृपा से सब प्रकार का आनन्द है–

पं० भागराम जी, और सरदार भगतसिंह जी और सब सभासदों की ओर से नमस्ते।

आपका दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आ० स० अजमेर

(11)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं. 53 ताः 16.9.83

श्रीयुत स्वामीजी महाराज,

नमस्ते,

आपकी पीछली चिट्ठी के उत्तर में पं० गौरीशंकर का वृत्तान्त लिखना भूल गया था उनका यह हाल है कि जैपुर में 15 रु० मासिक पर नौकर हैं इतने में कुनबे का निर्वाह कठिनता से करते थे। सो इनका यह उद्यम भी धर्मार्थ गया। अर्थात् 20 अगस्त को इस समाज के उत्सव में जिस दिन **सीताबाई** ने ईसाई मत त्याग वेदमत स्वीकार किया था उक्त पं० जी को जैपुर से व्याख्यानार्थ बुलाया गया था। पं० जी भी उत्साह बस एतवार की छुट्टी जान अजमेर चले आये। पश्चात् जैपुर में उनके हाकिम ने याद किया।

पं० जी के न मिलने पर उनको नौकरी से दूर कर दिया। इस बात का सब को शौक है। पं० जी सच्चे मन से आर्य है और इनका हृदय आर्य्यों के प्रेम से सदैव परिपूर्ण रहता है। प्रथम ये मेरठ समाज के पंडित रह चुके हैं। और जिले शहारनपुर में इन्होंने ओवरसियर का काम बहुत दिनों तक किया। इस कारण राव मसूदा अपने राज्य में तालाब इत्यादि के प्रबन्ध के वास्ते रखना चाहते हैं परन्तु जैपुर समाज और अजमेर समाज की यह इच्छा है कि यदि उक्त पं० जी को धर्म उपदेशक नियत किये जावें तो हम लोगों और समाजों को भी उन्नति दायक होंगे। और पं० जी का भी अच्छी प्रकार निर्वाह हो जायगा।

सीताबाई नागरी अच्छी प्रकार से पढ़ सकती है संस्कृत शब्दों का बोध कम है परन्तु हस्तक्रिया अर्थात् टोपी, रूमाल, चादर, दुपट्टे, ऊन के आसन और कइ एक काम अच्छे कर सकती है यदि इसका कोई सहायकारी भी न हो तो यह अपने हुनर से अपना पेट भर सकती है परन्तु हम को ऐसा उचित नहीं है। समाज ने चन्दा करके इसको 10) मासिक देना किया है। आर्य्यपुरुषों की स्त्रियों को पढ़ाना और काम सिखाना यह कार्य्य इसको सौंपा है यदि इस प्रबन्ध में उन्नति रही तो कन्याओं की पाठशाला भी हो जावेगी। परन्तु इसका मुख्य कारण द्रव्य है जिसकी इस समाज से कम निश्चय है–

लाहौर समाज के मन्त्री भाई जवाहरसिंह शाहपुरे से 14 तारीख सितम्बर को यहां उपस्थित हुये यहां दो दिन निवास कर जैपुर मेरठ होते हुये लाहौर को गये। इनका विचार पीछे आने का नहीं दीखता। आप के लिखे अनुसार लाहौर में कन्याओं की पाठशाला में सीता के रखने को इनसे पूछा गया था उत्तर दिया कि वहां पर दो स्त्री प्रथम से ही हैं वहां आवश्यकता नहीं है फीरोज़पुर से उत्तर आया कि इसके हस्तक्रिया अर्थात् कसीदे के काम के नमूने भेजो। स्वीकार होने पर बुलाई जावेगी। सो नमूने तैयार हो रहे हैं इसके प्रबन्ध की हम को भी रात दिन चिन्ता बनी रहती है क्योंकि यह प्रथम ही कार्य्य है यदि इसका अच्छा प्रबन्ध हुआ तो अन्य ईसाई पुरुष भी वेद मत स्वीकार करने को उद्यत हो जावेंगे। अभी यहां पर चार पांच और अन्य ईसाई भी वेदमत स्वीकार करने को उद्यत हो गये हैं। जो थोड़े ही दिनों में ज्ञात हो जायंगे।

पं० मुन्नालाल का वृत्तांत यह है कि पत्र दे० हि० को समाज का करने से उनके हृदय में क्रोध उत्पन्न हो गया है।

जब यह पत्र प्रचलित किया था उस समय समाज की इच्छा नहीं थी समाज की इच्छा न होने पर भी पं० मुन्नालाल ने यह पत्र समाज के नाम से

प्रचलित कर दिया। जब समाज ने विचारा कि यह पत्र बिना सम्मति समाज के नाम प्रचलित है। इसका प्रबन्ध कुछ अवश्य करना चाहिये तीन महीने पश्चात् अंतरंग सभा हुई। उसमें मुन्नालाल को बहुत ऊंच नीच दिखाई गई और यह भी कहा गया कि अभी यह समाज इस योग्यता को प्राप्त नहीं हुआ। जो पत्र चला सके इस पर मुन्नालाल ने कहा कि मैं इस पत्र को प्रचलित कर चुका और सब प्रकार इसका काम मैं करूंगा कुछ सभासदों ने उस समय यह भी कहा कि यह पत्र मुन्नालाल ने कहा कि समाज का नाम हटाने में आपको क्या लाभ होगा। किन्तु ग्राहकों के कमती होने से मेरी हानि होगी। समाज ने भी यह विचारा कि इस पत्र से आर्यसमाज अजमेर का नाम उठा देने से लोग नाना प्रकार की कल्पना करेंगे अन्त को इस पर यह विचार ठहरा कि हानि लाभ का मालिक मुन्नालाल रहे परन्तु इस पर नाम समाज का होने से जो इसमें विषय होंगे उनकी जिम्मेदार समाज होगा। इस कारण इसमें छपने को जो मसौदा बनाया जाये वह समाज में सुना दिया जावे और उस पर मंत्री के हस्ताक्षर हो जाया करें। एक दो बार तो ऐसा किया गया फिर यह नियम भी मुन्नालाल ने तोड़ डाला और ऐसे ही चलता रहा।

इसके पश्चात् पांड़े श्यामसुन्दलाल मेरठ समाज के गत वार्षिकोत्सव में मेरठ को गये वहां पर यह वार्ता हुई कि लाहौर से आर्यापत्र जो अंग्रेजी भाषा में प्रकाश होता है वह भी समाज की सहायता से देशहितैषी की तरह प्रचलित हुआ। अब जो उस को समाज ने अपना करना चाहा तो उसके सम्पादक रतनचन्द वैरी ने बहुत कुछ विरोध प्रगट किया। फिर पांड़े श्यामसुन्दरलाल से कहा कि तुमहारा समाज के पत्र दे० हि० पर लिखा है कि यह पत्र समाज की ओर से है और आय व्यय का मालिक मुन्नालाल हो यह तो एक धोखे की बात है जो आर्यों को उचित नहीं है।

इस बात का चर्चा इस समाज के मुख्य 2 सभासदों से हुआ जिन का यह विचार हुआ कि दे० हि० पत्र समाज का होना चाहिये। परन्तु मुन्नालाल को इस बात से इस ढंग पर विदित करना चाहिये क उनका बुरा न लगे इस कारण कुछ दिन तो यह बात गुप्त रही फिर एक दिन समाज करके सम्मति ली गई कि दे० हि० पत्र समाज का होना चाहिये वा नहीं इस पर मुन्नालाल से आदि लेकर सब सभासदों की यही सम्मति हुई कि पत्र समाज का होना चाहिये।

जब यह बात पक्की हो गई तब मुन्नालाल जी से हिसाब लिया गया इसके बीच में एक और यह लीला उत्पन्न हो गई कि मुन्नालाल ने तीन चिट्ठी समाज की फाड़ डालीं जिनके कुछ टुकड़े कमलनयन को मिले।

जिन से कुछ दे० हि० का हसाब निकलता है और यह वृत्तांत भी उन्हीं मुख्य 2 सभासदों से कहा गया जिस पर यह विचार हुआ कि समाज की डांक किसी नियत स्थान पर दो सभासदों के सामने खोली जावे और मुन्नालाल से भी कह दिया गया। जिस पर उन्होंने कहा कि मैं चिट्ठी रसा से कह दूंगा वह नियत स्थान पर डाक लाया करेगा और फटी चिट्ठी के भी टुकड़ों का वृत्तान्त समाज में विघ्न पड़ने के कारण मुन्नालाल से नहीं कहा गया। वस यही कारण मुन्नालाल के विरोधी होने का हुआ अधिकता के भय से और नहीं लिखते।

इस पर आप दोषी और निर्दोषी का विचार कर सकते हैं–

पत्र मित्र विलास से ज्ञात हुआ कि महाराणा उदयपुराधीस और महाराजा इन्दौर ने कर्नल आल्कट को निमंत्रण पत्र दिया है जिससे कुछ सन्देह उत्पन्न होता है–

आप के यहां चोरी होने से सब सभासदों को क्लेश हुआ और पुलिस में आप के लिखे अनुसार उसी समय सब प्रबन्ध किया गया अभी तक कुछ पता नहीं लगा।

सब सभासदों की ओर से बहुत 2 नमस्ते पहुंचे और सरदार भगतसिंह और पं. भागराम की तरफ से बहुत 2 नमस्ते पहुंचे–

आप का दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

(12)

ओं

श्रीयुत स्वामी जी महाराज नमस्ते

आगे निवेदन यह है कि 1 सेर दूध में 2 तोले शहद डार कर और दूध को केवल अग्नि ही पर गरम करकें रुचि अनुसार पान करें पूर्व जो लोहै से गरम करने को लिखा था सो न करना सो अब केवल अग्नि पर ही गरम करना और अधिक शहद डालने से दस्त अधिक हो जाने का भय है–सो अधिक शहद न गेरना पीर जी कहते है कि आप यहां आ जायं तो शीघ्र ही आराम हो जायगा इसमें कुछ संदेह नहीं, आगे पं० छगनलाल जी वा सब सभासद और पीरजी साहब आदि की यही सम्मति है कि आप अवश्यमेव यहां पधारें और आबू न जायं क्योंकि आज कल आबू गिर की वायू और जल

विशेष ठंडे हैं जिस से अर्द्धग और सूजन होने का भय है–विशेष क्या लिखू उत्तर शीघ्र दीजिये–

मिती कार्तिक वदी 6 सम्वत् 1940

मुन्नालाल
पूर्व मंत्री

(13)

श्रीयुत पण्डित शुकदेव प्रसादजी अजमेर के पत्र

ओ३म्

Ajmere college; 17th, april 1883
अजमेर कालिज 17 एप्रिल 1883 ई०

श्रीमत् परम दयाकर आर्य्यकुल धर्म्म प्रचारक अविद्यान्धकार निवारक सत्यज्ञान प्रकाशक श्री स्वामी जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेवप्रसादकृत नमस्ते, प्रणाम, अभ्युत्थानादि शिष्टाचार के पश्चात् विदित हो–आपके आज्ञानुसार पंडित दामोदर से "जो मूलचन्द सोनी के मंदिर में पढ़ाता है" पूछा गया और आपके कृपापत्र का आशय सुनाया गया तो उसने उत्तर दिया कि स्वामी जी के साथ परि भ्रमण में रहने योग्य तो मेरी शक्ति नहीं है परन्तु प्रयाग में रह कर वैदिक यंत्रालय का कार्य्य तो मैं यथेष्ठ कर सकता हूं वेतन के लिये उन्होंने यह प्रकाश किया कि बारह रुपये मासिक तो सेठ मूलचंद जी के यहां से और आठ रुपये मासिक अन्य दो तीन विद्यार्थी देते हैं यों मुझे बीस रु० मासिक पड़ जाता है सो यदि यही मासिक वहां पर एकत्र मिल जावै तो मैं प्रसन्नता पूर्वक जा सकता हूं सो इस विषय में जैसी आज्ञा फिर होगी उसके अनुसार किया जायगा–अथवा आपकी इच्छा किसी अन्य कार्य्य योग्य पुरुष के नियत करने की हो और यह भी प्रकाश हो जावै कि इतने तक मासिक दिया जा सकता है तो हम लोग यहां पर ऐसे पुरुष की तलाश में रहें जैसी इच्छा हो उससे सूचना दीजावै–यहां पर प्रति रविवार को संध्या के पांच बजे से 7 बजे तक आर्य्यजन एकत्र होकर समाज में वेदभाष्य तथा अन्य स्वामिकृत सत्य ग्रंथों का पठन-पाठन और कितने एक सर्वोपकारी व्याख्यान भी दिये जाते हैं मैं भी जाकर किसी न किसी विषय पर वक्तृता करता हूं पिछले रविवार को मैंने ब्रह्मचर्य्य के लाभ शारीरकबल पराक्रम बढ़ाने और साथ ही विद्या बुद्धि की वृद्धि करने के गुण अनेक सुयोग्य उदाहरणों के सहित वर्णन किये थे तथा पीछे से बाबू मथुराप्रसाद ने

बाल विवाह के निषेध पर कुछ कहा आठ बजे समाज विसर्जन हुई थी—आज चैत्र सुदी 11 मंगलवार को आठ बजे प्रातःकाल के स्वामी ईश्वरानन्द जी आपके वहाँ से आये यद्यपि उन्होंने टिकट रूपाहेली से 1=) देकर सीधा जयपुर का लिया था परन्तु लोकल ट्रन होने के कारण उनको यहां एक बजे तक ठहरना पड़ा—सम्पूर्ण कालेज का स्थान और यहां के पठनपाठन की विधि तथा पुस्तकालय भी दिखलाया और पंडित सालिग्राम जी से उनकी भेट वार्त्तालाप संस्कृत में हुई फिर इस अनुचर के ही स्थान पर कुछ भोजन करके स्टेशन को गये थे मैं आप जाकर उनको गाड़ी में बैठा कर आया था वे दो एक दिन जयपुर ठहरेंगे उनकी भी नमस्ते स्वीकृत हो—यह बात आपको शाहपुरे में भले प्रकार सिद्ध हो जायेगी कि मैंने वहां पर पौने पांच वर्ष पर्य्यन्त कैसे परिश्रम से मन लगा कर पाठशाला में तथा राजाधिराज की शिक्षा में काम किया था यदि वैसी कारगुजारी अंगरेजी सर्कार में सिद्ध होती तो निश्चय मेरी बृद्धि होती परन्तु गुणग्राहकता न हुई और एक कश्मीरी दीवान से विरोध हो गया उसने मुझे वहां से उठा देने के लिये एजेंट से रिपोर्ट द्वारा परामर्श किया उसने तो केवल यही कहा था कि अब राजा साहब को इखतियार सरकार से मिल गया है वै जैसा उचित समझें करें जिसको चाहैं रक्खें जिसको चाहैं दूर करदें जिस प्रकार से राज्य शासन सुधरे अपना उचित प्रबंध करें हमको इसमें कुछ दख़ल नहीं—सो मैं जानता हूं कि एजेंट साहब मेरे वहां पर रह कर विद्या व शिक्षा संबंधी काम करने से कदापि नाराज न होंगे हां यह बात द्वितीय है कि यथा किराती करिकुंभजातां मुक्तां परित्यज्यविभर्तिगुंजाम्) किसी गृह वा देश के स्वामी को अधिकार है कि वृद्धवय वाले दीर्घ सोची विद्वानों के बदले छोटी वय के अपरीक्षक अविद्वान् शारीरिक विलासों के ही ध्यान स्मरण रखने वाले लड़कों को अपने राजप्रबंध में रख सक्ता है परन्तु परिणाम की भी अवधि होती है। हर एक प्रकार के काम के परिणाम से पीछे आप ही लाभ वा अलाभ प्राप्त हो रहता है मैंने वहां पर शिक्षा विभाग में जैसा काम दिया था श्रीयुत् शाहेपुराधीश नाहर नरेन्द्र को भली भांति विदित है किमधिकम्-शुभम् चैत्र सुदी 11 सं० 1940

ह० पं० शुक्रदेव प्र०[1]

राव साहब मसूदा किसी कार्य्य हेतु 15 दिवस से यहां ठहरे हैं—सब लोगों

1. अजमेर में महर्षि के व्याख्यान सुनकर यह व्यक्ति ईसाई बनने से बच गया। वैदिक धर्म पर दृढ़ हो गया। 'जिज्ञासु'

की ओर से प्रणाम वा नमस्ते स्वीकृत"और दो एक प्रति उस स्वीकृत की जो उदयपुर से आया है यहां भी दीजिये इति।

(14)

ओ३म्

वैशाख शुक्ला1

श्रीमत् स्वामीजी महाराज नमस्ते 1 दामोदर शास्त्री 20) रुपये मासिक पर आपके पास आने को प्रसन्न हैं आप आज्ञा पत्र भेज दीजिये हाजिर हो जायंगे–

सालिग्राम जी शा० ने कहा कि काशी में तैलंगी विश्वनाथ दंडिभट्ट आपकी इच्छानुकूल हैं आज्ञा हो तो बुला लिये जावैं। मैथिलों में भी दो चार होंगे–कहार मातवर, दृढ़ नसीरावाद से भेजा है यदि अब तक वहां न पहुंचा हो तो लिखें कि मैं फिर रवाने करूं-गौपकार विषय में अब तक क्या हुआ तथा आर्य्य विश्वविद्यालय के प्रचार में शेष पीछे।

आपका अनुचर
शुक्रदेव

(15)

(ओ३म्)

Ajmere 15th Jun 1883

ज्येष्ठ शुक्ला 10 शुक्र ता० 15 जून 1883 ई०

वेदादि सत्य शास्त्र प्रकाशक आर्य्य धर्म्म दिवाकर श्रीमत् पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद पंकजों में सविनय नमस्ते अनेक शिष्टाचार सहित स्वीकृत हों–मैंने एक पोस्टाकर्ड पहले दिया था उन्हीं दिनों कॉलेज की छुट्टी हो जाने के कारण एक आवश्यक काम के लिये मेरे घर चला गया था इसी कारण आप के अजमेर शुभागमन के समय दर्शन लाभ प्राप्त न कर सका–आज पं० कमलनयन के पत्र में आपने मुझे तथा अन्य दो एक सज्जनों को स्मरण फरमाया इसलिये निवेदन है कि मैं अब अजमेर में आग या हूं और पंडित सालिग्राम[1] जी अपने घर फर्रुखाबद में हैं 24 तारीख़ इसी मास को आवेंगे उन्होंने पहले विश्वनाथ दण्डिभट्ट तैलंगी पंडित को काशी में आप की पहले इच्छा के योग्य बताया था जिसका हाल मैंने पूर्व पत्र में लिखा था–दामोदर पं० मूलचंद सोनी के है वह 20) रु० सूखे पर आना चाहता था पर अभी आप का आज्ञा पत्र नहीं आया मैं उस समय होता

1. पं० सालिग्राम की ऋषि जीवन में फ़र्रुखाबाद से ही चर्चा आरम्भ होती है। 'जिज्ञासु'

तो अजमेर में आपके पास हाज़िर कर देता पर अब जैसी आज्ञा यहां का जल पवन मेरी आरोग्यता में हानि करता है पहले भी आप की प्रार्थना की थी अन्यत्र का उपाय हो तो ठीक है किमधिकम्

शुक्रदेव प्र०

(16)

[ओ३म्]

अजमेर आषाढ़ कृश्ना 4 रविवार
ता० 24 जून 1883 ई०

श्रीमत् सत्यधर्म्म प्रचारक अविद्यान्धकार निवारक श्रीमत् पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद कमलों में आज्ञाकारी अनुचर शुकदेवप्रसाद कृत अष्टांग प्रणाम वा नमस्ते स्वीकृत हों–आप की आज्ञानुसार पण्डित दामोदर जी शास्त्री आप के पास आते हैं निश्चय है कि ये निज सुयोग्यता से आप को काम से तथा आचरण से सब प्रकार प्रसन्न रक्खेंगे और आपको बहुत कुछ सहायता देवेंगे–इन की वही इच्छा है जो प्रथम आप को निवेदन की गई थी कि ये गृहस्थी हैं इस से सदैव भ्रमण नहीं कर सकते सो दो चार मास रख कर इनको एक ही स्थान पर रख देवें कि ये अपने घर के लोगों को अपने साथ रख सकें और सवारी खर्च रेल तथा गाड़ी का जो उचित हो कृपा पूर्वक इनको बख्शा जावै आप की भी आज्ञा है–सर्व सभासदों की ओर से प्रणाम वा नमस्ते अंगीकृत हों किमधिकम्–

20) रुपये मासिक पर ये प्रसन्न है

पं० शालिग्राम जी भी आ गये हैं जैसी आज्ञा हो सूचित करें–

आपका आज्ञाकारी अनुचर
पं० शुकदेवप्रसाद
नार्मल स्कूल अजमेर कॉलेज

(17)

[ओ३म्]

Ajmere 3rd July 1883
अजमेर ता० 3 जुलाई 1883 मंगल

श्रीमद्विद्वद्वर्य्य परमहंस परिव्राजकाचार्य्य सत्यता प्रकाशक, जगदोपकारक श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते? अभ्युत्थान और अनेक शिष्टाचार पश्चात्

निवेदन स्वीकृत हो निश्चय है कि पं० दामोदर जी आप की सेवा में पहुंचे होंगे और आशा है कि कार्य्य आप की रुचि के अनुकूल करें–यहां पर कॉलेज 25 जून से जारी हो गया–पंडित शालिग्राम जी सह कुटुंब आ गये हैं जो आज्ञा हो सा कहा जावै–वर्षा यहां केवल एक दिन रविवार 1 जून को हुई ह ठंडी पवन चलने लगी है–सुना है कि शाहपुरे में हवन होता है यहां का जल पवन मेरे अनुकूल नहीं आया किसी अवसर की प्रतीक्षा लग रही है–इच्छा है कि वहां पर आप के दर्शन करूं समय पाकर करूंगा और आप की आज्ञा भी चाहिये आप के कुशल मंगल तथा अन्य आवश्यक वृत्तानत सुनना चाहता किमधिकम्

आपका
शुकदेव प्रसाद

(18)

[ओ३म्]

Ajmere college
अजमेर 24 जुलाई 1883

सत्यधर्म्म प्रचारक श्रीमत् स्वामी जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेवप्रसाद कृत नमस्ते सविनय स्वीकृत हों–पं० शालिग्राम जी इच्छित पंडित के लिये काशी को लिखा है उस्का उत्तर आने पर आप को सूचना दी जायगी–कुशल संयुत उधर के समाचार चाहता हूं–मेरे अन्तःकरण की बांछा आप को विदित है उस्के पूर्ण होने के लिये कुछ उपाय हो तो ठीक है उस्के कारण शाहपुरा के मुकाम अर्ज़ कर चुका हूं किमधिकम्–

आपका पं०
शुकदेव प्र०

(19)

परम कृपालु श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते वा अष्टांग प्रणाम के पश्चात् यह निवदेन है कि यह पत्र जो काशी से पं० शिवकुमार ने पं० शालिग्राम जी के पत्र के उत्तर में भेजा है ज्यों का त्यों आपके आलोकनार्थ भेजा है इस्का आशय देखकर जैसी इच्छा हो प्रकाशित जी जावै–पं० शालिग्राम जी की नमस्ते स्वीकृत हो अन्य सर्व सभासदों की ओर से नमस्ते वा प्रणाम पहुंचै और सब कुशल है किमधिकम्–

(मेरे लिये भी कुछ उपाय कहीं पर कीजिये)

आपका अनुचर
शुकदेव प्रसाद
नार्मल स्कूल अजमेर कॉलेज
अजमेर श्रावण शुक्ला 9 ता 11 अगस्त 1883 ई०

श्रीरामचन्द्रो विजयताम्

स्वस्ति श्री मदशेषशास्त्रावगाहन निपुण प्रज्ञाविलासालोकनन्दितान्तःकरणेषु श्रीशालग्रामशर्म्म पण्डितवरेषु शिवकुमार शर्म्मणो नतिकुशलादिबृत्तन्तु सुगवेषणयापिभवत्पत्रस्थप्राथमकल्पिकः प्रस्तुताधिकास्वीकारवान् पण्डितोनालम्भि प्रायोनवीनाः कथञ्चित् सम्भावितनावद्योग्यताकाः पठनादिनिरतास्तत्रगन्तुमेवनकामयन्ते परन्तु पण्डित द्वयेच्छायां किञ्चित्तदुच्यते श्री राजारामशास्त्रिणां प्रथमशिष्यस्तत्कालाध्येतृस्वसतीत्थ्यें भ्यः सर्वेभ्योप्युत्तमः प्रतिष्ठिततमः सम्मतिचत्वारिंशतः पञ्चाशतश्चान्तरालेवयसि वर्त्तमानो वसन्तमिश्रः कश्चिन्मैथिलोऽकारणसर्वसुहृत् पूर्णवैयाकरणोव्युत्पत्तिमतामग्रेसरः साम्प्रतं प्रवासकरणेच्छया काशीमायातः कुटुम्बभारेणेमां जीविकां स्वीकर्त्तु मिच्छति अयंसमग्रपण्डितगुण सम्पन्नतया श्री दयानन्दस्वमिनां नूनं हृदयङ्गमो भविष्यति, एवमेकोनैयायिको गादाधारी जागदीशीप्रभृतिवादग्रन्थानां प्रौढ़वेत्ता नवद्वीपेचिरमधीतवान् अनुमान खण्डवादेऽत्यन्तकुशलोयदुनाथशर्म्मा मैथिलोपि काङ्क्षति प्रस्तुतपदम् अयञ्च दर्शनान्तरं सम्प्रतिसम्यगजानन्नपिबुद्धिमत्तयाल्पकालेनतत्पाटव सम्पादन योग्यतां बिभर्ति परमुभाभ्यामपि मैथिलत्वात् संस्कृतस्य भाषायामनुवादः प्रथम नकाररितव्यः किन्तु द्वित्रिदिनानि वृत्तान्त पत्र दर्शनादिना किञ्चित्त दीयैकवचनादिनियमबोधनेन च भाषाज्ञानसम्पत्युत्तरम् भाषायाः सस्कृतेऽनुवादस्तु वैयौकरणेन सम्यक्करिष्यते द्वितीयेनापि तत्साहाय्येन कथञ्चित् करिष्यत एव सत्यामेतयोरुपादित्सायां धूमशकट भाटकेन सह पत्रं प्रेष्यं तदेमौप्रेपधिष्येते इति शिवम् श्री।

(अनुवाद)

स्वस्ति

अशेष (अनेक) शास्त्रों के अवगाहन में निपुण बुद्धि के विलास (अकुण्ठितप्रसार) से उत्पन्न आलोक (ज्ञान प्रकाश) से आनन्दितान्तःकरण श्रीमत्...शिवकुमार शर्मा का नमस्कार और कुशलप्रश्नादि।

यथा योग्य बांचना (इति शेषः)

'वृत्तन्तु' आगे हाल यह है कि आपके लिये पहिले ढंग का विद्वान् जो उपस्थित अधिकार को स्वीकार करे बहुत ढूंढने पर भी कोई नहीं मिल सका।

प्रायः नवीन लोग जैसे तैसे उतनी योग्यता सम्पादन करने के अनन्तर आगे पढ़ने में दत्त चित्त होने के कारण वहां जाना ही नहीं चाहते परन्तु दो पण्डितों की इच्छा के विषय में कुछ लिखता हूं इनमें से पहिले पं० राजाराम शास्त्री जी के आदिम शिष्य, उस समय के अपने साथियों में सब से उत्तम और प्रतिष्ठित (जिनकी अवस्था अब 40-50 के भीतर होगी) मैथिल वसन्त मिश्र जी काशी में प्रवासार्थ आये हैं-कुटुम्ब पालन के निमित्त यह इस वृत्ति को स्वीकार करना चाहते हैं, यह बड़े मिलनसार और बहुत ही विचारशील वैयाकरण हैं आशा है कि पण्डिताई के सम्पूर्ण गुणों से युक्त होने के कारण इन पर स्वामी दयानन्द जी अवश्य ही सन्तुष्ट रहेंगे-

इसी तरह दूसरे यदुनाथ शर्म्मा मैथिल-जो कि गादाधारी जागदीशी आदि वाद ग्रन्थों के उत्कृष्ट ज्ञाता और अनुमान खण्ड के वाद में अत्यन्त कुशल है जिन्हों ने बहुत दिनों तक नदियां में पढ़ा है वे भी इस पद को चाहते हैं यद्यपि इन्होंने अब तक प्राचीन दर्शन नहीं देखे हैं तथापि थोड़े ही समय में उन्हें अपने आप देखने की योग्यता रखते हैं-

ये दोनों मैथिल है इसलिये प्रारम्भ में ही इनसे भाषानुवाद न कराना दो तीन दिन कोई समाचार पत्र देखने से भाषा के एक वचन द्विवचन आदि का ज्ञान होने पर ये उसे भी कर सकेंगे भाषा से संस्कृत तो वैयाकरण अच्छी बना सकेंगे यदि आप को इनके रखने की इच्छा हो तो रेल का किराया और उत्तर पत्र साथ ही भेजिये तब ये यहां से भेजे जायंगे।

(20)

ओ३म्

अजमेर कॉलेज ता० 19 सितंबर 1883,

सत्य धर्म्मप्रकाशक श्रीमत् पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेव प्रसाद कृत नमस्ते विदित हो भेजा हुवा पत्र पण्डित शिवकुमार के पास भेज दिया परन्तु अभी तक उत्तर नहीं आया-वहां से आने पर आपके पास भेजा जायगा मैंने छापेखाने का काम किया तो नहीं पर कभी-कभी देखा है और दस पांच दिन में देखने से सब काम विदित हो सक्ता है-किसी राज्यस्थान में जहां की आव हवा उत्तम हो वहां कुछ हो जाय

तो ठीक है आगे ईश्वरेच्छा और आपकी सम्मति के अनुकूल रहना सबसे श्रेष्ट होगा–मुंशी जवाहरसिंजी शाहपुरे से ता० 14 सितंबर शुक्रवार को यहां आये शनिवार को पुष्कर देखकर रविवार को आर्य्यसमाज में एक बहुत उत्तम सुललित व्याख्यान देशहितैषिता पर देकर उसी रात्रि को जयपुर चले गये वहां दो दिन ठहर के सीधे लाहौर जायंगे शेष फिर-आश्विन कृष्णा 3 सं० 1940

(आपका अनु०
शुकदेव प्र० अजमेर)

(2)

ओ३म्

संस्कार विद पुराण पुरुषी

अजमेर ताः 23 जौलाई

नमस्ते

महाशय

श्री मत्परमहंस परिब्राजकाचार्य्य परमगुरु विरुद्ध मत खंडन सत्यमत मंडन जगत विख्यात् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज चरण कमलेषु–हाल यह है कि आपका दास जोधपुर से रवानह होकर बांदन वाड़े में आन पहुंचा और अब अजमेर में हं दासकी विनय है कि जो मैंने कुछ विरुद्ध वाक्य कहा हो तो क्षमा फर्मावैं और दास पर मिहर्बानी रखावें और सबसे मेरा नमस्ते कह देना फ़र्माबें-ताः 23 जोलाई 1960

बलदेव
अज़ मुकाम अजमेर शरीफ़

(3)

31 अगस्त सन् 1883 ई०

श्रीयुत स्वामीजी महाराज जोधपुर नमस्ते।

आपका पोष्टकार्ड भाद्रपद कृष्ण 5 का लिखा मिला कृत-कृत्य हुआ। मैंने प्रथम **सारस्वत** पढ़ी थी। पश्चात् लखनऊ में दिन को तो **सत्य प्रकाश पाठशाला** में पढ़ाता था और रात को "अष्टाध्याई" एक आर्य्य पुरुष स्वामी गंगेशजी जो निकट ही रहते थे। पढ़ा करता था। परन्तु अब सत्संग छूटने के कारण उक्त पुस्तकें विस्मरण हो गईं। पर लिखने में मुझे इतना अभ्यास है

कि "शब्द" चाहे संस्कृत के हों या भाषा के किसी पुस्तक में देख के लिखूं, चाहे कोई कंठाग्र लिखवावे। जैसा उच्चारण करे ठक वैसा ही शुद्ध और स्पष्ट लिख सक्ता हूं। "और देवनगारी" में और जो काम हो सो भी उत्तम प्रकार से कर सक्ता हूं, क्योंकि मैं आगरे व इलाहाबद में लेथोग्राफ की कापियां छापेखाने में लिखता रहा हूं और "नार्मलस्कूल" जबलपुर में भी शिक्षा पा चुका हूं इति।। आशा है कि उचित आज्ञा शीघ्र मिलेगी।।

आपका आज्ञाकारी
बालकमराम बाजपेई, आ० स० अजमेर।

श्रीयुत छगनलाल जी शर्म्मा का पत्र

(1)

।। ओ३म् ।।

सकल गुणालंकृत विद्वज्जन वरिष्ठ परिव्राज का चार्य्य श्री मत्स्वामि दयानन्द सरस्वती चरण पीठेषु परम सेवक ब्राह्मण छगन लाल शर्म्मण आनतित तयो विलसंतुतराम्किंच अग्नि होतृ गृहे पारस्कर गृह सूत्रस्य मूल पुस्तकमेकं समग्र मन्यच्च सभाष्यमर्द्धं वर्त्तते ते मया गृहीत्वा प्रेषिते यद्येभिः पुस्तकैः कार्य सिद्धिर्नभवेत् तदोत्तरं प्रेषणीयं अहमन्यत्र समग्रभाष्यार्थं यतिष्यामि अलमति विस्तरेण संवत् 1940 मिति श्रावण शुक्ल पूर्णिमा 15

हस्ताक्षर
ब्राह्मण छगनलाल

महाशय विश्वनाथ जी जयपुर का पत्र

(1)

स्थान जैपुवतीख
6 मार्च सन् 1883 ई

श्री गुरु स्वामी दयानंद सरस्वतीजी को नमस्कार

दर्वाव आपनी चिट्ठी व तारीख 4 माह हाल की प्रार्थना करता हूं और काशीनाथ राउ का कथन ईश्वर है तू आपके को विदित करता हूं जान कर कि आप महाज्ञानी तप्पस्वी हो जल्द परीक्षा कर लेवोगे और इस सेवक को पत्र उत्तर शीघ्र भेजोगे इस शुभ विचार से आप को यह क्लेश दिया समझ

कर कि उपकार वस्त शरीर है आप की कृपा अनुग्रह करुंणा दृष्टी होगी सत्य विद्या पर कथ काशीनाथ

अंगरेजी View the Almighty being in light Physical,
उर्दू वही हुस्न्, तनो, वदनसे सूरतो, शिकल
संस्कृत परमजोति, अत्मरूप, धार्ण विकल्प,
दक्षणीं मंणुणत्याला, अपितो प्रासातो सकल
अंगरेजी Moral intellectical Scientifical
संकृत देहजान, भास्य झूंठ दिखावे नकल
अंगरेजी Pure and Spritual Her is our Light

सेवक **विश्वनाथ**
पता आर्य्य धर्म्म सभा
पंडित सदानंद वैद्य
जैपुर

श्रीयुत पण्डित धन्नालाल शर्म्मा भांवता (अजमेर) का पत्र

(1)

।। ओ३म्तत्सत् ।।

।।श्रीमद्विख्यात जगद्गुरुष सकलगुणगणलंकृत वेद शास्त्र पारङ्गतेषु श्री पंडितवर पंडित श्री 108 श्री दयानन्द सरस्वती स्वामिषु अत्रत्य कृता आज्ञानुवर्ती शिष्य धन्नालालस्य कोटिशः साष्टाङ्ग प्रणामाः समुल्ल संतुतराम्। "अत्रशंतत्रास्तु" अपरञ्च तीन पत्र पहिले आपके चरण कमलों में भेजे पर एक का भी प्रत्युत्तर नहीं आया मालुम नहीं क्या जाने? मैं पहिले कृष्ण गढ महाराज स्कूल में हैड पंडिताई पर मुकर्रर था पर दो कारणों से अर्थात् एक तो विरोधता, से दूसरे आगे के लिये उन्नति न देखकर लाचार यह नौकरी छोड़नी पड़ी–ईश्वर ने अच्छा किया कि अब आप के दर्शन व मिलना होगा, आपकी अनुग्रह से व आप की आज्ञा से सब कुछ हो सकेगा और मसूदै व अजमेर के सब आर्य प्रसन्नता पूर्वक हैं यहां पहिले रामलाल पंडित और चतुर्भुज शास्त्री ने कुछ पोपलीला फैलाई पर सिवाय कुछ बंगाली व अनार्य्यों के किसके हृदय में जम सकती है 5 दिन के वाद यहां आपके चरण कमलों में हाजिर होउंगा तब कृष्णगढ़ व यहां का सब हाल वर्णन करूंगा अब

अधिक क्या अर्ज करूं।

शुभमिति असाढ कृश्ना 30 भौम सम्वत् 1940 का मेरे आधार भूत आप ही हैं?

आपका आज्ञानुवर्त्ती शिष्यानुशिष्य
धन्नालाल भांवतावासी
जिलअ अजमेर

(11)

श्रीयुत पण्डित भवानीदत्त जी नागोद का पत्र

ऊं०

सद्धे श्री बराजमान स्कल गुनन्धान अनेक उपमा योग स्वामी दयानंद स्वेस्तीजी इते लखते नागोद से पण्डित भ्वानादत का नमसते बंचना ज्ब आप अजमेर में थे सो आपके वास्ते कमलनेन के पास चठी भेजी थी सो आपने कहा था के नागोद के राजा जब बुलावेंग हम आवेंग प्रनतु राजा उचहरे कइ साल से रहते है और मेरे उपदेस से यहां के आदमी आपके द्रसन चाहते है और राजा के ख़ज़ानची तुसीदास बाजपइ बहोत इज़तदार अपका द्रसन चाहते है सो जब बमबइ से वापस आवेगे तो आप हमको जरूर ही द्रसन देना और आपके आने से यहाँ समाज भी हो जावेगा और राजा सुनक उचहरा से जरूर द्रसन करगें इस्वास्ते प्रयाग के रास्ते में सत्तना इसटेसन है जस्वकत आप लखें जतने आदयं के वास्ते स्वारी द्रकार हो भेज दे और राजा भी बेदांती है आप का बड़स स्तकार होगा क्यो के आप प्रयाग जावे हीग रस्ते मे सतना रेल का इसटेस्न है दो चा रोज का आवन जवाब जल्दी भेजयो और जरूर आयो जवाब पण्डित भ्वानीदतन्का से न्वीस-नागोद रयास्त

महाशय विहारीलालजी अमझरा का पत्र

ऊं० श्री

नमस्ते अती दुखीत हुं के मेरे से जो सेवा की आज्ञा हुई सो होना कठीन हे मेरी बदली अमझरे के असपताल में आज नौ महीने से हो गई आज आप का पत्र सांमलराम जी कवी के बारे में आया से मेने पंडीत भेरोंलाल जो इन्दोर के असपताल मे हैं उन के पास भेज दीया हे ओर आशा हे की भेरोंलाल बेरोबर कवी जी की खाबर रखेंगे।

दानुदास विहारीलाल

श्रीयुत महाशय गोपीनाथ जी जयपुर का पत्र

ॐ

प्रतिष्ठाऽचार्य्ये श्री 108 श्रीपर्मगुरु श्री सुवामि दयानन्द सरस्वति जी महाराज नमो नमस्तेः स्वाई जैपुर से शिष्य बिप्र गोपीनाथ कि नमस्ते बंचणा यहा सर्व प्रकार अनंद है आपके आनंद सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से नेक चाहतै अब अर्ज यह है कि भूमिका तो मगा लि है ओर संद्धिविषय व्याकर्ण छपा या नहीं सो कृपा दृष्टि कर्के लिखना सो मगा लेवेंगै ओर पंडित कालुराम जी महाराज के पास से पत्र आया लिखा था के गौरक्षा का बंदोबस्त राव राजा श्किार के ईलाके 555 ग्राम में चंदा सालयाना हो गया है रामगढ़ लिछम्णगढ़ फतेपुर इनमें रुपया कुच्छा हो गया है सो आप को ज्ञात्वा होवे ओर ये भि लिखा था के गौरक्षा निमितक् जैपुर भि आवेगें यहां के सर्व सभासद् वा समाजस्थुं कि नमसते बेचना कृपा कर्के पत्र दिजयेगा।

द० गोपीनाथ

श्रीयुत कोठारी चांदमलजी मसूदा का पत्र

।। ओं ।।

।।4।। स्वस्ति श्री उदयनगर शकल शुभओपमां विराजमान लाइक शकल गुणनिधान जगतोपकारक वेदाध्यक्ष श्रीयुत स्वामीजी महाराज श्री श्री 108 श्री श्री दयानंद सरस्वतीजी एतन मसूदा सू परमसेवग कोठारी चांदमल की पावांधोक नमस्ते मालम होवे यहां आपकी दया से परम आनंद है परमात्मा आपको सदा आनंद में रखे अपरंच इतने दिन पत्र नहीं देने का मेरा यह कारण है कि जब आप बंबई नग्र मध्ये विरजामन थे तब तो में ठीक स्थान का पता नहीं जान्ता था और अब जब से आप को उदयनगर मध्ये प्रवेश हुए सुना है तब से यह दास बीमार है सो आपकी अनुग्रह से अब चंगा होकर पत्र आपके चरणार्विंदों में भेज निवेदिन करता हूं कि आप कसूर क्षमा किजिये और आप ने जो उदयनगर के देशाधिपति से गौरक्षा का प्रारंभ कराना शुरू किया हे इस बात को सुन कर इस दास को बडा ही आनंद हुआ। यह दास हजार हा प्रार्थना उस परमात्मा व उन माता पिता को करता है कि जिनहानों इस नाशवान संसार में आप जैसे महात्मा पुरषों को प्रकट किया नहीं तो क्या

जाने इस आर्य्यावर्त के लोगों की क्या दशा होती और अब भी जो लोग आपके उपदेश से बिमुख है वे फिर अछी गति को जन्मोजन्म कभी प्राप्त न कर सकेंगे। श्री परमात्मा आपको सदा आरोग्य रखें और अभी में शाहपुरे गया था वहां आपके पधारने की चर्चा हो रही है और एक मंथजी जो रामद्वारे के रामसनेही जो अभी वूंदी चत्रमासा करने को चले गए हैं वह भी बुलवाये गए हैं और एक पंडित जो वहां पंडरीजी के नाम से प्रसिद्ध है उसको राजाधिराज ने फरमाया है कि स्वामी जी यहां पधारेंगे और तुम को उनसे शास्त्रार्थ करना होगा सो वह पंडित भी मूर्ति पुजन मंडन विसय में खाल जवाव तैयार कर रहा है और मंथजी हाल आए नहीं मुझ को यह बड़ा आश्चर्य है कि काशी नगर के पंडित भी शास्त्रार्थ न कर सके तो भला इसे बेचारे का क्या मकदूर है। भला सांच के आगे झूठ कब तक ठहरेगा में आपकी दया से प्रसन्न हूं जब आपका पधारना शाहेपुरे होवेगा तब दास भी चरणारविदों में हाजिर होवेगा। आपने मेरे वास्ते यहां उपकार तो बहुत ही किया। लेकिन मेरी प्रालब्ध ने मदद नहीं दी इसलिय नहीं हुआ। अब भी मेरे पर उपकार आप उधर किया चाहवेंगे तो जरूर हो सकेगा। और यह दास सदा प्रातःकाल स्नान संध्या व गाइत्र्यादि मंत्र व आप जैसे महात्मा पुरुषों का स्मरण करता रहता है। इस दास पर दया वणी रहै–

समत 1939 की मती पोष बुद 1 ता० 24 दिसंबर सन् 1882 ई०

महकमे कोतवाली जोधपुर की ओर से पत्र।

"श्री परमेश्वर सहाय छैं"

केफियत अज तरफ पंडित दयानंद सरसुती व म्हेकमें कोटवाली सेर जोधपुर भादवा सुद 12 तथा 13 सं० 1940 रा तथा जो आदमी मारा कनु चोरी करने निट गयो जीणरे वासते इसतीयार इनामी पचास रुपया राजारी होना चाहिये जो वो भरतपुर रे रेवण वालो होई लावा रोंगां ववीरांनारो हो सो उणरा मकान पर मारफत अजंटी वंदोवस्त होणा चाहिये जिणसुं महकमें मासु कीमत कर लिख दीनी जावे इसतियार जारी कर दिवा जावे है जा उण में आ विगत लिखदी वी जावे के जो कोई माल समेत पकड़ाय देवे तो रुपया पचास जो विना माल पकडाय तो रुपया पचीस दिया जावेसी ने अजंटी में लिखावट होना चाहिये फकत

श्रीयुत पं० हीरालाल अथर्वणी तथा पं० माणिकलाल उदयपुर का पत्र

श्री

ॐ श्रीब्रह्मवेदाय नमः

स्वस्ती श्री योधपुर माहासुभस्थाने सर्वोपमा वीराजमान अनेक उपमा योग्य श्रीमतपरमहंस परीव्राजकाचार्य तीर्थ स्वरूपी श्री परम गुरु

स्वामी जी श्री 1008 श्री दयानंद सरस्वती जी महाराज योग्य श्री उदयपुर थी ली आपना दरशन बी से अभीलाशी आज्ञां कीत अहोरात्र चीतवन करनार सेवक अथरवाणी हीरालाल तथा कनीष्ट भ्रातु मांणकलाल ना साष्टांग डंडवत नमस्ते पवीत्र सेवावी से अगीकार करसो वीशेश वीनती अेछे आपनी आज्ञानुसार श्री दरबार में प्रतीदीन दो वषत अग्नीहोत्र होता हे ते वीशे आप जेरीतथी बंदोबस्त करोछे तेन परमांणे थयां जाय छे कांइ पण कसर पडती न थी वली श्री जी अत्यंत प्रसन्न मे हे ओरहुं सेवकनी अंतस्करण थी आला फकत आपना चरण कमलनी पवीत्र शेवा वीशे अहोरात्र शुद्धांतस्करण थी चीतबणीर पुछे तेवी से कोइ आश्चर्य नहीं समजवु वीशेश वीनंती अेछे जे आपनी आज्ञानुसार श्री दरबार ये अनुष्टानथ युह तुते वीशे पूर्णाहुतीनी वषत आप समक्ष श्री हजुरे हुकम फरमावो हतो के वेदाभ्यास करवा साइ अथरवणीना भाई ने मास 1 ना रुपीया 3) हरबार थी भलां जासे ओर यजुरवेदीना लडका ने मास 1 नो रुपीयो (1) रोजगार नो मल से परंतु यजुरवेदी ने तो काइ गरज जेवुजणातु न थी ओर मारी तो अभीलाशा फगत आपनी आज्ञानुसार छेने छोकराने नर्मदा कीनारे गाम कन्यांली अभ्यास साइ मुकवानी मरजी छे ते वीशे आपना सेवके पुरोहीतनु उदेलाल जी ने कयु के स्वामी जी महाराज अत्रेथी जे दीवस कुंच मुकाम पधारतीव जे आपने हुकम फरमावो हतो के अथरवणीना भाई साइ दरबार थी अर करी रोजगार साबत कराव जो ते वीशे आप अरज करो हवे मारेपण गुजरात तरफ जवानु छे मारो कुटंब सरवेलुण वाडे छे मारेलेवा साइ जवुपर से माटे मारा भाई ने कन्यांली मुकी ने लुणा वाडेज इस त्यारे उदेलालनु ये कयु के स्वामी जी उपर पत्र लाओछे ते थी हुकम आवा थी अरज करी सुवली कोइ वाखत अेमपणके छे के अनुकुल देषी ने अरज करांगा परंतु कांइ अेक षणवतनुडे कांणु न थी अरज पण करता नथी तेम षुलाशा जबापयण देता न थी ने अेबात्तनी

मसरामसरी करे छे माटे माटे ताबेदारनी अरज अेछे जेहु दीनदयाल आप पत्र दवारे उदेलाल जी तरफ वा पंड़ा मोहनलाल जी तरफ हुंकम फरमाव सो त्यारे अरजथ से तेवी ना कांई था यते बुंन थी जणा तुमारे मरजी मुजब मुनासब हुकम फरमाव सो तेवी आशा दे मारे तो फगत आनो भइ सो छे वली आ संसार वीशे उत्तम पदारथ आपने जांणु छु माटे गरीब ऊपर उपकार जांणी ताकीद थी दयाकारी ने पत्र वांचतां प्रती उतर लावसों अेवी आशा छे साथी ने मारा कुटंब थी वीयोग थया ने वरस 1।। नो आसरा थे योछे माटे अत्रेहुं गणो दुषी छु माटे आपना पासेर जामा गुछु आपनो गुण कोई दीवस पणमुलवानो न थी मारे हे दीनदयाल परवरस करी हुकम फरमाव सो अेज वीनंती ताबेदार लायक कांम फरमाव सो आपना सरीरनो यत्न रषावसी 1940 आसो वदी 12 गुरे।

अहो रात्र श्री वेद पुरुश आगल प्रार्थना करुछु के हे इधर स्वामीजी माहाराजना संपुरण मनोर्थ परी पुराण कसोली सेवक हीरालाल ना नमस्ते सेवा वीसे अंगीकृत करसो।

श्रीयुत मरमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में श्रीयुत लक्ष्मण गोपाल जी देशमुख असिस्टेंट कलक्टर खानदेश के पत्र

(1)

श्री

पुणे तारीख 14 जून 1883

श्रीमत् स्वामि दयानन्द सरस्वती जी

से लक्ष्मण गोपाल देशमूख के अति नम्रता पूर्वक नमस्कार विदित हो–जोधपुर में निश्चय हुआ था कि पाली में पहुंचे बाद कुशल समाचार लिख भेजना सो तो हम कर सके नहीं कस्मात् कि जो सवार और गाडीवान् हमारे सह आये थे वे पाली कि कचेरी में गये और हम उसी रात कु उंट पर सवार होके खार ची कु गये–इसलिये मुलाकात न होने से समाचार लिखा गया नहीं, तारीख 7 के रोज हम अमदाबाद कु पहुंचे ओर उसी दिन वहां से निकल के बड़ोदे कु आये फिर तारीख 8 कु निकले नसारी में आये और तारीख 12 कु वहां से चले सो मुम्बई कु आये और तारीख 13 सायंकाल पुना में

पहुंचे मुम्बई में हमने पुरोहित उदयलाल जी के घड़ी के वास्ते हमारे बंधु से विनति की और 30 रुपये दिये 28 रुपये तक घड़ी, आप की मीनावाली घडी है वैसी भेजने का कहा है सो घड़ी तारीख 13 कु पुरोहित जी के पास रवाना हुई होगी–आप उन महाशय से खबर मंगवाके हम कु लिखेंगे तो बड़ी मेहेरवानी होगी रा० सेवकलाल से रुपये 28 लेने का हमारे भाई कु विदित किया है।

हमारे पिता जी से सब हकीकत और आपके आशीर्वचन कहे बहुत आनन्द पाये आपके परिश्रम कु बहुत धन्यवाद देते हैं। उस मुलुक मे सेहेल करने के वास्ते आने के विषय में आप बोले थे सो विदित किया वह भी चाहते हैं कि जोधपुर के तरफ का देश देख लेना इत्यलम्।

सब मित्रवर्ग से हमारे विनय पूर्वक नमस्कार हैं

लक्ष्मण गोपाल देशमुख
असिस्टंट कलेक्टर

खानदेश

(2)

जिल्ला खानदेश तारीख 13 जुलाई 1883
मिती आषाढ शुद्ध 1805[1]

आप से पहेले एक पत्र भेजा था उसका उत्तर नहीं आया इसलिये चिन्ता युक्त हैं। सो आप कृपा पत्र भेज के दूर कीजिए पुरोहित उदयलाल जी तो अब तक घड़ी प्राप्त हो चूके होंगे सो भी आप तपास करवाना और आप के तर्फ का विशेष समाचार हमकुं लिख के सदा आनन्दित करना ये विनती हैं।

लक्ष्मण गोपाल देशमुख
असिस्टंट कलक्टर

(3)

श्रावण वद्य 13-1805[2]

पत्रं प्राप्तम्। समाचारा ज्ञाताः। आनन्दोऽभूत्। अत्र वर्षाऽतीव वृर्तते।

1, 2. नोट यह 1805 शकाब्द है।

इत उत्तरं संस्कृत पत्र प्रेषणकृपयाऽनुगृण्हातु स्वामिन्निति भवद्भ्यो विज्ञापन-मस्तीत्यलम्।

भवदीयो लक्ष्मण गोपाल देशमुखाख्यः
अ.क. खानदेश

(4)

श्री

तारीख 7 आगष्ट 1883
श्रावण 4 शुद्ध 1805[1]

श्री स्वामि दयानन्द सरस्वती जी से बहुत विनय पूर्वक लिखा जाता है कि आप के 2 पत्र आये समाचार पाये घडी पाहोची सो ठीक हुआ–आज हमारे बंधु कु लिख चुके है वह भी पूछते थे कि घडी का वर्तमान क्या है। आप सेवकलाल ने घड़ी भेजे का वर्तमान लिखे सो क्या उनो की भी घडी गई और पाहोंची।

फिर आप घडी की किमत के वास्ते लिखते हैं सो क्या आप हम कु कृतघ्न ठैराने चाहते हैं–कभी हम भी आप से लिखे कि हम आप के सन्निध जितने रोज ठैरे उतने रोज का भोजन आदि का और सवारी के खरच का भी दाम लेके सरकार मे जमा करवाइये तो ये क्या अच्छी बात होगी घड़ी की किमत कुछ बडी नहीं है मित्रता के व्यवहार में छोटी बात का अलग हिसाब रखे वह हमारी नजर से ठीक नहीं और घड़ी भी तो आप पाये नहीं पुरोहित जी पाये आप केवल आप के वचन के लिये हमकु आज्ञा किये और आप रुपया भरें तो वह तो दंड जैसा आपकु हो गया सो हम नहीं करने कु चाहते हां कभी सेवकलाल ने घडी भेजी नहीं होगी और उनके पास रुपये पड़े होंगे तो उनसे आप आज्ञा कीजिये।

हमारे तीर्थ रूप का आना तो हमारे लिखे से न होगा आप कभी लिखे जब तो वह आवे तो आवे।

हम इच्छा करते हैं कि आप के पत्र हम कु सब संस्कृत में आवे सो इच्छा आप पूर्ण कीजिये इस से हम कु भी संस्कृत पत्र व्यवहार का मार्ग समजा जायेगा–इति विनतिः।

1. नोट यह 1805 शकाब्द है।

आप का श्रावण वद्य 10 का पत्र है सो आषाढ़ वद्य 10 होना चाहिये।

लक्ष्मण गोपाल देशमुख
असिस्टंट कलेक्टर, खानदेश

श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की सेवा में श्रीयुत महाशय सेवकलाल कृष्णदासजी मंत्री आर्यसमाज बम्बई के पत्र

(1)

आर्यसमाज
मुंबई आश्विन शुक्लपक्ष भौमवार संवत् 1936
ता० 12 अक्टोबर 1890[1]

प्रिय आप्त

नमस्ते। आपका कृपापत्र मेरठ से लिखा पहुंचा पढ़के बड़ा आनंद हुआ और कितनेक सभासदों को भी पढ़ाया इन्हों को भी बड़ा आनन्द हुआ और आप के वचनामृत सुनने की बड़ी अभिलाषा हुई। बहोत दिनों से हम आपके संसर्ग की इच्छा रक्खते हैं परंतु हमको मुंशी समर्थदान जी के द्वारा विदित हुआ कि स्वामीजी अभी मुंबई आने को नहीं चाहते जिससे हम लोगों ने निश्चिय किया कि स्वामीजी वाह भी देशोन्नति के कार्य में विशेष प्रवृत्त हो रहे होगे जिससे विशेष आग्रह करके बुलाने से और भी हानी होगी जई से अमदाबाद से बुलाने से हुई जिससे हमने कुच्छ दिन आपकी इच्छा की राह देख रहे थे क्योंकि हमारी अभिलाषा तो आप ने मुन्शी जी के द्वारा पढ़ी होगी और आलकट साहेब को भी हमने कहा था। मुंबई के हाल आप अच्छि तहरा जानते हो कि—आपका आने का निश्चिय ही हो तो आप के उतरने के लिये योग्य स्थान और व्याख्यानादि होने के लिये घटीत द्रव्य भी आगे से संचकर रक्खना चाहिये और आप का पधारना सुन के सभासदों में उत्साह भी बढ़े जिससे चाहिये इतना द्रव्य भी संच हो सके और समाज की उन्नति भी होवे जिससे फिर आप दो चार वर्ष न पधार सको आवश्यकता नहीं। यह निश्चय

1. मुद्रणदोष से सन् 1879 की बजाय 1890 छपा है सो अशुद्ध है। 'जिज्ञासु'

है जब तक आप फिर न पधारोंगे तब तक समाज विशेषोन्नति को प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि कार्य करने वाले बहोत कम है अपना तन मन धन लगाके करें, वाक्यविलास करने वाले बहोत हैं परंतु इस से उन्नति नहीं मात्र पोपों के बहकाने से विरोध बढ़ता है तो भी आनन्द की बात है कि आर्य सिद्धांत से कोई छूटता नहीं क्योंकि आप के सत्य व्याख्यान और पुस्तक सुन पढ़ के जो निश्चय हुआ है पोपों की क्या सामर्थ कि स्वार्थि उपदेश करके भ्रष्ट कर सके परन्तु टके की बात में हट जाते हैं जिस से विशेष उत्साह की अपेक्षा है आप कृपा करके कब पधारोंगे लिख भेजना जिस से समय में हम प्रबन्ध कर ले क्योंकि अभी हमारी चित्तवृती आप के चरणों में लग रही है सो हम को कब आप के दरशन हो। केशवलाल के हिसाब के कागज मीले परन्तु मुंशी सा० बक्तावरसिंह जी की संमती लेने के लिये वनारस को इन्हका हिसाब भेजा है सो पुनः अभी तक नहीं मीला आने से सब दिखाला हो जायगा। हाँनरएबल राव बाहदुर गोपालराव हीरदेशमुख पुने को पधारे जब ही आप के दोनों पत्र ले गये हें जिन ने राव बाहदुर महादेव गोविंद रानेडे को भेजे होंगे हमने आप को शीघ्र प्रत्युत्तर भेजने के लिये लिखा है।

कार्य्यालय बांधने के लिये रु० 1500 के आसरा सभासदों ने पटी भरी है परन्तु अब तक लिये नहीं राव बाहदुर के पधारने पीछे व्यवस्था होगी और आज हम ने रु० 241) फरखावाद को शिघ्र वेदभाष्य के साहाय्य में भेजे हैं और वेदभाष्य के ग्रहाकों से चन्दा वसूल करने को हम बहोत मेहनत करते है रु० 100 मुनशी बक्तावर सिंहजी को भेज दिये और थोड़े दिनों में और भी भेजने को शक्तिवान हो सकुगा इस की कुच्छ चिंता नहीं। सब समाजस्थों के बहोत बहोत नमस्ते पहुंचे और कृपा करके प्रत्युत्तर शिघ्र लिखना।

मैं हु आपका
आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मन्त्री आर्य्यसमाज, मुंबई

वेद शास्त्र संपन्न
श्रीमद् पंडित् दयानन्द सरस्वती स्वामीजी की सेवा में पहुंचे
मुजफ्फर नगर

(2)

मुंबई ता० 3 डिसेंबर 1880
गीरगाव माधव बाग के सामने
डाक तरमोरेश्वर के घर मे

श्रीमत् स्वामी दयानंद सरस्वति
नमस्ते

छात्रान्तर्गत गोपालरावहरी देशमुख के अनेक नमस्कारपूर्वक विनति। आपणो कागल भाई शेवकलाल उपर आव्योतेवाचो। थिओ साफिकल सोसायटि वाला आर्य समाज के विरुद्ध नहि है। ये लोक शोधक है सिद्ध नहीं और सोसायटि मे शाखा सब धर्म्मों की है। वैदिक शाखा में आर्य्य समाज सब आपहं है। बौद्ध शाखा में सिलोन के लोग है। जेन्द आवस्था के पारसी लोग भी है। धर्म के बाबत में कुच भी हरकत नहीं। हम वेद माने तो ये? लोक वेद न मानो ऐसा कहते नहीं। कोइ क्रिस्तियन होय तो तेने किस्त ने नमानोएम कहते नहि। सारांश कोइ नेधर्मनी हरकत नहीं। योगशास्त्र का विचार करने का मुख्य मतलब है। ऐसा ये महिने का थिआसोफिष्ट में साफ लिखा है। इस वास्ते नाम काटने की जरूर मालुम पड़ति न थी। थिआसोफिष्टमेहम है तो वेद छोड़ता नथी और एलोक भी बेदधर्म छोड़ो ऐसा कहते नहीं।

आपके नाम पर दो कागद पुने से भेजे छे वसियत नाम के बाबतमे।

सत्यार्थप्रकाश ह्या मिलता नहीं और बहुत लोक मागते है इस वास्ते आपके पास होगा तो दुरस्तकरना चाहिये इसमे और कुच विषय लिखने के होय तो लिखकर काशिमें वा मुंबई में छापना चाहिये।

आर्यसमाज सब कितने हे उसकी यदि भेजेंगे तो आर्यपत्रिका में छापेंगे।

आर्य समाज का काम ह्या ठीक ठीक चलता है।

आप का इस तरफ आने का विचार होगा तो अच्छा होगा। पहिले एक महिना खबर करना चाहिये।

पंडित शाम जी को आप पत्र लिखा था उसका तरजुमा लंदन में मोनेरवियम के सही से छापा हे वो कागद हम पर भेजा था वो पढ़कर हमने आप के नाम पर डाक में भेजाहे आपके जानने के वास्ते।

नमस्ते

गोपालरावहरी देशमुख[1]

[1]नमस्ते!

आप के दो कृपा पत्र मीले पढ़के बड़े प्रसन्न हुअे सदैव कृपा करके

1. म० गोपालराव देशमुखजी की यह चिट्ठी तथा इसके पश्चात् मुद्रित म० सेवकचरन कृष्णदास जी की चिट्ठी दोनों ही एक ही पत्र पर लिखी हुई है।

लिखना वेद भाष्य का चंदा लेने को तकलिफ़ बहोत होती है हिसाब बराबर नहीं है तो भी बहोत करके हिसाब हम लगाया है रु० 100) हम ने बक्खातावरसिंह को भेजे थे और आठ दिन में रु० 50) भीमसेन को भेजुगा।

आपके आने बिना समाज का मंदिर होना कठिन है और सब समाजों का अंगरेजी वा हिंदि में (देवनागरी लिपी में) लिखा के कृपा कर भेज देना। हम सब आंनद में है आपकी तनदुरस्ती अच्छी होगी। मुलजी टाकरसी देव लोग पधारे इन्हों की अंतेष्ठि की क्रिया संस्कार विधि के अनुसार की गई थी और सब सभासद बहोत कर के हाज़र थे।

प्रत्युत्तर कृपा कर के शिघ्र ही लिखना।

मैं हूं आप का आज्ञांकित् सेवक

सेवकलाल कृष्णदास

(3)

मुंबई ता० 8 मार्च 1881

श्रीमद् पंडित जी नमस्ते

आपका रिजिस्टर पत्र कल संध्या को मीला पढ़के मीले जितना आनंद हुआ इसका प्रत्युत्तर शनीवार को सविस्तार लिखेगे क्योंकि सब हिसाब की बही हमारा कारभारी के पास है और वे गुरुवार को **वसईसे** निश्चय आजायगा परसु ही गया है। मेरे को कुच्छ हरीश्चद्र जी की नाई धर्मार्थ द्रव्य की अपेक्षा नहीं ईश्वर कृपा आर हमारा पुरुशार्थ से व्यय से अधिक द्रव्य प्राप्त होता ही जाता है।

मैं जो वेदभाष्य मुंबईस्थ ग्रहाकों को भेजता हुं जिसका सिपाई को दरमाया देता हु सो आपसे लेने के लिये नहीं परंतु मैं ऐसा समझा हु कि प्रत्येक आर्यसभासदने अपनी यथाशक्ति यह स्वदेश उन्नति के कार्य्य साह्य करनी चाहिये जिस से मैं प्रति सप्ताह में दो बेरे दाम वसूल करने के लिये ग्राहकों के घर को जाता हूं रु० 100 भेजे और पूर्णिमानंतर और रु० 100 भेज दुंगा। प्रत्येक ग्रहाक पर क्या बाकी है निश्चिय करना कठीन होता है और कितनेक को अंक कम पहुंचे है जिस को दिये पीछे दाम मीलेगे। इति।

मैं हूं आपका आज्ञांकित् सेवक

सेवकलाल कृष्णदास

मंत्री० आ० स०

(4)

मुम्बई

ता० 16 सपटेम्बर 1881

श्रीमद् परमहं सपरिव्राजका चार्य्या नेक गुणसम्पन्न विराजमान वेद विहिताचार धर्म्म निरूपक पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति नमस्ते। आप की ओर से लाला रूपसिंह जी[1] कोहाट से देश यात्रा करते 2 आप के दर्शन से कृत्तार्थ होके ता० 13 की सन्ध्या को पधारे हैं, जिन्हो का मुम्बई आर्य्यसमाज ता० 18 को "स्वदेशोन्नति" विषय में व्याख्यान होगा, जो कल दुपेर को दो बजे डॉक्टर मोरेश्वर गोपाल देशमुखजी के साथ पुने को शेहर देखने ओर हॉनरेब्ल गोपालराव हरीदेश मुखजी और महादेव गोविंद रानेडें आदि सभ्य पुरुषों की मुलाकात को गये है जो कल प्रातः काल 10 बजे फ़िर लोट आवेंगे।

इन्हों से आप की अत्र पधारने की कृपा सुने ही समाजस्थों में बड़ा आनन्द हो रहा है और आप के लिये निवास स्थान व्याख्यानादि व्यवस्था करने को तत्पर हो रहे है, मात्र खोटी आप कितने दिन पीछे पधारोंगे वे जान लेने की है जिससे सब व्यवस्था यथा साङ्ग बन सके, इसलिये कृपा करके शीघ्र विदित करना कि आप का पधारना कितने दिनों में होगा और आप को वाट खर्च के लिये कितने रुपये और काह भेजा जावे, जिससे हम सब व्यवस्था शिघ्र कर लेवे।

राव बाहदुर भोलानाथ साराभाई ने हम को कहा है कि स्वामी जी जब कृपा करके पधारने वाले हो....दित करदेना, हम अमदाबाद और पाहल...जी के लिये सब व्यवस्था करेंगे और गोपाल राव आदि सभ्य पुरुषों ने जब आप पधारने वाले हो इन्हीं को विदित करने का हम को कह रक्खा है जो आप से प्रत्युत्तर मीलते ही विदित किया जायगा।

जैनो के और पुस्तक प्राप्त करने का प्रयत्न चल रहा है मीलते ही आप को विदित किया जायगा ओर 230 पुस्तक आप के वीन[2] देखे मेरे पास है आप कहो तो भेज दूंगा।

आपने जो पुस्तक फिर लोट दिये हम को मीले है परन्तु आप का मुकाम मालुम न होने से रसीट न भेजी गई सो क्षमा करना।

1. पत्र व्यवहार आंदोलन के एक जनक थे। 'जिज्ञासु'
2. यह 'बिना' शब्द है। बिना देखे जानना चाहिये। 'जिज्ञासु'

कृपा करके इस पत्र का प्रत्युत्तर शीघ्र ही लिखना इति।

में हूं आप का आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मुंबई जग जीवनीकिका स्ट्रीट घर नं० 61

(5)

मुम्बई ता० 17 डिसम्बर 1881

श्रीमद् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य अनेक गुसम्पन्न वेद विहिताचार धर्म्म निरूपक पंडित् दयानन्द सरस्वती स्वामीजी प्रति नमस्ते। आपका कृपा पत्र ता० 13 का चितोड़ से लिखा मीला और पढ़ के बड़ा आनन्द हुआ जो समजास्थों को पढ़ाने को तुर्त छापके भेज दिया जायगा, और ता० 14 जान्युआरी शनीवार की सन्ध्या को आर्यसमाज की अेक विशेष सभा नवीन व्यवस्था करने के लिये एकत्र करने का निश्चय किया है जिसके पूर्व आपका पुनः आगमन होने से सब व्यवस्था ठीक 2 होगी और आपकी पुनः 2 आगमन की अपेक्षा ईश्वर कृपा से मीट जायगी। आपकी आज्ञानुसार बालकेश्वर में जिस स्थान पर आपका प्रथम मुकाम हुआ था इसी स्थान का प्रबन्ध कर रक्खा है और आप कृपा करके **"कामखाला"** स्टेशन की टीकट लेना वांह सब सामजस्थ आपको लेने को पधारेंगे और एक वा दो समजास्थ 'थाणे' तक आपको लेने को आयगे। पुना, अहमादाबाद और बडोदा को पत्र आपके पधारने के विषय में आज लिख भेजता हूं और पोस्ट आफिस में भी जिससे सब व्यस्था ठीक-ठीक हो। आप कृपा करके अेक दिन पूर्व तार भेजो तो सब वर्तमान पत्रों में प्रसिद्ध करने की बड़ी सुगमता हो वा खंडवे से भेजो तो भी ठीक है इति

मैं हुं आपका आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास

(6)

मुंबई ता० 15 जानेवारी 1881

ओ३म्

स्वस्ति श्री परिव्राजकाचार्य वेदादि सत्यशास्त्रातर्गत्त तत्व विच्छिरोमणि प्रवृत्यागमार्थ निष्ठ दलित पाखंडार्थ वेदांत शास्त्रनुगतार्थ प्रवृत्ति पूर्वक नित्य नैमित्तक क्रिया प्रतिपादतार्थोद्बोधक अज्ञानांधकार तिमीर नाशक ज्ञानप्रद

श्रीद्दयानंद सरस्वती स्वामी प्रति नमस्ते। आगे आपके पत्र का प्रत्युत्तर हमने और हानरएबल रावबाहदुर गोपालराव हरीदेशमुखजी ने दिया था जिसकी पहुंच अभी तक हमको मिली नही है सो कृपा कर लिख भेजना क्योंकि मुंबईस्थ लोगों में एसी चर्चा हो रही है कि स्वामी जी थोड़े दिन में पधारने वाले है इतना ही नहीं बड़के यहां तक पुछते है कि स्वामी जी पधारे है सो कहा मुकाम किया है जिसका पत्ता बता दिजीअे औ हमको तो इस विषय में कुच्छ खबर भी नहीं मात्र कल आगरे से भगवती प्रसाद जी का पत्र आया उसमें इतना ही लिखा था कि **"स्वामी जी के 25 व्यख्यान हुअे है**[1] और यहाँ से अजमेर वा काशी को आप पधारोगे और वांह से सायत मुंबई को पधारोगे" इसमें आपका क्या अभिप्राय है सो कृपा करके हमको लिख भेजना जिससे हम आप के लिये मुकामादि व्यवस्था कर रक्खे।

जैनमत के पुस्तक की सोध करने के लिये आपने प्रथम लिखा था सो बड़ा परिश्रम से हमने इन्हों के कितनेक पुस्तक प्राप्त कर लिये थे जो आपको कुंवर स्यामलालसिंह जीने आपको विदित किया होगा परन्तु इन्हों के ग्रन्था ग्रन्थ का विचार किया जब वे सब पुस्तक शास्त्रार्थ के विषय में पुराणों के नाई पोकल प्रसिद्ध हुअे जिससे हमने और प्रयत्न करके बहोतेक इन्हों के सिद्धान्त के पुस्तक सुमार 300000 लक्षा धिक श्लोककापुर प्राप्त किये जिसमें बहोतेक पुस्तक 300 से 400 वर्ष के पूर्व लिखे हुये है और कितनेक पुस्तको के प्रारंभ के और कितनेकों के अन्त के पत्र नष्ट हो गये है तो भी रक्ख लिये है क्योंकि वे पुस्तक इन्हों के मुल सिद्धांत के है। इन्हों के धर्म सिद्धांत के विषय में ग्रंथा ग्रन्थ का विचार जो हमको मालुम हुआ है सो भी मैं आप को विदितार्थ लिख भेजता हूं क्योंकि जब तक अपने को इन्हों के प्रमाण अप्रमाण पुस्तकों का शास्त्रार्थ मालुम न होवे सब किया प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है और वे लोग के पुस्तक को प्राप्त करना बड़ी मुशकील की बात है इसलिये हमने प्रथम ही करार कर लिया है कि इस सब पुस्तक में जो हमको प्रिय हो दो पुस्तक हम क्ख लेगे छोटे वा बड़े हो हमारी इच्छानुसार है और 2 पुस्तक वे जब हमसे मंगे देना परंतु मैं पढ़ता हु पूर्ण हो पीछे भेज सकता हु जिससे अपने कार्य में विघ्न न होवे।

इन्हों के सिद्धांत में मोक्ष एव परम पुरुषार्थ है–साधारणा-साधारण धर्म विषय संबंध प्रयोजन के अधिकारी भेद के अनुबंध छ (6) विदित होते है

1. यही कथन प्रामणिक है। सम्पूर्ण जीवन चरित्र प्रूफ की अशुद्धि से पृष्ठ 445 पर 250 व्याख्यान भी छप गया। 'जिज्ञासु'

जिन्हों को जैन सिद्धांत कहते है और इन्हों के मुल ग्रंथ भी बहोत है वैसे कहते है तो भी शास्त्रार्थ विषय में (4) चार मूल सूत्र है (11) एकादश अंग है (12) द्वादश उपांग है (6) छ छेद है (10) दश पयान है (5) पंच कल्प सूत्र है और–बंदि सूत्र और अने अनुयोगोद्धार सूत्र है। इस पुस्तककों के प्रत्येक की टीका, नियुक्ति, चर्णी और भाष्य यह चार अव्यव है जिसको पंचाग कहते है।

इसके नाम–आवश्यक सूत्र, विशेष आवश्यक सूत्र दशवैकालीक सूत्र, पाक्षिक सूत्र मील के चार मूल सूत्र है। आचारांग सूत्र, सुकडांग सूत्र, ठाणांगसूत्र, समुवायांसूत्र, भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथासूत्र, उपासकादशासूत्र, अंतगडदशा सूत्र, अनुत्तरोववाई सूत्र, विपाकसूत्र, प्रश्न व्याकरणसूत्र, मील के एकादश अंग है। उपवाई सूत्र, रायपसेनी सूत्र, जीवाभिगम सूत्र, पन्नवणा सूत्र, जंबुद्दिप पन्नत्ती सूत्र, चंद पन्नत्ती सूत्र, सुरपन्नत्ती सूत्र, निरियावलि सूत्र, कप्पिया सूत्र, कपवडिसया सूत्र, पुप्पियासूत्र, पुप्चूलीया सूत्र मील के द्वादश उपांग है। उत्तराध्ययन सूत्र, निशीथ सूत्र, कल्प सूत्र, व्यहवार सूत्र, जीत कल्पसूत्र, मीला के पंच कल्प सूत्र है। महानिशीथ वृहद्वाचना, महानिशीथल घुवाचना, मध्यम वाचना, पिंडनियुक्ति, औधनियुक्ति, पर्युषणाकल्प मीला के षट् छेद है। चतुरुषरणसूत्र, पंचखानसूत्र, तंदुलवैयालिक सूत्र, भक्तिपरिग्यान सूत्र, महाप्रत्याख्यान सूत्र, चंदाविजयसूत्र, गणिविज्वासूत्र, मरणसमाधि सूत्र देवेंद्रस्तवन सूत्र, संस्था सूत्र मील के दश पयन्न है। इस सब पुस्तक की संख्या (600000) छः लक्षाधिका है। इन व्यतिरिक्त भी दशाश्रुतस्कंध, विरस्तवसूत्र, जितकल्पगणाचार प्रकीर्ण, ज्योती कांड, सिद्धप्राभृत, वसुदेव हिम खड, आदि बहुत पुस्तक है और इन पुस्तको पर टबाभी है। जैन धर्म के आचार्यों का (श्री पुजों का) ऐसा केहना है कि जब मनुष्य मूल पुस्तक समझने को अशक्त हुअे तब उस बख्त के विद्वानों ने उस पर टीका की जब टीका समझने को अशक्त हुअे तब नियुक्ति की, जब नियुक्ति समझने को अशक्त हुअे तब चर्णी की, और जब चीर्णी समझने को अशक्त हुअे तब भाष्य रचे, जब भाष्य समझने को अशक्त हुअे तब टब्बा रचे (जो भाषा गुजराती से बहुत मीलती है) अैर जब टब्बा भी समझने को अशक्त हुअे तब चरित्र रचे और पीछे रासादि नाना तहराके पुस्तके रचे गये और अभी किसी की बनाने की सामर्थ नहीं। (अर्थात् ऐसा प्रतित होता है कि अभी अत्यंत मुर्खता फैल गई है)। तो भी इन्हों का कहनाऐसा है कि सब पुस्तक मीलावे तो (5000000) पचास लक्ष से अधिक श्लोक संख्या होवे।

जैनों में जो ढुढक मत वाले है मुल सूत्रों को ही मानते हैं भगवे कपड़ं

पेहनते है औरम मुर्तिओं को नहीं मानते परंतु बड़े गलीच रहते है और 2 मत बहुत है।

इन्हों के सब सिद्धांत के पुस्तक प्राकृत भाषा में है तो भी बहुत पुस्तकों पर संस्कृत भाष्य है जिससे हमने बहुत करके वेसे ही पुस्तक ले रक्खे हैं जिससे आप को अवलोकन करने को बहुत तकलिफ न होवे और हमने इस पत्र के साथ सब पुस्तक की यादी भी लिख भेजी है जिससे आपका जो मुबई आना अभी न होवे तो भी चाहे जितने पुस्तक डाक मार्फत मंगवा लेवे वे ही हमारी विनति है।

मैं हुं आपका आज्ञां कित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मत्री आर्य्यसमाज, मुम्बई

पुस्तकों की यादी

नाम	पत्र	श्लोक	टीपण
1. आवश्यक सूत्र नियुक्ति सहित	216.	12000	अनुमान
2. " दीपिका "	112.	4000	अनुमान
3. आचारांग सूत्र टब्बा सहित	120.	6000	अनुमान
4. " प्रदिप	85.	3500	अनुमान
5. सुकडांग सूत्र वृत्ति सहित	223.	14850	अनुमान
6. " बालबोध वृत्ति "	79.	3000	अनुमान
7. ठाणांग सूत्र टीका सहित		15000	"
8. भगवती सूत्र वृत्ति सहित	369.	18000	अनुमान
8. प्रश्नव्याकरण वृत्ति सहित	282.	5630	अनुमान
9. उवाई सूत्र टीका सहित	75.	3311	
10. जीवाभिगम सूत्र वृत्ति सहित	322.	16000	अनुमान
11. पन्नवणा सूत्र	221.	7787	
12. जंबुद्दिपपन्नति सूत्र सटीक	385.	18000	"
13. चंद्रपन्नति सूत्र		2300	अनुमान
14. सुरपन्नति सूत्र	112.	6000	अपूर्ण
15. जंबुद्दिपपन्नति टब्बो	140.	7000	अनुमान

16. कल्पसूत्र ध्ययनम् सटीक		3000	"
17. पिंडनिर्युक्ति		6000	"
18. औध निर्युक्ति	182.	5000	अनुमान
			प्रथम पत्र नहीं है
19. पर्युषणा कल्पसूत्र	93.	1216 मिती	
		सं. 1515	
20. पंचखाण सूत्र सभाष्य	24.	700	अनुमान
21. बंदि सूत्र टीका	181.	8000	"
22. नंदी सूत्र मूल		700	अनुमान
23. अनुयोग सूत्र वृत्तिः	133.	6700	
24. सून कृतांग दीपीका	117.	14000	
25. षडदरसन सूत्र टीका	27.	1250	
26 संगुहीणी सूत्र सटीक		3500	
27. सतरीसठाणं सूत्र सवृत्ति	54.	1600	
28. संग्रहणी सूत्र टब्बा सहित	40.	1700	
29. पट्टावली सूत्र		500	
30. प्रतिक्रमण सूत्र वृत्तिः	38.	2000	
31. प्रज्ञापना सूत्र वृतिः		1025	अपूर्ण
32. प्रवचन सारोद्धार वृत्तिः	304.	15000	अपूर्ण
33. कथाकोष	199.	6000	"
34. उपदेशमाला	248.	8000	"
35. तपागच्छ पट्टावली	19.	400	
36. सींदुर प्रकर्ण	83.	2500	
37. घगुण विवर्ण	44.	3000	
38. न्यायावतार विवृतिः	46.	2500	
39. हेम वृहद्ध वृतिः	102.	3000	
40. अध्यात्ममत परिक्षा	60.	1548	
41. चंपकमाला चरित्रम्	12.	1000	
42. भरेसरी बाहुबली वृतिः	290.	12000	

43. हीर सोभाग्य काव्य सटीकम्	218.	4192
44. देशीनाम माला	35.	1800
45. आचारप्रदिप	85.	4000
46. उपदेश माला	188.	8000
47. सतरभेदी पुजाकथा		300
48. सतपदी लघुवृत्तिः	35.	1600
49. देवबंदन	13.	250
50. प्रश्नोत्तर समुचय	36.	1200
51. हेतुगर्भ प्रतिक्रमविधि	24.	800
52. पाश्वनाथकाव्यपंजिका	80.	3200
53. चोवीस प्रबंध	21.	1900
54. गुणस्थानक विचार	31.	1600
55. चतुरकर्म ग्रंथ	16.	800
56. चोबीस डंडक नोटब्बो	23.	890
57. तत्र कर्मग्रन्थ	25.	600
58. भववैराग्यसतक	14.	400
59. पार्श्वनाथ चरित्रम्	35.	2200
60. सत्रुंजयओद्धार	291.	11550
61. आरंभसीद्धि	146.	6800
62. दवचद जी कृत चोवीसी		
63. प्रकर्ण रत्नाकर भाग 1		
64. " " भाग 2		
65. " " भाग 3		
66. प्रवचनसारोद्धार		
67. पांडवचरित्र		
68. समरादित्य के वली नोरास		
69. समकीत मूल		
70. अजितशांतिस्तव		
71. सुमतीनागील चरित्र		
72. निर्नवमतखंडन पत्रिका		
73. ज्योतिष ग्रंथ		

(7)

[1]ता० 18 जन्युआरी 1880

यह सब पुस्तक अभी हमारी पास मौजूद है परंतु हम को कुंवर श्यामलाल जी ने विदित किया कि प्रत्येक पुस्तक में क्या विषय है सो लिख भेजना चाहिये जिसे लिये मैं अभी फुरसत मीलते ही प्रयत्न कर रहा हुं जो तैयार होते ही मैं आप को लिख भेजने वाला था परंतु अभी अेसा सुना गया कि आप हमारे पर कृपा करके थोड़े दिनों में पधारने वाले हो जिससे बाकी रहा काम आपके समक्ष ही होगा।

लाहोर आर्य्यसमाज द्वारा **माडमब्लेपाटसकी** को देने के लिये आपका पत्र का अंग्रेजी भाषांतर आया था सो संपुरद कर दिया ओर इन्हों का प्रत्युत्तर भी हमको लाहोर आर्यसमाज द्वारा भाषांतर होके आपको भेजने के लिये आया था सो नकल रक्खेके आज भेज दिया है क्योंकि आप जब पधारोंगे तब अवलोकार्थ विलंब नहोवे और दोनों पत्र हमने हानरएबल रावबाहुदर गोपालराव हरोदेशमुख को पढ़ाअे थे कि जिससे–आपके साथ इन्होंने का मेलाप हो पत्र संबंध में कुच्छ संदेह न रहवे।

कच्छ दबार:–

कच्छ दरबार के राणा जालमसिंह जी यहां पधारे है जो आप को मीलने की बड़ी अभिलाषा करते है वैसे रावबहादुर माहदेव गोविंद रानेडे भी अभी थोड़े दिनों से पधारे है सो मात्र 2 मास माजीस्ट्रेटके काम में नियत हुअे है सो फिर चले जायगे और राव बहादुर भोलानाथ साराभाई भी मीले थे वे बड़ी प्रिती बताते है और मुजको कहा कि स्वामीजी जब पधारने वाल हो हम को लिख भेजना मैं अमदाबाद में इन्हों की मुलाकात करना चाहता हुं और वैसे महापुरुश के दरसन और परोणागत से बड़ा लाभ होता है परंतु हम अच्छी

---

1. नोट–इस पत्र के आरम्भ में 18 जनवरी 1880 लिखा है इस में जैन मत सम्बन्धी पुस्तकों की उस सूची के विषय में भी उल्लेख है जो सूची इस पत्र के पूर्व छप चुकी है। और उक्त सूची के पूर्व जो पत्र छपा है उसकी तारीख, 15 जनवरी 1881 लिखी हुई है, उस पत्र में भी जैनों की पुस्तकों की उक्त सूची का वर्णन है। 15 जनवरी 1881 का पत्र तदनन्तर जैनमत सम्बन्धी पुस्तकों की सूची तदनन्तर 18 जनवरी 1880 का पत्र तीनों पर पत्र लेंखक महाशय सेवकलाल कृष्णदास का ही लिखा हुआ पृष्ठ नम्बर क्रमश: 1 से 8 तक वर्तमान है। अत: सिद्ध होता है कि ये तीनों एक ही साथ श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में भेजे गए थे। लेखक माहशय ने भूल से पत्रों पर सन इस्वी ठीक न लिखा। चाहे तो उक्त दोनों पत्रों पर सन् ईष्वी 1880 अथवा सन् ईस्वी 1881 होना चाहिए।

तरह जानते हैं कि बीना खर्च भेजे आपका आना कठीन है क्योंकि आपकी पास विद्या का भंडार है कुच्छ धन का नहीं इसलिये अवश्य खर्च भेजना चाहिये जिस से हमने राणा जालमसिंह जी को काकि आपने आवश्य यह शुभ कार्य में आश्रय देना चाहिये जिससे इन्होंने बड़े आनंद से आपके यहा पधारने का जो कुच्छ अग्नी गाडी आदि का आपके साथ के मनुष्य सहित खर्च हो देने को कबुल किया परंतु आप शिघ्र पधारो इतना चाहया जिससे अपने को विशेष खर्चा होगा इसका भी विचार नकरता कवी रतन सीजी को खास आपके खरचके लिये दाम देके आज संध्या की गाडी में रवाने हो जाने की आज्ञा कह दीहये जो अमदाबाद के नवीन रस्ते से आपके पास आप पहुचेंगे।

हमने कल संध्या को एसा सुना की आपने पूर्णानंद स्वामी को आपके उतारा के लिये व्यवस्था करने को लिखा था जिन्होंने सब तजवीज कर रक्खी है इसका निश्चय मै कल पूर्णानंदजी को मील के करूंगा तो भी कृपा करके आप शिघ्र प्रत्युत्तर लिख भेजना जिस से और सब व्यवस्था में कर सकू। केशवलाल निर्भराम जी का सब हिसाब का निकाला कर दिया है। वो कुच्छ विचित्र बुद्धि का मनुष्य हो गया है इस विषय में आप पधारोंगे नंतर सब विदित किया जायगा अब कुच्छ अपना इन्ह से संबंध नही।

सब आर्य्यसमास्थों ने मनुष्य गणना होगी जब आपकी आज्ञानुसार (जो मुलतान आर्यसमाज ने विदित की) पत्रक भरदेने का अतरंगसभा में ठहराव हुआ है तो सब समाजस्थों को विदित किया जायगा।

सब समाजस्थों के नमस्ते
मैहु आपका
आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मंत्री आर्य्यसमाज

ता. क.

रा. रतनसी कवीको राव बहादुर गोपालरावजी ने पत्र आपको देने के लिये दीया है।

(8)

मुंबई 1883
ता० 6 जान्युआरी

यत आपका कृपा पत्र पढ़ते ही अत्यानन्द हुआ में थोड़े दिनों से दक्षिण में आकोला शहेर जो बीराडके मुल में है गया था सो आ गया हु।

घडी बेचती लेली है दो दिन तपास के आपकी आज्ञनुसार भेज दीयागी। गौ की सही समाज के वृत्तांत क सब समाचार मंगल के दिन आपकी सेवा में भेज दूंगा। याह के सब विशेष समाचार कृपा कर लिखवा भेजना इति।

मैहुं आपका आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास

(9)

मुबई, ता 19 जानेवारी 1883

श्रामत्पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी प्रति–

नमस्ते, आपका कृपापत्र ता० 17 मी जानेवारी का पत्र भजा हुआ हमको आज मिला उसको पढ़ के आनन्दित हुआ घड़ी और गऊ के सही का कागज कल भेज दूंगा। मैं आकोला को और नाशिकादि शहरों को फिरने को गया था सो आ गया हूं और समाजस्थान का भी सब हिसाब कल पत्र के साथ भेज दूंगा।[1] कि जिससे आपको सब हाल विदित हो जायगा विठ्ठल कल हम को मिलावा उस को लेने देने के लिये आप के लिखे मूजब कर देंगे अलमितिवि० इति०

मैं हूं आपका आज्ञांकित
सेवकलाल कृष्णदास

(10)

मुंबई० ता० 20 जानेवारी 1883 ई०

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य अनेक गुण संपन्न वेदविहिताचार धर्म्मनिरूपक दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति नमस्ते **आपका कृपापत्र दूसरा कल मिलते** ही आप को प्रत्युत्तर में पोस्टकार्ड कल भेजा सो पहुंचा होगा। **गोरक्षा के पत्रक जिस पर 15320 सहि हुई है** सो आज रजिस्टर कर के भेज दीई जायगी जो मिलते ही कृपा करके पहोंच लिखना। घड़ी के लिये आप ने जो पचीस रुपीये का मनीआर्डर भेजा सो पहुंचा है, घड़ी लेके तपासने के लिये रखा है सा आज वा कल प्रोहित उद्धवलाल जी को भेजदीई जायगी, विलंब का कारणएही हैं कि बिना तपासे कभी भेजी जावे वा पीछे से बराबर न चले तो फिर लोटा देनी पड़े आर प्रोहित का दिल नाखुष हावे। **अथर्व वेद की टीका और ऋषि छद[2] के लिये** आप के लिखने के पूर्व ही कई महिनों

1. अर्थ शुचिता का लेखे का ऋषि को बड़ा ध्यान था। 'जिज्ञासु' 2. यह शब्द अस्पष्ट है।

से प्रयत्न कर रहे हैं परंतु अब तक कुच्छ प्राप्त हुए नहीं, रावबहादुर **शंकर पांडुरंग पंडित ने कुच्छ टूटा फूटा भाष्य भावनगर से प्राप्त कर लिया है,** जो किसी को देता नहीं हम ने चाणोत्कन्याली में अथर्ववेदी ब्राह्मणों के गृह में ऋषि छंद और भाष्य हैं वैसा एक सामवेदी ब्राह्मण स सुना है, और पत्र लिख के प्रयत्न भी कर रहे हैं, मिलते ही आप को भेज दिया जायगा। आर्य्य समाज के मंदिर का काम जमीन के ऊपर 4 फूट तक ऊंचा सब काले पथर का काम हुवा है, जो सैंकड़ों वर्षों तक मजबूत टिक सकेगा। जिस के ऊपर सब खर्चा अब तक रु० 3000) हो चुके हैं और आपके गये बाद सब रु० आज दीन तक 7135) जमा हो चुके हैं जिस में आप जब मुंबई में पधारते थे तब रु० 6567) जमे हुए थे और आप के गये वाद रु० 578 जमा हुए हैं, और पट्टी में रु० 8649 भरे गये थे तदनंतर रु० 726) कल रात तक भरे गये हैं, जिस में से 526 रु० तो जमा हो गये बहोत करके उधरानी पहिले ही की बाकी हैं, जिस में ठाकसी नारण जी ने रु० 1000) सेठ द्वार्कादास लल्लु भाई ने 201) रु० आत्माराम बापुदलबी के रु० 33) मंच्छा शंकर जयशंकर के रु० 25) वामन आबाजी मोडक के रु० 10) वह सब ग्रहस्थों के चंदे मे से कुच्छ जमा हुवा नहीं है दामोदर रुपजी ने रु० 125) में से रु० 50 दीए हैं पुर्षोत्तम भगवानदास रेशमी कापड़ वाले ने 100) रु० में से रु० 50) दिये हैं और श्यामजी विश्राम के रु० 1000) में से रु० 500) आये वह आप जानते हों। अर्थात् सब मिलके 9375 रु० पट्टी में भरे गये हैं इसमें 7149 रु० जमा हुए और [1]2240 रुपीयों की उधरानी हैं। जिस में 500 रुपये तो श्यामजी विश्राम के तो आने के ही नहीं और ठाकरसी भी 1000 रुपीये में से कुछ देवें वैसा लगता नहीं क्योंकि इस का हात बड़ा तंगी में है और द्वार्कादास अभी थोड़े 2 करके देने को कहते हैं, अर्थात् 500 सो 700 रुपीये तक उघरानी बड़े परीश्रम से जमा होगी। जिस में अभी रु० 500 तक हमारे पास से खर्चे गये हैं, क्योंकि जो काम बंद कर देवें तो फिर प्रारंभ होना बड़ा कठिन है जिस से थोड़े कारगीरि रख के धीरे-धीरे काम चलाता हूं सो आप को विदितार्थ लिखा है।

रावबहादुर गोपालराव हरी देशमुख परसो रात्री को मुंबई में पधारे हैं जिस को लेके हम, सुंदरदास और लीलाधर आदी कल रात्री को दो तीन ठीकाने चंदा भरवाने को गये थे जिस में से जीवनदास इवजी शवीजी ने रु० 200 भर

1. नोट–9375 में से 7149 निकालने पर शेष 2226 बचता है परन्तु यहां 2240 शेष लिखा है।

दिये हैं और जहां तक रावबहादुर यहां है वहां तक एकांतरे को चंदा भराने के लिये जाने का अनुबंध किया है। शेठ लक्ष्मीदास स्वामी जी के पास रावबहादुर आदि कई बख़त गये उन्होंने काम देखने के लिये आने का कहा है परन्तु अब तक आये नहीं और इन्हों के थोड़े दिनों में रुपीये 20000) लेके एक बेपारी ने दिवाला निकाल दिया है जिस से हम ने भी थोड़े दिन इन्हों के पास जाने का मोकव रखा है, सेठ छबिलदास लल्लु भाई ने अब तक कुच्छ चंदा भरा नहीं मात्र आपके आज्ञानुसार प्रतिमास मुलजी ठाकरसी के पिता को रु० 7) खाने को देते हैं। सूर्यवंशमणी उदयपुर के महाराणा जो राजधम्र पढ़ते हैं यह पढ़ते ही अति आनंद हुआ, जहां तक हमारे राजे महाराजे धर्म्माधर्म्म को याथातथ्य न समझेगे वहां तक हामरे देश की राज्य और धर्म्म व्यवस्था अति उत्तम कभी न चली और चल सकेगी। षड्दर्शनों का याथातथ्य भाषांतर होगा तब ही शास्त्रों के नाम से जो पोलपाल चल रही है सो निर्मूल होगी। सेठ मथुरा दास लवजी कल रात को सेठ जिबराज बालू के दूकान पर मिलेथे इसी को आप के आसिर्बचन कहे हैं और इन्होंने के पास निरुक्त के दो अंक दूसरे आ गये हैं सो आप को भेजने के लिये आज भेज देने वाले हैं वह मिलते ही आप को पोष्ट द्वारा भेज दिये जायंगे। विठ्ठठल रसोया अभी हमारे पास आ गया है उन्होंने ने कहा कि लालजी महाराज पर स्वामीजी का पत्र आ गया है जिसमें हम को तुम्हारा पगार देने के लिये लिखा है जिस लिये हम सोमवार के दिन बालकेश्वर जाके पत्र पढ़ के उन को दे देंगे क्योंकि लालजी महाराज के शरीर को अच्छा नहीं वह शहर में आ नहीं सकते। रावबहादूर गोपालरावहरी देशमूख जी का उदयपुरादि शहरों देखने आने की इच्छा है सो मास दीढ मास से यहां से निकलने को चाहते हैं और चाहे तो हम भी उनके साथ देखने चले आवें और आपके दर्शन का अमूल्य लाभ लेवें। इस पत्र के साथ आर्य्यसमाज के टीपखाते की जमा उधार की यादी आप को विज्ञापनार्थ भेज दीई है जिससे आपको जमा उधार सब विदित हो जायगा यह यादि हमने प्रथम नासिक गये के पूर्व तय्यार कराई थी परंतु अब आज दिन तक का सब इस में दाखल करके आपको भेज दीई है। गोकरुणानिधी का जो अंग्रेजी भाषांतर हुवा है सो हमारा छपवा देने का निश्चय हैं परन्तु लाहौर में जो आर्य्य नामक जो अंग्रेजी मासीकपत्र प्रकाशित होता है उसी में छपवा के फिर इसी का पुस्तक बनवा के छपवा देना कि जिस से यह पुस्तक के ऊपर कोई विरुद्ध वा पुष्ट में लिखे वे भी उसी के साथ ही विवेचन होके छप सके इस विषय में आप का क्या अभिप्राय है सो कृपा करके लिख भेजना। गिरानंद का एक पत्र हम को किसनगढ़ का लिखा मिला है इस में उन्होंने ने पतंजल महाभाष्य मंगवाया है और पुस्तक मिले बाद दाम भेजने का भी पत्र में लिखा है परन्तु इसि के पिता आदि मनुष्य कैसे है वह हम नहीं जानता इसलिये भेजा नहीं है और किसी दुकानदार के पास मिलता

भी नहीं इस से आप जो आज्ञा करो तो हम भेज देंगे। रामानंद जी को हमारे नमस्ते कहना। अलमिति वि० इति।।

मैं हूं आप का आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मंत्री आर्य सं० मुंबई

(11)

मुंबई, ता० 25 जून सन 1883 ई०

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य अनेक गुणसम्पन्न वेदविहिताचार धर्म्म निरूपक दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति–

नमस्ते,

यत आपके आज्ञानुसार एक उत्तम घड़ी लेके प्रोहित उदय लालजी को ता० 12 जून को उदयपूर को भेजदी है, जो तेईस रुपीये में लीइ थी जिसकी बिल्टी की रसीद मिल गई। और हमने शेष रुपीये दोके लिये प्रोहित जी को पत्र लिखा है कि वे जो आज्ञा करे तो मनीआर्डर वा पोस्ट की टिकट लेके उन्होंने को भेज दे। परन्तु अब तक प्रत्युत्तर मिला नहीं मिलतेहि भेज दिया जायगा ओर जो इन्होंको वे घड़ी पसन्त न हो तो पीछे लौट देने से रुपीये सब भेज दूंगा वेदभाष्य का सब हिसाब ता० 16 जून तक का मुंशी समर्थ दानजी को प्रयाग को भेज दिया है। जिसकी प्रत आपकी इच्छा हो और आप आज्ञा करो तो आपको भी भेज दूंगा। परन्तु इस हिसाब में हमको जो वैदिक यंत्रालय से पुस्तक भेजे गए हैं उसी का हिसाब जो कि हमने कई महीनों से खत लिखके मंगवाया है तो भी अब तक मिला नहीं। जिसे हमने ओर पुस्तक मंगवाना बंद कर दिया है। क्योंकि हम सब हिसाब साफ रखने चाहते हैं।

कराची आर्य्य समाज वाले स्वामी आलारामजी डेढ़ मास हुआ मुंबई में पधारे है। और प्रति रविवार को व्याख्यान भी देते है। आधुनिक वेदान्तके नाना प्रकार के वादों को बहुत अच्छी प्रकार खण्डन करते हैं।[1] **मात्र संस्कृत नहीं जानते जिनका अभ्यास करने का प्रारम्भ किया है** और इसी के ऊपर रात्र दिन बहोत प्रयत्न करते हैं। और प्रसङ्गोपात वैदिक धर्म्म का उपदेश भी करते हैं। जिन्हों का रेहने के लिये आर्यसमाज स्थान में और भोजानादिके लिये भी मैं और सुन्दरदास, लीलाधर ने बंदोबस्त किया है, वे दो तीन मास

1. रंग बदलते इन्हें देर न लगी। पक्के सरकार भक्त और ऋषि द्रोही बनकर नया इतिहास रचा। 'जिज्ञासु'

मुंबई में ठहरने चाहते हैं। पश्चात् आपका दर्शन करके चाहे कई मास आपके पास ठहरके अध्ययन करेंगे वा आप आज्ञा करेंगे वहां जायगे। वैसा इन्हों का इरादा है।

शेठ छबिलदास लल्लुभाई के पुत्र रामदास विलायत में पढ़ने को गए हैं जिन्होंके पत्रोंपर से यह विदित होता है कि वे कई दिन तक आक्सफोर्ड में पं० श्यामजी के साथ रहकर क्याम्ब्रीज के पाठशाला में पढ़ने को गए हैं। सो आपको विज्ञापनार्थ लिखा है।

मुंबई आर्यसमाज का स्थान बांधने का काम सांप्रत थोड़े ही कामादार लगा के लेना पड़ता है क्योंकि चार मास में दो सो रुपीयों से जियादा पट्टी में भरे गए नहीं। और शेठ ठाकरशी नारणजी, द्वार्कादास लल्लुभाई और दामोदर काका आदि ग्रहस्थों ने जो प्रथम पट्टी में आपके समक्ष रुपीये भर दिये थे इन्होंने अब तक कुच्छ दिया नहीं। पंधरह सो 1500) रुपीये प्रथम की उघराणी के बाकी हैं। बहोत धक्के देके देते 2 करते अब तक कुच्छ भी दिया नहीं। और ना भी नहीं कहते। शेठ छबिलदास लल्लुभाईनें अब तक कुच्छ भरा नहीं। शेख[1] लखमीदास खीमजी स्थान देख के फिर भर देने को कहते हैं और स्थान देखने ओने को अवकाश नहीं अर्थात् यह भी टालाटाली करते हैं। और मास्तर प्राणजीवन दास आठ दिन में सभा में बराबर हाजर रहते हैं, और व्याख्यान की बराबर व्यवस्था करते हैं, और ओर कार्य करने को इनको भी अवकाश नहीं और सुन्दरदास, लीलाधार कभी 2 पट्टी भराने की तजवीज में प्रयत्न करते हैं। परन्तु इन्हों को भी अवकाश नहीं **अर्थात् सब को अपने 2 धन्दा रोजगार की पूर्ण उन्नती करने की अभिलाषा है**–हमने यह थोड़े कामदारों से काम सुरु रक्खा तो भी 1000) रुपीयों से ज़ियादा हमारी गीरा से खर्च कर चुके हैं तो भी समाजस्थों के नेत्र नहीं खुलते। यह ऐसा हि चलेगा तो हमको भी आगे काम बंद कर देना पड़ेगा। क्योंकि धन ओर तन से किसी की साह्यता नहीं। आप प्रथम यहां पधारे थे तब व्याख्यानादी में जो व्यय हुआ है सो करने के लिये आप को कब हुकम हुआ था वैसे 2 क्षुद्र प्रश्न अन्तरङ्ग सभा में दामोदर काकादि प्रभृति निकालते हैं। कि जिससे अव्यवस्था होने से दाम देना न पड़े यह तो ठीक है कि ओर समाजस्थ वैसे नादान नहीं है। क्योंकि वे समझते हैं कि दाम न देने के लिये यह सब प्रपंच है परन्तु यह पक्ष होने से प्रति 15 दिन में अन्तरङ्ग सभा दो मास हुए बराबर होती है। और कोई अन्तरंग सभा के आज्ञा बिना एक पाई भी खर्च ने नहीं

1. शेख नहीं, सेठ शब्द होना चाहिये। 'जिज्ञासु'

सकते। और जिस्सेहि हमने विठ्ठठल को रुपीये 40) कोशाध्यक्ष के पास से दिलाने के लिए अन्तरङ्ग सभा को पत्र लिखके विठ्ठठल को भी उसी दिन बुलाया था। और अन्तरङ्ग सभा ने शेठ माधवदास रुघनाथदास के यहां से मंगा के देने के लिए 25 दीन हुआ हुकम किया था। परन्तु अब तक वे रुपीये दिए नहीं जिस्से हमने लीलाधर और सुन्दरदास जी को कहा कि यह ठीक होता नहीं। विठ्ठठल को तूर्त रुपीये देने चाहिए। जिससे इन्होंने कहा कि यह अन्तरङ्ग सभा तक कभी जो कोशाध्यक्ष रुपीये नहीं देंगे तो हम देंगे विठ्ठठल को अन्तरङ्ग सभा के दिन बुला लेना परन्तु कल विठ्ठल हमारे घर को आया था उनने कहा कि स्वामी जी ने मनीआर्डर करके रु० 40) लाल जी महाराज को भेज दिए थे। जो इन्होंने हम को दे दीए हैं। अब हम स्वामी जी के पास जाने को चाहते हैं। इस लिये आप स्वामी जी को लिख के सम्मती मंगा के हमको कह दीजिए वैसा ही मैं तूर्त रवाना हो जाऊंगा इसलिए आपका विठ्ठठल को भेजने के लिए क्या अभिप्राय है? सो कृपा करके लिख भेजीए।

हम विठ्ठठल को 40 रुपीये देने के लिए कभी बिलंब न करते। परन्तु आप मुबई में पधारे इसी के पूर्व से फाल्गुन तक हम को समाज में से समाज के लिए जो 2 खर्च किया है इसी में से एक कवडी भी फिर मिली नहीं। और जब 2 अन्तरङ्ग सभा में यह विषय में निकालता हूं तब सब एक मत होके कहते हैं कि इसका विचार आगे होगा। परन्तु कभी लेने देने के लिए विचार करते नहीं। और समाज स्थान का काम चलता है इसके कामदारों और माल मसाले वालों को साम्प्रत हमकोहि देना पड़ता है। लगभग सब मिलके निदान 3000) रुपीयों तक हमारे रोक रहे हैं। जिसी का ख्याल कोई करते नहीं। जिससे हमने आपकी भी प्रथम विनती कीई थी। कि इन्हों को कभी आप लिखेंगे तो अवश्य यह मोहरूपी निद्रा लगी है इसमें से जागृत होंगे। गत अन्तरङ्ग सभा में हमने प्रयत्न करके ठाकरशी आदि समाजस्थों को बांध काम का विचार करने के लिए बुलाए थे। तो इन्होंने प्रथम की न्याई बड़ी-बड़ी **लम्बी चौड़ी बातें करके रुपीये भेज देने का भी कबूल किया जिसको आज 12 दिन हुए। जिसके लिए रोज आदमी जाता है। दो बखत मैं भी गया था परन्तु अब तक कुच्छ नहीं[1] यह व्यवस्था है सो आपको विज्ञापनार्थ लिखा है।**

हमारे शरीर को कई दिन अच्छा नहीं था और सुरत नाशिकादिस्थानों में कार्यवशात् गया था और खांडेराव का भी शरीर अच्छा न होने से वह भी

1. देश धर्म की सेवा करना अति कठिन कार्य है। 'जिज्ञासु'

मुलुख को गया था। जिससे आपके पत्रों के प्रत्युत्तर नहीं लिखें। सो आप कृपा करके क्षमा करोंगे और कुच्छ विशेष कार्य हो कृपा करके दास को लिखते रहें।

राव बहादूर गोपालराव हरी देशमूख कई मास भये मुंबई में नहीं पुणे को है। **जिस्से वे भी समाजकार्य में कुच्छ काम नहीं लगते**[1] इन्हों के लड़के लक्ष्माणराव गोपाल देशमुख मुंबई में आये जब हमको बुलाके आपका पता पुछा और योग के विषय में वे कुच्छ विशेष प्रश्न करने लगे और मुझको कहाकि हम स्वामीजी की मुलाकात करके इस विषय में निश्चय कर लेने को चाहते हैं जिस्से हमने अजमेर आर्यसमाज के ऊपर एक पत्र दिया था जो आपको अवश्य मिले होंगे। जिसके हाल भी अवकाश हो तो कृपा करके आप लिखेंगे। रामानन्द जी को हमारे नमस्ते कहेना। अलामिति विस्तरेण० इति०।

मैं हूं आपका आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मंत्री आर्यसमाज, मुंबई,
स्थान खाते का

ता० क० कल के वर्तमान पत्र से यह विदित होता है कि, सेठ लक्ष्मीदास स्वीमाजी ने अपने लडकाओ को महाराज को बुला के समर्पण दीलाया जिस में गगादास की सोरदास के घर की भी स्त्रीया सामेल थी...

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में महाशय लाल जी बैजनाथ व्यास बम्बई के पत्र

(1)

॥ श्री ॥

श्रीमद्जगतगुरु परमहंसपरिव्रजकाचार्य श्री मद्दयानंदसरस्वति जी के चरणारविंद में सष्टांग नमस्ते पौचे गांव राज्यधानी शायपुरा जील्ला मेवाड आपकु मालम होवे: के विठल: ब्राह्मण: कि चाकरि कि पगार का: रुपिया च्यालिस 40) शेवकलाल के पस से दिराणेका आप कि आग्यापत्र हम कु मिल्या था सो सेवकलाल कु हम ने कहा के रुपये विठल कु देहो: जद

1. हम तो इनको भी ठीक-ठीक नहीं समझ सके। किया क्या जाए? 'जिज्ञासु'

बोल्या अछा परंतु आज तक दिया नहि: ओर हम तो मादगी से बहोत बिमार रहे अब आप कि क्रिपा से अछे हे सो विठल रोज हमारे पास आता हे वासते आप कृपा करके रुपे का मनिऑडर करके हमारे नाम पर भेजो और जलदि से भेजो: सेवकलाल छापखाना प्राग के उपर रुपयै एक हजार से जास्ती बाकि चडि हुई केत्ता हे: और रुपये दो हजार समाज के उपर बाकि केत्ता हे इस्कारण से रुपये देत्ता नइ हे ओर समाज का मंदिर अटका रहा हे उपर से बरसाद आई हे सो खरच बगर काम अटक्या हे सो हमारा बिचार एसा हे कि महाराज राणाजी महाराजा सायपुरा इनसे मदत्त कुछ मिल सके तो कोइ अछे आदमी कु आप के पास भेजे इस्का खुलासा लिखना संवत् 1940 ज्येष्ठ बदि 8 नौमे लालजी बैजनाथ इनकी तरफ से ये पत्र पौचे।

लालजी वैजनाथ...

(2)

॥ श्रीगुण...॥

स्वस्ति श्री जोधपुर नगर गड महा दुरंगे श्री मद जगत् गुरु महाराज श्री मद्दयानंद सरस्वति जी महाराज के चरर्णारबिं के साष्टां नमस्ते आप कु मालम होवे: बिठल भाणा: ब्राह्मण: इस्का चाकरि का रुपीया: खर्च श्रुद्धां: आज परियंत: सेवकलाल: भणशालि: देता नहि: माश सात हुआ: फिरते फिरते थक गये: जब आप कु: पत्र 2 सायपुरे: भेजे पत्र 1 रजिष्टर: जोधपुर: आप कु भेज्या: परंतु: जबाब नई: सो: पत्र आप के पास: पौच्या नहि: एषा दिस्ता हे: सो अव ये पत्र: पौचते रुपिया: मनि आर्डर करके भेजो सेवक लाल के भरोसे रेणा नइ: देकते पत्र रस्ता खर्च: वयगार का पइसा मिल कर: जल्दि भेजो: और आप आनंद मे रेणा: ओर वां कि हकिगत आनंद की लिखना: समाज का कोम: बहोत्: अधुरा पडा हे: सो: आप कृपा करके मंदिर: समाच: का: बने एशि मदत् जरूर करणा: सेवकलाल बाकि प्राग श्रुद्धां रुपये तीन हजार: बोलता हे: और मसजा का निचे का: पाया हूआ हे: बाकी सर्व काम्: पडा हे रुपये: मिलते नइ हे वास्ते मदत् चइये: ये विनंती संवत् 1940 ज्येष्ठशुदि 7 भौमवासरे[1]

(3)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रे श्रीमद् जगत् गुरु महाराज श्रीपरमहंस परीवृाजाकचार्य

1. अक्षर तो पूर्वपत्र साही है परन्तु इस पत्र पर लालजी वैजनाथ व्यास का हस्ताक्षर नहीं है।

श्रीस्वामि जी महाराज दयानंद सरस्वति जी के चर्णार विंद मे साष्टांग नमस्ते पौचे: पत्र: एक 1 आप कि तर्प से: ज्येष्ट श्रुद्ध 7 सप्तमिका: आज हमकु मिल्या: रुपये 40) अंके च्यालि कारु मनिआर्ड: भेज्या: सो मिला: रुपये: आप कि आग्यानुशार: बिठल भाणा ब्राह्मण: कु देकर: रशीद: यो चीठि मे भेज्या है: सो लेना: और उस्का: पौच का जवाब लिखना:

और: समाज का काम: निचुका: पाया: तैयार हुआ नइ है: काम बंद पड़ा हे: कारण: कितियेक: समजास्त: बहौत: अडचन में हे: वास्ते: काम नइ चल सकता: हे: बहौत: तंगी हे: सो बायर से उदेपुर: वगेरे: कोइ बिराजा कि तरफ से: मदत्: होवेगी: तो अछि हे: आप कु विदित होवै।।[1]

लालाजी वैजनाथ व्यास:
मुकाम मुबई

(4)

।। श्री ।।

स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रे: श्री मद्दयानंद सरस्वतिजी: स्वामिजी के चर्णारबिंद मे नमस्ते: रुपये 40) अक्षरी च्लासि: हमारी चाकरी के: आपने लालजी वैजनाथ: व्यास: इनकी मार्फत से हम कु मिल्या हे: सो आप कु मालम होवे: संवत् 1980 ज्येष्ठ शुद्ध 13 चंद्रे।

विठलभाणा ब्राह्मण
मोडचातुरवेदि: कि सइ: मुकाम मुंबई

(5)

।। श्री ।।

श्रीमद्जगत्गुरु महाराज परिव्राज का चार्य महाराज श्रीमद्दयानंद सरस्वती जी महाराज के चर्णारबिंद में साष्टांग नमस्ते पौचे: आगल: आप का: पत्र: हमकु: मिल्या था: विठल: भाणा: कु: भेजणे की: आग्या: थी: परंतु: विठल: के भाइ की: औरत बेमार थी: सो विठल: बडगाम: गया था: ओर: आपकु उदर से: पत्र भेजा: आपने जवाब: उसकु भेजा नइ: सो बिठल मुंबै आया हे: आपकि: आग्या परमाणे सर्ब कबूल हे: परंतु: जोधपुर: तक: पौचणे का: खर्च: रुपये: 10 दशलक्त्तेहे: सो: भेजणा चैहे: सो भेजणा: अगर: आपकी: आग्या होगी: तो लिखणा: आपके हूकम के अनुकूल होवेगा: और: विठल:

1. इन पत्रों में बाहर से दान की गुहार बहुत है। 'जिज्ञासु'

जब तकः आप के अनुकूलः चलेगाः समाज की स्थितिः जो आगूल लिखी थि सोः वो इहेः कुचकम् जास्तीः न विलिखणे जेसिहेनहिः ओर ये पत्र का जवाब कृपा कर केः जलदि लिखनाः और पत्र पर ठिकाणाः ममादेवीः भगवान् दाशः बिहारीलाल जी केः दुकान पर पौचेः एसा लिखनाः संवत् 1940 भाद्रपदः शुक्लपक्ष 7 वृष्टी बौत हेः पत्र भेज्या मुबै से लालजी वैजनाथ के साष्टांगः नमस्ते पोचैः

(6)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री जोधपुरनग्रे श्रीमद् जगत् गुरु परिव्राजका चार्य श्रीमद्दयानंद सरस्वस्ति जी के चर्णारबिद मे लालजी वैजनाथ का नमस्ते पौचेः और आप को पत्रः रजिष्टरः दिया था जिस्मेः बिठल भाणा कुः आप के पासः भेजणे काः हुकमः मगाया थाः सोः आप ने अभिः तकूः। उस्काः जवाब नहीं लीखाः इस वास्तेः छेला कागदः आपकुः लिखतेहेः किः आप का मरजीः परमाणेः आणे के वास्ते उस्कु त्तइयार किया हेः औरः आप ने बुलाया थाः उस वक्तः वो गुजराथ मेगया थाः अभि वो गुजराथ मे शे आयाः जब उस्कु समजा करः आपकु पत्र लिखाः औरः वो जिवत्ते तक आप कि बंदगी करेगाः सो आपकु रखना मंजूर होवेः या ना रखना होवेः तोः उस्काः खुलासा हमकुः लिख कर भेज देनाः उस्कु चाकरीः बौत्तः मिलति हेः परंतुः आप का लिखणाः औरः आप के आग्यानूसारः चलने वाला हैः इस वास्ते आपकुः अरज करते हेः केः फेरः हात्तमेः आदमीः आवणाः मुस्कल हेः सोः आपः पत्र काः उत्तर लिखना औरः समाज कीः स्थिति जेसीः आग लीखे माफक हेः और हम आप के किरपासेः आनंद हेः पत्र का जवाब उस्पः रः ठिकानाः भगवान्दाशः बिहारीलाल सेठः। इन कि दुकान ठिकाणा ममादेवी कर देनाः संवत् 1940 आश्वीन् वदि 4 गुरु त्तारीक 20 सप्त्तंबरः

श्रीमत्परहंस परिव्रजाकाचार्य्य श्री 108 स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज की सेवा में श्रीयुत महाशय केशवलाल निर्भयराम सूरत के पत्रः-

(1)

सूरत ता० 16 मार्च 1880

महाराजा धीराज पंडित दयानंद सरस्वति स्वामी जी
काशी

आप कि कृपा दृष्टि का पत्र हाल बहुत मास से मीला नहीं सो कृपा कर के भेजना संस्कार विधि का काम आपने बहुत बड़ा दिया दीख पड़ता क्युं की अब 4 बर्ष हुआ मेरा नाणा मेरे घर आया नहीं प्रथम तो देखा की 500 नकल का दाम आया उस मे से मेरेकु देना आपकु अवश्य होता सो न कीया फेर मेरे से बे मालुम पुस्तक मुंबई से मंगवालीया तब मैने रु० की खातर लीखा तो आप ने उत्तर दीया हीसाब सब भेजो हीसाब आये से रु० तुरंत भेज देगा परंतु तुमने मात्र लीखा की या तो कुछ नहीं ओर मेने हीसाब भेजा तब तो आपने पत्र व्यवहार ही ही बंध कर दीया तो मेरे कु पंडित सुंदरलाल जी कु लीखना पड़ा फीर आपने लीखा हीसाब नि:संदेह नहीं उनकु भि 8 मास हो गया परंतु मालुम हुआ नहीं की अब तक हिसाब नि:संदेह हुआ कि आप का संदेह नहीं जाता सो कुछ मालुम नहीं होता हम थोड़े ज्ञान वाले लोक लंबा संदेह की बात नहीं करते और कोई करे तो उनकी शोभा बनी न रहती और आपकु जो पत्र लीखता उन का जवाब भी नहीं आता अच्छा आपकु एसाइ करना चाहीये ओर हमारा देश एसीइ दुर्दशा में रहना चाहिये क्योंकि व्यवहार अच्छा नहीं सो देश की बढ़ती नहीं होती ऐसा आप का मत हमने बहुत दीनों से स्वीकार कर लिया है कृपा रखना।

ला० आपका सेवक
केशवलाल निर्भयराम

(2)

सूरत ता० 5 एप्रील 1880
महाराज पंडित स्वामी दयानंद सरस्वति जी काशी

आप का कृपा पत्र ता० 31 मार्च का आज आया उसे बहुत आनंद हुआ की 10 मास पीछे आप का पत्र द्वारा दर्शन हुआ आपने सब हीसाब और पत्र देख के सारा निकाला और मेरा ता० 31 दिसंबर 1878 का पत्र मे 409।।। चार सौ पौने दस रुपयै बाकी मेने नीकाली और ता० 30 आगष्ट 1879 के मेरा पत्र मे जो वाकी नीकाली है सो दोनों बाकी आप ने कबुल रखी सो ठीक हैं परन्तु ता० 30 आगष्ट का उक्त पत्र में बाकी 425।। चार सौ पौनी छबीस रुपैया और तीन आना है के 525।। पांच सौ पौनी छबीस रुपैया तीन आना है सो तपसा करके लीखीये संस्कार विधि की मुल्ल रकम 505 की थी उस पर 2 बरस का सुद लगा तो 549 हुआ उसमें से विक्रय सब जात का पुस्तकों का मोल वाद कीया गया अर्थात् जमा करा गया तो संवत 1934 का अंत पर्यत 409।।। रुपैया हुआ आप जो मोल बाद करते हो सो फेर दुसरी

वखत बाद हो जाता है सो भूल होती है सो सहज आप की ध्यान में आजायगी और पत्र जल्दी देना और उनमें लिखना कि सब हिसाब का और पत्र जल्दी देना और उनमें लिखना कि सब हिसाब का निश्चय कीया ता० 31 मी डीसंबर 1878 का पत्र मुजब 409।।। बराबर है और रुपैया आप से जीता बने उत्ता हाल भेजना सो मुंबइ में प्राण जीवनदास का हानदास कु पाओ मेरा भाइ शंकरलाल निर्भयराम मुंबई में है उनकु पीछानता है उनके पावत नाम रसीद ले के देना और जो बाकी रहेगा सो पीछाडी से देना उस की फीकर नहीं जो अपनी प्रीती बनी रहै तो इस से ज्यादा क्या है प्रत्युतर शीघ्र देना–

ला० सेवक केशवलाल

निर्भयराम का प्रणाम वाचना

श्रीमत् परहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में। बम्बई प्रान्त के अन्यान्य भिन्न 2 महाशयों के पत्र।

मु: चीखली जिल्ले सुरत, वाया बिल्लिमोरा

ता० 16.12.81[1]

ॐ

नम: सर्वात्मने श्रीजगदीश्वराय।

।। विज्ञापन पत्र ।।

स्वति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य अनेक गुण सम्पन्न विराजमान श्रीमद्वेद विहिताचार्य धर्म निरूपक श्रीमच्छ्रेष्टोपमा युक्त सकलोत्तम गुण भूषित जगद्विख्यात पंडित श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वति जी प्रति चीखली जिल्हे सूरतसेली० आज्ञानुयायी सेवक कविमन: सुखरामत्र्यबम्बकराम के साष्टांगदंडवत् प्रणाम आप, आप की परमपवित्र सेवा में मान्य कीजिये. विशेष नम्रतापूर्वक विनति यह हैं कि, परम दयालु परमात्मा की कृपा से और आप जैसे परम प्रतिष्ठित सद्गुरु की सहाय से मैं कुशल और आनंदित हूं आप की कुशलता का वर्तमान समाचार से ज्ञात होने को सेवक शुद्ध अंत:करण से प्रतिदिन अत्यंत उत्सुकता पूर्वक मार्ग प्रतिक्षा कर रहा हैं अर्थात् आप आप का महा अमूल्य समय में से मात्र एक पांच मिनिट का अवकाश मिला कर मैं एक आपका अज्ञान-बालक की हठ पूर्ण करने क्रे लिये पत्र दर्शन का अतिदुर्लभ लाभ देने की श्रम लेके कृपाकर दीजिये. सेवक की उक्त दरखास्त को आप की और से यद्किंचित् भी टेका मिलने से सेवक का अंत:करण में कृतार्थ हो गये

1. यहाँ सन् 1881 समझा जावे। 'जिज्ञासु'

समान आनन्द पैदा होवैगा! आशा करता हूं कि इस पत्र में अधोलिखित और निम्नलिखित हकीकतादिक के संबंध में आप का हस्ताक्षर सहित पत्रिका अवश्य आप की और से शीघ्र प्राप्त हो जावैगी इतना आरंभ ही से विस्तार करने का सत्य क्या प्रयोजन हैं सो आपने यथावत् समज लिया होगा तो भी निवेदन करता हूं कि, सेवक ने आप के ऊपर पूर्व एक पत्र भेजा था जिन को आज अनुमान न्यून से न्यून पांच-छे मास हुए होगे तौ भी उनका अब तक मुझ को कुछ भी उत्तर मिला नहीं है. अस्तु. इस बात का मेरे मन में कुछ अंदेशा नहीं है. क्योंकि, आप को ऋग्वेदादि मन्त्र भाष्य बनाने में भोजन करने की भी फुरसत मिलनी मुश्कील हैं तो पत्र आदिकों के यथावत् उत्तर लिख भेजने का अवकाश मिलना यह तो केवल असंभवित ही हैं सो मैं बरोबर जानता हूं.

स्वामिजी महाराज!,

जैसा चंदन वृक्ष के मूल मे भुजंग रहते हैं, शाखा के विषै बंदर, शिखर के विषे विहंगम, और कुसुमादि के विषैं भ्रमरादि प्राणी निवास कर के उनको पीडा करते हैं तथापि चंदन वृक्ष अपना शीतलता आदि गुण कदापि छोड़ता नहीं हैं!!! वैसे ही मेरे जैसे अज्ञान जन निरर्थक आप को, आप ने आरंभित उत्तमोत्तम धर्म कार्य में बारम्बार ध्वंश कर के अमौल्य काल को व्यर्थ व्यतित करने की युक्ति रच के नाहक सताते रहते हैं तो भी आप अपना धैर्य से कभी मुक्त होते नहीं हों किंतु शांत वृत्ति रख के बड़ी गंभीरता से सभी के चित्त का समाधान करते हो यह बात मुझे कुछ कमती आश्चर्य पैदा करने वाली नहीं हैं!!! हम आर्यावर्तीय-भारत वासियों का और भारत भूमि का धन भाग्य है कि, जिस समय इस देश भर में चारो और पाखंड धर्मरूप अमावास्या का घोर अंधकार फैल रहा है ऐसा अंधकार का लाभ ले के केवल स्वार्थी ठग धर्माचार्य रूपी शृगाल आदिक हिंसक प्रानी अपना-अपना स्वार्थ-शिकार शव के ऊपर बड़े आनंद में जहां वहां सर्वत्र झूक रहे थे-हैं उस समय वहां आप जैसे भारत भूषण पुरुषोत्तम नरवीर पंचानन को किंब्मा अज्ञान तिमिर छेदक दिवाकर को परमदयालु परमाने[1] उत्पन्न किये। जिन की भयंकर गर्जना और प्रचडंशब्द तेज सून वा देख के उक्त प्रानी केवल भय भीत हो गये हैं और दूर ही से देख वा सुन के भागते फिरते हैं और छीप जाते हैं किन्तु किसी की क्षण भर भी सन्मुख होने की शक्ति दिख पड़ती नहीं अर्थात् सब विमुख ही हो गये हैं.

अब आप को विदित करने की मेरी मूल मतलब क्या हैं सो विदित् करता हूं:-

1. परमात्मा होना चाहिये। 'जिज्ञासु'

स्वामी जी महाराज, आरंभ से लेके आज दिन पर्यंत आपने जिन 2 विषयों के ऊपर जहाँ 2 व्याख्यान दिये हैं वह सभों का संग्रह (सत्यार्थप्रकाश के बिना अन्य) पुस्तक के आकार में मुद्रित होके प्रकाशित हुआ हैं? और यदि कोई लिया चाहैं तौ कहीं भी मिल सकेगा? "अहमदाबाद गुजरात वर्नाक्युलर सोसैटी" ने अवल "दयानन्द सरस्वति नुं भाषण" नाम ग्रंथ की मात्र एक प्रत उक्त पुस्तकालय में रखने के लिये खरीद करके ली हैं जिनकी कीमत रु० ०।। हैं वह पुस्तक कौन सा हैं? मंत्र भाष्य में जो लिस्ट दिया जाता हैं सो मुझे यथावत् मालूम हैं अर्थात् उस्से भिन्न अब यहां से इस पत्र बंद करने की आज्ञा लेता हूं। इस पत्र बड़ी त्वरा से लिखा गया है इस लिये अनेक दोष आपके दिखने में आवगैगा वह सभो को कृपा करके क्षमा कीजिये और श्रम लेके प्रति उत्तर का लाभ सत्वर दीजिये. ईति विज्ञप्ति. किमधिकम् ता० 26.12.81

मुः चीखली जिल्ले सूरत
बाया बिली मोरा

हस्ताक्षर कविमनः
सुखराम त्र्यम्बकराम

(1)

तपोनीधी स्वामी महाराज

मुकाम मंबई

सेवक खंडेराव पाडुरंग का नम्र नमोनारायण. अपने क्रपा करके खत भेजा सो पोहचा हाल मालुम हुवा. आपके ठेरने के वास्ते जगा भान दादा के बाग में तजवीज की है. वाहा पर पानी भी आछा है. दुसरी जगा बस्ती में घानी सोय कर नहीं है. आप जीस रोज आवेग उस संध्याना देवेंगे. ताबेदार सेवा करने में हाजर हे. हम पर द्रष्टी रहे। हेवीदन्यापना तरीख 27 माहे मई सन् 1882 ई मुकाम खंडवा।

खंडेराय पाडुरंग
का. क्लार्कआफ़स कोर्ट

(2)

।। श्री तपोनीधी स्वामी माहराज

मुकाम बंबई

सेवक खंडेराव पाडुरंग का नमोनरायण. आपको चारि दीन हुये कार्ड चीठी के जवाब में भेजा पोहच गया होगा. आब आप बंबई से कब चलेंगे

लीखेंगे. जगा आप के वास्ते बस्ती में श्रीमंत राव साहाब भुसकुठी बरानपुर वाले ईन की हावेली तजवीज कर रखी है. और बग में भी जगा पहले देख रखी है. वो भी मील जावेगी. क्योके माहाराज सीघींप सरकार की सवारी कब आवेगी पका हाल नहीं मालुम होता. आब ईन दो जगे मे से जो जगा आप पसंत करेंगे बाहा पर सामान रखवाने का बंदोवस्त कीया जायगा. बस्ती में जरा आड़चण होगी. वाग में हावा पानी का सुख है. लेकीन बस्ती में आपकी आने के सीधे जरा फासला होगा. आगर बरसाद न पडेगी तो बाग में सब तजवीज करेंगे आपको मालुम होनेकु वीनंती की हे चलने के आवल क्रपा करके खबर भेजेगे तो आछा होगा जास में बंदोबस्त कीया जायगा. हे वीद न्याय पन्थां 17 माहे जुन 1882 मुगे खंडवा।

खंडेराव पाडुरंग
का. क्लार्क आफ कार्ट

उं=श्री

बंवै से संमत् 1940 वैषाख सुद 9 मंगलवार आश्रम सायेपुरा-माहा शुभस्थांन्य

श्री सद गुरु-सत्यवेद धरम प्रकास कर्णार=जक्त प्रसीध श्रीमहान् स्वामी जी दयानन्द-सरस्वती जी की पवीत्र सेवा

गौ आदि प्राणी-रक्षण के प्रयोग बीषे में मैं आप के पास उदेपुर-आता था इतें में कानपुर अदालत में मुकदमा लड़ने कुं जाना हुवा जब आपकुं मैं सुचीपत्र लीखा था उसी की पौच आप कानपुर आर्यसमाज में भेजी सो मंत्री ने मेरेकुं बंचाई ओर आप के हस्ताक्षरकुं बोहोत प्रेम से मैं डंडब्रत कीया ओर उदेपुर सघ्रि आने का वचिार था परतु कचेरी में चार मैंने लग गहे पीछे फेसला हुवा जब कानपुर से नीकल के चैत्र सुदी 12 के दनि में अजमीर पौंच के मंत्री मुंनालाल के घरकुं दो बषत सायेपुरे की रस्ते की सला. पुछीवेकुं गया. तो भी मंत्री मीला नहीं और बहोत गरमी पड़ने से. सरीर प्रक्रती फीर गही. जब अजमीर से अेकदम. चैत्र सुदी 15 के दीन मैं बंबै आया पौंचा. अब सरीर में आराम है=ओर गोरक्षण बाबत सीघ्र कांम करनेंकुं मेरे प्राण. तलप रहे है. मगर थोड़ी वर्षा पडनें पीछे. श्रावण महीने में. आपकु मीलवे की मैं ईछा रखता हौं=

अब अपना अस्थानं. सायेपुरे में है। सो बर्षारतु में भी. ही हां ही होयगा. की ओर ठीकाने. नीवास होयगा. सो सवका. ठीकाना. पता. आपकी तरफ से. लीख आना चहीयें=

बंबैंकी. आर्यसमाज की. बीबस्था बाहोत कमजोर. देख कें. बोहोत. पश्चातप हो रया हो.[1] सो समाजकुं. अछी स्थीती में लानी चाहीयें. अेसे काम बास्ते आपकुं अवस्य मीलने चाता हौं=ओर आपकुं. फुरसद नहीं होयेगी तो भी. ईस पत्र की पौच. आप सीधी. डांक में मेरे नाम की लीख भेजना. ठीकाना. बंदरपर. मुडी बाजार में, ठकर, ईबजी, उमरसी, की दुकान में पौंचे, ईसमुजब, ठीकाना लीखने से पत्र सीघ्र पौच सकेगा. और कभी मंत्री सेवकलाल के पत्र में. मेरे पत्र का हाल. ओर पौंच लीखोगे तो. मेरेकुं बोहोत. तकलीप होयगी. सो केसें की सेवकलाल के. घरकुं. दीप्रती जावे. अैसे पांच-आठ दीन तक. चाकरी का काम छोड़ कें जावे. जब कोई बषत मीले तो भी. दो चार मलीटसें ईनकुं. अधीक फुरसद मीले. सो मेरे देखीवे में नहीं आती अैसी अपुरणता से. कोई कार्य सीध नहीं हो सकता. ईसी बसते आप क्रपा करकें. मेरे नाम. पर पौच डाक में भेजोगे तो जलदी से. सब बात मेरे जानवे में आवेगी. तो उनकी पौंच भी. सीघ्र लीखवे में आवेगी ओर आपके प्रताप से. सब कार्य सीघ्र सीध हो सकेगा=ये ही मेरी प्रार्थना का आप स्वीकार करोगे=ओर पत्र की. पौंच लीखोगे=

लिखितम्=जोसीलाल जी कल्याण जी के डंडब्रत बांचने

अनुपम मुकुटमणी पूजनीक

श्रीमद्दयानंद सरस्वती स्वामी प्रति

आपको कृपापत्र चैत्र विद 10 मी को लीखो सहापुरा सें आये सो पंहुच्यो माथे चढाय लीओ समाचार बांचकें अवर्णनीय आनद भयो. सेवकलाल का पत्र आपकुं ठीक 2 नहि मिलते सो सेवकलाल कुं जंजाल बहुत रहता और बीच में दो तीन वख्त बाहार फिरनें कुं काम प्रसंग से जाना पड़ा था। मेरे से पत्रव्यवहार रखने की आपनें ईछा जनाई सो मे सेवकलाल से दश पट आलसुओं का सिरदार हूं. आपने समाचार मंगवाय सो लिखता हुं।

1. घड़ी के लीये सेवकलाल से पुछने पर विदित हुआ की आपने जीस मेकर की घड़ी मंगवाई सो इहां तैयार न थी आजकल विलायत से आने वाली थी आ गई होगी तो भेजदी जायगी ऐसा ऊपर मिला.

2. समरथ दान ने रु 150 भेज कर टईप मंगवाय सो पूछने से जाना गया की उस्का काम चलता हैं तैयार होने से भेज दीया जायगा दस बारा दिन में

1. ऋषि के एक पत्र में लिखा है कि संसार में शुद्ध मनुष्य का मिलना बहुत दुर्लभ है। समाजों में आरम्भ से ही अनिष्टकारी तत्त्व बहुत घुस गये। महात्मा मुंशीराम, नित्यानन्द तो विरले थे। मूलराज वंश तो सर्वत्र घुसता गया। 'जिज्ञासु'

तैयार हो जायगा

3. आर्यस्थान का काम थोड़ा-थोड़ा चलता हैं तीन चार हजार का काम बाकी है सो सब कामदार आलसु होने से पुरा नहि होता हमारे मित्रों से हम महिने में एक दो रकम लेते हैं परंतु उस्से कुछ पुरा न होवे। राओ साहेब आदी सब एक चित्त से लग जावे तो दीख पड़ता है की रु 5000 तक हो जावे।

महाराज ने जो दीये सो आपने लीखा सो जान कर बहुत आनंद हुआ-

ईहां को चैत्र का उत्सव बड़ा आनंद से हुआ और जो आए सो सब प्रशत्र हुअे। बाकी का हम ठीक-ठीक चला जाता है सो जानोगे।

मुंबई संवत् 1939 के चैत्र सुल्क 15 शनीश्चर

ला० आपके सेवक **लीलाधार हरिदास** का साष्टांग दंडवत् प्रणाम[1]

श्रीनासीक

खुबचंद

केवलचंद

नं० 179

।।श्री।।

श्रीयुत दयानंद स्वामीजी

मुंबई

।। नमस्ते

केवलचंद खुबचंद सेठ के नाम नाम से आज तक वेद भाष्य के हिसाब बाकी समेत आ वल से, वसुल समेत उतार कर भेजने की आज्ञा होणे के वास्ते बीनती है-

द. केवल का

ता० 15 फेब्रु० 82 बुद्ध०

स्वामी जी

विनय पूर्वक विज्ञापना यह हे कि गत वक्त बुद्धि वर्धक सभा में आपका व्याख्यान हो न सका इसमें वहोत गम खा के यह ठहराने का बिचार रखता हों की काल शिवरात्रि को सायंकाल आप व्याख्यान करें। आप को कोई भी हरकत हो तो सेवक कों लिखें। कलाक कलाक टपाल निकलता है सो आप ऐसे ही कार्ड पर लिख पाओगे तीन बजे तक आप का खत की राह देख रहा

1. अन्त में अन्य भाषा के अक्षरों में आठ पंक्तियां लिखी हुई हैं जो कि पढ़ी न गईं।

हूं। फिर ईश्वर चाहे आदमी भेजना पड़ेगा।

सेवक बु. स. मंत्री

खत इस पते पर भेजीये।

मणिलाल नभुभाई द्विवेदी
गीरगाम मोरारजी गोकलदास वाला

मुबाई[1]

पण्डितेश्वर दयानंद सरस्वति

में आपकुं विनय पूर्व्वक ए लिखने कुं इच्छता हुं। जो भारत वर्ष निवासी विषेशतः ए मुबाई शहेर के रहने वारे, विधवा विवाह करना वा न करना ईस विषय परस्पर में वहु तर्क वितर्क कर हैं कोई केहते हैं जो ए करना उचीत हैं और कोई कहैते है जो ओ अनूचीत हैं एसी खट पट चलि रहि हैं और में एसा सुना है जो आप आगामी शनिवार अर्थात् कल्य सायंकाल के समय महाजन वाडी में आख्यान करोगे सो एसी आशा रखता हुं जो आप ये उपर लिखा हुआ विषय पर कूच्छ मात्र आख्यान करि के आर्यों का संदेह दूरि कृत करोगे।

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकचार्य श्री 108 स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज की ओर से रेवरेंडजासेफ कुक साहब को पत्र

REPLY To MR. JOSEPH COOK

(From Pandit Dayananda Saraswati to Mr. Joseph Cook).

Walkeshwar, Bombay
January 18, 1882

Sir,—In your public lectures you have affirmed—

(1) That Christianity is of Divine origin.

(2) That it is destined to overspread the earth.

(3) That no other religion is of divine origine.

In reply, I maintain that neither of these prospositions is true.

1. इस पत्र के अन्त में पत्र प्रेषक का नाम नहीं है।

If you re prepared to make them good, and to ask the people of Aryavarta to accept your statements without proof. I will be happy to meet you for discussion. I name next Sunday evening at 5-30, at which time I am to lecture at Framji Cowasji Institute. Or, if that should not be convenient to you, then you may name your own time and place in Bombay. As neither of us speakes the other's language, I stipulate that our respective arguments shall be translated to the other, and that a short-hand report of the same shall be signed by us both. The discussion must also be held in the presence of respectable witnesses brought by each party, of whom at least three or four shall sign the report with us; and the whole to be placed in a pamphlet form, so that the public may judge for themselves which religion is most divine[1].

दयानन्द सरस्वती

i.e. Dayanand Saraswati

अनुवाद

पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी की ओर से मिस्टर जासेफ़कुक साहब के पास

वालकेश्वर बम्बई
जनवरी 18.1882

महाशय!

आपने अपने सर्वसाधारण व्याख्यानों में निश्चय पूर्वक कथन किया है कि

(1) कृश्चिन धर्म्म ईश्वर मूलक है।

(2) यह पृथिवी भर में अवश्य ही विस्तृत हो जायगा।

(3) अन्य कोई भी धर्म्म ईश्वर मूलक नहीं है।

उत्तर में मेरा कथन है कि उक्त प्रतिज्ञाओं में से एक भी ठीक नहीं है। यदि आप उक्त प्रतिज्ञाओं को यथार्थ सिद्ध करना चाहते हैं और आर्यवर्तनिवासियों को अपने कथनों को बिना प्रमाण प्रस्तुत किए स्वीकृत कराना नहीं चाहते तो मैं प्रसन्नता पूर्वक आप से शास्त्रार्थ करने के लिये उद्यत रहूंगा। आगामि रावार सन्ध्या समय 5½ साढ़े पांच बजे जब कि मैं फ्रेमजी कावसजी इंस्टिटिउट में व्याख्यान दूंगा। शास्त्रार्थ के लिए नियत करता हूं। यदि उक्त समय आप की सुविधा का न हो तो आप अपनी इच्छानुसार कोई समय तथा

1. कर्नल आलकाट ने महर्षि के आशय के विरुद्ध यह अशुद्ध वाक्य लिखा, यहाँ which Religion is of divine orign बाद में किया गया। 'जिज्ञासु'

बम्बई का कोई स्थान शास्त्रार्थ के लिए नियत करें। क्योंकि हम दोनों में से कोई भी एक-दूसरे की भाषा नहीं बोल सकता अतः मैं निर्धारित करता हूं कि मेरे तर्क आप को और आप के तर्क मुझको अनुवादित कर सुना दिए जाएं और हम दोनों के कथन संक्षिप्त लेखबद्ध होकर उन पर हम दोनों के हस्ताक्षर हो जायं। आप की ओर तथा मेरी ओर से प्रतिष्ठित साक्षियों का भी शास्त्रार्थ में विद्यमान रहना आवश्यक है जिन में से तीन वा चार को उक्त संक्षिप्त लेख पर हम लोगों के साथ हस्ताक्षर भी करना पड़ेगा। उक्त शास्त्रार्थ पुस्तकाकार छप कर सर्वसाधारण के सन्मुख प्रस्तुत किया जायगा जिसे देख कर लोग अपने लिए निश्चय कर लेंगे कि कौन सा धर्म्म श्रेष्ठ ईश्वरोक्त है।[1]

श्रीयुत महाशय शिवलाल मुकंद मुम्बई का पत्र।[2]

ऊं

श्री 6 स्वामी जी महाराज शेति जग लिखित बम्बई शे बालमकन्द की प्रनाम भोत कर्के आगे रुपिया 250) केश्वलाल निर्भयराम कू प्राण जीवनदास मसटर के मारफत दे दिया है रसीद चूकते कि फरुखावाद कू भेज दि है रुपिया 31।।) पुस्तक चतुर्थ वर्ष के वेदभष्य[3] तक के आपका जमा किया वाकि 218।।) फरुखवाद से मूजरे लिये मैं आप कि क्रपा शे भात खुसि हुँ आपको पर्मातमा देव खुसि राखै पत्र उलटा दीजियो सब हाल लिखियो

फलगुण बदि चतुर्दसि

---

1. यहाँ श्रेष्ठ शब्द ऋषि के आशय के विरुद्ध कर्नल आलकाट ने जोड़ा। जिस अंग्रेज़ी राज में सूर्यास्त न होता था यह गोरा पादरी ऋषि को पीठ दिखाकर सात समुद्र पार भाग गया। वह ऋषि का सामना न कर सका। 'जिज्ञासु'
2. इस पत्र के पृष्ठ पर लिखा है "पत्र पहुचे आगरे, स्वामी जी श्री दयानन्द जी के पास" और आगरा डाकघर का मोहर 2 मार्च का है।
3. न जाने यह लेखक की चूक है अथवा मुद्रणदोष है, वेदभाष्य की बजाय वेदभष्य कर दिया। यह अक्षम्य भूल है। 'जिज्ञासु'

ओ३म्

पत्र व्यवहार

भाग (ख)

सिद्ध श्री 5 स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज को मुथरदास का प्रणाम पहोचे आप का पोस्टकार्ड आया हाल मालूम हुआ मैंने आजकी तारीख में मनी आर्डर 100) का आप के समीप भेज दिया है–बाकी 100 पीछे से भेज दूंगा–मेंने आप की आज्ञा के बिना एक मुर्खता की है वह यह है[1] कि वेदभाष्य भूमिका का अति संक्षेप से खुलासा करके उर्दूक्षरों में छपवाया हैं और उस में यह बिज्ञापन भी दे दिया है कि जो कोई मेरी लिखी हुई बात वेदभूमिका से विरुद्ध हो वह मेरी भूल है ग्रंथ की भूल न्हीं है फिर मुझको यह सोच हुआ कि बिना स्वामी जी महाराज की आज्ञा के क्यों मैंने उसको छपवाया–अब 300 पुस्तकें उर्दू की मेरे पास है मैंने आज तक उनको प्रचलित उन्हीं करी और ना कहीं भेजी–जो आप आज्ञा करो तो सारी पुस्तकें आप के समीप भेजदूं में उसका खर्च भी लेना नहीं चाहिता जो आप उनको पंसद करें तो बेदिक यंत्राल्य में रखा कर बिका देवें और उस का मुल्य यंत्राल्य में खर्च हो जावे।

मुथरादास[1]-मियाँमीर

श्रीयुत महाशय काशीराम जी मुल्तान का पत्र

(ख) 2

ओम्

श्रीयुत परमहंस परिब्राजकाचार्य सर्वोपकारी दिग्विजया र्कीय श्री 3 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरण कमल में प्रणति तति शुभदायका पहुंचे दश दिन हुवे कि स्वामी सहाजानन्द सरस्वती जी फरीदकोटराज ओ फीरोजपुर आर्य समाज से इस स्थान में पहुंचे ओर आर्यसमाज मुलतान में अनेक विषयों में व्याख्यान प्रदान किये जिस से हम सब आर्यस्थ तथा अन्य लोग भी आनन्दित हुवे ओर स्वामी जी अभी तक इसी जगह स्थित हैं ओर व्याख्यान दे रहे हैं हम उनको धन्यवाद देते हैं कि ऐसे सुललित व्याख्यान

1. ऋषि दयानन्द को जहाँ पग-पग पर समाज द्रोही विश्वासघाती कई जन से पाला पड़ा। वहाँ श्री मथुरादास से समर्पित श्रद्धालु समाज सेवक भी कई मिले। 'जिज्ञासु'

सत्यशास्त्रादि प्रमाण युक्त से हम लोगों को सुशिक्षित कर रहे हैं और अन्य स्थानों में भी करें आशा है कि यदि इसी प्रकार दो चार ओर उपदेशक महात्मा आप की कृपा से हों तो अति शीघ्र देशोन्नति हो जावे ओर सत्यधर्म प्रकाशित होवे।

ओर धन्यवाद पत्र जो वैदिक यंत्रालय से आया था उस पर प्रधानादियों के हस्ताक्षर करा के महाराणा उदयपुराधीश की सेवा में भेजा गिया है।

आशा है कि आप पुनरागमन से हम लोगों को सुशिक्षितं करेंगे अवकाशानुसार। विज्ञतमेषु किमधिकम्।

अपका चरणसेवक

काशीराम

उपप्रधान आर्य समाज

15 जुलाई 1883 मुलतान

श्रीयुत महाशय गोपाल सहाय जी करनाल का पत्र

(ख) 3

ओउम्

आर्य्यसमाज करनाल

श्रीयुत मान्यवर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते।।

विदित हो कि यहां श्रीस्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी के उपदेश से आर्य्यसमाज स्थापित हुई है और इस समाज में मुंशी शिवप्रसाद साहब मजिस्ट्रेट व बाबू गोपालदास साहब इंजीनियर करनाल प्रधान उपप्रधान हैं इसलिये आपसे निवेदन करते हैं कि आप कभी कृपा कर कै यहां सुशोभित हों कि यह महा पोपों का नगर है और 7 अक्टूबर को स्वा० आ० स० जी यहां से जावेंगे आप सदैवकाल इस समाज पर कृपा दृष्टि रक्खें। 5.10.83

गोपालसहाय

मन्त्री आर्य्यसमाज, करनाल।

महाशय श्यामदास जी अमृतसर का पत्र

(ख) 4

ओम्

स्वस्तिश्री सर्वशक्तिमते नमः श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी को श्यामदास का प्रणाम हो समाचार यह है मैंने आप के पुस्तक सब देखे है परन्तु अनेक

संशय है जो आप उत्तर देना स्वीकार करो तो मैं प्रश्न लिख के भेजूं क्योंकि जो आप का आशय है उसके जानने वाले आप ही हो और आपके शिष्यादिकों का उत्तर आप के उत्तर सम नै होगा। आगे षट्दर्शनों के कै एक भाष्य नै मिलते सो आप को मालूम होगा कि कहीं वे सब भाष्य छपे हुए मिल सक्ते है या नै और जो 2 गृह्यसूत्र श्रौत्रसूत्र आपने लिखे है वे सब प्रायः नहि मिलते इस्वास्ते यह आशा है कि आप के पास तो वे सब पुस्तक है आप किसी नियम द्वारा देखने वास्ते दे सकोगे वा नै और उपवेदों के भी पुस्तक नहि मिलते आयुर्वेद का धन्वन्तरि कृत निघण्टु नहि मिलता सो आप को मालूम होगा कि कहीं छपा है या नहि और नै छपा तो आप के पास तो होगा आप लिखने वास्ते दे सकोगे और उसमें औषधनाम और गुण मात्र ही लिखा है वा आकार पत्र दुग्ध इत्यादि भी लिखा है इसका कृपा कर्के उत्तर लिखना जरूर मुझे इस पते पर पत्र भेजना।

शहिर अमृतसर कटरा खजाने का बाग चौधरी की गली में

शामदास,

महाशय शिवनाथ लक्ष्मीनारायण विद्यार्थी गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर का पत्र

(ख) 5

गवमिंट कालेज, लाहौर

ता० 23.4.82

श्री 5 पण्डित दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते। हम शिवनाथ और लक्ष्मीनारायण गवर्मिंट कालेज के विद्यार्थी आप के रचित वेदभाष्य को पढ़ना चाहते है और इस कारण हमने प्रियाग में वैदिक यन्त्रालय में चिट्ठी भेजी थी और दश 10 रुपये का मनिऔरडर भी भेजा था उस चिट्ठी का उत्तर हम इस में भेजते हैं।

चूंकि हम विद्यार्थी है और बहुत रुपया इकट्ठा नहीं बचा सकते इस कारण हमने उन्हें लिखा था कि हम कम से कम दश रुपये साल भेजते रहेंगे आप हम को प्रथम से आज तक के नामबर भेज दे और आगे को भेजते रहैं और यह भी प्रतिज्ञा की थी कि जब हमारे पास जियदा दाम होंगे तो और भी भेजते रहेंगे बल्कि हो सका तो इसी साल के अन्दर पिछली सारी कीमत भेज देंग।

अब हमें आशा है कि आप उनको आज्ञा दे देंगे कि वह हमारी दरखास्त को मंजूर करै और वेदभाष्य पिछले भज दें और आगे को भेजते रहै

आपके दासानुदास
शिवनाथ और लक्ष्मीनारायण।
स्टूडेंट गर्वमेन्ट
कॉलेज लाहौर

SHEO NATHA & LACKSHMI NARAYAN[1]
Students Govt College
LAHORE

श्रीयुत महाशय लेखरामजी मंत्री आ० स० पेशावर का पत्र

(ख) 6

ओं

सिरी स्वामीजी महाराज प्रमात्मा जयते।। नमस्ते रिसाले आरया दरपन से जो 31 मई 82 को जारी हुआ है बहुत शोग हुआ=मुनशी जगन्नाथ दास ने जो आरया प्रश्नोत्री नाम ईक पुस्तक बनाई है उोर आमे उुस पर शंका लिख भीजी मुंशी ईद्रमुन जी प्रधान आरया समाज मुरादाबाद को भी सुनागिआ के आप्ते सख्त सुस्त लिखा अब मुनशी जगन्नाथ दास ने आरया दरपन में अेसे शुबे लेखे हैं।। जो आप की तरफ से सब सिमांजो को शक में लानेवाली हैं अगरचे बसबब बदचलनी बखतावर सिंग कें वोह रिसाला कुल समाजों में नहीं जाता लेकिन फिर भी वुहत जाता है महाराज जी अेसे अेसे काम सब किता हेके पुखता खेती प्र ओले पणते हैं अब प्राथना ये हे के आप क्रपा कर के चुप हो रहैं ओर आगे को अेसे लाईकों का दिल न तोणो। अगर येह बेनती मेरी आप मान लें तो अब कुछ नहीं गेआ मानना वाजब हैं वरना निफ़ाक के सबब अेक अेक हो कर सब त्रफ़ फिर वेसा ही अंधेर मच जावेगा मुनशी ईदरमुनीजी को भी मेने लिखा हे वुह भी उुमेद हे के मान जाईगे।

1. श्री लक्ष्मीनारायण आर्यसमाज लंडन के संस्थापक मन्त्री, देशभक्त ऋषिभक्त, वेदरक्षक तथा स्वाध्यायशील थे। 'जिज्ञासु'

आप भी खिमां कीजई

7.5.82[1]

लेखराम मंत्री

आरया सिंमाज पेशावर

सब आरया भायों की उोर से दसबसता नमस्ते भाई करम सिगजी को भी नमसते।[2]

लेखराम

साधु आलाराम कराची सिन्ध का पत्र

(ख) 7

श्री 108 मन्नमान पण्ड दयानन्द सरस्वतीजी नमस्ते।।

आप को विदित हो कि सिंधु किराची इक निर्मला वेद विरुध पुराण मतवादी और दूसरा रुद्रदत ब्राह्मण वेद विरुद्ध पुराणवादी अजकल प्रतिमा पूजन सिद्ध कर रहे है किसी ग्रहस्थ द्वारा मुझ से संका मंगा कर वेद प्रमाण से प्रतिमा पूजन की आशा करी और पत्र द्वारा लिख भेजा अर्थात् त्वेश्रया ये श्लोक लिखा और कहा कि ये ऋग्वेद का श्लोक है फिर मैंने इक मयाराम ब्राह्मण और इक बनीए को उस निर्मले पास इस लीइ भेजा कि अपने हाथ की सही डालो जो फलाने अष्टक के फलाने अनुवाक्य का फलाना मंत्र है उसने सही डाली कि ये यजुर्वेद के आरण्य का वाक्य है फिर रात्र को उसकी सफा में इक बनीइ ने जाकर कहा कि तुम लोगों ने वेद प्रमाण से प्रतिमा पूजन की आशा करी थी अब वेद विरुद्ध प्रमाण देकर अपनी प्रतज्ञा की हानी किस लिइ करी अब अैसी सही डालो वेद प्रमाण ना देकर जो झूठा हुआ उसका काला मुख कर गद्धा पर चढ़ाना चाहिये इतने में वह धुर्त बनीइए को वोले कि जावो ना तो हम जूतिया लगाइये और यह वी हम किसी से सुना है कि दयानन्द जी दस बीस रोज तक सिंद्धु में आने वाले हैं सो ठीक है वा नहीं जब आप को वेद मत प्रगट कर्नें की द्रिड आशा है तो सिंद्धु मै विदित हो जाय कि प्रतिमा पूजन से पाप है तो फिर सब का सुद्धारा होगा मैंने तो आप के बनाइ शास्त्र

1. ऊपर आर्यदर्पण 31 मई की चर्चा है सो यह पत्र सात जून 1882 को लिखा गया, न कि सात मई को 'जिज्ञासु'
2. भावुक हृदय धर्म रक्षक पं० लेखराम एकता के पोषक थे। 'जिज्ञासु'

म्रजादा से बहुत वेरी प्रतमा खंडन कीआ है।[1] इस पत्र का समाधान शीघ्र भेजना।

हस्ताक्षर आलाराम्।।

और आप के बने पुस्तकों कूं क्रिस्तान के बवोनिर्मला विद्याहीनोपस बोलता है और यह भी मूर्खोपास कहता हे कि कांसी मैं दयानन्द को पण्डतो पराजया कीया

म० क्षेमकरणदासजी मंत्री आ० स० कॉलेज लाहौर का पत्र

(ख) 8

ओम्

नं ० 11 आर्यसमाज, मुरादाबाद

ता० 17.9.1883

सिद्धि श्रीपरमहंस परिब्राजकाचार्य श्री 108 श्रीमत् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज समीपेषु जोधपुर

महाशय,

नमस्ते, श्री जगदीश्वर की कृपा और आप के आशीर्वाद से समाज उन्नति पर है। आगे निवेदन है कि यह बात देखे जाने पर कि मुक्ति विषय में कहीं-कहीं पर परस्पर विरोध है इसलिये 8 सितंबर 1883 को खास अंतरंग सभा में मुक्ति विषय देखा गया तो जान पड़ा कि वेदभाष्य भूमिका पृष्ठ 184, 187 (मुक्ति विषय) आर्याभिविनय पृष्ठ 16, 23, 42, 43, 44, 45, 48, 55, पंचमहायज्ञविधि पृष्ठ 56 और आर्योद्देश्य रत्नमाला अंक 29 से साबित होता है कि मुक्ति जीव जन्म मरण रहित हो जाता है और संस्कृत वाक्य प्रबोध पृष्ठ 50 में लिखा है कि "जो जीव मुक्त होते हैं वे सर्वदा वहां नहीं रहते किंतु जितना ब्राह्मकल्प का परिमाण है उतने समय तक ब्रह्म में वास कर के आनन्द भोग के फिर जन्म और मरण को अवश्य प्राप्त होते हैं।" जो कि संस्कृत वाक्य प्रबोध और ऊपर लिखित लेखों में हम तुच्छ

1. कुछ वर्ष पश्चात् भले ही आलाराम ऋषि निन्दक व अंग्रेज भक्त बन गया। सन् 1884 में मेरे जन्म स्थान के समीप के एक ग्राम खानांवाली में प्रचार करते वह यह लावनी बड़े जोश से गाकर सुनाता था। "धौल दाहढ़े मरें पुत्र आर्य बन जायेगे।" अर्थात् जब श्वेत दाढ़ी वाले वृद्ध मरेंगे तो इनके पुत्र आर्य बन जायेंगे। 'जिज्ञासु'

बुद्धियों को परस्पर विरोध देख पड़ता है इसलिये अंतरंग सभा की ओर से सविनय निवेदन है कि कृपा करके इसका उत्तर सप्रमाण शीघ्र लिखिये कि उसी के अनुसार निश्चय माना जावे और विरोध पक्षवालों को भी तदनुसार उचित समय पर उत्तर दिया जावे।। अति अवश्य जान कर आप के बहुमूल्य समय में हानि डाली गयी और आशा है कि इसके उत्तर से शीघ्र कृतकृत्य करैंगे।। आगे शुभ।।[1]

आपका आज्ञाकारी
क्षेमकर्णदास
मंत्री आर्यसमाज, मुरादाबाद

श्याम सुन्दर का हाथ जोड़ कर नमस्ते। आप के दर्शनों की मुझ को और सब सभासदों को बड़ी अभिलाषा है।

श्रीयुत बाबू लक्ष्मण स्वरूप जी वकील महला खंदक मेरठ का पत्र

(ख) 9

ओं

विद्वद्भूषण चतुर्वेद विचक्षण श्रीमत्स्वामी दयानंक्ष सरस्वती जी महाराज को लक्ष्मण स्वरूप वकील का प्रणाम–मु० बख़्ताबर सिंह के मुकद्दमे के लिये में इलाहाबाद गया था और हाईकोर्ट के वकीलों को मातहत जज शाहजहांपुर की राय दिखलाई।। उस वक्त तो निश्चित् सम्मति नहीं दी परन्तु अब द्वारिका प्रसाद बेनरजी जो बड़े बुद्धिमान्, प्रसिद्ध और वकील सर्कार भी हैं इस पत्र द्वारा नजरसानी की सम्मति देते हैं और 200 महनताना मांगते हैं यदि आप उचित जानें तो एक कोरे काग़ज पर अपने हस्ताक्षर के भेज दीजिये–असूल चिट्ठी उक्त बाबू जी की आप के देखने को भेजता हूं–

आप का किङ्कर ज्योतिस्वरूप सविनय प्रणाम करता है और एक संदेह की निवृत्ति चाहता है–और वह यह है–कि आपके वेदाङ्ग प्रकाश में सिद्धान्त कौमुदी से सूत्र कम मालूम होते हैं–ताद्धितः सिद्धान्त के तद्धित से बहुत कम है–कृपा करके इसका कारण लिखिये–या तो आप अगले अङ्कों में शेष सूत्र देंगे–या वह पाणिनीयाष्टाध्यायी में नहीं–या छोड़ दिये हैं–मुझ से कई आदमी

1. सीमित कर्मों का फल ससीम ही होगा सो जीव मुक्ति से अवश्य लौटता है। लेखक लिपिक जान बूझकर ग्रन्थों में गड़बड़ करते रहे। 'जिज्ञासु'

जो खरीदना चाहते हैं पूछ चुके हैं–उत्तर शीघ्र दीजिये–

आपका दास
लक्ष्मण स्वरूप
महल्ला खंदक, मेरठ

Allahabad
16th April 1882

LALA LUCHUMN SUROOP,

DEAR SIR,

In the case of Dyanund Saruswati. I cannot advise an appeal but the order of the Sub-Judge may be revised by the High Court under Sec. 622 of the Code. If you then feel disposed to take action in the matter as I have indicated please send me the necessary Vakalatnama from Dyanund Saruswati and a fee of Rupees two Hundred for myself and another Council, who will have to be employed-besides Rupees 16 to cover all other incidental charges expenses.

Yours Faithfully,
DWARKA NATH BANERJI.

श्रीयुत महाशय रामशरणदास जी मेरठ के पत्र

(ख) 10

ओ३म्

श्रीस्वामीजी महाराज नमस्ते

आपका 24 फरवरी का लिखा पत्र बाबू शिवनारायनजी के पास पहुंचा यहां तक का तो हाल आप को मालूम हो गया होगा कि लाला बखतावरसिंह ने पंचायत में अपना मामला फसल[1] कराने से इन्कार किया उस्के पीछे शाहजहांपुर के मातहत जज के यहाँ 10) रुपये के कागज पर नालिश की गई कि जज मातहत इनकी पंचों से मुकद्दमें का फैसला करावे इस्के लिये 9 फरवरी मुक़र्रर हुई यहां से मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप और मुन्शी कामता प्रसाद पैरवी मुकद्दमें के लिये भेजे गये लाला वख्तावरसिंह ने अपनी तर्फ़ से वारिस्ट नियत किये 3 दिन तक वहस रही निदान हाकिम ने हमारा दावा खारिज

1. यह शब्द फैसला होना चाहिये। 'जिज्ञासु'

किया और खर्चा अपना-अपना अपने जिम्मे। हाकिम ने यह भी कहा कि जो तुम को दावा है तो नम्बरी नालिश अदालत में करो हम पंचायत में मुकद्दमा नहीं भेजेंगे अभी नकल मुकद्दमें की नहीं आई है जब नकल आ जायगी फौरन इस हुक्म का अपील हाईकोर्ट में किया जायगा–

आपने सुना हेगा कि कर्नल अल्काट साहिब 25 फरवरी को मेरठ में तशरीफ लाये और यहां थियोसाफीकल सुसाइटी की शाख नियत हुई अब संभव है कि कोई मिम्बर आर्य्यसमाज थियोसाफीकल सुसाटी में होना चाहे तो इस अवस्था में क्या किया जावे आया थियोसाफीकल सुसाटी के मिम्बर को आर्यसमाज में भरती करें या नहीं और किसी आर्य को सुसाटी में भरती होने की आज्ञा दे या नहीं और अगर नहीं तो क्यों परन्तु आप को इस्के उत्तर लिखने में इस बात का भी ध्यान रहे कि पहले से भी यह चला आता है कि एक ही मनुष्य दोनों जगह का मिम्बर है और न दोनों सुसाटियों के नियमों में यह बात है कि एक का मिम्बर दूसरी जगह शामिल न हो–

इस्का उत्तर शीघ्र दीजिये।

9.3.82 में हूं आपका सेवक
और समाज का मंत्री
राम शरणदास, मरेठ
समाज की तर्फ से नमस्ते पहुंचे

(ख) 11

OM! TAT SAT!!
ARYA SAMAJ-MEERUT

(Established in 1878, A.D., by the Ven'ble Pandit Daya Nand Saraswati, Swami, Vedic Reformer of Inida, in the Parlour of Lala Ram Saram Das, Landholder and Resident of Meerut.

Kanungoyan Lane City,

No. 440

21 जनवरी सन् 83

To,

Dear Sir,

श्रीयुत महामान्यवर स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज नमस्ते।

आपका पत्र मुन्शी इन्द्रमणि के विज्ञापन समेत जो इन्द्रवज्र के समान था आया मुन्शीजी ने तो अपना विज्ञापन यहाँ नहीं भेजा परन्तु अजमेर और आगरे के समाजों से आप के भेजने से पहिले आ गया था–जहाँ-जहाँ से मेरठ आर्य्यसमाज में मुंशीजी के मुकद्दमें के लिये रुपया आया था वहाँ 2 को आय और व्यय का लेखा भेज कर शेष के लिये पूछा है कि क्या किया जावे एक प्रति उसकी की आप के समीप भी भेजी जाती है–**अभी केवल फर्रुखाबाद से उत्तर यह आया है कि रुपये को व्याजू देदो फिर किसी और ऐसे ही काम में लगा दिया जायगा जब सब** स्थानों से उत्तर आ जायंगे तब मुन्शीजी के विज्ञापन और मित्रविलास आदि समाचारों के कि जिन्होंने उक्त विषय में धूम मचाई है यथोचित उत्तर नागरी, उर्दू और अंगरेज़ी में दिये जायँगे-गोरक्षा संबंधी पत्र जो आप के समीप पहुँचे हैं वह मेरठ के समाज ने भेजे हैं उसके पश्चात् और कहीं से नहीं आये जो और भेजे जाते पण्डित विहारीलाल ने जो इस समाज के सभासद थे और थियो सफिकल सुसाइटी में भी हो गये थे **अब थियोसफिकल सुसाइटी से इस्तेफ़ा दे दिया यहां के समाज का पंडित निहस्संदेह पोप है दूसरे पंडित की तलाश है जिस समय मिल जायगा रख लिया जायगा**–सब सभासदों का नमस्ते पहुँचे-अब आप उदय पुर से किधर को पधारेंगे-लाला रामशरणदास का विचार उदयपुर आने का नहीं है। अलमिति

आपका दास,
समाज का उपमंत्री
रामशरणदास,

(ख) 12

ओ३म्

25 सितंबर 1883

श्रीमत्स्वामी दयानन्द सरस्वती समीपेषु–

महाशय नमस्ते।

भाई जवाहिरसिंह प्राइवेट सिक्टरी महाराज शाहपुर के लिखने से विदित हुआ कि आप मसौदे होते हुए कलकत्ते की नुमायसमें जायंगे। इस समाज का उत्सव 7 अक्टूबर सन् 1883 ई० का है जिसके लिये पहिले आप की सेवा

में निवेदनपत्र भी भेजा है जहाँ तक संभव हो मेरठ होते हुए जायँ। क्योंकि आप को इधर आये हुए दो वर्ष से अधिक हुआ सभ्यगण आपके दर्शनाभिलाषी हैं। आप कलकत्ते अवश्य जायँ वहाँ जाने से समाज स्थित होगा और लोगों का बड़ा उपकार होगा चिरकाल से वहाँ[1]....आपके कलकत्ते में पधारने के लिये उत्कंठित हो रहे हैं। यहाँ के बहुत से सभासद और मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप वकील प्रधान समाज और मैं और कई लोग भी आना चाहते हैं परन्तु जब तक कोई स्थान निश्चित पहिले से न हो जाना कठिन जान पड़ता है यदि आप ने कोई प्रबंध स्थानादि का किया हो तो उस्से सूचित कीजिये जो हम लोग और अन्य सभासद आने का प्रबंध करें। और फर्रुखाबाद में जो लाला जगन्नाथदास और बाबू दुर्गा प्रसाद में कुछ परस्पर विरोध हो गया है उसकी निवृत्ति के लिये एक पत्र अवश्य भेजिये नहीं तो समाज की हानि होगी। और आप मसौदे कब तक जायँगे इस से भी सूचित कीजिये।।[2]

आपका चरण सेवक
रामशरदास

श्रीयुत महाशय कालीचरण आर्य्यसमाज (फर्रुख़ावाद) के पत्र

(ख) 13

आर्यसमाज फर्रुखावाद
19.4.83

मान्यवर

श्रीमत्सच्चिदानंदस्वरूपाय परमगुरवे नमः

इस पत्र के साथ भगवतपुर के पं० महादेव का पत्र पहुंचता है। इस्के आर्यधर्म की ओर सुरुचि की प्रशंसा पं० तुलसीदास मंत्री समाज इटरी ने (जो यहां वार्षिकोत्सव में आए थे) की थी–एतदर्थ यह उत्साही जान पड़ता है।

आप की कृपा से 15 अप्रैल को समाजोत्सव खूब आनंद पूर्वक हुआ,

1. जहां लीडर अर्थात् विन्दियां हैं वह भाग असल पत्र का फट गया है।
2. इस संग्रह में ऋषि के पत्र थोड़े है। ऋषि जी के नाम लिखे पत्र अधिक हैं। इन पत्रों में मतभेद विवाद की बातें अधिक हैं। लगता है बहुत से लोग ऋषि के तेज, ऋषि के प्रभाव, शोभा को देखकर समाज से जुड़ गये। धर्म भाव थोड़ा था। उनमें स्वार्थ अधिक था। 'जिज्ञासु'

मेरठ-कानपुर अकबरपुर-शिवली आदि से आर्य लोग आए थे बड़ा ही आनंद रहा। शाहपुरा के सुसमाचारों से विदित कीजिए और मान्यपत्र की नकल भेज दीजिए देखने की बहुत इच्छा है।

सेवक
कालीचरण

(ख) 14

आर्यसमाज फर्रुखाबाद
ता० 14.6.83 ई०
नं०

श्रीमत्सच्चिदानंद स्वरूपाय परमगुरवेनमः

मान्यवर

एक प्रति धन्यवाद पत्र की वास्ते भेजने महाराणा उदयपुर के मुन्शी समर्थदान जी ने भेजी है उसके अंत में सभापति उपस० मंत्री आदि के हस्ताक्षर हो जाने लिखे हैं। अब प्रश्न यह है इस भेजने के विषय में आप की भी सम्मति है वा मुन्शी जी ने ही स्वतंत्रता पूर्वक लिखा है और सभापति ला० निर्भयराम जी यहां नहीं हैं उनके फिर कैसे हस्ताक्षर होवें, और शेष सब मंत्री, पुस्तकाध्यक्ष आदि सब के ही तत्मुद्रितानुसार हस्ताक्षर होने चाहिए वा दो एक ही प्रधान आदि कै, उत्तर से शीघ्र ही वाधित कीजिए वैसा किया जाय तथा जोधपुर और शाहपुरा के सुसमाचार लिखिए

कालीचरण

अनुचरण गणेश प्रसाद लेखा. की बहुत 2 नमस्ते

(ख) 15

ॐ

आर्य समाज फर्रुखावाद
2.5.83 ई०

श्रीमत्सच्चिदानंद स्वरूपाय परमगुरेव नमः

मान्यवर

कृपा पत्र आया इति वृत ज्ञात किया, मान्य पत्र की प्रति पहुंची, हिसाब

देख लिया 300 रु० की हुन्डी इस पत्र के साथ रख दी है। पाठशाला की यथावत् व्यवस्था दूसरे पत्र में इसके साथ नत्थी है।

वैदिक-प्रेस में पं० रामनाथ को भेजा था इस अंतर में दूसरा मनुष्य वहां नियुक्त हो जाने से रामनाथ लोट आए-यंत्रालय का हिसाब किताब वही खाता दुरुस्त नहीं है। हमारी समझ में जब तक कोई सराफी पढ़ा अच्छा प्रामाणिक मुनीव नहीं रहेगा ताव त्काल हिसाब ठीक-ठीक नहीं चल सकेगा, यह रुपये का विषय है इसमें ठीक-ठीक प्रबंध होना चाहिए आगे जैसी आप की सम्मति हो, उचित जान निवदेन किया, शेष सर्व प्रकार आनंद है। शाहपुरा के सुसमाचारों से वाधित कीजिए।,

कालीचरण

पूज्यतम नमस्ते, (इतः सेवराम की ओर से)

हुन्डी 300 रु० की बंबई की अपनी कोठी से वालमकुंद परसराम पर भेजते हैं सो लेना, अभी मैं यहीं हूं। चिट्ठी देश की आया करती हैं। ला० निर्भय रामजी के आने में अभी देर है जब तक वे नहीं आवेगे, मैं यही रहूंगा

दः सेवाराम

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी फर्रुखाबाद के पत्र

(ख) 16

ॐ

श्रीमन्महाशय मान्यवर श्री 6 स्वामि पादपद्मनिकटे बाबू दुर्गाप्रसादस्य नमस्ततयो भवन्तु श्रीमन् कृपापत्र आपका आया समाचार ज्ञात हुये आपने 2 मनुष्यों को वैदिक यन्त्रालय के कार्यार्थ लिखा एक पुस्तक शोधनार्थ और दूसरा पुस्तक और खजाने के सम्हाल के लिये सो पुस्तक शोधनार्थ पण्डित प्रयागदत्त को पूछा तो उसने उत्तर दिया कि 2/4 दिन में निश्चय करके कहूंगा सो 2/4 दिन में उस्का निश्चय पत्र भेज कर आप को करा दिया जावेगा या तो प्रयाग वैदिक यंत्रालय को जावेंगे या ना करेंगे और कोशादि कार्य के लिये योग्य मुरादाबाद निवासी रामजीमल हैं जो प्रथम कायमगंज जिला फर्रुखावाद में नौकर थे परन्तु वर्त्तमान काल में वे किसी रईस के यहाँ नौकर हो चुके हैं उनको लिखा जावेगा यदि वे उक्त कार्य को स्वीकार करें तो शीघ्र ही तो नौकरी वैदिक यंत्रालय से अलग तो न किये जावेंगे यह लिखियेगा और जो अति शीघ्रता हो यदि आप भी पसन्द करें तो तब तक रामनाथ को भेजदूं वह आपके पास रह चुका है।

कोशादि का काम शायद कर ले सकेगा शोधक के विषय में निश्चय पूर्वक अनुमान 2/4 दिवस के भीतर आपके पास पत्र भेजा जावेगा और द्वितीय मनुष्य के लिये अन्यसमाजों को भी लिखये मैं भी य तलाश में रहूंगा और आज[1]...मंत्री आर्य समाज लाहौर का मेरे पास पत्र आया है उस्में उन्होंने लिखा था कि चिरकाल से श्री स्वामीजी महाराज का कोई पत्र लाहौर समाज को नहीं आया और सब लोगों को उदयपुर सम्बन्धी समाचारों के जानने की अत्यन्त अभिलाषा हो रही है इसलिये निवेदन आप से किया जाता है कि आप कृपा करके एक पत्र समाज लाहौर को अवश्य लिखवा भेजियेगा और उदयपुर में भगवत्पादपद्मों की स्थिति अब कब तक रहेगी इस बात से और कोई नवीन बात हो तो सूचित कीजिये नितरांकृपास्तु भृत्यानामुपरिकिमधिकं महत्सु मिती माघ शुदि 14 भौमे ता० 20 फ० स० 83 ई० मंत्री आदि सभासदों की नमस्ते लीजिये।

ह० आपका कृपाभिलाषी

बाबू दुर्गाप्रसाद

आपके पादपद्म परागसेविनो लक्ष्मीदत्तस्यापि प्रणतितिः स्वीकार्या

(ख) 17

ॐ

श्रीयुत पूज्यतम पादारविन्देषु

कृपापात्रस्य दुर्गाप्रसादस्य नमश्श्रेणयो विलसन्तु भगवन् पत्र आया वृत्त विदित हुआ बड़ा आनन्द हुआ कि आप योधपुराधीश की राजधानी में सुशोभित हुये और वहां के भद्रपुरुषों ने आपके चरणकमलों की दर्शनाभिलाष की आन कर मिले आमों के लिये हमने वनारस को लिख दिया है वहां से आम आप के पास पहुंचेंगे और यहां जब मिलेंगे तब यहां से भी भेजेंगे और पठन पाठन का प्रबंध आप के लिखे अनुसार किया जावेगा और जोधपुर के जो आगामि काल में वर्तमान हो कृपा करके शीघ्र शीघ्र सूचित करण द्वारा अनुगृही करते रहना।

ह० बाबू दुर्गाप्रसाद

ता० 7 जू 83 मि० ज्ये शु० 2 गुरौ

1. जहां लीडर अर्थात् विन्दियां हैं वह भाग असल पत्र का फटगया है।

(ख) 18

ॐ

श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य पूज्यपाद श्रीस्वामी जी महाराज कोटिशः प्राणामानन्तर ज्ञात हो कि श्रीमान का कृपापत्र आया समाचार विदित हुआ आदिमी के विषय जो लिखा सो यहां तो कोई नहीं मिलता है एक आदमी नारनौल में मिला था आप को लिखा भी था परन्तु आप का उत्तर फिर कुछ नहीं मिला इसलिये अब तक ढील रही अब फिर नारनौल में ढूंढ की जायगी मिलने पर आप को सूचित करूंगा और द्रव्यादि के विषयक जो लेख आया उस्का उत्तर मेरी समझ में यह आता है कि यदि अल्प व्याज अपेक्षित हो तो नोट लेना उचित हैं क्यों कि उस्में वखेड़े नहीं है और जो आप की अनुमत्यनुसार प्रबंध किया जाय जैसा कि आप का लेख है मुझे तो किसी प्रकार कोई बात अस्वीकृत नहीं है परन्तु इस्में परामर्श अपेक्षित है पत्र लेख से यथा रीति इस्का प्रबन्ध न हो सकैगा अतः यदि शीतकाल में श्रीमान् इधर कृपा करें वा ऐसे समीपस्थ हों जहां हम लोग सुगम से आपके पास उपस्थित हो सकें तो अच्छा होगा।

और यह भी इस व्यवहार में प्रथम जानने योग्य बात है कि आपके पास द्रव्य कितना है लिखयेगा जिस से तदनुसार सम्मति दी जाय यह पत्र मैंने केवल अपने विचार से लिखा है 8/10 दिन में अन्तरंग सभा होने वाली है उस्मे आप का पत्र सभामध्य किया जायगा सभा की जो सम्मति होगी फिर लिख जावेगा और भरतपुर में कोई अपना सम्बन्धी वा मित्र नहीं है जो कि चोर का पता लगा सके और खटाई आपके लिये अब तक रखी है आपने लिखा नहीं सो अपेक्षित हो तो लिखयेगा।

किम्बहु महाप्राज्ञेषु

ता० 24 स० 83 ई०

ह० श्रीमदीय दुर्गाप्रसाद

श्री साधु अमृतराम नवीन वेदान्ती का पत्र

(ख) 21

॥ ॐ खंब्रह्म॥

[1]॥श्रीमद्दयाऽऽनन्द स्वामी की सेवा में प्राऽर्थना श्रीमद्भारतीय प्रजा के

1. इस पत्र के सम्बन्ध में श्रीयुत पण्डित गोपालरावहरि जी फर्रुख़ाबाद का निम्नङ्कित पत्र है--

अतीव हितकारी हैं अतएव श्रीमान्कों परमेश्वर चिरायु करैं श्रीमान् 1999 मतनकों खंडित करते हैं सो परस्पर पक्षपातीय होने तैं खंडनीय हैं उक्त मताऽनुसार श्री मत्स्थापित मत का भी खंडन होने तैं श्रीमान्ने यह निर्णय किया है कि मिथ्याऽभिमान स्वाऽर्थ साधन में तत्पर अन्याय का करणां पाप मैं प्रवृत्ति चोरी जारी अनृत भाषण पक्षपात किसी का नुकसान इत्यादि निषिद्ध कर्मों को छोड़नां और इनसे विपरीत सद्धर्माऽनुष्ठान करणां इस प्रकार श्रीमत्के मुखाऽरविन्द

।। श्रीयुत साधु मण्डली भूषण बाबा अमृत राम नवीन वेदान्ती जी के चरणों में सविनयं निवेदनम्।।

बाबा जी महाराज श्रीमान् जगद्गुरु स्वामी जी महाराज ने अपने एक पत्र के साथ आप का चैत्र वद्य 12 लिखित पत्र मेरे पास भेज कर आज्ञा लिखी कि यद्यपि तुम शुद्ध भाव भावित हो तथापि जब तुम को मेरा यथावत् इतिहास विदित नहीं तो ऐसा इतिहास आगे कदापि मत लिखो **क्योंकि थोड़ा भी असत्य सम्पूर्ण सत्य को वाधित करता है और लेख साधू जी का ठीक-ठीक है** इत्यादि इसका उत्तर उनको तथास्तु के व्यातरिक्त और कुछ भी देया वा दातव्य नहीं परन्तु आप से बहुत कुछ प्रार्थना करनी परमावश्य है, महाराज जी आप ने जो कुछ मेरी अशुद्धि दिग्विजयार्क द्वितीय खण्ड में देख लिख सूचित की इसका मैं जितना गुण मानूं वह थोड़ा ही होगा मैंने अपना ग्रन्थ उदयपूर के कितने ही सत्पुरुष और वहां के तथा नाथद्वार के यंत्रालय और मसूदा नगर के मंत्री आदि के पास भेज कर प्रार्थना की थी कि जो कुछ मेरा दोष देखा जाय उस से अवश्य मुझे सूचित करें परन्तु किसी ने उपकृत न किया, धन्य है आप सदृशों का जनम, जिस से हम लोग घर बैठे बिना परिश्रम पवित्र होते हैं वास्तव्य में आप श्रीयुत ने बहुत ही कुछ मुझे उपकृत किया दयालु ऐसों ही को कहना चाहिये-यदि आप एतद्विषयक लेख में हमारे श्रीमान् पर दोषारोपण न करके जो कुछ लिखना था वह केवल मुझ दोषी को ही लिख सन्तोष मानते तो निःसशय विशेष धन्य वादार्ह होते इसका हेतु कदाचित् नवीनत्व ही हो क्योंकि प्राचीन अर्थात् शमादि सम्पत्ति सम्पन्नों से तो कभी अन्यथा व्यवहार हो ही नहीं सकता, तथैव कभी कोई तादृग् बुद्धि पुरुश श्रीमान् सर्वत्र समदृग् जगद्गुरु के उपदेशों में भी द्विविधा नहीं कर सकता न उनके सिद्धान्तों को कोई विचारशील नवीन मत ठहरा सकता है कदाचित् यह कहा जाय कि जो जैसा होता है उस को क्या वे अर्थात् स्वामी जी वैसे ही भासित न होना चाहिये अन्यथा "मल्लाना मशनिर्नृणन् नरवरो" इत्यादि वचन असंगत हो जावेंगे एवमेव जो सब आर्यसमाजी झूठे छली लोभी और दांभिक कहे जाय तो "विनष्ट दृष्टेर्भृमतीव दृश्यते" इत्यादि वचनों का चरितार्थ भी न कर सकोगे। तो इसके उत्तर में **सत्यवचन महाराज** ऐसा ही अवश्य हाथ जोड़ कर हम लोगों को कह देना पड़ेगा-इसी भांति जिन्होंने कभी दर्शनों का दर्शन ही नहीं किया उनके **स्थाली पुलाक न्याय** की भी संभावना जहां वे कर बैठेंगे माननीय होगी और कदाचित् कोई दर्शनी ऐसा ही न्याय करे तो हम लोग **दर्वी रस न्याय** से उसका भी आदर ही करेंगे परन्तु नवीन वेदान्ती जी

से समऽक्ष श्रवण किया है परन्तु शोक की वार्ता यह है कि दयाऽऽनन्द दिग्विजयाऽर्क द्वितीय खंड सामाजिक प्रकरण प्रमाणाऽष्टक के साथ वें अष्टक में पृष्ठि 168 पंक्ति 2 वा 6 विषें जलसा चीतोड़ (महाराणां श्री उदयपुराऽधीश श्रीमान्दयाऽऽनन्द स्वामी की सेवा मैं दिन में 2 वार उपस्थित होते थे यद्यऽपि लाठसाहब के आनें से महाराणां साहब को अवकाश कम मिलता था) इतनां ही लिखने से महाराणां साहब का 2 वक्त पधारणां सिद्ध हो जाता परन्तु आप नृग राजा के गोदान विषय मैं श्लोक फर्माते हैं कि यावत्यः सिकता भूमेर्यावत्यो दिवितारकाः। यावत्यो वर्ष धाराश्च तावतीरऽदंदस्मगाः 1 इति तात्पर्य छै झूठ बोलने वाले को तृप्ति नहिं होती यह आप का फ़र्मानांयथाऽर्थ है (तथाऽपि उक्त नियम विषैं कसर नहिं पड़ने दी, महाराणां

महाराज आर्यों का वास्तविक सिद्धान्त कुछ और ही होगा अर्थात् वे लोग सत्य को सत्य और असत्य को ही असत्य कहेंगे उनसे यह बात कदापि नहीं हो सकती कि सच्चे हज़ार रक्खे हुए रुपयों में किसी प्रकार से कोई खोटा रुपया पड़ गया तो वे **स्थाली पुलाकन्याय** से उन सब रुपयों को खोटा ही बता दें और न यह हो सकता है कि खोटे को सच्चा ही कहें वा तुरन्त उसको निकाल फेंकने का यत्न न करें, अस्तु आ तुष्यत्विति न्याये नैव समाधानम् अर्थात् आप श्रीयुत चाहो जिस रीति सन्तुष्ट हों और भले ही श्री स्वामी जी महाराज का आत्मवत् नवीन वा पृथक् मत बतावें आर्यों को भी भर पेट बुरा कहें पवित्र लोगों की कुछ तादृश हानि नहीं उपसंहार में मेरी प्रार्थना यही है कि क्षमा कीजिये और सदैव इसी प्रकार कृपा दृष्टि रख मेरे श्रुति विषयों को निर्दोष करने में प्रति समय सावधान रहें जिस से यह सत्य सेवक कृतकृत्य हो—सत्य जानिये मुझे किञ्चिन्मात्र मिथ्या का पक्ष नहीं है और न ऐसे आग्रही को कभी अच्छा समझता हूं आपने जिन पक्तियों पर आक्षेप किया निःसन्देह वे क्षेपक ही हैं छपने से प्राक उस तमाम प्रमाण को निकाल देने का यत्न था परन्तु शोक कि मुद्रक नहीं समझा अतएव आप देखिये प्रमाणाष्टक में 8 की जगह 9 प्रमाण हो गये हैं यहां अब यह शंका हो सकती है कि न जाने उस समय ग्रन्थकार अपने किस प्रमाण को निकाल देना चाहता था, इसका समाधान प्रत्येक प्रमाण पर थोड़ी-थोड़ी दृष्टि करने से यथावत् हो सकता है अर्थात् अच्छे प्रकार निश्चय हो सकता है कि सिवाय 7 सातवें प्रमाण के और कोई ऐसा लचर और पोच अन्य प्रमाण नहीं जिस पर किसी एक दृढ़ पुरुष की साक्षी न हो अतः जिस को कहता हूं वही एक लेख क्षेपक अर्थात् सुना हुआ एक वृत्तान्त है न नृगराज कथावत् गढ़ा हुआ, सो यह दोष अब तो तभी दूर होगा जब ग्रन्थ फिर कर मुद्रित होगा और वह समय सत्वर ही ईश्वर ने चाहा तो आवेगा तावत् जो आप मेरे दोनों खण्डों को पुनर्वार अपनी निर्मल दृष्टि से अवलोकन कर प्राप्त दोषों से मुझ को अपना जान अवश्य सूचित करेंगे तो बहुमानी हूंगा इस व्यतिरिक्त और भी जब जो सेवा मदुचित जानी पड़े उसकी भी आज्ञा सदैव होती रहै विज्ञेषु किं वहुनेतिशम्—

27-4-83 ई०

आपका कृपाकांक्षी
गोपालः

साहब नें इति शेषः यह क्या आर्य पुरुषों का समाज है नहि झूठ दम्भाऽऽदिक दोषन तें रहित का नाम आर्य है या कों तो लोभी झूठे दांभिकों का समाज कहनां चहिये इस प्रकार 1 जगह झूठ के लिखनें में स्थाली पुलाक न्यायतैं सर्वत्र झूठ की संभावना हो वे है, अब विचारणां चहिये कि श्रीमान्के प्रतिष्ठित आर्य गोपाल शर्म्म शास्त्री नैं अनृत क्यों लिखा है क्या श्रीमान् उनको अधर्म छुड़वाणें का सदुपदेश नहि देते वा स्वयमेव आपके आर्यलोक ग्रंथकर्त्ता तो अधर्माऽऽचरण करैं और अन्यों के ताईं धर्म रौचिक वाक्य कहि करि निजमत में लेनां और श्रीमान् न्यायशील धर्माऽधर्म के निर्णय में कथन भी करते हैं पक्षपात रहित न्यायाऽऽचरणं धर्मः और पक्षपात सहित अन्यायाऽऽचरणमधर्मः अतएव हमं कों आशा है कि द० दि० द्वि० खं० सा० प्र० प्र० ष्ट० के सातवें अष्टक पृष्ठि 169 पंक्ति 2 वा 6 विषें पक्षपात रहित सत्याऽसत्य विचार करैंगे इति चैत्र वदि 13 गुरुः सं० 1939

आपका कृपाऽभिलाषी

साधु अमृतराम नवीन वेदाऽन्ती

इदानींतननिवासी शहरबुंदी ठिकानां शुक्लेश्वर महादेव

कृपा पत्र वगसे चैत्र शुक्ला 12 तक[1]

श्रीयुत पण्डित रामधार जी बाजपेयी लखनऊ के पत्र

(ख) 22

ओम्

लखनौ ता० 1 मार्च सन्न 1882

स्वामि जी नमस्ते

आप का कृपा पत्र आया तारीक 20 का लिखा हुआ शनीश्चर के दिन ता० 26 को मिला और जो आप ने लिखा हाल मालूम हुआ और मैंने वैदिक यत्नालय को लिखा है कि मेरा हिसाब शीघ्र जांच लेवें और आप की कृपा से मेरे पास आप का हिसाब आद्यंत तक बहुत ठीक है जिस की मैंने एक नकल आप की शरण मैं भेज दी है और उसी की नकल वैदिक यत्नालय

1. साधु अमृतराम ने श्री गोपालहरि शर्मा की पुस्तक में चूक विषय में ऋषि को जो पत्र लिखा। ऋषि जी ने शर्मा जी को जो सीख दी और उन्होंने साधुजी को भूल सुझाने के लिये जो पत्र लिखा--यह प्रकरण अत्यन्त महत्त्व का है। यह कल्याणप्रद इतिहास है। 'जिज्ञासु'

में पहुच गई है और आप के कार्य्य के लीये तन मन और धन अर्पण है जिस कार्य्य में आप सर्वदा प्रवर्ति हैं और कोई गड़बड़ यहां के आर्यसमाज में नहीं है और बहुत उत्तम नेम आर्य में चलते हैं। हम लोगों को अत्यंत आनन्द की अवस्था है कि जो आप व्याख्यान गोरक्षण के विषय में होता है आशा है कि ऐसे आप के दृढ़ पुरुषार्थ से ईश्वर की कृपानुसार आर्य्यावर्ति देश की बहुत शीघ्र उन्नयती होगी। विदित हो कि हम लोगों की अभिलाषा आप के दर्शन की बहुत है सो जो आप को अवकाश हो और परिश्रम्य न हो तो ज्येष्ट मास में अवश पावन कीजीये और अगर आप को परिश्रम्य न हो तो 14 अष्ट पहलू मूगों के दाने भेज दीजीये जो कि वज में 14 तोले के होंय और कृपा करके उन कीमत स्वहस्ताक्षर कर के पत्र में परेरत कर दीजिये।।

आपका...

रामाधार बाजपेई

वा यदि कोइ भद्र पुरुष वहां का लखनऊ की कोई वस्तु मागे तो हम भेज देंगे और अगर हम किसी की इच्छा करैं तो वह भजदे यासा कुछ प्रबन्ध कर दिजिए।।

(ख) 23

ॐ

पण्डित रामाधार वाजपेई

श्री 5 स्वामिने नमस्ते।

विदित हो कि आपका कृपा पत्र आया और अवलोकन कर अत्यानन्द प्राप्त हुआ। और जो आप ने थीआसफिष्टों के विषय में लिखा है सो आर्य्यसमाजक कोई पुरुष ने उनका मतावलंबन नहि कीया है और न करेंगे।

और आप ने जो यह लिखा है कि तुम समाज में नहीं आते हो इसका क्या कारण है इसका निम्नलिखित अक्षरों में आप को नीचे की पङ्गति में विदित होगा।

इसका कारण यह है कि आप की आज्ञा है कि समाज में व्याख्यान के वखत वेद शास्त्र के सवाय और कोई व्याख्या न हो और इन सभ्य गण पुरुषों ने अनेक नाटकादि पुस्त्यकों के व्याख्यान देने के प्रबन्ध रच रखे हैं।

और जो कोई भद्र पुरुष वेद की व्याख्या देता भी है तो उनको वन्द करके नाटक ही की व्याख्या होती है हासी ठठ्ठा समाज में नाटक सुन कर

करते हैं। और यह आप को विदित हो कि समाज में दो पुरुष बड़े रसक हैं। वोह लोग नाटकादि पुस्त्यकों को ही देखते हैं और उन्हीं की व्याख्या समाज में देते हैं। उन लोगों का नाम एक वलभद्र मिश्र दूसरे केशोराम पंडिया। और एक रोज का वर्त्तांत है कि मेरे मकान में रविार को सभा हो रही थी तिस में एक देहली समाज का पुरुष आया तिस में मैं तो सांयकाल को सन्ध्या करने चला गया और पीछे इन उक्त लिखत पुरुषों ने व्याख्यान का आरम्भ कर दीआ इतने में मैं जब आया तो केशोराम पंडिया अंधेर नगरी का हाल कहते थे तिस में यह व्याख्या थी कि लैलेवो टके सेर मछली और टके सेर बाले जोवन इत्यादि सुन कर व्याख्यान समाप्ति पर देहली समाज के पुरुष वाले कि आप के समाज में बहुत हछा व्याख्यान होता है। सो मैं सुन कर निश्चय कीआ कि इस पुरुष ने समाज की अप्रशंसा की है और सभा में व्याख्यान की जगा पर बैठ कर कहा कि यह हमारे समाज के नियमानुसार व्यख्या नहीं हुई जो केशोराम जी ने दीया है। हमा समाज में केवल वेद व्याख्या होता है यह पण्डित जी कहीं से कृपा करके नाटकादि सुना देते हैं सो अब आशा है कि यह व्याख्या समाज में इंदे को न हो। सो यह सुन कर सभ चुप रहे और दूसरे रोज कहने लगे कि समाज के वास्ते अन्य मकान लीया जाता है तुम चलोगे या नहीं तब मैंने कहा कि मुझ को उस स्थान में जाकर क्या लाभ होगा सवाय नाटकादिकों के तब केशोराम पंडिया बोले कि आप ही के मकान में समाज होगा परन्तु अंगीकार करें कि हम चाहे जैसी व्याख्या दें औ तुम टोको न तब मैंने कहा कि मैं कुछ मकान के अभिमान नहीं कहता हूं हां जहां समाजक नेमों से विरुध व्याख्या होगी मैं वहां ही टोकूंगा तब कुछ काल पीछे इन लोगों ने अमीनावाद में जा कर मकान लीया उसे यथेच्छा नाटकादि का व्यायख्यान हुआ करता है। और मेरे मकान में वेद व्याख्या हर रविार को होती है। रामसेवक परमहंस उपनाम्ना पण्डित वेद और गोकुल पण्डित व्याख्यान देते हैं और व्याख्यानानन्तर सन्ध्या और अग्निहोत्र होकर प्रशाद वांटा जा है इस की सभ लोक प्रशंसा करते हैं।। और आये गये का सतकार भी होता है जैसे भगवत्यादि जब समाज में आई थी तो किसी पुरुष ने समाज में उनका सतकार नहीं कीआ तब मैंने सोचा कि स्वामि जी के पास से यो यह आई है इसका सतकार न करना बड़े अपमान की बात है।

दूसरे रोज मैं अपने मकान पर ले जाकर उनका सतकार खाने पीने का कीआ और तीन रो टिका कर व्याख्यान भी स्त्रीयों में दवाया और वा तीन रोज के मेरठ को गई।

और हाल यह है कि दयाराम नाम शर्मा यंत्रालयाधिकारी की भी मुझको बड़ा गड़ बड़ देख पड़ता है क्योंकि मैंने आपके पुराने हिसाब से उनको चालीस रुपये भेजे और कहा कि तुम यह रुपये किसी अंक पर छाप देवो और मेरे नाम एक आने के कागज पर रसीद भेज देवो उसने न रसीद भेजा और न मेरे नाम से किसी अंक पर छापा और जोकि वेदभाष्य के ग्राहक आठ रुपये साहिलयाना देते हैं उन लोगों का नाम भी कहा कि सभ के नाम से प्रथक्-प्रथक् छापा करो उसको भी नहीं छापा है सो यह बड़ा गोल माल देख पड़ता है। मैं अब जब आप कृपा करके आवेगे तो आप के निवेदन बाकी के 52) रुपये करूंगा और पीछे का अंक जो ऋग्वेद का आया है उस पर बाबू हरनाम प्रशाद का नाम छापा है सो यह ठीक नहीं है क्योंकि वोह चार रुपये सालिआना देते हैं और के नाम प्रथक् छापना चाहीये।

और यंत्रालय का हाल मैं समर्थदान को भी लिखा है।

और यह प्रार्थना है कि जेकर आपको अवकाश हो तो और कुछ परिश्रम्य न हो तो आप न्वम्बर महीने की ता. 25 में लाट साहिब आवेंगे दूसरी दिसवर तक रहेंगे उसमें रजावाडा लोक बहुत आवेंगे आप कृपा करें तो बहुत उत्तम होगा और प्रार्थना है कि इस चिठी का जुवाव शीघ्र दीजीयेगा क्योंकि जेकर आने का आप का नियत हो तो मकान का प्रबन्ध कीया जावे और जो 2 समान आपके भार प्रबन्ध का हो उसका निरणय आप सभ लिखीयेगा।

आपका सेवक
रामाधार वाजपेई

(ख) 24

श्रीयुत पण्डित इन्द्रनारायण जी लखनऊ के पत्र इस समाज की कार्यवाही सहित।

(ओ३म्)

आर्यसमाज
(अङ्क 30) लखनौ
ता० 28 अक्टूबर 1882

श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती महाशय समीपेषु

स्वामिन्नमस्ते;

आज आप की सेवा में पत्र समर्पित करने से एक प्रकार का हर्ष और

विषाद उत्पन्न होता है हर्ष का कारण यह है कि प्रथम ही यह मेरा पत्र आप की दृष्टिगोचर होगा–और विषाद का कारण यह है कि आप इसको पढ़ और सत्यासत्य को जान एक कल्पित माननीय पुरुष की ओर से आप को घृणा होगी–

आपका पत्र समाज में आया जिसमें कि लड़कों की समाज और नाटिकादि प्रहशन करना जो कि आर्य्यों का धर्म नहीं करना लिखा है हां यह कहां तक सत्य है, यह आप पत्र पढ़ विचार लेंगे। परन्तु शोक मुझ को इतना ही है कि आप को किस बुद्धिमान पुरुष ने ऐसा मिथ्यत्व लिख भेजा है–

इस समाज में पण्डित् रामाधार जी बाजपेई और रामशेवक जी के अतिरिक्त और वही सभासद बने हैं जो प्रथम में थे, तो क्या प्रथम में ये सब बूढ़े थे और अब लड़के हो गये हैं? तो क्या एक ही पुरुष के प्रथम होने से यह लड़कों की समाज हो गई--लेखक को ऐसा अनुचित लिखना कदापि उचित नहीं था–

लेखक के लिखने से ज्ञात होता है कि नाटक विषय में आप ऐसा समझे हैं कि समाजिक पुरुष नाटकाकार लीला करते हैं अथवा स्वरूप भर भर के खेल खेलते हैं यह भी उसकी लिखावट निर्मूल ही है–यहाँ उपनियमानुकूल जब वेद कथन हो चुकता है तब धर्म और देशोन्नति विषयों में सभासद लोग व्याख्यान तथा किसी धर्म अथवा देशोन्नति सम्बन्धी पुस्तकों से चुन चुन कर उत्तमोत्तम विषय पढ़ कर सुनाये जाते हैं–केवल एक दिन जब वेदादि विषय हो चुके थे तब पण्डित् केशवराम जी ने सभा की अनुमति लेकर एक देशोन्नति विषयक नवीन नाटिका पढ़ी, और जब उक्त महाशय पढ़ चुके थे तब पण्डित् रामाधार जी ने नाटिका पढ़ने से निषेध किया उस समय को छोड़ कर अद्य पर्यंत नाटकाकार पुस्तक से कोई विषय नहीं पढ़ा गया। परंतु यह कहना कि नाटकाकार विषय न पढ़े जावे यह तब हो सकता है कि जब भारत सुदशा प्रवर्तकादि पत्रों में नाटकाकार विषय मुद्रित न हो अधिकतर शोक मुझ को और मेरे सब सभासदों को इस बात का है कि पण्डित् रामाधार जी वाजपेई उप प्रधान और रामसेवक जो इस समाज के माननीय पुरुष थे उन्होंने एक वारगी अपना चोला ऐसा पलट दिया है कि जिस का सब वृत्तान्त मंत्री समाज के पत्र से (जो इसके साथ भेजा जात है) विदित होंगे जिस से कि लड़कों का खेल तथा नाटिकादि का होना सम्पूर्ण रूप से आपको ज्ञात हो जायगा यह पत्र मास डेढ़ का समय व्यतीत हुआ आप की सेवा में भेजने के लिये लिखा गया था परन्तु यह समझ कर कि ऐसे माननीय पुरुष के समाचार

ऐसे शीघ्र आप तक पहुँचाना उचित न जान कर अब तक रोक लिया था–अर्थात् प्रथम उक्त महाशय के लघु भ्राता पण्डित् रामदुलारे जी वजपेयि जो प्रथम इस समाज के मंत्री रह चुके हैं और आजकल आगरे में हैं इस विषय में लिखा, परन्तु वह उस समय में कुछ प्रयत्न न कर शके तब सब सभासदों की सम्मति से यह पत्र आपको लिखा गया परन्तु यह पत्र आप की सेवा में भेजा नहीं गया था कि इस सयम में पण्डित् रामदुलारे जी छुट्टी लेकर यहां आन पहुँचे, तो इस पत्र को फिरि आप की सेवा में भेजना उचित न समझा क्योंकि उक्त महाशय से इस कार्य के सुफल होने की सम्भावना थी जब उन से भी इस विषय में वार्तालाप हुई तो उन्होंने कहा कि ऐसे पुरुष को इस कार्य से प्रथक कर देना उचित है। परन्तु हमारे किसी सभासद का यह अन्तरीय अभिप्राय न था कि रामाधार जी अपनी पदवी से प्रथक कर दिये जाय, इस कारण रामदुलारे जी ने कहा कि जो सब की सम्मति ऐसी ही है तो इस विषय को कुछ काल तक यथावत रहने दो, जो तो थोड़े दिनों में सुधर जायं तौ अति उत्तम है नहीं तौ फिरि विचार कर जैसा उचित समझा जावे वैसा करना, इसी से यह पत्र आप की सेवा में नहीं भेजा गया था, परन्तु क्या करूं जब आप के पास अण्ड वण्ड लेख जाने लगे तब यह उचित समझा कि सम्पूर्ण समाचार आप को प्रकाश करूं और जैसी आप की आज्ञा हो वैसा उसका प्रतिपाल करूं, वर्तमान में पण्डित् रामाधार जी की पदवी पर सभा ने पण्डित् अयोध्याप्रसाद जी मिश्र को स्थापित किया है, ताकि किसी सामाजिक कार्य में विघ्न न पड़े–

यदि पण्डित् रामधार जी अब भी अर्थात् आप के लिखने पर भी अपनी पदवी पर स्थापित हों जो अत्युत्तम है, नहीं तौ सभा कार्य जैसा चलता है वैसा ही चलता रहैगा–

आप इस पत्र का उत्तर मंत्री हरनाम प्रसाद जी के पते से समाज में भेजैं क्यों कि मेरा रहना यहां पर बहुत न्यून होता है–आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा किया जायगा–

आप अपने व्याख्यानादिकों का भी समाचार देवे और सब भ्रत्रि गणों का नमस्ते आप के चरणों में पहुँचै–

आपका आज्ञाकारी सेवक
इद्रनारायण पंडित
प्रधान
आर्य्य समाज, लखनौ।

(ख) 25

आर्य्य समाज
लखनौ

(अङ्क 22)

श्रीमत् परिव्राजकाचार्य्य श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती समीपेषु स्वामिन् नमस्ते–

बहुत दिनों से आपका कोई पत्र नहीं आया सो कृपा पूर्वक अपनी प्रसन्नता से विदित किया कीजिये–

(2) समाज का संक्षेप से वृतान्त आप की दृष्टिगोचर होने और यथार्थ प्रबन्ध के निमित्त आप की सेवा में समर्पित करता हूं। जिस से कि यह समाज आनन्द पूर्वक चला जावे वह निम्न लेखानुसार जानना चाहिये–

(3) यह समाज वैशाष कृष्ण 15 वार रविार सम्वत् 1937 विक्रमी में पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि और बाबू सरयूदयाल के उद्योग और स्वामी गङ्गेश जी के कहने से आपने स्थापित की, जिस में कि आपने पण्डित इन्द्रनारायण जी मसलदां को प्रधान और पण्डित रामाधार जी वाजपेइ को उपप्रधान की पदवी पर स्थापित किया और इसी प्रकार उस समय पर पण्डित रामदुलारे जी वाजपेयि जी मंत्री, बाबू सरयूदयाल जी को उप मंत्री, पण्डित अयोध्याप्रसाद जी मिश्र को कोशाध्यक्ष, और बाबू चन्दन गोपाल जी को पुस्तकाध्यक्ष की पदवियों पर नियुक्त किया था और अन्तरग सभा के अर्थ व्यवस्थापकों को उक्त महाशयों ने चुन लिया था–

(4) जब यह समाज स्थापित हुआ तौ पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि ने आप की पुस्तकों का भार समाज के समर्पित किया अर्थात् वह पुस्तकें जो समाज स्थापित होने से प्रथम आपने उक्त महाशय के समीप भेजी थीं और उनमें से जो शेष रह गई थीं–समाज में देदीं–जिन को प्रथम वर्ष के पुस्तकों के हिसाब में दिखा चुके हैं–

यह समाज नियम और उप नियमानुसार सत्यप्रकाश नामक पाठशाला में पाक्षिक रविवार को होता रहा, इस समायान्तर में पण्डित् रामदुलारे जी वाजपेयि को नौकरी के कारण पीलीभीत जाने की आवश्यकता हुई तो उस समय सभा ने बाबू चन्दनगोपाल जी पुस्तकाध्यक्ष को उनकी पदवी पर और पण्डित केशवराम जी पण्डया को बाबू चन्दनगोपाल जी की पदवी पर नियुक्त किया और प्रथम वर्ष पर्यन्त आनन्दपूर्वक समाज उसी स्थान में होता रहा जिसका सम्पूर्ण वृत्तानत प्रथम वार्षिकोत्सव के समाचार से आपके विदित हुआ होगा। पुनः 1 प्रति उसकी आपकी सेवा में अब भी भेजी जाती है–

(5) द्वितीय वर्षारम्भ के 2 मास पश्चात् सत्यप्रकाश पाठशालाऽध्यक्ष ने वे निवेदन किया कि पाठशाला में आर्य्य और पौराणिक दोनों प्रकार के सभासद युक्त हैं इस कारण पौराणिक मतावलम्बी यहां समाज होने से अप्रशन्न हैं और इस कारण से पाठशाला के पारितोषिक के न्यून होने की सम्भावना है, इस लिये आर्यों को उचित है कि समाज अन्य स्थान में किया करें जिस से पाठशाला को किसी प्रकार की बाधा न हो, इसमें हम लोगों ने भी पाठशाला की हानि समझ कर कुछ समय के लिये कि जब तक स्थान का प्रबन्ध हो गणेश गंज थाने के समीप मैदान में जिस में कि प्रथम वार्षिकोत्सव भी कर चुके थे समाज करना आरम्भ किया–परन्तु यह वर्षा ऋतु का समय था सो एक दिवश ऐसा हुआ कि समाज के समय पानी आया और इसी कारण सभा शीघ्र विसर्जन की गई–

जब ऐसा हुआ तो पण्डित् रामधार जी वाजपेई उपप्रधान साहब ने निवेदन किया कि जब तक अन्य स्थान का प्रबन्ध न हो तब तक मेरे स्थान पर समाज हुआ करे। इस को सब ने स्वीकार किया और समाज उक्त महाशय के स्थान पर होने लगी–

(6) तत्पश्चात् पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि ने वेदभाष्य का कार्य भी सभा के समर्पण किया अर्थात् जो अङ्क वेदभाष्य के उनके मध्यस्थ आते थे वह समाज के के मध्यस्थ आने लगे जिस विषय में आप की भी आज्ञा ले ली गई थी–यह समाचार द्वितीय वार्षिकोत्सव में लिखे गये हैं वह आप को विदित हुये होंगे।

(7) इस समाज में व्याख्यानादि होने का समय प्रथम 4 बजे से 6 बजे तक रहा, यह समय थोड़े ही काल तक रहा परन्तु तत्पश्चात् बहुत विचार पूर्वक इसका समय 6 बजे से 8 बजे तक रक्खा गया और उप नियमानुकूल इसी समय में समाज होती रही।

(8) जब यह समाज पं० रामाधार जी के स्थान में होने लगा तौ उक्त महाशय ने कुछ कालानन्तर के पश्चात् एक वाल्यसमाज आरम्भ किया जिस का समय 4 बजे से 6 बजे तक रक्खा–इसमें लड़के किसी-किसी पुस्तक से लिख कर पढ़ते थे–अब एक दिवश ऐसा अवसर हुआ कि अन्तरंग सभा के अर्थ जो विज्ञापन दिया गया उसका समय भी 4 बजे से 6 बजे तक रक्खा गया–और सभासद समय पर उपस्थित हुये और सभा कार्य आरम्भ होने ही को था कि एक बालक

आसन पर बैठ कर कुछ पढ़ने लगा उसका आशय यही था कि आप श्रेष्ठ पुरुषों को ऐसा उचित नहीं–कि हमारी समाज के समय आप समाज करें और हम को निराश करें इसलिये हम निवेदन करते हैं कि आप इस समय अपनी सभा न करैं जब हम कह चुके तब आप अपना कार्य्य करैं इस बालक की अवस्था अनुमान 12 वर्ष के होगी औ यह लेख भी इसका लिखा न था वरन लिखाया हुआ था–इसमें पण्डित् रामाधार जी वाजपेई उपप्रधान जी ने लड़कों से कहा तुम पढ़ो तुहारे लिये समय है इसके उत्तर में बाबू चन्दनगोपाल जी पूर्व मंत्री ने कहा कि जब विज्ञापन दिया गया और आपने उस पर हस्ताक्षर भी किये तो आपको उचित था कि उसमें समय बदल देते,[1] जब उसमें समय नहीं बदला गया तो अब भी नहीं बदला जा सकता–इसके उत्तर में रामाधार जी ने कहा कि वाल्यसमाज अवश्य होगी। तब एक सभासद बोले कि यह आपका स्थान है इसी से आप ऐसा-ऐसा कहते हैं नहीं तो न कहते और जब समय पर सभा न होगी तौ हम बैठ कर क्या करेंगी इसके उत्तर में पं० रामाधार जी ने कहा कि जिसकी इच्छा हो बैठे जिस की इच्छा न होय वह जाय–यह उनका वाक्य उस समय अनुचित तो लगा परन्तु समाज में विघ्न न पड़ै इस कारण किसी ने कुछ न कहा–नमृता पूर्व्वक कह सुन कर समाज कार्य करना आरम्भ किया गया–

(9) इसके अनन्तर किसी अन्य सभा में उक्त महाशय ने बाबू चन्दनगोपाल जी मंत्री और पण्डित् केशवराम जी के विषय में ऐसा कहा कि यह दोनों अपनी सम्मति अनुकूल सब कार्य करते हैं–यह उनका कहना यथार्थ न था–वरन जो कार्य उत्तम होता था और उसमें उनकी भी सम्मति उत्तम होती थी तो अन्तरंग सभा के सभासद उसको स्वीकृत करते थे। अन्यथा नहीं–यह नहीं कह सके कि ऐसा उनको कैसे भ्यासित हुआ।

(10) जब द्वितीय वार्षिकोत्सव का समय निकट आया और अन्तरंग सभा की आज्ञानुसार निमंत्रण पत्र भेजे गये तत्पश्चात् इसके प्रबन्धार्थ जो अन्तरंग सभा पण्डित रामाधार जी वाजपेयि के स्थान पर की गई तौ उसका समय 6 बजे से 8 बजे तक का रक्खा-अब देखिये जब सभा कार्य्य आरम्भ हुआ तो उक्त महाशय सन्ध्या के निमित्त उठकर चले

1. मनुष्य का अहं समाज हित को हानि पहुँचाने के लिये नये-नये कुतर्क गढ़ता है। 'जिज्ञासु'

और पं० रामसेवक जी व्यवस्थापक को सायङ्काल का होम कराने के निमित्त बुलाया–इस पर मंत्री जी ने कहा कि उत्सव के 8 दिन रह गये हैं और आप पूजा को जाते हैं प्रथम यह महत् कार्य्य कर लेते, इस पर दोनों महाशयों ने कुछ भी ध्यान न दिया और अनुमान आध घण्टे से अधिक इसमें उनका लगा–जब उक्त महाशय सभा में पधारे तो मंत्री जी ने सभासदों से उनके उठ कर चले जाने का कारण जिज्ञासा किया कि सभा से उठ जाना उनको उचित था अथवा नहीं। इसके उत्तर में सभासदों ने उपप्रधान जी से पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि सन्ध्या वंदन से अधिक समाज कार्य नहीं है और न इस समय सभा होनी चाहिये–इसके उत्तर में मंत्री जी ने कहा कि सभा का समय दो वर्ष से यही चला आता है और जो समय बदलने का विचार है तो नियम भी तब हो सकता है जब सभा दूसरा समय निश्चित करले इस समय ऐसा क्यों हुआ–और सन्ध्या वंदन के विषय में तो समाज विषय भी अनेक प्रकार के धर्म सम्बन्धी देशोन्नतिकारक और परोपकारक होने के कारण न्यून नहीं वरन अधिक हैं और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामी जी ही महाराज को देखिये और तिस पर भी एक दिवश सन्ध्योपाशन थोड़ी देर पश्चात् ही करते तो क्या हानि थी–द्वितीय आप को प्रायः रात के 8 वा 9 बजे सन्ध्योपाशन करने का अवकाश हुआ है–इस विषय में अंत को यह निश्चित हुआ कि आगे से जब सभा का कार्य प्रारम्भ हुआ करे तौ उस समय कोई सभासद सभा की आज्ञा बिना न जावे–इसी सभा में पण्डित रामाधार जी की अनुमति से तृतीय वर्ष के निमित्त साप्ताहिक समाज का होना निश्चित हुआ–

(11) यह द्वितीय वर्ष भी जिस आनन्दपूर्वक व्यतीत हुआ उसके समाचार तथा तृतीय वर्ष के लिये जो-जो अधिकारी और व्यवस्थापक स्थापित हुये हैं उनका वृतान्त द्वितीय वार्षिकोत्सव समाचार से विदित हुये होंगे पुनः अब भी 1 प्रति इसकी आप की सेवा में समर्पण करता हूं–

(12) अब तृतीय वर्ष का आरम्भ हुआ जिसके एक मास पश्चात् साधारण सभा में पं० केशवराम जी ने कई एक सभासदों के कहने से अन्धेर नगरी नाम्नी नाटिका को पढ़ा इसकी समाप्ति होने पर पण्डित् रामाधारा जी आसन पर बैठ कर कहा कि मेरा स्थान ऐसी-ऐसी पुस्तकों के पढ़ने के लिये नहीं है जिस को ऐसी पुस्तकें पढ़ना हो वह इस स्थान पर न पढ़े यह बात भी उनकी सर्वसाधारणों के मध्य में कहना अच्छी

न लगी परन्तु किसी ने कुछ कहा नहीं वरन सबके हृदय में यह हुआ कि अब समाज के निमित्त अन्य स्थान का प्रबन्ध अवस्य करना चाहिये–

इसके पश्चात् जो अन्तरंग सभा हुई उस में दो सभासदों ने पण्डित् रामसेवक जी से पारितोषिक न्यून एकत्र होने का कारण जिज्ञासा किया–क्योंकि उक्त महाशय इसी निमित्त समाज से एक रु० मासिक और नित्यप्रति भोजन पाते थे–उस समय में तो उक्त महाशय ने कुछ नहीं कहा परन्तु पीछे से एक पत्र मेरे नाम भेजा जिसमें उन्होंने लिखा था कि उन दोनों सभासदों ने मेरा अपमान किया–इस कारण उनको कुछ दण्ड देना चाहिये–इस पर अन्तरंग सभा में विचार हुआ तो वह दोनों निरपराध ठहरे–इस समय इनके पक्षपर पण्डित् रामाधार के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था–

(14) अब द्वितीय अन्तरंग सभा में प्रथम समाज के निमित्त स्थान पर निश्चय हो जाने ही का विचार हुआ–तो उस में यह निश्चय हुआ कि भाड़े पर स्थान अवस्य लै लेना चाहिये–जब इस विषय में पण्डित् रामाधार जी की सम्मति ली गई तो उक्त महाशय ने कहा कि जो स्थान समाजधन से क्रय किया गया होगा तो तो में समाज में जाऊंगा नहीं तो नहीं–इसमें बाबू गंगाप्रसाद जी व्यसस्थापक और प्रतिनिधि ने कहा कि जब समाज में इतना धन नहीं है तो स्थान कैसे क्रय हो शक्ता है? इसके उत्तर में पण्डित् रामधार जी वाजपेई ने कहा कि प्रथम एक सभा में एक-एक मास की आय देना स्वीकृत हो चुका है वही एकत्र करके स्थान क्रय करना चाहिये–इसके उत्तर में बाबू गंगाप्रसाद जी ने कहा कि ऐसा निश्चय आज तक नहीं हुआ और न मुझको इसकी कुछ खबर है और न मैं एक मास की आय दे शक्ता हूं और इसके लिये आप इतना आग्रह क्यों करते हैं कि क्रय किये ही स्थान में जाऊंगा अन्य में नहीं? इसके उत्तर में पण्डित रामाधार जी वाजपेई ने कहा कि मैं तो तभी जाऊंगा क्योंकि मैं इस समाज का स्थापक हूं मेरी इच्छा भाड़े के स्थान पर जाने की नहीं किन्तु ऐसा होगा तो मैं अपने ही स्थान पर वेदव्याख्यान सुना करूंगा इस वचन के सुनते ही सब सभासदों के हृदय में एक प्रकार की शङ्का पड़ गई और बाबू गंगाप्रसाद जी ने कहा कि जो आप को यह अभिमान है कि इस समाज का स्थापक मैं ही हूं जब ऐसा है कि यह समाज एक पुरुष की सम्मति से है और दूसरे की सम्मति को आप तुच्छ समझते हैं तो

मैं ऐसी समाज में रहना उचित नहीं जानता और न मैं अब से जो आप के स्थान में समाज होगी उसमें आऊंगा–इसके उत्तर में भी उपप्रधान जी ने वही शब्द उच्चारण किये जो प्रथम दो सभाओं में कह चुके थे कि जिसकी इच्छा हो आवे और जिसकी इच्छा न हो वह न आवे तब तो पण्डित केशवराम जी ने कहा कि आप सभा पति होकर ऐसा कहते हैं ऐसा कहना आपको उचित नहीं सभा में जो कार्य्य होता है वह बहुपक्षानुसार होता है–इस समय अन्य स्थान लेन की सबकी सम्मति है–ओर जो आपकी इच्छा यही है कि समाज हमारे ही स्थान पर उस समय तक होता रहै जब तक कि समाज स्थान मोल लिया जावे तो अति उत्तम परन्तु जिस समय सभा होगी आपका स्थान पञ्चायती समझा जावेगा और अब से **आपको ऐसा कभी न कहना होगा कि जिसकी इच्छा हो वह इस समयज में आवे जिसकी इच्छा न हो वह न आवे**–इसके उत्तर में पण्डित् रामाधार जी ने कहा कि मेरा यह अभिप्राय थोड़ा ही है कि मैं आने का ही नहीं परन्तु सन्ध्या वन्दन के कारण में न पहुंच सका इस कारण प्रथम से मैंने निवेदन कर दिया–और जो सब की सम्मति अन्य स्थान लेने के लिये है तो अत्युत्तम–तत्पश्चात् उक्त माहशय के स्थान पर दो वा 3 सभायें हुई और जब अन्य स्थान का प्रबन्ध हो गया तो तारीख 25 जून सन् 1882 ई० से समाज उसमें होने लगा और पं० रामाधारजी के स्थान पर भी पण्डित् रामसेवक जी ने व्याख्यान दिया–इस प्रथम दिवस ही जब पण्डित् इन्द्रनारायण जी मसलां प्रधान इनके स्थान पर पधारे तब उस समय समाज विसर्जन हो चुकी थी और अन्य स्थान में समाज होने का वृतान्त उन्हें विदित न था परन्तु पण्डित रामाधार जी ने संक्षेप से समाज दूसरे स्थान में होने के समाचार कहे और अपना हृदयगत भाव भी जनाया परन्तु प्रधान जी ने उस समय कुछ उत्तर न देकर अपने स्थान को चले गए–और समाज में न पहुंच सके–

(16) द्वितीय समाज में जब प्रधान साहब पधारे तो इस ओर का भी सम्पूर्ण वृतान्त सुन पण्डित् रामाधार जी को बुलाने के निमित्त एक मनुष्य भेजा कि दोनो ओर की वार्ता सुन यथोचित प्रबन्ध किया जावे, परन्तु उसके उत्तर में उन्होंने कहला भेजा कि मेरे स्थान पर भी वेद व्याख्यान होता है उनकी इच्छा हो तो वह यहां ही चले आवें–

आवें यह सुन प्रधान साहब चुप हो गये–

विदित हो कि इस दिवश अन्तरङ्ग सभा भी थी–जो कि उपनियमानुसार प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह के रविवार को हुआ करती है–और पं० रामसेवक जी ने भी अपना कार्य करने को अनङ्गीकृत न किया और कहा कि मैं विद्योपार्जन करूंगा इसलिये अपना कार्य छोड़ता हूं इसको सब ने स्वीकार किया–

(17) इससे अगले सप्ताह में अन्तरङ्ग सभा की आवस्यकता हुई साधारण सभा के पीछे तौ व्यवस्थापकसदों से और अधिकारियों से सविनय निवेदन किया गया कि आप लोग ठहरिये और सभा का कार्य करिये, इस सभा में भी प्रधान साहब उपस्थित थे–

(18) अब साधारण सभा के दिन मैं, पण्डित अयोध्याप्रसादजी मिश्र कोषाध्यक्ष, बाबू वृजलाल जी पुस्तकाध्यक्ष, और पण्डित् केशवराम जी व्यस्थापक इन सब लोगों ने जाकर पण्डित् रामाधार जी वापेयि उपप्रधान से निवेदन किया कि आप कृपा कर सभा में पधारिये–इसके उत्तर में उन्होंने कहा कि साधारण में तौ नहीं परन्तु अन्तरङ्ग सभा का समय आया तौ 1 विज्ञापन पत्र भी उक्त महाशय की सेवा में भेजा और उस पर उन्होंने हस्ताक्षर भी कर दिये थे परन्तु तब भी न पधारे, और न प्रधान साहब इस सभा में उपस्थित थे इस कारण सभा का कार्य वन्द रहा–अब एक प्रार्थना पत्र पण्डित, रामाधार जी की सेवा में समर्पित किया गया और उसका जो कुछ उत्तर उक्त महाशय ने दिया उन दोनों की प्रति आप की सेवा में समर्पित करता हूं–इनकी पत्रिका से विदित होता है कि इन की प्रथक समाज है जिस में कि अधिकारी और व्यवस्थापक सब है, परन्तु ये समाज ही, सिवाय पण्डित् रामाधार जी वापेयि उपप्रधान और पण्डित् रामसेवक जी मंत्री जिस को पं० रामाधार वाजपेई जी नै अपने आप ही मंत्री बना लिया है के अतिरिक्त और कोई भी आर्य्य सभासद नहीं हां इतना तो अवस्य है कि पौराणिक मतावलम्बी तो आते हैं, वह भी इस शर्त पर कि जब हम समाज में आप से पूँछे कि मूर्ति पूजानादि ठीक है तो आप कहैं हाँ ठीक हैं और जब हमारे स्थान पर कथा हो तो आप भी उस में पधारें सो उक्त महाशय एकादशी महात्म्य और सत्यनारायण की कथा सुनने उनके स्थान पर जाते हैं। और यही पौराणिक पुरुष प्रायः व्याख्यान भी उनके स्थान पर वोपदेव क्रत भागवतादि पुराणों से देते हैं, और पौराणिक भी वह जो सर्वदा से समाज के विरोधी रहे हैं।

(19) अब ऊपर लिखा हुआ सम्पूर्ण वृतान्त आप को विदित होवे, और इस विशय में जैसी आप की आज्ञा होवे, वैसा किया जाय, एक मुहल्ले में एक नाम की दो समाजें होना क्या अच्छा है? और फिर जिस समाज में पोपों कृत व्याख्यान होवें वह आर्यसमाज ही कहलावे–

(20) अब सब सेवक आपके आप के चरणों को प्रणाम करते हैं और आशा रखते हैं कि आप इसका उत्तर शीघ्र भेजियेगा–

आपका चरण रज सेवक
हरनामप्रसाद
मंत्री आर्य समाज
लखनौ

तारीख 10 सितम्बर
सन् 1882 ई०

श्री पण्डित् इन्द्रनारायण जी मसवर्दा
प्रधान आर्य्यसमाज, लखनौ

महाशय नमस्ते;

कृपा करके पूर्वोक्त पत्र को अवलोकन करिये, और जो आप उचित समझें तो इसको श्रीस्वामी जी के चरणों में समर्पित कीजिये।

आपका आज्ञाकरी
हरनामप्रसाद
मंत्री आ० स० लखनौ

(अङ्क 20)

आर्य्य समाज
लखनौ

पण्डित् रामाधार जी वाजपेइ उपप्रधान
आर्यसमाज, लखनौ

महाशय नमस्ते–

अन्तरङ्ग सभा की अज्ञानुसार आप से निवेदन है कि छठी अगस्त को जो अन्तरङ्ग सभा हुई थी उस में आप नहीं पधारे यद्यपि आप की सेवा में सूचना पत्र भी भेजा गया था और आप ने उस पर हस्ताक्षर भी कर दिये थे–

जब प्रधान तथा उपप्रधान इन दोनों अधिष्ठाताओं में से एक भी उपस्थित न होगा तो विचारिये सभा का कार्य्य किस प्रकार चल शक्ता है। इस कारण आप को उचित है कि सभा में अवस्य पधारा करो–कदापि किसी कारण से

आप उपस्थित न हो सके तो कृपा करके आप अपनी सम्मति दीजिये कि इसके अर्थ क्या प्रबन्ध किया जावे–आशा है कि इसका उत्तर आप शीघ्र दीजियेगा–

आपका आज्ञानकारी
द० हरनामप्रसाद
मंत्री आर्य्य समाज, लखनौ।

(ओ३म्)

आर्यसमाज, लखनौ

अन्तरङ्ग सभा की आज्ञा से

मंत्री
आर्य्यसमाज लखनौ

नमस्ते,

विदित हो कि आप के पत्रावलोकनानन्तर अत्यानन्द प्राप्त हुआ–जो कि आप ने सूचना के विषय में निमंत्रण की थी उस पर मैंने हस्ताक्षर योग्यता से किये क्योंकि कोई पुरुष उत्तम कार्य्य में सम्मति ले या हस्ताक्षर की आपेक्षा करे तो देना उचित है–और जो प्रधान के बिना कार्य्य समाज का नहीं चलता है सो आप स्वतन्त्र करता हैं कौन कार्य्य समाज का नहीं चलता है सो आप स्वतन्त्र करता हैं कौन कार्य्य प्रधान या उपप्रधान की सम्मति से करते हैं और आप ने लिखा कि समाज में नहीं उपस्थित हुये सो विचार की अवस्था है किस काल मैं जब से आप की सभा प्रथक होती है उपस्थित रहा और इस अन्तरङ्ग सभा में जो कि 6 अगस्त में हुई थी नहीं उपस्थित रहा हूं और जो सम्मति के विषय में आप ने लिखा है सो आप सब महाशयों को विदित है कि ऐक्य-ऐक्य मत गत सभा में अन्तरङ्ग या साधारण सभा के कार्य्यों में जो मैं सम्मति देता था सो आप सर्व सभ्यगणों के विरुद्ध होती थी और आप सर्व महाशयों की ही निश्चित होती थी मुझ को केवली समझ कर ग्रहण नहीं करते थे सो अब मेरी सम्मति की आपेक्षा आप महाशयों को होनी न चाहिये–और जो कार्य्य मेरे अनुकूल आप निवेदन करें तौ मैं अवस्य ही ग्रहण करूंगा–

आप का शुभचिन्तक
द० पण्डित् रामसेवक मंत्री
आर्य्यसमाज, लखनौ।

(ख) 26

बरेली आर्य्यसमाज के मन्त्री महाशय भोलानाथ जी तथा प्रधान महाशय तुलसीराम जी के पत्र

श्री०

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमान् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणों में बरेली के आर्य्यसमाज के सभासदों का प्रणाम पहुंचे। आगे आप के चरणों की कृपा से यहां एक आर्य्यसमाज 9 वीं जुलाई सन् 82 को स्थापित होकर अब तक प्रत्येक रविवार को आनन्द पूर्वक होता चला आता है आगे भी आशा है कि सदैव उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त होता रहेगा परन्तु-अभी नगर निवासी जन अल्प संख्यक हैं परमेश्वर उनके हृदयों में भी उपदेश देवें इसमें आप से यह प्रार्थना है कि आप कोई उपाय ऐसा बतलायिये कि सब समाज आर्य्यावर्त के एक सम्मत हो कर समाजों के नियमानुसार बिवाहादि सर्ब कर्मों को करें और **समाजों के स्थापन करने का जो अभिप्राय है सो यथावत् सिद्ध हो अब ऐसा न होना चाहिये कि समाज के लोग वेदरीति को तो मन से ठीक जाने परन्तु वास्तव में पोपलीला पर सब कार्य्य करैं मेरी बुद्धि में यह आता है कि आप सब समाजों को इस विषय में एक 2 पत्र भेजैं यही सब बात उसमें सूचित कर दें जहां-जहां समाज है उनके प्रत्येक वर्ण के सभासदों की** वर्ण संख्या प्रत्येक समाज को ज्ञात हो तो हम सब लोग आपस ही में सम्बन्धादि व्यवहार करैं और अनार्यों से कुछ प्रयोजन न रहे उन से जब प्रयोगजन आन पड़ता है तो वेदरीति पर कुछ करना नहीं हो सकता केवल पुराण और पोपरीति पर करना होता है जो कि आर्य धर्म के सर्वथा विरुद्ध है इस बात के न होने से निम्नलिखित दोष आन पड़ते हैं-

(1) समाजों के स्थापित करने से आर्य्यवर्त को उस समय तक कोई लाभ नहीं होगा कि जब तक उसके नियमानुसार सब कर्म न होंगे।

(2) अनार्यों को जो पुराण भट्टों के कहने पर चलते हैं समाजों पर इस बात पर व्यंगोक्ति करने का अवसर मिलता है कि तुम लोग केवल कहते ही हो पर कुछ कर नहीं सकते हो तुम से वे ही भद्रनर हैं 'जो अपने कथनानुसार कर्म करते हैं।

(3) देश हानि जो विवाहादिक रीतियों में होती हैं अब तक आर्य्यों में भी हुई चली जाती हैं अब तक उन हानियों से बचने के लिये किसी

आर्य्यसमाज ने यथार्थ में कुछ नहीं किया जिस से इस देश की व्यवस्था सुधरती बाल-विवाह आदि कर्मो में विद्या धन वलादि का नाश होना इसी कारण सुधर्म्म सम्बन्धी काय्यों में पूरी-पूरी श्रद्धा का न होना इत्यादि बड़े-बड़े दोष हैं इन बातों को हम अल्प बुद्धियों की अपेक्षा आप बहुत अधिक जानते हैं इसी कारण आप से विज्ञप्ति की जाती है कि-जैसे आप ने अति श्रम करके सत्य धर्म प्रचार और देश हित के अर्थ बहुत से अनर्थों को दूर करने का उद्योग किया है और अपना तन मन धन आदि इसके निमित्त समर्पित किया है उसी प्रकार इस...को वास्तव में प्रचलित करने का भी आप ही उपाय कर सकते हैं आप केवल उपदेश कीजिये और उसके अनुसार चलने को आशा है कि सब समाज उद्यत होंगे कोई आप की आज्ञा के प्रतिकूल न करेगा इससे यह बात भी होगी कि जो लोग अपने भातवर्ग और पौराणिकों के भय से समाज में नहीं हो सकते हैं परन्तु वास्तव में चित्त से आर्य हैं वे लोग आर्य्यों को नियमानुसार चलते देख कर और अपने धनादि को पोपों के झूठे जाल से बचता देख कर शीघ्र ही आन मिलेंगे और फिर समाज की बड़ी उन्नति होगी और अभिप्राय पूर्ण रूप से सिद्ध होगा आपके यथावत परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त होगा और आर्य्यवर्त्त के अन्धकार का नाश होकर प्रकाश ही प्रकाश दीख पड़ेगा फिर पौराणिकों को भी आप की शिक्षा मानते ही बनेगी आज कलि[1] के पौराणिकों को अपने व्यवहारों में हानि बहुत सहनी पड़ती है जब उन लोगों को यह ज्ञान होगा कि आर्य्य लोगों को वेदरीति पर चलने से कई बातों का लाभ है और हमारा सा क्लेश कोई नहीं सहना पड़ता तो अवश्य वे लोग सब झूठे झगड़े और बखेड़ों को छोड़-कर यथार्थ धर्म्म ग्रहण करेंगे।

आर्य्य सम्बन्धी जितनी पुस्तकें आप ने रची हैं उनके नाम मूल्य सहित लिखि भेजिये यह भी लिखिये कि वेदभाष्य जहां तक प्रणीत हो चुका है उस सब का क्या मूल्य है और कहां मिल सकता है और आगे के लिये क्या नियम है एक 2 ग्रन्थ यहां की सभा के अर्थ हम लोग मगवाना चाहते हैं सत्यार्थ प्रकाश फिर छप चुका है वा नहीं वा पहिला ही अब तक प्रचलित है।।

आपके लिये लिखने की आवश्यकता पड़े तो किस पते से आप को पत्र

1. यह शब्द 'कल' है। तब हिन्दी का आरम्भिक काल था। 'जिज्ञासु'

शीघ्रा मिला करेगा आप ही के नाम पत्र भेजा जावे वा किसी और सज्जन के द्वारा आपके पास भेजा जावे।।

आप का अनुचर
बरेली आर्य्यसमाज का मन्त्री
भोलानाथ
बक़लम तुलसीराम प्रधान

(ख) 27

ओ३म्

सिद्धि श्री सर्ब्व सद्गुण सम्पन्न श्री 108 स्वामी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी के पत्सरोज में भोलानाथ की नमस्ते–

आप की कृपा से इस समाज का प्रथम वर्ष समाप्त हुआ और उसका वार्षिक उत्सव श्रावण कृष्ण 10 रविवार को नियत हुआ है, विनय पूर्वक आपके। चरणाविन्द में प्रार्थना है कि उक्त समय पर पधार कर इस समाज को सुशोभित कीजिये–और यदि आप का आना न हो तो किसी अपने शिष्य को भेज दीजिये–सब समाजों में भी निमंत्रण भेजे गये हैं–

संवत 1940 वि०
मिति असाढ सुदी 12

आप का सेवक
भोलानाथ
मंत्री आर्यसमाज, बरेली।

श्रीयुत म० कृष्णलाल जी अल्मोड़ा के पत्र

(ख) 28

अल्मोड़ा ता 29 मार्च 82

शिद्धी श्री वमवई शुभस्थाने सर्व उपमायोग्य श्री 6 मत्स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चरणन तल किश्नलालसाह अल्मोडा वाले का अनेक भांति दंडवत प्रणाम पहूंचे यहां के समाचार भले हैं आप की कुशल मंगल हमेशह श्रीभगवानजी से चाहता हूं आप का कृपापत्र चैत्र वदी 11 बुधवार संवत् 1938 का बंबई से मेरे पास पहुंचा जिस बात के लिए आपने मेरे ऊपर आज्ञा करी है मैं जहां तक मुझ से हो सकेगा उद्योग करूंगा पर मैं गरीब आदमी हूं सायद यही के ब्राह्मण लोग जिन्का यहां वडा जोर है और जो आप से और आप के सेवकों से हमेशह विपरीत रहते हैं इस काम में विघ्न करता न वने इस कारण से कि यह काम एक बनिए के हाथ से होता है समझ के सो

मैं आप से एक अर्ज करता हूं कि जैसा आप ने दो पत्र मेरे पास भेजे हैं उसी तरह के पत्र तफसील जैल मनुष्यों के पास भेज देवें तो अवश्य वे लोग कोशीस करके इस काम को कर देंगे।

राजा भीमसिंघ अल्मोडा

पंडित बद्रीदत्त जोशी सदर अमीन अल्मोडा

ऐ भवानी दत्त जोशी ए ऐ कमिश्नर ऐ
ऐ बुद्धीवल्लभ पंथ इन्सपेक्टर स्कूल ऐ
ऐ गोपीवलल्भ जोशी तहशीलदार गल्ली ऐ

नैनीताल

लाला अमरनाथ साहूकार नैनीताल
पंडित बद्रीदत्त जोशी वकील ऐ

राणीखेत

पंडित जीवानन्द जोशी क्लारक चंम्फावन लोहाघाट
लाला तुलराम वेणीराम साह कोठीवाल अस्कोट
डाकखाना अल्मोडा
रजवार पुश्करपाल तालूकेदार अस्कोट

गढ़वाल

महराजा टिहरी गढ़वाल
रावल मंदिर बद्रीनाथ ऐ
ऐ ऐ केदारनाथ ऐ
पंडित तारादत्त पांडे हेडल्कारक ऐ
ऐ गंगादत्त उप्रेती ए ए कमिश्नर
ऐ गईदत्त जोशी सदर अमीन

हलद्वाणी

पंडित देवीदत्त जोशी पेश्कार हलद्वाणी

रामनगर

छत्री गोपीवल्लभ चेलवाल पेश्कार रामनगर

अल्मोडा

उधोदास आचारी
पंडित तारादत्त तेवाडी डुबकिया
ऐ शंभूदेव ऐ ऐ
ऐ ईश्वरीदत्त ऐ ऐ

सास्त्री नीलकंठ असकोट मारफत रजवार साहब असकोट डाकखाना

अल्मोडा।

मैं बहुत चाहता हूं कि आप से भेंट होवे और अल्मोडा के लोग भी जाने की आप कैसे हैं और आप का मत क्या है पर लाचारी अमर है मेरे पास खर्च नहीं है जो आप को इस शहर में आने के लिये कष्ट दूं ईश्वर इच्छा होगी तो कभी दरशन मिल ही जांगे एक बार आप के दरशन आनन्द बाग में वनारस में हुए थे चार बजे सांझ के समय ता 4 या 5 जनवरी सन 80 में हम चार पांच आदमी आपके दरदशन को आए थे वलके आप ने हम से पूछा था कि आप कहां के रहने वाले है हम ने पहाड़ के कहा था आप ने कहा कि **कुछ प्रश्न किजिए क्योंकि पहाड़ के आदमी अकसर प्रश्न किया करते हैं पर** हम लोगों ने कुछ न कहा बाद को दंडवत करके विदा हो गए। पत्र की पहूंच लिख भेजिए। अनेक दंडवत प्रणाम करते हुवे।

मैं आप का सेवक

किश्नलाल साह

(ख) 29

श्री 6 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चरणन में किश्नलाल साह अल्मोडा शहर जिला कुमाऊं वाले की अनेक प्रकार दंडवत प्रणाम पहुंचे ईश्वर आप को आरोग्य रखे जिस से जो शुभ काम जगत के उपकार के लिए आप कर रहे हैं शीघ्र सम्पूर्ण हो; एक बड़े आवश्यक विषय में आप की अनुमति सलाह अथवा राय लिया चाहता हूं और मुझ को निश्चय है कि आप की कृपा होगी तो आप जैसा इस विषय में उचित समझेंगे मुझ को उत्तर भेज देंगे और यदि आप की सामर्थ में हो तो मेरी शहायता भी करेंगे सो हाल यह है कि मैं बालविवाह के दुष्ट फलों औ जो-जो दुख और पाप इस बाल विवाह में होते हैं उन सब को मैं भली भांति जानता हूं और इस कारण मैं नहीं चाहता हूं कि जान बूझ कर मैं अपनी कन्याओं को जनम भर के दुख में डाल दूं यदि मैं नहीं जानता तो जैसा चलन ब्राह्मणों ने यहां कर रखा है उसी मुताविक मैं भी बरताव करता पर जानने से मुझ को दुख होता है और इस दुख का निवारण करना बिना उस मत के ग्रहण किए जिस में बालविवाह नहीं है और जिसमें एक विवाह की स्त्री के होते ही दुसरा विवाह करना भी मना है किस तरह हो सकता है, अैसा मत आजकल हम लोगों के बीच है ही नहीं अलबत्ता वेदों में तो यह मत है पर वह भी प्रचलित हुवा कि नहीं इस का मुझ को ठक हाल मालूम नहीं हिन्दुस्तान में कई आर्य्यसमाज तो हैं पर उनके बीच अभी विवाह की रीत भांत बदली की नहीं। मेरा विचार

बालविवाह और स्त्रीयों के पढ़ाने लिखाने के विषय में बहुत बरसों से यहां के लोगों से अलग था याने उनकी राय जो ब्राह्मणों के स्वार्थ लाभ के लिए स्त्रीयों को मूर्ख रखने की है वैसी राय मेरी नहीं थी इस हेतु मेंने अपनी कन्याओं को पाद्री लोगों के इस्कूल में भेजा था वहां उन्होंने कुछ थोड़ा सा पढा था इस बीच मे कारोवार में फर्क आ जाने से कुछ चित्त में खेद हुवा मैंने उन्को भी इस्कूल जोन से रोका और घर में भी कुछ अच्छा बन्दोबस्त उन्के पढ़ने का नहीं है और अब मुझको दारिद्र ने दबा लिया है पर जो हो मेरी इक्षा बालविवाह की अब भी नहीं है उनमें से बड़ी कन्या अब 13 बरस की होने चाहती है उस्के विवाह विवाह करके में यदि यहां की रीत जन्म पत्रादि के द्वारा जो प्रचलित है किई जावे तो लड़की कहां जा पड़े और सदा दुखी रहे मेरी यह इक्षा है कि किसी सज्जन मनुष्य से जो लिखा पढ़ा हो इस कन्या का विवाह होता तो बहुत ही भला होता और उस्का पति किसी मुल्क का आर्य्य धर्म वाला होके वेदोक्त रीति पर उस से विवाह कर लेता; मैं अति दुखित हुं कि दरिद्र के कारण इस विषय का बन्दोबस्त मैं आप ही करने को असमर्थ हूं इस कारण आप की सहायता चाहता हूं जो आप कुछ सहायता इस्मे मेरी कर सकें तो मुझे को उत्तर लिख भेजे जो न कर सकें तो वैसा लिख भेजें।। **पहले समय में जब किसी को किसी प्रकार का दु:ख आ पड़ता था तो ऋषि मुनियों की सहायता ढूंढते थे अब इस काल में आप के सिवाय दु:ख के समय सुशिक्षा देने वाला कोही भी देख नहीं पड़ता इस कारण आप के चरणों मैं अपना दु:ख प्रकाश करता हूं और आप से प्रार्थना पूर्वक प्रणाम** करके आप के बहुमोल्य समय के बीच यह पत्र भेज के उस की हानि जो कुछ हुई हो उसके लिये क्षमा चाहता हुवा आपका दासानुदास किश्नलाल साह इस पत्र को बंद करता हूं ता 14 सितम्बर सन् 1883

पत्र किसी दूसरे के हाथ चले जाने के भय से इस पत्र रजिष्ट्री करा के भेजा है क्षमा किजिएगा।

कृष्णलाल भट्ट

नं० 14 (अल्मोड़ा)

(ख) 30

श्रीयुत पण्डित् रमादत्त जी त्रिपाठी नयनीताल के पत्र

[1]ॐ भू र्भु स्व: विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कवि: प्राशा विद्भदे द्वी पदे

1. इसी पत्र में यह अशुद्ध लिखा हुआ मंत्र निम्नलिखित प्रकार शोधा हुवा भी वर्त्तमान है।

शं चतुष्पदे।। पिनाक मध्यꣳसवितावरे ण्यनु प्राणणे विराजती इस्मै शुद्धा शुद्ध विचार आप कर लीजिये।

ॐ परमात्मने नमः

श्रीमद्विद्यासागर स्वामी जी चरणेषु नमस्ते उक्त मंत्र किस वेद का कौन से अध्याय की कौन ऋचा है इसका शब्दार्थ भावार्थ क्या है अपनी करुणा से उत्तर प्रसाद कीजिये पत्र कुत्र अशुद्ध हो शुद्ध कर दीजिये उत्तर के लिये टिकट भेजा है पता मेरा यह है–

श्रावण 24 गते भौमे — पण्डित रमादत्त तृपाटी
1940 वि० — मिशन स्कूल, नयनीताल।
7.8.83

(ख) 31

ॐ खम्ब्रह्म

श्रीस्वामी दयानन्द चरणारविन्देषु नमस्ते

महाराज जी किसी ईसाई ने प्रश्न नहीं किया (विश्वा रूपाणि यजुर्वेद 12 अ० 3 मन्त्र अब आप के लिखने से ज्ञात हुआ यह इस देश के वनियों की गायत्री है।[1] बहुत लोगों ने मुझ से कहा हम तथा हमारे पुरोहित अर्थ नहीं जानते तुम स्वामी जी को लिख कर अर्थ मगा दो तब आप को कस्ट दिया था मैं मिशन स्कूल में शिक्षक तो आजीविकार्थ हूं परन्तु धर्म्मसभा का लघुतर सम्पादक भी हूं मुझे अपना अनुगामी समझिये इतनी भूल मेरी अवस्य है आद्यन्त ऋग्वेद तथा यजुर्वेद जहां तक मुद्रित हुआ है देख लिया होता। अब यहां के निवासियों को पुरोहितों की ओर से सन्देह हो गया यदि आप आज्ञा दें तो गुरु मन्त्र अर्थ सहित बतला दूं। मैं ईश्वर का खोजी हूं वेदभास्य भूमिका आर्य्याभिविनय आदि कई पुस्तक मेरे पास हैं मुझ को पुस्तकों के संचयावलोकन का व्यसन है परन्तु पातञ्जल योगसूत्र के पूरी भाषा टीका का अभिलाषी हूं आपने सम्पूर्ण सूत्रों की टीका बना कर छपवादी हो तो पता दीजिये मगा लूंगा अथवा आप के पास हों तो? पुस्तक अभ्यासार्थ प्रसाद कीजिये मूल्य शीघ्रमेव भेज दूंगा अथवा और कोई पुस्तक इस वीच वेद वेदाङ्ग की छोटी सी उल्था करके मुद्रित कराई हो तो उत्तर दीजिये जिस से सेवक को आत्म ज्ञान शीघ्र

ॐ भू र्भू स्वः विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे।। विनाक मख्यत्सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो विराजति। यजुर्वेदे। अध्याये तृतीये तृतीयो मन्त्र।

1. जाति पाँति ईश्वर की उपासना के मन्त्र भी न्यारा-न्यारा हो गया। 'जिज्ञासु'

प्राप्त हो मैं जन्म जन्मान्तर का पापी असत्ती अधर्मी दुराचारी हूं मुझ जन्मान्ध को ज्ञान चक्षु दीजिये। सर्वज्ञेसु किमधिकम् वि०
20.8.83

रमादत्त तृपाटी
पण्डित मिशनस्कूल, नयनीताल।

(ख) 32

श्री 5 स्वामी जी नमस्ते

(हिरण्यवर्णा हरिणीं) यह श्रीसूक्त वेदानुकूल है वा प्रतिकूल, इसके कितने वार पढ़ने कितनी आहुति देने से लक्ष्मी प्राप्त होती है कृपा करके इसका उत्तर प्रसाद कीजिये सार्थ शुद्ध पाठ की 15 ऋचा कहां प्राप्त होगी।
3.9.83

पण्डित रमादत्त तृपाठी
मिशन स्कूल, नेनीताल।

(ख) 33

आर्य्यसमाज आगरा का अभिनन्दन पत्र (ऐड्रेस)

ओं

प्रशंसापत्र आगरा आर्य्यसमाज की ओर से

धन्य है सत्यस्वरूप, सर्व व्यापक, सर्व गुण सम्पन्न, ईश्वर को कि जिस के कृपा कटाक्ष से संसार के कल्याणार्थ और माया तमावृत, वा मोह विमोहित जीवों के निस्तारार्थ सत्य विद्या और उस विद्या के प्रचारकों की सृष्टि हुई है।

उसी कृपालु ईश्वर ने हमारे अज्ञान अन्धकार संयुक्त मनों को सत्य स्वच्छ अमोघ आन्दमय पदार्थ से प्रकाश करने के लिये श्री महानुभाव, महात्मा गुणागारं दयासागर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को इस स्थान पर भेजा, कि जिनके सूर्य्यवत् प्रकाश से सत्यावलम्बी जनों के कोमल कमलसम सकुचित् त्द्दये तत्क्षणात् प्रफुल्लित हो गये और मोहविमोहित जनों को उनके प्रभाकर वत् प्रभा से ज्ञानचक्षु प्रकाशित हो गये, उक्त महानुभाव के शुभागत से असत्य का ह्रास और सत्य का प्रकाश हुआ।

धन्य है ऐसे बीर्य्यशाली सत्पुरुषको कि जिन्होंने अपने तन मन और धन को केवल परोपकार में ही लगाया, सुफल है उनकी विद्या कि जिसने संसार की अविद्या विनाशार्थ उस्का प्रकाश किया, सुफल है उनका पुरुषार्थ जिन्होंने

असत्य सागर से जीवरूपी पोत को निमग्न होने से बचाया, और सत्य काण्डारी की सहायता से संसार सागर में हमारा खेवा पार लगाया, और वेदों के उद्धार से और उसके सत्य अर्थों के प्रकाश से जीवों को भ्रमजाल से छुड़ाया और इन्हीं महात्मा ने यथार्थ आर्य धर्म्म का (कि जो सहस्त्रों वर्ष से अंध कूप में पड़ा था) पुनः प्रकाश करके उद्धार किया।

हम उस समय के साभाग्यै को तोल नहीं सक्ते कि जब हम ऐसे सत् विद्या प्रकाशक के समीपस्थ थे और उनके सत् उपदेशों से अज्ञान का विनाश होता था, क्या हम अब उस्के विपरीत न समझें कि जब हम अपने सत् प्रकाशक के आगमन का आकार रहित करते हुये देखते हैं परन्तु कुछ दुःख का विषय नहीं है क्योंकि हम स्वार्थी नहीं हैं और स्वार्थ परित्याग भी उनका 1 उपदेश है, यदि सूर्य एक ही स्थान में बाँध दिया जाय, तो सारे भूगोल में प्रकाश नहीं हो सक्ता इस कारण उनका और आर्य्या बंधूओं के उपदेशार्थ यहां से जाना भी आनंद का समय है, और जहां पर उनका गमन होगा उनको भी ऐसा ही सुख लाभ होगा।

अब हमारी श्री महाराज आप से यह प्रार्थना है, हम अल्पज्ञ जनों पर सदा सर्वदा कृपा रक्खेंगे और अपने शुभ समाचारों से ज्ञात करके आनन्दित करते रहेंगे अब हम सर्व शक्तिमान् ईश्वर से इस समय यह प्रार्थना करते हैं, कि आप को आरोग्य रख कर आप के परोपकार संयुक्त वाञ्छा को परिपूर्ण करे।

आपका दास, यमुनादास बिश्वास
मंत्री आर्य्यसमाज

क्रिशननारायण, सनरमक, भागवतप्रसाद, हरीकिशन, जवालाप्रसाद, भगवानदास, लक्षमणप्रसाद, माः मथरादास, प्रभूदयाल, प्रागयनारायण गेंदालाल, सोहनलाल, गिरवरलाल,

(ख) 34

श्रीमत्परमहंस परिव्राजका चार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ओर से श्रीयुत चौवे कन्हैयालालजी को पत्र[1]

ओ३म्

चोवे कन्हैयालालजी आनन्दित रहो नमस्ते

1. इस पत्र के अक्षर श्री स्वामी जी महाराज के अपने नहीं हैं। मालूम होता है कि यह पत्र

विदित हो कि पत्र आप का आया समाचार विदित हुए आपने प्रश्न किये सो अब हमारे पुस्तकों में उत्तर सहित लिखे हुए हैं उनमें देखने से सव वातैं विदित हो सकती हैं। तुमने प्रथम ही वार ये प्रश्न किये हें इसलिये इस दफे तो सब के उत्तर देते हैं परन्तु आगे हम से प्रश्न करौगे तो हम उत्तर नहीं देंगे क्योंकि हम को काम बहुत है इस कारण से समय बिलकुल नहीं मिलता उत्तर (1) संध्योपासन और गायत्र्यादिनित्य कर्म द्विजों अर्थात् तीनौं वर्णो के लिये एक ही है तीनों वर्ण गुण कर्मो से माने जायेंगे जन्म से नहीं शूद्र जो विद्यादि गुणों से हीन है इस कारण से उसे संध्योपासना नहीं आ सकता इसलिये वेद के किसी मंत्र को याद करके जपा करै।

उ० (2) कायस्थ अबंष्ठ हैं शूद्र नहीं। इस विषय में संक्षेप से लिखा है विस्तार पूर्वक शास्त्रों के प्रमाण देकर लिखने को समय नहीं है।

उ० (3) मुसलमानादि अन्य मत वाले वैदिक मत में आवैं तो वे जिस वर्ण के गुण और कर्म युक्त हों उसी वर्ण में रह सकते हैं विवाह और खान पानादि व्यवहार भी अपने समान वर्ण के साथ करैं आज कल के आर्य्य लोग उनके साथ उक्त व्यवहार नहीं करैंगे इसलिये अपने लोगों में ही करैं और मत वैदिक रक्खैं इस मे किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती।

तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार संक्षेप से दिये है विस्तार पूर्वक हमारे बनाये ग्रंथों में देख लो।

हस्ताक्षर

ता० 16 अप्रेल — **दयानन्द सरस्वती**

सं० 1881 ई — स्थान जयपुर राजपूताना

(ख) 41

॥ओ३म्॥

॥ तत्सत् ॥

स्वस्तिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य पाखण्ड मतोन्मूलक शन्मार्ग प्रवर्ततैक परब्रह्मैक निष्ट तदानंद पीयूख श्रीषट् कांन्युत स्वामी दयानंद सरस्वती जी योग्य आर्य्य समाज फर्रुखावाद का अभिवादन शतसः वंचने॥

आगे यक विनय पत्र ता० 15-5-80 आप को भेजा है सो पौचा होइगा। आगे कानपुर से आप जब यात्रा करना चाहे तब कुछ दिन की फुर्सत

उस असल पत्र की प्रति लिपि (नक़ल, कापी) है जो श्री स्वामी जी महाराज ने श्रीयुत चौबे कन्हैयालालजी को भेजा था।

निकाल कर इहा हम लोगन को दर्शन देकर कृताथ कीजिये कोई कोई बात की समाज में हानी है सो आप के आये सब सब पूर्ण हो जायगी और मदर्सा जो भया है उसका भी उत्तम प्रबंध आपके आउने से हो जाइगा सो आप को जरूर-जरूर कृपा करनी चाहिये।। और इहा से आप की इक्षा होइ तौ मैनपुरी इटावा हो कर आगे जहा की निश्चै करी होइ तहा को यात्रा करने उक्त नगरों में भी आप के दर्शन की बहुत लोगन को उत्कण्ठा है।। और ज्वाला इहा है नहीं आउने की भी निश्चे हम को नहीं है कि वह आपके पास आवे लेकिन पत्र 3 आप के जो इन दिनो आये है सो उनोने कोई देखे नहीं है आप इहा आमेंगे और वह भी उस वखत इहा होइगा तौ चाहे आप के साथ होजाइ केकिन हमने उनके घर वालो से दरियाफ किया तो उनोने यही कहा कि उनका जाना नहीं होइगा।

इति।। ता० 17-5-80 ईसवी

तोताराम भी अपने काम से निवृत्त हो गया आप इहा आमेंगे जब आप के साथ हो जाइगा सो जानने*

(ख) 42

स्वामी जी दयानन्द सरस्वती महाशय जी पश्चात् दंडवत् के निवेदन यह है कि कोई आपका पत्र नहीं आया मुझ दास पर जो कृपा हो गई सो मैं आपका अति धन्य करता रहूंगा प्रसाद कर आप अपने रचे ग्रन्थ व्याकरण के जो हैं कृपा पूर्वक भेज दिजे तो अति अनुग्रह होगा मैं चाहता हूं कि आप के ग्रंथों को एक वार देख जाऊं तो कुछ प्राप्त हो आप का दास शिष्य मैं मुझ पर सदा दया कीजे और पुत्रवत् जानिये–

निवेदन मेरा यह है सदा दया दान दीजे।
यश हो आपका सदा उपकार लीजे।
मुझ को शिष्य कर योगमार्ग दान दीजे।
दास हूं तिहारो यथायोग्य कीजे।
मैं नाम तिहारो धर्ता गुरू आप हैं भर्ता।
ऋषि जी प्रसाद दीजे आप ही कर्त्ता।
शिवयोगी सम तुल्य आप योग दान दीजे।
अल्प बुद्धि मेरी इसको महत्व दीजे।
वेदभाष्य रच आप सदा संसार प्रकाश कीनो।
परोकारी सदा ज्ञानी ज्ञान दास को दीजो।
मन वचन क्रम से दास तिहारा, सदा लूं तेरा।

मुनिवत् प्रसाद सदामोहि दीजो, तव शिष्यों में नाम मेरा।
मैं दासी पापी क्षुद्र बुद्धि ज्ञानी महान् तुम हो सदा,
शिष्य पुत्रवताज्ञा कारी आश्रय तुम्हार अब कीनो है–
योगमार्ग अब शीघ्र बताओ विद्या दान देव सदा।
खुन्नीलाल अनाथ दास हों आश्रय तुम्हार अब कीनो है–

खुन्नीलाल
विद्यार्थी फोर्थ किलाश

(ख) 45

VEDIC PRESS, BENARES.

No. Dated the

1881[1]

Dear Sir!
नमस्ते नेकधा

भगवन्

पत्र आया हाल मालूम हुआ यह तो मैं प्रथम ही स्वीकार कर चुका हूं कि आगे को अशुद्ध न रहने देऊंगा ऋग्वेद के 473-477 तक जो अशुद्धि दोष लिखे गये ये मेरे नहीं है मैं तो 12 तारीख बाद में यहां आया हूं यह फारम प्रथम छप गया था। में जब यहां आया था तब काम की भड़भड़ी जादा थी और शोधना बहुत स्थिर चित्त से चाहिये।

इस से अब आगे को कुछ रोज इस काम में मेरी परीक्षा लेकर तब यह स्वीकार करना चाहिये कि शोधने में तुम्हारी कच्ची दृष्टि है यद्यपि अशुद्ध तो अभी मैं भी देखता हूं लेकिन आगे न रहने देऊंगा।

नवीन रचना के विषय में जो आपने लिखा सो जितना संस्कृत आप से मैं देहरेदून में कह आया था उतने ही को नवीन रचना कहता हूं व्याकरण के पुस्तकों में अभी तो भाषा ही बहुत मैं काट देता हूं लेकिन आगे इतना काम व्याकरण में होना चाहिये कि अभीष्ट भाषा शोध कर जो संस्कृत बने उस संस्कृत और भाषा को मिला कर फिरि कंपोस के लिये कांपी लिख कर उस कांपी को अच्छा शोध कर तब व्याकरण छपवाया जाय। इस प्रकार की कांपी 60 वा 70 पृष्ठ जब तैयार हो जाय तब महीने का छपवाई का काम 15 वा 16 फारम का चले इसलिये प्रार्थना यह है कि एक लेखक मेरे लिये देना चाहिये और शोधक का जो आप ने विचार किया सो तो अभी न चाहिये था क्योंकि मुझे दो महीने यहां आये हुए हैं यहां का सब काम अच्छी प्रकार मेरी दृष्टि

1. यहाँ दिनांक मूल में ही छूटा है। 'जिज्ञासु'

में हो आया है और शोधन में भी उचित परिश्रम करूंगा। और जो नवीन को आप करेंगे तो महीने दो महीने उस से भी काम बिगड़ेगा इस से जब मुझ से न हो सके तो चाहे जिस को करि लीजिये। किंवहुना

नामिक की कांपी जब मैं भेजूंगा तब मेरे भाषा के काटने में रुचि हो तो आगे को जैसी अज्ञा होगी वैसा करूंगा वेदभाष्य की जो नवीन भाषा बन कर आती है कहीं-कहीं दूरान्वयी बहुत है अब की दफे आप के भय से जैसी-जैसी भाषा जहां 2 सोची मैं वैसी नहीं कर सका।

(ख) 46

वैदिक यन्त्रालय बनारस

संख्या 1 ता० 19 ज० सन् 1881

नमस्ते!

भगवन्

यजुर्वेद के पृष्ठ 7 अ० आ० 50 तक आये। आप के वार 2 लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं किन्तु मैंने जब से शुद्धि पत्र बनाया है तब से अपने काम में आप ही लज्जित हूं क्योंकि और बदनामी तो पीछू है प्रथम तो इस विषय में यही लोग कहेंगे कि शोधने वाला महा मूर्ख है इसी से अपने काम के लिये आपको दो दफे अवकाश के लिये लिखा परन्तु उस विषय में आपने दृष्टि न दी अब जो उचित हो तो इतना मानिये कि मुझे जो आपने भाषा बनाने को कहा सो बनाऊंगा और शोधूंगा इससे अधिक चिठ्ठी पत्री वा हिसाब मेरे लिये रहे परन्तु और इससे अधिक काम करने को समय नहीं मिलता और जो करूंगा तो सब गड्डवड् होगा सफाई से नहीं होगा क्योंकि जो डेढ सौ वा दो सौ श्लोक लिखे जाते हैं उस प्रकार के 6 सौ वा 7 सौ मेरे लिखे श्रुद्ध हो सके सो न होंगे यह अपने सब काम के लिये दृष्टान्त देता हूं इसी प्रकार जितना काम देओ किसी विधि जहां तक करि सकूंगा तहां तक करि लेऊंगा परन्तु वह सब काम जल्दी का किया हुआ साथ सफाई के हो सो नहीं हो सकता है। आगे आप को अखतयार है जो चांहों सो कीजिये मुझ से जहां तक अपने काम की सफाई होगी उसमें चूक नहीं करूंगा यह प्रतिज्ञा करता हूं अधिक काम व्याकरण में संस्कृतादि बनाना और उसकी कापी लिखना यह आगे के पुस्तकों में होगा। इसे आप अपने पास ले लीजिये जैसा चाहों वैसा संस्कृत बनवा कर वा बनाकर कापी लिखा के भेजते जाइये। तो सब काम अवकाश से होगा। अथवा जो आप की मरजी हो सो कीजिये। मैं

कुछ और नहीं कह सकता हूं इतना तो पूर्व लिखे के अनुसार कहंगा कि

अधिगतं विधिवन्मम लेखनं न च तथा स्मृतमात्म विमर्शतः भगवता प्रथिता ननु मत्कृता-वघरा घबराय गया इति। अघवरा इत्यत्र अघेषु दोषेषु वरातिशयिता वक्ष्यमाणा पूर्वोक्ता वागिति संबंधः।

भीमसेन के विषय में जो आपने लिखा सो उनकी पंडिताई को धन्यवाद देता हूं।

मैंने जो नित्यत्व, किया है,

निर्देश, इनके विषय में लिखा है उनमें किया है यह कुछ अशुद्ध नहीं किन्तु भाषा के कुछ लालित्य भाव को देख के दिया है लिखा है। नित्यत्व और निर्देष के विषय में फिर विचार लेना उन में शंका समान बहुत हैं और वे पत्र में नहीं लिखे जा सकते किन्तु जब आप आवेंगे तब आप ही के सन्मुख जिज्ञासु हो कर कर लेऊंगा 20/34/35 इन संख्याओं की जगह 10/35/25 ये संख्या मैंने बनाई ही नहीं इनका लिखना कैसा हुआ।

टाइप लिख चुका हूँ

लाजरस साहिब वा मुम्बई के शोधने वालों को शोधने से अधिक काम हो तो शोधने में सफाई उनसे भी कभी नहीं हो। यद्यपि मुम्बई का हाल शोधन का अनुमान से जानता हूं परन्तु साहिब के शोधने वाले का वृत्तान्त प्रत्यक्ष है। किमधिकमधिकोक्तभिः।

फारम गिनकर लिखूंगा वा सादीराम जी लिखेगे।

(ख) 47
वैदिक यन्त्रालय काशी

संध्या

वनारस

नमस्ते

भगवत

आपने जो मास्टर सादीराम के पास मुं० व० के अपराध पकड़ने के लिये पत्र भेजा वह मुझे विदित हुआ मुं० व० का लिखाया हुवा जो प्रति मास का हिसाब उर्दू मे है उसको सादी राम जी मुझ को रात्रि में लिखाते हैं लिख रहा हूं आप के पास भी भेजूंगा और जो विशेष अपराध की जगह देखूंगा वहा सूचना क अलग आपको लिखूंगा अब तो जो अनेकी जगह ब्यौरेवार लिखावट नही है इस से मालुम होता है कि उनका मन चीना लेख है और काम वालों से जो काम लिया है उस में अपना अभिष्ट काम लेकर उन्होंने आप का दाम खरच किया है जैसे (एक कामता कम्पोजीटर जो कि नागरी अगरेजी और उर्दू

मे अति प्रवीणता से कंपोस करने वाला है मेरे आये पर 3/4 रोज कंपोस उस का अति मंदयम का हुवा मैंने उस से एक दिन कहा कि बड़े शोक की बात है जो तुम्हारा एसा कंपोस हो उसने मुझे लज्जित हो कर जवाब दिया कि पडित जी आप का आगवन ही मेरे लिये मदंता का कारण हुवा मे जब से नौकर हवा हूं 5/6 वार वेदभाष्य आदि पुस्तकों के कंपोस की शपथ नहीं देता हूं और जो मैंने आर्य्यदर्पण की उर्दू व अंगरेजी का ही कंपोस किया) यह 8) मासिक पाता है कई जगह बढ़ई के नाम दाम हिसाब में पकड़े है जैसे एक जगह 17 लिख है काम एसा अंत्यन्त उस का नहीं मालुम होता है अथवा मेरी अल्प बुद्धि हो तो सादीराम जी इन बातों में आश्चर्य मानते है और में तो लिखते पठते ही शोक ग्रस्त होता हूं क्योंकि जब से आया हूं मेरी बिन घाट ही गुजर हुई और होती है।

नालिस कागद् छटि के जब पूरी गलती पाई जाय जब कहनी उचित है किन्तु इस काम में शीघ्रता नहीं करना चाहिये। ठाकुर मुकन्दसिह वा भूपालसिंह जो आप से आप मुखत्यार किये यह उत्तम काम हुवा क्योंकि धर्माधर्म के व्यवस्थापकि क्षत्री जन ही है।

काम जो कि आपने हमारे दोनों के लिये लिखे वे हम दोनों ने संयोक्त स्वीकार किये और पहिले ही से कर रहे हैं,पुस्तकालय की तारी सादीराम जी ने अपने विचार से प्रथम ही मुझे दे दी थी आगे ईश्वर की साक्षी पूर्वक अपने पुरुषार्थ मर आलस नहीं करेंगे।

हस्ताक्षर करने कराने की व्यवस्था 1 तारीख अच्छी प्रकार चलेगी क्योंकि अभी सब रजिस्टर आदि लिखा पढ़ी मैंने साफ नहीं कर पाई है और जो वही करता तो अंक इस महिने मे नहीं तैयार करवा पाता।

जामिनी के लिये जो आपने लिखा बड़े हर्ष की बात है रीत छोड़ कुरीत जो आप चल रहे थे उसे कोन अच्छा कहता था इस विषय में प्रथम तो इनाम की सफाई चाहिये क्योंकि उसी से व्यवहार की शुद्धि होती है।

आप ही कहना अयोग्य है परन्तु 8/9 वर्ष से आप मुझे हर एक व्यवहारों में देख रहे हैं बुद्धिमान पुरुष मनुष्य की शीघ्र परीक्षा कर सकते है आप मेरे गुण वा अपगुणों को अच्छे प्रकार जानते भी हैं और मैं इस विषय में प्रतिज्ञा करता हूं कि जैसे-जैसे अपराध मुंशी वखता०के प्रतीत होते हैं मेरे मन वचन और कर्म से वे अपराध न होगे यह भी कह सकता हूं मेरे आधे जामिन आप ही है इस परदेश में जामिनी किस की दिलाऊं पत्रों से तो इस व्यवहार की अच्छी सफाई नहीं होती है इस से यह उचित है कि आप एक महीने आगरे रह कर जो आगे आवोगे और फरुखावाद में आप का आना हो तो आप की आज्ञा उनुकूल में भी 8 रोज को

आ जाऊंगा वहां इस विषय की सफाई हो जायगी।

हरफ जो अभिष्ट होते है वे स्वारिज हरफों के टाइपफौंडर से ढलवा लिये जाते हैं अधिक शीशा नहीं है जो शीशा की तजबीज होगी तो हरफ और हूं बनवाना अच्छा होगा जिस से अभिष्ट सब की डेउढ़ लगी रहे। सब कारीगरो से यथायोग्य वृत्तांत पूछ रहा हूं कोई 2 लोग मुंशी वखतावरसिह की आशा में मालुम होते हैं वे भी प्रेसमान कुछ चेष्टा मुं० वु० की आशा की सी कर रहा है सादीराम चाहते हैं कि और अच्छा आदमी मिले तब उसको निकाल दे औरहू ज्यादा खरच मालुम होता है वह भी वे कम किया चाहते जैसा होगा वैसा आप को लिखा जावेगा। कागजों के लिये कलकत्ते से जवाव आ गया है।

24 पोंड केले कागज के 1 गठ्ठे के दाम 160 लिख आये हैं सो अवश्य भेजते होंगे।

सातवे फरमे पर आज आज्ञा दे चुका हूं काम सब अच्छे परिश्रम से हो रहा है और आगे को भी साथ परिश्रम के होगा आप किसी काम की चिन्ता न करते मास्टर सादीराम व्यवहार में अच्छे प्रवीण हैं।

सुन्दरलाल का पत्र आया है वे भी आवेगे। हमारे मित्र राधाकृिष्ण जी के साथ प्रीति के हमारी ओर से समझा दीजिये कि तकार की जगह द्वित्त्व सा तकार न वनाश करें उनके थोड़े इसारा में भी कंपोस वाले स्पष्ट द्वित्त्व कर देते हैं औरहू पकार यकार आदि का भेद रक्खे उनको यह शिक्षा उन ही के लिये लाभदायक होगी हम तौ अपने काम को सम्हार ही लेते हैं

मिति मार्ग व. 8 — भवनदनुग्रहककांक्षी
संभव 1937 — **पंडित ज्वालादत्त**[1]

(ख) 48

वैदिक यन्त्रालय काशी

संख्या — बनारस — सं० 1880 ।।
दि. ता. 18

पौ. व. 2

नमस्ते! भगवन्

यजुर्वेदस्य पत्राणि प्राप्तानि।

भवत्पत्र समीरित प्रश्नोत्तराणि मदीय पत्रेण सादीरामस्य पत्रेण वा यास्यन्त्येव। भवन्तो यथार्थतया मत्पत्रं न पश्यन्ति सादीरामस्य च पत्रं न शृण्वन्ति।

1. इस पत्र के अक्षर पं० ज्वालादत्त जी के अक्षरों के साथ नहीं मिलते।

यतो यानि भूमिकादीनि पुस्तकानि भवद्भिः प्राप्तानि तद्र्थं यन्मया पृष्टं कस्य नाम्नि लेख्यानि तदुत्तरं न प्राप्तम्।

नवम्बर मासावधि स्वमासिक धनव्यवस्था सर्वा लिखिता न जाने भवद्भिदृष्टा नवेति।

मासि मासि यावन्मुद्रितुं शक्नोति तदपिमया लिखितं न जाने भवद्भिः प्राप्तं नवेति।

किमत्र कारण मिति भूयः शङ्के। सम्प्रति। (गोलमाल कहने की बात है) इत्याद्या लापे न दूयेच।

भगवन्

नैव मुंशी वखतावरसिंहाभिधो मम प्रियभ्राता नापि मित्रवरः।

न चात्मीय प्रयासेन भवत्कर्मणो न्यूनत्वमिच्छामि सादीरामेणाप्येकतामासाद्य कार्य्य हानिं नेच्छा मि न निष्कामोहं मासिक धनं भोक्तु मुत्सहे।

कथं भवन्तो मुंशी वखतावरसिंहस्य व्यवहार संजात रोषाग्नि ज्वलित निशित शराणि ज्वालादत्तं (गोल माल०) इत्यादि वचनैः प्रयो जयन्ति।

नायमेतेषां कठिनतर कष्टं सोढुमर्हति। आतश्चात्रया धीवर्य्यागच्छति तस्याः पतिः कारागारे मृतस्ततस्सा द्वादश दिवसान्नागतेति मयैव रात्रौ पाक भूमि प्रच्छालनं पाक भाण्ड धावनं च प्रतिदिनं विधायाः स्वस्य सादीरामस्य चान्नपाकः कृतः।

पहिले हिसाब विचारने को

अतस्तावत्पूर्वक विनिमय विमर्शा यावसरो न जातः। दिवसे च यन्त्रालयस्य कार्य्या न्नावकाशः प्राप्तः। यन्त्रालयस्य कार्य्य मपिनावरुद्धम् किन्तु पूर्व संजात कार्य्या दात्मीय समये स्वस्य बुद्धावधिकमेव कृतं कारितं च। तत्र पारितोषिकं गतम् प्रत्युत भवन्तो दुःसह वचनै र्वञ्चयन्ति।

अहो दुर्दिष्टम्। किं कुर्य्याम्।

सादीरामेणैकः सहकारी मुहर्रर इति नाम्ना रक्षितः सोहं च पूर्व धन प्रात्यप्राप्तिं निस्सारयामि भवमिस्सारितां चेक्षिष्ये। यद्यप्यहं स्वगुणैर्दोषभागेव तथापि निश्चये न विना दोषो न दीयताम् किं वहुना भवन् एव पश्यन्तु प्रिय भीमसेनो वेति संस्कृते न पत्रं लिखितम्।

पं० ज्वालादत्त

(अनुवाद)

भगवन्

यजुर्वेद के पत्र मिले।

आप के पत्र में लिखे हुये प्रश्नों के उत्तर मेरे या सादीराम के पत्र से

जायेंगे ही। आप यथार्थतासे (ठीक तरह) मेरे पत्र को ननहीं पढ़ते, और सादीराम के पत्र को नही सुनते।

क्योकि जो भूमिकादि पुस्तक आप को मिली, उसके लिये मैंने पूछा (था) किस के नाम में लिखूं (मुझे) उत्तर नहीं मिला।

नवम्बर मास तक अपने मासिक धन की व्यवस्था सारी लिख दी, न जाने आप ने देखी या नहीं।

मास मास में जितना मुद्रित कर सकता है, वह भी लिखा (था), न जाने आप ने देखा या नहीं।

यहां कया कारण है, यह मुझे बार-बार शङ्का होती है। और अब (गोल माल करने की बात है) इत्यादि आलापों (बातों) से दुःख होता है।

भगवन्

नाहीं मुंशी बखतावर सिंह मेरा भाई है, नाहीं मित्रवर।

और न अपने प्रयास से आपके काम की न्यूनता चाहता हूं। काम किये बिना (निष्कामोऽहम्?) मासिक धन नहीं खा सकता, सादीराम के साथ भी मिल कर कार्य हानि नहीं करना चाहता।

आप मुंशी बखतावर सिंह के व्यवहार से उत्पन्न हुवी हुवी रोषाग्नि से जले तीखे (गोल माल०) इत्यादि वचन बाण ज्वालादत्त पर क्यों लगाते हैं।

यह इनके कठिन तर कष्ट को नहीं सह सक्ता। और जो झीवरनी यहां आती है, उसका पति कारागार में मर गया इसलिये वह 12 दिन से नहीं आई, अतः रात को प्रतिदिन मैंने ही भूमि झाड़ तथा रसोई के बर्तन धो कर अपना और सादीराम का भोजन बनाया।

इसलिये पहिले हिसाब विचारने का अवसर न मिला। दिन में यन्त्रालय के काम से अवकाश न मिला। यन्त्रालय का काम भी न रोका। किन्तु पहिले किये हुये काम से अपने समय में अपनी जान अधिक ही काम किया और करवाया वहां पारितोषिक तो गया, प्रत्युत् आप दुःसह वचनों से बचना करते हैं (वञ्चयन्ति)।

अहो दुर्दैव। क्या करूं।

सादीराम ने एक सहकारी मुहर्रिर रखा है। वह और मैं पहिले धन का आय व्यय निकालते हैं, और आपके निकाले हुवे को देखेंगे। यद्यपि मैं अपने गुणों से दोषी ही हूं, तथापि निश्चय के बिना दोष न दीजिये। बहुत क्या। आप या प्रिय भीमसेन ही देखें इसलिये पत्र संस्कृत में लिखा।

पं० ज्वालादत्त

(ख) 49

पौ. सु. 17

नमस्तेनेकधा भगवन्

मैंने प्रथम कई बार प्रार्थना अन्य पुस्तकों के छपवाने को करी थी उसमें मुझे व्याकरण की नवीन रचना को महीने दो महीने अवकाश मिल जाता अथवा मैंने यह चाहा था कि इस महीने के अवशेष फारमों को छपवा कर तब नामिक का आरंभ कराऊं, महीने के शेष दिनों में नामिक भी छप जाता सो अब तक अंक भर वेद की कांपी नहीं मिली अब मिलेगी जो 18 पृष्ठ तक कांपी आपने भेजी थी उसमें 9 पृष्ठ नवीन पाठ के छपवाने को निकले और पाठ मैं छपवा और कंपोसा करा चुका था सो अब व्यवस्था आपको विदित कर चुका हूं तो अब यह कैसे बने कि नवीन रचना कंपोस के साथ हो सके क्योंकि नित्य कंपोस को 200 श्लोक पाठ चाहिये और संस्कृत के बनने में संस्कृत इस नामिक की कांपी से अलग लिख और जो अब नामिक को शोध रहा हूं इसी तरह भाषा शोध और फिरि उस संस्कृत और भाषा को मिलाकर कांपी लिखके कंपोस को देता जाऊं तथा प्रूफ शोधना भाषा बनाना और पत्र आदि ऊपरी काम जो आपडे यथोचित वह भी सब होता जाय इतना तो मेरा सामर्थ्य नहीं और अपनी बुद्धि के साथ चपलता के आपसे यही कहता हूं कि उक्त सब काम इकट्ठा नित्य 2 करने को मनुष्य का सामर्थ्य न होगा। इससे प्रार्थना यह है कि इस नामिक की पहिली कांपी से मैंने भाषा की बहुत सफाई कर और नोट आदि देकर इसका छपाने का आरंभ करा दिया यह वे संस्कृत छपता है आगे को जो मुझे अवकाश दीजियेगा तो जैसा आप व्याकरण छपाया चाहते हैं वैसा ही छपेगा और संधि विषय तथा नामिक का दूसरी बार के छपने में संस्कृत बन जायगा।

(स्वराधीनं व्यंजनम्) यह स्वयंराजन्त इति स्वराः इस पंक्ति के आशय पर छप गया परन्तु पाठ ठीक नहीं है और मेरे पास महाभाष्य था नहीं उस समय कई बाते महाभाष्य देखने को मेरी आकांक्षा रह गई। अब मामाजी ने लिखा है कि तुम्हारा महाभाष्य हम भेज देंगे। गलती जो आपने निकाली मैं स्वीकार करता हूं यह मेरा दोष है परन्तु आपने मुझे काम भी बहुत दिआ है इतना कुछ आप भी स्मरण कीजिये काशीजी में आकर एक महीने बाद मुझे दस्त 20 रोज हुए अब शरीर अच्छे हैं उक्त क्लेश में यथेष्ट परिश्रम मुझसे नहीं हुआ। पढ़ने के लिये जो आपसे मैं कह आया था सो फारसी तो मुंशीजी से नहीं पढ़ी और संस्कृत का अभी प्रारंभ नहीं किया अभी बिलकुल कुछ

पढ़ता नहीं हूं आगे आप आज्ञा देवें तो गोतम सूत्र आदि पढ़ने को इच्छा है सो पढूंगा।

पुस्तकें मुंशीजी से कह दिया है कल भेजने कहते हैं साथ में समर्थ दान आदि के चिट्ठी पत्र आदि भी भेजने कहते हैं।

भगवदनुग्रहकाक्षिणः ज्वा०

अष्टमाध्याय 1/2 दिन में भेजता हूं।

(ख) 50

॥ ओम् ॥

...भा.कृ.6

सिद्धि श्री 108 मन्महानुभाव स्वामि दयानन्द सरस्वतीभ्यः प्रणत्यानिवेदनम्

51 मंत्र यजु० भेजे हैं आपके पास पहुंचे होंगे इनमें (अ० 23 मं० 18) का नवीन उक्ति से मेरा कहा अन्वय है तथा (23 अ० मं० 32) का अन्वय तीनि प्रकार से मैंने कहा है देखना चाहिये अब भाषा बनाने के लिये अभी जो मंत्र आपने भेजे तथा पिछिले 10 मंत्र मेरे पास और हैं आगे कांपी भेजना चाहिये।

भाषा बनाने के लिये जो गोंदगाद शिवदयालु से मुंशी करा रहे हैं यह तनिक शोच विचार के होना चाहिये इस भाषा बनाने में बहुत जगह कठिन पड़ती और आगे पीछे बहुत ख्याल रखने पड़ता इस काम में जो आपके पास दो वरस न रहा हो और जिसने आपका ठीक सिद्धान्त न जाना हो उससे इस भाषा का बनवाना इस काम का ढंग विगडवाना है क्योंकि जब तक मंत्र भाष्य बना देने का सामर्थ्य जो मनुष्य करलेवे उससे इस काम का कराना लडिकियों का खेल खिलवाना है। पर तो भी मैं जानता हूं कि चाहे काम की सफाई हो या दुर्दशा हो दूसरे आदिमी का ज्वालादत्त के काम पर नाम कर ज्वालादत्त को स्वामीजी के काम से जवाब दिला देना मुंशी समर्थदान ने परम पुरुशार्थ समझा है क्योंकि यह मनीषी और भी कितनी ही कुचेष्टा मेरे लिये कर रहा है जो इसी प्रकार जैसी कि और चेष्टा कर रहा है करता रहा तो आपके काम से मुझसे जवाब अवश्य दिलावेगा।

चकार की जगह और अर्थ तो लिखता ही हूं पर कहीं-कहीं बहुत चकार आ जाते हैं तो भाषा की रीति से सब चकार नहीं लग सकते हैं, क्योंकि भाषा की रीति से बहुत पदों के अंत में और शब्द आ सकता है प्रत्येक पद पर

और नहीं हो सकता। अप्यर्थक जहां चकार है वहां भी शब्द ही अर्थ होना चाहिये और यह पुनरर्थक चकार की योग्यता में आता है। पर तो भी जहां तक भी शब्द वचा मिले वहां तक मैं बचा देऊंगा। **फारसी शब्दों के बचाने के लिये गमारू शब्द भी मिल जाय तो गमारू शब्द धर देता हूं जहां तक वच सकते वहां तक वचा भी देता हूं।** पिछिला जो मण्डल 50 मंत्र का भेजा है उस में 100 मंत्र के तुल्य भाषा थी उसमें रात्रि को भी परिश्रम करता रहा हूं। 15 दिन आगे चिट्ठी भेजन का तो ढंग अच्छा लगे जो आप 200 मंत्र भेजा करें क्योंकि 100 मंत्र एक पक्ष के लिये वैसे ही चाहिये 100 मंत्र आप भेजे तो जिस समय कांपी आवे उसी समय दूसरी कांपी के लिये पत्र देऊं तो 15 दिन पेस्तर पत्र दे सकता हूं इस से इस विषय में इतना निवेदन है कि-जिस में मेरी डिउढ लगी रहे तो पन्द्रह दिन पेस्तर पत्र का नियम बंधे।। किमधिकेन (एकाचमेतिस्रश्चमे०) इत्यादि जगहों में सब चकारों पर और 2 रखना तो ठीक नहीं। आप ने जो कोई अपूर्व युक्ति सोच रक्खी हो तो कृपा कर लिख भेजिये। मेरी शिच्छा के अनुकूल जो हाल आप लिखें उसको मेरे पत्र में लिखिये तो उनबातों को आप की अज्ञानुकूल अपने काम में मैं सम्हालता जाऊं मुंशी समर्थदान से मेरे विषय का मुझे हाल ठीक नहीं मिलता। आप ने लिखा था कि ज्वालादत्त 15 रोज पेस्तर कापी के लिये पत्र लिखा करे यह हाल रामचंद्र ने आपकी चिट्ठी का मुझ से कहा मुंशी कहते हैं कि 15 पेस्तर हम से कह दिआ करो हम कांपी मगा दिआ करेंगे बाबू विश्वेश्वर ने हम से कहा कि भाषा का बंडल तुम आप बांध और एक पत्र उसकी सब व्यवस्था का बंडल के साथ स्वामी जी को दिआ करो। मैं अपने हाथ बंडल बांधू तो मुंशी को वे मन देखता हूं इस से बंडल नहीं बांधता बंडल अपने हाथ बाधूं तो 8वें रोज वंडल के साथ पत्र आपको दिआ करूं अलग जो पत्र भेजता हूं सो अपने पास से किट लगा कर भेजता हूं। इस प्रस्ताव में इतना निवेदन है कि मुझ से विगडे सो मेरे लिये पत्र में लिखा कीजिये और कापी मेरे नाम भेजा कीजिये जो मेरे नाम कांपी भेजने में हानि हो तो न भेजिये। अत्र विषये वहु लेखनं विफली करणमिति भवन्तो विदां कुर्वन्त्वेतावतैवेस्यलम्।।

इस पत्र के लिखने से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि असाबधानी के अवलम्ब से इस काम को किसी तरह विगाडू। तथापि जो मेरे लिये आपका अभिप्रय हो सो। मालूम हो।

भीमसेन[1] अपने अपनी नाराजी से जवाव दे दिया मेरी स्थिरता में मुंशी समर्थदान प्रतिबंधक होगा।

किमधिकम्
कृपापात्र
ज्वालादत्त,

(ख) 51

ओं३म्

भगवन् नमस्ते कैई क्रपापत्र आये परन्तु मैं उत्तर न दे सका कारण यह है कि मैंने प्रबंध किया था कि 20 तथा 22 तथा 24 फमैं प्रात मास छपा करैं परन्तु यह कम्पाजीटर लोग बड़े दुष्ठ जन होते हैं इन्होंने लडभिड कर भैंरों वनारस वाले को निकाल दिया और फिर आप वदमाशी से काम करने लगे और 1 अद्भुत बात यह हुई कि पं० देवीप्रसाद मंत्री आर्य्यसमाज ऐसे बिगड़ गये कि समाज से भी नाम कटा लिया और आप की भी बुराई करने लगे और हमारे अल्प बुद्धि पं० भीमसैन कौ भी बिगाडने लगै उन सै व्याकरण पढ़ने का आरंभ किया सो पढ़ना पढ़ाना तौ क्या आप की बनाई हुई पुस्तकौं मै भीमसेन से अशुधिया निकलवाया करै और उन कौ ऐसा कुछ समझा दिया कि आप स्वामी जी से भी अधिक बुद्धिवान पंडित हौ और पं० भीमसैन नट खट नहीं है पर भोला है संसार के छल छिट्ट कुछ नहीं जानता है जैसे कोई वातौ पर चढ़ादे वैसा ही चढ जाता है। 10 तथा 15 दिन तौ मुझ को क्रोध रहा और मै किसी से नहीं बोला पर पश्चात क्रोध को शांति किया और स्वकार्यं साधयेत० इस शब्द को स्मर्ण कर दौनों मनुष्यों को समझाना आरंभ किया थोड़े दिन मैं भीमसेन तौ सीधा हो गया पर देवीप्रसाद की पहली से बात तौ अब नहीं रही पर हां कुछ-कुछ सीधे हुऐं है अब कुछ हमारे अतिसहाई तौ नहीं हैं पर विरोधी भी नहीं रहै और कुछ-कुछ सहाय भी करने लगे है यह कारण काम बिगडने का रहा—और दयाराम जी का यह हाल है कि विद्या और बुद्धि उनकी बुहत थौडी है और बिना दूसरे की सहायता से काम कुछ नहीं कर सकते है इनसे केवल इतना ही भरोसा है कि आदमी

1. ऋषि को प्रेस के लिये यदि पं० कृपाराम, पं० गंगाप्रसाद पं० घासीराम, लेखराम जैसे दो लेखक मिल जाते तो इतिहास कुछ और ही होता तथापि भीमसेन जैसों के होते हुये भी युगबदल दिया। यह अचम्भे की बात है। 'जिज्ञासु'

ईमानदार हैं और हात पेर सै आप भी दिन भर महनत करते है और अन्य मनुष्यों को भी खूब देखा करते है।। जब तक रामनारायण प्रयाग मैं रहा यंत्रालय का काम बुहत अच्छी तरह से चला पर जब से वुह इटाये को बदल गया तब से अलवत्ता जरा गड़ बड़ रहता है मुझ को इतनी भी फुरसत नहीं कि 1 घंटा नित काम कर दूं दूसरे तीसरे दिन जब दयाराम जबरदस्ती मेरी छाती आ छढते हैं तब दबदबा कर थोड़ा काम जो अत्यन्त जरूरी होता है कर देता हूं। पं० वालमुकंद से इतनी सहायता होती है कि महीने के अंत मैं एक वा 2 दिन महनत कर कै वेदभाष्य रवाने करा देते हैं।। पर काम यंत्रालय का चला जाता है किसी प्रकार से रुका नहीं है हां अलवत्ते बुहत सी वाते जो उन्नती की मैं सोचता हूं सो नहीं कर सकता हूं। आपने सीसा सुरमा सिहाई भिजवा दीना है और कागज की भी प्रबंध हो गया–अब 2 बातें और चाहिये 1 तौ दूसरा पंडित ओर 2 दूसरा मैनेजर। पंडित की जरूरत यो कि दो मनुष्य हौने से यह आराम है कि अब कभी कोई बीमार हुआ अथवा और ही कोई कार्य्य से काम न कर सका वा कभी मगरापन करने लगे तो दूसरे आदमी उसकी जगह कर दिया जावें नहीं तौ पंडित जी के बिना सब काम मिट्टी है अर्थाति हम और सब यंत्रालय पडित जी के ही आधीन रहै इस कारण दूसरे पंडित की अति आवश्यकता है जवालादत्त को मैंने लिखा था सो आने को राजी तो पर तंखाहे के वास्ते पेर फहलाता है न मालूम अपनी ही इच्छा से वा भीमसैन के इसारे से–मैं ज्वालादत्त का कार्ड आप के पास भेजता हूं जैसी आज्ञा होय आप लिख भेजें जो मासिक ज्वालादत्त को देंगे वह भी भीमसेन को भी देना पड़ेगा मेरी तजवीज यह है कि यह दोनों मनुष्य नोकर रहै और 1 यंत्रालय मैं और 1 आप के पास काम करै और 1 वर्ष पीछे बदली हो जाया करैं अर्थाति यत्रालय वाला आप के पास और आप का पंडित यंत्रालय में बदल जाया करै।। आप जैसी आज्ञा करे वैसा ज्वालादत्त को लिख दूं। मैंने यह लिखा था कि 15) का मासिक और जब स्वामी जी पास रहोगे तो भोजन अधिक मिलेगा–

मेनेजर की सहायता को दूसरा मनुष्य आवश्य चाहिये क्योंकि हिसाब किताब की सफाई रहै और पत्र व्यवहार अच्छी तरह से होय और तकाजा रुपैय का जल्दी 2 जाय आप समर्थदान और फरखावाद को पत्र फौरन लिख दें और यह लिखदे कि जो राजी होय सो फौरन प्रयाग को चला आवे इस की बुहत आवश्यक्ता है कारण यह है कि अभी निश्चय तौ नहीं परन्तु ऐसा

अनुमान होता है कि आज से 1 महिना पीछे अर्थात 1 जुलाई को मुझे 3 महीने के लिये ब्रह्मा के देश को जाना होगा जो कलकत्ते से 6 दिन का रास्ता जिहाज से होगा तो दयाराम मेरे साथ जायंगे और यहां दूसरे मनुष्य की आवश्यकता होगी सो आप क्रपा करके समर्थदान को और फरखाबाद दोनों जगह को लिख भेजें कि फौरन प्रयाग चला आवैं–

पिछले महीने मई मै 20 फार्म छपैं हैं और अप की क्रपा से 20 तथा 22 से कम अब नहीं छपैगे और 1 बात और यह है जिसको सुन आप भी प्रसन्न होगे कि आपके इस चरण सेवक को श्रीयुत गवरनर जनरल वहादुर ने खिताब "रायबहादुर" की दिया है।। यह केवल आप ही के चरणे का प्रताप है।।

प्रयाग 1 जून सन् 1882 चरण सेवक

सुन्दरलाल

दानापुर का पत्र[1]

(ख) 52

श्री स्वस्ती श्री 5 महाराज पण्डित दयानन्द सरस्वति स्वामि जोग लिखी दानापुर से माधो लाल और सकल सभासदों का अभिवादन पहुंचे यहां कुशल आनन्द है आप का कुशल मङ्गल चाहिये आगे आप ने जो चिट्ठी शाहजहांपुर से लिखी सो उस के उपर दानापुर मुम्बई हाता लिखे जाने के कारण मुम्बई चली गई थी इस लिये यहां-यहां कुछ देर से पहुंची हम लोग उसके पढ़ने से अति आनन्द हो गये और सब वस्तु जो हम लोग समझते हैं आप की सेवा के अवश्य हांगी हम सब जनें जैसे वन पड़ता है तैयार कर रहे हैं यदि आप हरिहर क्षेत्र की मेला में जाने की इच्छा करैंगे तो उसके लिये भी तैयारी करने में हम लोगों का कुछ विलम्ब न होगा। सब आवश्यक वस्तु डेरा डन्डा इत्यादि अभि से युक्ता रक्खेंगे यदि उधर के आर्य्यभाई कृपा करके इधर आने को इच्छा करें तो आप उनको मना मत-किजिएगा वरण साथ लिये आइएगा हम लोग बड़े आनन्द पूर्वक उनसे गले गले मिलेंगे ईश्वर के कृपा से उनको यहां किसी बात की तकलीफ नहीं होगी जब आप वनारस में पहुंच जावें तब कृपा करके एक पत्र यहां लिख दिजिएगा ताके यहां से दो एक मनुष्य ठीक समय पर आपके पास जावै और आप के साथ 2 यहां आवें।।

1. इस पत्र पर तिथि नहीं दी गई। 'जिज्ञासु'

(ख) 53

श्रीयुत महाशय रामनारायण जी मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर का पत्र।

दानापुर 13 अप्रैल 1882 ई

स्वामी जी नमस्ते

स्वामी जी आप के संग एक सप्ताह व्यतीत करके हम सभी ने बड़ा आनन्द उठाया विशेस करके उन शिक्षाओं से जो कृपा करके आप हम लोगों को देते रहे। आप यहां से विदा होकर हम लोग अजमेर पहुंचे और वहां के प्रधान व: हरनाम सिंघ ने बड़ी प्रीति पूर्वक वर्ताव किया और बड़ा व्याख्यान हमारे पंडित तथा प्रधान ने दिया वहां से चल कर दिल्ली गै वहां से मथुरा। मथुरा में नैनसुख से मल कर बड़ा आनन्द प्राप्त हूआ उन्होने हम लोगों का बहूत ही सत्कार किया और उनके सतसंग कुशलता देख कर बहूत प्रसन्न हुए वहां भी आर्य्यसमाज नियत हुआ है सन्ध्या के समय नैनसुख जो हम लोगों को समाज में ले गै और वहां एक छोटा सा व्याख्यान हुआ जनकधारीलाल ने दीया तदनन्तर आगरा आये वहां एक सभासद जिन का नाम वावु सोहनलाल है और जो कासी करिये से मथुरा गये थे और हम लोगों के साथ गये थे अपने मकान पर हम लोगों कौ ले गै और यथोचितसत्कार किया और अपने साथ हो कर ताज को देखलाया जिस्से चित्त बहुत बहुत प्रसन्न हूया और दूसरे सभासद ने मेडिकल कॉलेज में ले जा कर मनुष्य के सरीर का जोड़ तोड़ भली भांति देखलाया सन्ध्या के समय वहां के मन्त्री वावु जमनादास विश्वास से मीले और उनसे वार्तालाप करके बहुत आनन्दीत हुए वारता के मद्य में उन ने एक यह एक बात कही कि जगन्नाथ इत्यादिक जो आर्य्यधर्म के वीसये मैं छोटे-छोटे ग्रन्थ लिखा करते हैं उनमें बड़े-बड़े आर्य्य धर्म के वीसये मैं छोटे-छोटे ग्रन्थ लिखा करते हैं उनमें बड़े-बड़े आर्य्यधर्म्म से विरुद्धय है वाते भी लिखी है कि जिस से भविष्यत में बड़ी हानी हो सकती है और ये आर्य्यो में भेद डालने के कारण हो सकते हैं इस लीये किसी प्रबन्ध से ईस को रोकना अत्यन्तावश्यक है।

लाहौर-मेरठ-फरुक्खावाद में दो चार बुद्धयीमान नियत कर दीये जावे और इस का नोटिस समाजों में भेज दीया जावे कि जो कोई ग्रन्थ वनावे (आर्य्यधर्म्म विशयक) तो उन बुद्धयीमानों से पहले देखाकर पीछे यन्त्रालय में भेजे। और बिना ऐसे किये हुये वह ग्रन्थ प्रमाणिक न समझा जावे। स्वामी जी महाराज! हम लोगों के समझ में बाबु जमुनादास विश्वास का यह कहना बहूत

ठीक मालुम पडता है इसलिये आप से वर्णन किया आशा है कि आप भी इस विषय में कुछ विचार कीजियेगा आगरा से चल कर कानपुर में पहुंचे वहां पण्डित शिवसहाया और उनके पुत्र रामनरायन ने हम लोगों का बहुत सत्कार किया वहां से लखनऊ आये और रामाधर वाजपेयी के यहां उतरे नोटीस तुरन्त दिया गया और सन्ध्या को सब सभासद् एकत्र हुए और हमारे प्रधान और पण्डित जी ने व्याख्यान दिये। सब सभासदों से मीलकर अयोद्धया में और काशी में होते हुए 7 अप्रैल को दानापुर आप की कृपा से आनन्द सहित पहुंचे।

स्वामी जी महाराज जहाँ-जहाँ आज समाज में हम लोग गै वहाँ के सभासद् ऐसे प्रेम से वर्ते कि मैं समझता हूं कि अपना कोई सहोदर भाई भी न करेगा धन्य आप हैं कि जिनके दया से यह फल आर्य्यावर्त्त में दीखने लगा यहां का मेवा तो फूट सारे संसार में विख्यात हो गया है। धन्य आप हैं जिनके यत्न से यह एक्यता की लता सहस्रो वर्ष के पश्चात् पुनः इस देश में उग चली है।

स्वामी जी! अफसोस यह है कि मेरठ आर्य्यसमाज और फरुक्खाबाद आर्य्यसमाज के दर्शन नहीं हुए इसका कारण यही है कि जब अहमदाबाद से आगे बढ़े तब कुछ गर्मी अधीक बोध होने लगी और प्रधान साहब के नाशिका से कुछ और रुधिर प्रघट हुआ पस घर पहुंचने में जितनी शीघ्रता सुभीते से के साथ हो सका क्या गई।

स्वामी जी महाराज! जीस दीन हम लोग यहां पहुंचे उसी दिन वावु माधोलाल भी हजारी वाग से 6 मास को छुट्टी लेकर यहां पहुंचे उनके वृद्ध्य चचा बहुत बीमार थे तार भेजा गया था इनके आने पर जब अच्छी तरह बाते हो चुकं उसके कैक घंटे पश्चात् उनका देहांत हूआ। बाबु माधोलाल ने वैदिक बिद्धी के साथ उनका दाह क्रीया किया। बहुत से सभासद उस समय उपस्थित थे।

भाग्य से हम लोग भी पहुंच गये थे हमारे पंडौल जो महाराज संस्कार विधि के अनुकूल वैदिक ऋचाओं का पाठ करते थे और घृत की आहुति दी जाती थी।

रामानन्द जी नमस्ते।

हम लोग भलीभांति अपने घर पर पहुंचेगे रास्ते में किसी प्रकार का विघ्न नहीं हूआ आसा है कि आप भी आन्द से है। गिरानन्द वावा कमीसिघ और पस्तट्ठा जी से हम लोगों का नमस्ते कह दीजियेगा।

आपका दास

रामनरायन लाल

दानापुर 13 अप्रैल 1882 मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर

(ख) 54

ओ३म्

ता० 11.9.83। ईस्वी

श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी

समीपेषु

महाशय! दण्डवत्! आशा है कि कृपा करके निचे लिखित पर अवश्य ध्यान देंगे। कृपा कटाक्ष से मेरे ओर देखे कर शिघ्र मेरे शुधरने का यत्न करेंगे। यदि अज्ञानता अथवा अविद्या के कारण कोई दोष आरोप हुये हों तो उसे दूर कर देंगे।

सत्य वृतान्त।

मैं श्री वास्तव कायस्थ हूं, जब 13 वर्ष का अवस्था था पिता मेरे तीन बहिन व तीन विध्वा जो अब तक हैं अर्थात् मेरी प्रदादी व दादी व माता को छोड़ कर प्रलोक पधारे। हम नार्मल ईस्कूल के लाष्ट क्लिास में अंग्रेज़ी पढ़ते थे, फारसी पढ़ चुके थे। महल्ला निवासियों ने नाम कट्वा देकर देवनागरी फ़ारसी व क्यथी में जोर पहुंचा कर मामुली नौकरी वृत्ती करा दिया।

मुन्शी हर्नन्दनसाहय वकील जजी पुनिर्या रहने-वाले खगौल ज़िला पटना फुफा मेरे सहकारी हुये और उन्हीं के सहायता से मेरे द्वि बहिन की व मेरी विवाह संस्कार हो गई।

आज काल 7) रुपया मासिक पर (क्यों छोड़ दिया आगे विदित होगा) राय जय कृष्ण साहिब के इहां मुत्सद्दी था। इतना केवल पहिचान के लिये लिखा है। अब मेरी अवस्था 23 वर्ष की है।।

उत्साह

धर्ममार्गी पुस्तकों के अवलोकन का उत्साह तो मेरे चित्त में पूर्व ही से है। प्रथम रामायण व पुराण आदि का अभ्यास रहा, जब प्रेमसागर में वेदों का तारीफ पढ़ा तब तो वेद जान्ने का उत्साह बढ़ा इसमे कितने जगह हम फिरे पर कुछ न हुआ **कितने शुद्र कह कर फेर देते थे।** बाबू जिवराज सिंह कायस्थ से आप के कृत भाष्य का हाल विदित होने से मुन्शी मनोहर लाल के इहां आपके कृत पुस्तकों का देखना प्रारम्भ किया। पुस्तकों के देखते ही पुराणों से निष्ठा जाती रही और विद्या उपार्ज्जन विषय उत्साह बढ़ा।

आर्य्य समाज

विद्योन्नति के निमित्त आर्य्य समाज नियत करके विहार बन्धू द्वारा प्रगट

कर दिया। बाबू हरिहरचरण प्रधाण सभा जब से इन्सपेक्टर हो मुतिहारी गये तब से समाज न हुआ। इसके ।अरुद्ध द्वि धर्मसभा भी नियत हो गया था।

पत्र का आशय

स्वामीजी। दण्डवत! मुझे विद्या उपार्ज्जन का उत्साह है आप कृपा करके सहायता कीजिये। आप पञ्चायत्न पूजा में माता पिता को गिनते हैं और गृह का बोझ केवल मुझे ही पर है तदर्थ निचे लिखित उपाय मनोवाञ्छित फल सिद्ध करने का जाना है।

1 आप अपने समीप अथवा वैदिक यन्त्रालय में कोई प्रबन्ध देकर शिक्षित करें।

2. एसा न होने पर आपका भाष्य सहित व्याकरण को लेकर इहां पढ़ें।

3. ऐसा भी न होने पर केवल ब्रह्मचर्य्य करके विद्या उपार्जन करें।

उत्तर-मुन्शी समर्थदान के ओर से

स्वामी जी इहां नहीं हैं, इस समय (8) रुपयै मासिक का काम खाली है आप अपने काम का लयाकत ठीक-ठीक लिखिये तो आपको यह काम मिल सकेगा।

प्रति उत्तर

वाद लिखने ल्याक़त के हम ने यह भी लिखा कि मासिक कुछ बढ़ा देंगे। इस पर कोई उत्तर न आया। तब हमने सप्तमोभागः समासिक प्रयन्त मंगाया पढ़ने के लिये, पर इहां पोपलीला के कारण न हो सका। तब तो चित्त बड़ा उदास हुआ।

ब्रह्मचर्य्य की मुस्तैदी

यह निश्चित किया कि वृथा जन्म खोना अछा नहीं अभी समय है, कम से कम तीन वर्ष के लिये भी ब्रह्मचर्य्य कर लें। ऐसा विचार कर इहां से प्रयाग (काशी तथा मिर्जापुर का आर्य्य समाज देखते हुये) गये। जब मुन्शी समर्थदान से मिले तब विदित हुआ कि आज काल कोई जगह यन्त्रालय में नहीं है, और स्वामी जी को अवकाश पढ़ाने की नहीं मिलती इस कारण उनके समीप भी जाना व्यर्थ है। हम फिर आये। जब घर आये तो मालूम हुआ कि माता व दादी व हमारे बहनोई प्रयाग खोजने को गई हैं, जब हम पहुंचे थे। उसके सुबह हो के वे सब भी वापस पहुंची। इति

द्वि छोटी बहिन व एक भांजी है और इहां कोई ऐसा पाठशाला नहीं कि जिस में पढ़ने के लिये भेजूं। और स्त्रियों की दुर्दशा देख निहायत चित्त को

विषाद होता है तदर्थ मैं चाहता हूं कि अपना अमुल्य समय उनके सुधारने में लगाऊं। पर बोझ घर का केवल मुझ पर है और आपके उपदेशों से भी विदित है कि पञ्चायत्न पूजा में माता पिता का सेवा करना अवश्य है। तदर्थ निचे लिखित उद्योग मनोबाञ्छित फल सिद्ध होने का जान का आवेदन पत्र महाराजे दर्भंगा तथा आर्य्यसमाज लाहौर, फर्रुखाबाद, मेरठ, तथा अपने फुफा को भी दिया है। अभी तक उत्तर न आया है।

1. संस्कृत पढ़ने चाहता हूं व घर का बोझ भी है और कोई नौकरी करके पढना हो नहीं सकता इस कारण मैं चाहता हूं कि कोई तिजारत कल का करूं और इसमें (1000) से कम व 2000) से अधिक की आवश्यकता नहीं है कोई धर्मात्मा सुदी वा वे सुदी रुप्या देवे, उस को अखत्यार है कि बनजर मज़ीद इतमीनान ताअदाय रुप्यै के कारखाने को अपने क़बज़े या तहत में रखे।

2. या 15 रुपया मासिक धमार्थ वा कुछ थोड़े काम के साथ दे।

आप से, निवेदन।

1. ऊपर लिखे पर ध्यान दे कर जहां तक हो सके मेरी सहायता करें।

2. तीन वर्ष के लिये अपने समीप ब्रह्मचर्य्य में लेकर रखें, और मेरे केवल खाने का प्रबन्ध कर देवें।

3. अगर हो सके तो आप को राजा महाराजा से बहुत सम्बन्ध है मेरी आजिविका का प्रबन्ध कर देवें। जिस से अपने मनोबाञ्छित फल के सिद्ध करने में समर्थ होऊं।

4. मेरे तात्पर्य्य को विचार कर उसे अपने वेदभाष्य के टाइटल पेज में स्थान देंगे वा आर्य्य समाचार पत्रों में दिलवा देंगे।

5. सत्यार्थ प्रकाश द्वारा जाना था कि जब गर्भ स्थित होती है तो उसके कुछ काल बाद छठे वा सातवें महीने (मुद्दत्त ठीक याद नहीं है) जीव स्त्रि के श्वांस द्वारा बालक में पड़ता है, ता० 6। 9। 83 इसवी भारतमित्र द्वारा ज्ञात हुआ कि विर्य्य में कीड़े होते हैं, वही क्रम 2 से बढ़ते हैं पीछे से जिव नहीं पड़ता इस में गरुड़ पुराण तथा वेद का भी प्रमाण दिया है। इहां लिखने में विस्तार होगा भारतमित्र निकाल कर देखियेगा। आप ने भी यह सिद्ध किया है कि जीव का धर्म घटना बढ़ना है और जितने वस्तु घटते बढ़ते हैं उस में जीव है जैसे वृक्ष इत्यादि। पस इस से भी यह सिद्ध होता है कि अवश्य वीर्य्य ही में पहिले से जीव होंगे क्योंकि अंत:करण अर्थात् गर्भ में शरीर के अवयो

के बढ़ने का कर्म होता है। और जिस् दूरबीन से जल के कीड़े देख जाते हैं उसी से वीर्य्य के कीड़े भी देखे जा सकते हैं। इस शंका का समाधान पत्र द्वारा कर देवें। यदि भारतमित्र की बात असत्य हो तो उस का खण्डन भारतमित्र द्वारा प्रकाश कर दीजिये।

6. एक नास्तिक का दलील। जितने हर्कत (व्योहार) होते हैं उसका कारण खून (रक्त) है और खून ही से दुख सुख अनुभव होते हैं। किसी विकार तथा रोग से किसी शरीर के अंग में खून नहीं रहता है तब वह बे हर्कत हो जाता है और उस अंग से शीत उष्ण नहीं अनुभव होते। किसी विकार तथा रोग से किसी शरीर के अंग में खून नहीं रहता है तब वह बे हर्कत हो जाता है और उस अंग से शीत उष्ण नहीं अनुभव होते। जब फोला किसी अंग में पड़ता हैं तब उसमें खून नहीं रहता पानी रहता है इस कारण उस फोले पर सूई गड़ाने तथा चीड़ने से वा उस चमड़े के उखाड़ने में दुख नहीं होता। मुर्दे: में भी खून नहीं रहता है। यदि जीव कोई भिन्न वस्तु है तो क्यों ऊपर लिखे हुये जगहों में दुख सुख अनुभव नहीं कर्ता, तो क्या सिद्ध हुआ कि खून ही एक चीज है और खून तत्वों से उत्पन्न होता है और फिर तत्वों में मिल जाता है। इति। मुझे से कोई उत्तर न हो सका आप के समीप लिखता हूं विस्तार पूर्वक समाधान लिखियेगा।

7. जब आप पूर्व के तरफ वा कलकत्ता प्रदर्शनी में पधारे में तब कोई अकाज न हों तो पटना भी उतर कर दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे।

8. विशुद्धानन्द सरस्वती अपने को शिष्य श्रीमत् परिव्राजकाचार्य्यण बतला कर प्रतिमा पूजन वेद विहित कहते हैं तथा काशी में जो आवेदन पत्र गवर्नमेण्ट में भेजने का प्रस्ताव हो रहा है कि परतिमा अदालत में न आया करे इसमें बड़ी हानि है उस पर आपने हस्ताक्षर भी कीये हैं शंका इतना है कि आप भी स्वामी बिरजानन्द सरस्वती को पूर्वोक्तमहाशय का शिष्य लिखते हैं तो एक ही गुरु के द्वि शिष्यों में इतना मत भेद क्यों पड़ा। हमने भारतमित्र द्वारा विशुद्धानन्द सरस्वती का हाल जाना है।

उत्तर इस पत्र का अवश्य दीजियेगा आगे आशा है कि कृपा कटाक्ष से मेरे ओर देखते रहियेगा। इति शुभम्।

आपका दास

द्वारका नाथ

मुहल्ला बड़ी पटन देवी शहर पटना

(ख) 55

श्रीयुत शङ्कर शास्त्रि केरलीय का पत्र

ओं नमोब्रह्मणे

लुप्तान् काल वशात् कलौ श्रुभकरान्धर्मांस्तु वेदोदितान्
व्यत्या सप्रमितेः सदर्थ वितते श्चबोधतो भूतले॥
भूयोपि प्रकटय्य लोकमखिलं दुःखाम्बुधेस्तारयन्
व्यासो नूतन आविरासनु दयानन्दः सरस्वत्यसौ॥1॥
सोयं गीष्पतिवद्वदावदमणिः क्षेत्रेषु काश्यादिषु
प्रापन् धर्मपथं गदन् कुधिषणान् वा दोद्यतान् कुण्ठयन्॥
आहूतः सकलागमार्थ विदुषा धर्मात्मनासादरम्।
ख्यातेऽस्मिन्नजमेर नाम नगरे श्री भाग्य रामेण वै॥2॥
अत्त्युद्दण्डशिरः सहस्र विपुल क्षोणी धर क्षोभित।
क्षीराब्धि प्रसरन् प्रचण्ड लहरी सौहार्दसंपद्वहाम्॥
यस्मिन् सूक्ति सुधां प्रवर्षति भवाघैश्चोग्र सूर्य्यांशुभिः।
संतप्ता मुदिता सभास्थ जनता तापं समस्तं जहौ॥3॥
भद्र श्रीपङ्कलेपो वितरति न तथा मन्दमानन्द मन्ता
राका संपूर्ण जैवातृक कर निकरोनानिलो दाक्षिणात्यः॥
उद्यानं वा नवद्यं न च नमुचिभिदो नैव साक्षात्सुधा वा
वेदार्थं भासयन्ती भवगदमथनीयस्य वाणीयथालम्॥4॥
आधिव्याधि जरादि दुस्तर भवाम्भोधौ प्लवो यो दृढो
निस्ताराय समस्त मानवकुलस्यालस्य लेशो ज्झितः॥
वर्षन् सूक्तरसंविधिः स्वयमिव श्रेयो वितन्वन् हरन्
सर्वांघ कृपया हरस्य जयतादाचन्द्र मार्त्तण्डभम्॥5॥

केरलीय शंकरशास्त्रिणानिर्मितं
पद्यपञ्चकम् परिस्कृतं यमुनाशंकर शर्म्मणा
प्रशस्तिः

(1)

कलि में, कालवश, मति के उलटा होने तथा अज्ञान के कारण, भूतल में लुप्त वेद में कहे हुवे, कल्याणकारी धर्मों को, अच्छे अर्थों को फैलाने के लिये फिर से प्रकट कर के, सारे लोक को दुःख सागर से पार उतारता हुवा

क्या यह (दयानन्द सरस्वती) व्यास उत्पन्न हो गया है?

(2)

सो काश्यादि क्षेत्रों में जाकर वृहस्पति की तरह, धर्ममार्ग को कहते हुवे, और वाद में डटे हुवे मूर्खों को पराजित करते हुवे।[1] इस वदावदमणि (वाद करने वालों में श्रेष्ठ) को, इस प्रसिद्ध अजमेर नगर में, सारे वेदार्थ जानने वाले धर्मात्मा श्री भाग्यराम ने बुलाया।

(3)

जिस समय इन (स्वामी जी ने) बड़ी-बड़ी चोटी वाले पर्वत से क्षुब्ध दुग्ध सागर के जल तरङ्गों की तरह निर्मल सूक्ति सुधा को बरसाया; उस समय संसाररूपी तेज सूर्य से जले हुवे सभा के लोग प्रसन्न होकर सारे ताप को भूल गये।

(4)

वेदार्थों को वर्णित करने वाली, संसार के रोगों को नष्ट करने वाली इसकी (स्वामी जी की) वाणी जैसा आनन्द देती है वैसा न तो चन्दन का लेप न पूर्णमा के चांद की किरणें, न दक्षिण की वायु, न इन्द्र का सुन्दर बाग और नाही साक्षात् सुधा वैसा आनन्द देती है।

(5)

आधि व्याधि जरादि रूपी दुस्तर समुद्र में नाव की तरह दृढ़, आलस्य को छोड़ कर सारी मनुष्य जाति के उद्धार के लिये स्वयं ब्रह्मा की तरह सूक्ति रस को बरसा कर कल्याण को करने वाला, और पापों को हरने वाला, यह (स्वामी दयानन्द) जब तक सूर्य चांद का प्रकाश है तब तक परमात्मा की कृपा से विजयी हो।

केरलीय शंकर शास्त्रि के बनाये हुवे पांच श्लोक, यमुनाशंकर ने परिस्कृत (?) किये[2]

(ख) 56

श्री परमेश्वरो जयतुतराम्। श्रीशः पायात्।

सिद्धि श्री शुभगुणवृन्द सँय्युतानाम्पाखण्ड प्रचुरतराध्धरोधकानाम् राजश्री परिभवकृत्सु विद्यकानां विद्वत्ता चणयति वीरता धराणाम्।।1।।

1. स्पष्ट है कि काशी शास्त्रार्थ में पुराणपंथी मूर्तिपूजक पराजित हुये। 'जिज्ञासु'
2. श्री शंकर शास्त्री केरलीय का पता करता रहा। वह चैंगन्नूर के थे। उनका निधन काशी की ओर ही हुआ। दीर्घजीवी नहीं हुये। 'जिज्ञासु'

आत्मैक्यं सकल जगत्सु पश्यताभ्वे सद्विद्याभ्यसन विशुद्ध तीक्ष्णबुया अर्य्याणां सदय मुदा गिराह्वयानां मन्नामा अधिचरणं समुल्लसन्तु।।2।।

श्रीमतांयुष्मांकृपातुः शमिहत्रा त्यमिष्यते तराम्परमेश्वरात् उदन्तोयम् श्रीस्वामिनो भो स्वनिर्मित वुरुपुस्तक लिखित परकीय सुपुस्तकाशयानाम्पाखण्डिनाम्पामराणां वेदविरुद्धानि सारस्वतादि कुपुस्तकानिभागवतादि कुपुस्तुकानि च मदीय पाठशा...वृत्त दृष्ट्वा पण्डिताअपण्डिताश्च मयि वैमस्यं कृत्वा मत्प्राण पोषणकारीञ्जीविकां निर्म्मूलत्वेन विचिछन्दन्ति यतस्ततो ममनिर्जीकिकस्य जीविका निष्पाद कोपायज्ञपकं स्वहस्त लिखित पत्रं ममोपरिकृपया श्रीमद्भिर्बप्रे ≍ षणीयमवश्यम् किंच श्री मद्भिर्बः स्वनिर्मि भाष्य-सहिताया।। वैदिक्यास्संहिताया एकम्पुस्तकमिह प्रेष्यम् किंचाष्टाध्याय्या उपरियत्सु पुस्तकं विनिर्म्मितं तदपि मयिकृपया प्रेषयितव्यम् किं च उदेपुरे युष्माकं समीपे पत्रमेकं प्रेषितं तदुत्तर पत्रं मत्समीपेनायात मिति वेदितव्यम् किं च श्री मतांयुष्माकं सकाशाद्वावूसंज्ञकोष्टाध्यायीम्पठति तस्मैमदाशीकथनीया किम्पुरो वहूक्त्या न भोवेदन...प्रोष्ठय दसितनम्पां....

श्री परमेश्वरोजयतुतराम्

सिद्धि, लक्ष्मी और शुभ गुणों से युक्त, पाखण्ड के बड़े भारी रास्ते के रोकने वालों, राजाओं की कान्ति को मात करने वाली विद्या से युक्त, विद्वत्ता के कारण विख्यात, संन्यासी, वीर, सुविद्या के अनुशीलन से उत्पन्न विशुद्ध मति से सारे संसार में एक परमात्मा को देखने वालों, और आर्य्यों को दया तथा प्रसन्नता से बुलाने वालों के चरणों में मेरे प्रणाम हों।

श्रीमानों की कृपा से यहां क्षेम है, वहां भी ईश कृपया चाहता हूं। वृत्तान्त यह है, कि हे स्वामिन्! ऐसे पाखण्डियों की जो दूसरों के अच्छे आशयों को अपने निन्द्य ग्रन्थों में रख देते हैं–

वेद विरुद्ध सारस्वत भागवतादि पुस्तकें मेरी पाठशाला...

यह हाल देख कर पण्डित और अपण्डित सभी लोग मेरे साथ विरोध कर के मेरी प्राणपोषिणी आजीविका मूल से ही नष्ट कर रहे हैं, इसलिये मुझे मेरी आजीविका का उपाय बताने वाला पत्र आप अवश्य भेजें और अष्टाध्यायी पर आपने जो अच्छी पुस्तक बनाई है वह भी कृपया भेज दें। और आप के पास उदयपुर में जो पत्र भेजा था उसका उत्तर नहीं आया। और श्रीमानों के पास जो बाबू नामक अष्टाध्यायी पढ़ता है उसे मेरी आशीर्वाद कह दीजिये....

(तिथि तथा ग्रन्थकर्ता का नाम विच्छिन्न)

श्रीरस्तु

श्रीशम् वन्दे

श्री 7 युत योधपुरेश योग्यमिदम्पद्यम्
अस्यायुर्म्महदस्तु पुत्रमुदथोरात्पञ्चनिष्कण्टकं
शत्रूणान्निवहो विनश्यतु तथा वोभोतुमित्रोदयः।
सौभ्रात्रं हरिपादपद्मयुगलेभक्तिर्म्मदाशीरियं
राज्यात्कीर्तिमदेणराजनृपतौ सभ्रातरि श्रीमति 1 श्रुभम्भूयात् आयुष्मान्भवसोम्येत्याशी राजनिराजस्वराजस्वेति राजताम् सम्वत् 1940 भा० 2। 10 । 4 लिखितमद पत्रम्

श्रीरस्तु।

श्रीशं वन्दे।

यह श्लोक श्री 7 योधपुर के राजा साहिब के योग्य है–'इस की आयु बड़ी हो, प्रसन्नता का देने वाला पुत्र इसके हो, इसका राज्य निष्कण्टक हो, शत्रु नष्ट हों, और मित्रों का अभ्युदय हो, इसका भ्रातृ प्रेम बढ़े, परमात्मा के चरण कमलों में इसकी भक्ति हो–यही राज्य से उत्पन्न कीर्त्ति वाले पुरुषो में चन्द्रभूत इस राजा तथा इसके भ्राता को मेरा आसीर्वाद है।

(ख) 57

श्रीयुत पण्डित हेतुराम जी का पत्र।

श्री

महतः गुण संस्मृतिः सदा गुणदा दोष निवारिणी हृदः। स्मरणं परमेश्वरस्य वा परमैश्वर्य दमापदावतां 1 वाराणस्यां रुडक्यां च मेरठे चापि दर्शनं भाग्यादेव मया लब्धं सार्द्धं न गतवानहं 2 पंचविंशति मुद्राभिर्मासिकेनापि तत्र मां-भवान् न्ययोजयन् भाग्य मांद्यान्नांगीकृतं मया 3 अधुनोपसृतिर्भवत्सपदेष्व भिलाषेण दृढेन चेतसः तदनेन जनेन काम्यते विधि कालेन विहन्यते न चेत् 4 पत्रं भवञ्चीण संगतमस्मदीयं मानं लभेते भवदक्षि चरश्च भूत्वा कांक्षे तदुत्तर वशाद्भवतो प्यनुज्ञा मायामि सेवन मनोरथ साध कोहं 5 भवतामनुगोपि यत्पदं व्रजति भ्रंशभियापवर्जितः तदुयांति न केपि मानुषा इतरै रर्चित वंदितांघ्रयः 6 ममास्ति मैत्री न नृपै र्न चाढपै र्न भूमिभृत्कार्य करैश्च कैश्चित् भवत्पदं वा जगदीश पाद मुमे भवेऽस्मिन् शरणे ममस्तः 7 हेतुरामः

श्रीपत्री स्वामीजी महाराज को
श्यामसुंदर की मुरादाबाद से नमस्ते पोहुंचै

ओउम्

परमात्मा, या (परमैश्वर्य्य दमापदावतां)–जितनी भी महान् व्यक्तियें हैं उनका स्मरण सर्वदा मनुष्य में गुणों को उत्पन्न करने वाला तथा दोषों का नाश करने वाला होता है।।1।। काशी रुड़की तथा मेरठ में आपके दर्शन हुवे थे; परन्तु मैं आपके साथ नहीं गया।।2।। वहां आपने मुझे पच्चीस रुपये मासिक पर भी कार्य्य में लगाना स्वीकार किया था; परन्तु अपने मन्द भाग से मैंने तब वह स्वीकार न किया।।3।। अब चित्त की उत्कट इच्छा से मैं आपके चरणों में आना चाहता हूं यदि इस कार्य्य में भाग्य ही बाधा न डाल दे।।4।। मेरा भेजा हुवा पत्र, यदि आप के दृष्टिगोचर होता हुवा स्वीकृति को प्राप्त हो; तो कृपया अपनी अनुज्ञा से उत्तर पत्र में सूचित करें। आपके मनोरथ को मनोरथ को पूरा करने के लिये मैं उपस्थित हूंगा।।5।। भ्रष्ट होने के डर से छोड़ा हुवा आप का पृष्ठ चर भी जिस पदवी को प्राप्त होता है, वह पदवी अन्य मनुष्यों द्वार पैर पुजवाते हुवे पुरुष भी नहीं पा सक्ते।।6।। मेरी न तो किसी राजा से मैत्री है और न ही किसी धनी से है। राज कार्य्यकर्त्ताओं से भी मैं मित्रता नहीं रखता। आप के चरण और परमेश्वर ये दो ही इस संसार में मेरे आश्रय हैं

हेतुराम

(ख) 58

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री 108 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का पत्र

श्रीयुत महाशय कर्नल आलकट साहब के नाम

जिस से वह स्वयं योगाभ्यास कर सिद्धियों को देख लेवे इससे उत्तम बात दूसरी कोई भी नहीं मैं बहुत प्रसन्नता से आप लोगों को लिखता हूं कि जो आपने ईसाई आदि आधुनिक मत छोड़ परम पवित्र सनातन ईश्वरोक्त वेदमत का स्वीकार कर इसके प्रचार में तन मन और धन भी लगाते हो और उस बात से अति प्रसन्नता मुझ को हुई कि जो आपने **यह लिखा कि कभी आप भी वेदों को छोड़ दें तो भी हम लोग उनको न छोड़ेंगे क्या यह बात छोटी है।**[1] यह परमात्मा की परम कृपा का फल है कि जिसने हम और आप लोगों को अपने वेदोक्त मार्ग में निश्चय पूर्वक प्रवृत्त किये उसको कोटी-कोटी

1. कैसी बातें बनाते थे और कर्नल महोदय कितने खोटे निकले। यह पत्र यहां अधूरा है 'जिज्ञासु'

धन्यवाद देना भी थोड़े है। जैसी उसने हम और आप लोगों पर करुणा की है वैसी ही कृपा सब पर शीघ्र करे कि जिस से सब लोग सत्य मत में चलें और झूठ मतों को छोड़ देवें। कि जैसा अपने आत्मा अत्यन्त आनन्दित हैं वैसे सब के आत्मा हों। और एक आनन्द की बात की सूचना करता हूं कि जिस को सुन आप लोग बहुत आनन्दित होंगे सो यह है कि एक वसीयत नामा 18 अठारह पुरुष अर्थात् जिन में दो अर्थात् एक आप और दूसरी ब्लेवस्तिकी और 16 सोलह पुरुष आर्य्यावर्त्तीय आर्य्यसमाज के प्रतिष्ठित पुरुष हैं इन आप सब लोगों के नाम पर पत्र और नियम लिख रजष्टरी कराके आप और सब लोगों के पास शीघ्र पत्र भेजूंगा कि जिस से पश्चात् किसी प्रकार की गड़बड़ न होकर मेरे सर्वस्व पदार्थ परोपकार में आप लोग लगाया करें और मेरी प्रतिनिधि यह सभा समझी जावेगी।

इसलिये उस पत्र को आप लोग बहुत अच्छी प्रकार रखियेगा कि वह पत्र आगे बड़े-बड़े कामों में आवेगा। किमधिलेखेन प्रियवर विद्वद्विचक्षणेषु।[1]

सं० 1937 मि० श्रावणी वदी 6 मंगलवार[2]

(ख) 59

श्रीमती भगवती[3] जी हरियाना ज़िला होशियापुर के पत्र

ओंनमः

सिद्ध श्री सर्वोत्तम सर्व स्वामिन् सकल दुःख विनाशक सर्वानंदप्रददीनन पर परमद्याल धर्ममूर्ति पितृस्वरूप श्री श्री श्री श्री श्री श्री स्वामीजी महाराजी

1. यह पत्र पेंसिल से लिखा हुआ है और इस पर पृष्ठ संख्या तीन है जिस से विदित होता है कि इसके पूर्व दो पृष्ठ और लिखे गए थे परन्तु उन दोनों पृष्ठों का पता नहीं है। यद्यपि पत्र के आदि, मध्य वा अन्त में कर्नल आलकट साहब का नाम लिखा हुआ नहीं परन्तु सारे पत्र का आशय विचारने से यही बोध होता है कि यह पत्र श्री स्वामी जी महाराज की ओर आलकट साहब को लिखा गया था।
2. इस पंक्ति से बहुत नीची बांई ओर "स्वामी जी" पेंसिल से लिखा हुआ है जो बतलाता है कि श्री स्वामी जी महाराज की ओर से जो पत्र कर्नल आलकट साहब को लिखा गया था उसकी यह कापी है।
3. ऋषि दयानन्द की शिष्य परम्परा में अल्प शिक्षित इस देवी ने अपने तप, त्याग चरित्र तथा कर्मण्यता से इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। 'जिज्ञासु'

नमस्ते कृपासिंध 16 अक्टूबर का पत्र आपका मेरे को पहुंचा परम आनंद हुआ यह जो आप मेरे **बेआश्री**[1] पर कृपा करते हों इस से आपका विद्या प्रताप परमेश्वर महान् बढ़ावें महाराज यह जो आपने लिखा कि तू लाहौर जा सके तो हम लाहौर आर्यसमाज को तेरे वासते लिखें सो जी आपने परम कृपा और स्यानप करी जो पूछ लिया परन्तु मेरी ओर से यह उत्तर है कि मेरे को तो केवल इस ही प्रयोजन सिद्धी की इच्छा है कि भले पुरुषों के आश्रे से इस पाप के फल शरीर की रक्षा ओर अपनी बुद्धि अनुसार जो बात पूछूं उसका यथावत उत्तर सो हे दीनानाथ जी आपकी सहायता से जिस जगा मेरा यह प्रयोजन आपको सिद्ध होता दीखे उस जगा मेरे को चाहे कहीं भेज देवो होर जो शोचनीय बात है सो आप शोच लीजिये परन्तु आपसे मेरी एक यह प्रार्थना है कि जिस जगा आप मेरे को भेजों उस जगा मेरे सत्कार की इच्छा से मेरे को बड़ी बना के न भेजो छोटी बना के भेजो काहे ते कि मैंने अपने प्रयोजन के लिये जाणा है तांते आप उन्होंने को अैसे लिखें कि एक स्त्री शरीर हमारे आगे यह प्रार्थना करती है हमारे घूमने के हेतु इसे पढ़ाना कठन है तांते जेकर तुम अैसे करो तो तुमको योग्य है कहो तो भेज देवें जो बात वो पूछ सो कृपादृष्टि से अपनी कन्या की न्याई बता देनी जौनसी बात उसको पूछनी न आवे और कल्याणकारक होवे सो भी दया से बता देनी और एक रहने के लिये अनुकूल स्थान दे देना एक महीना पर्यन्त अन्न दे देना महाराज इस रीति से मुझको उन्हों के पस भेजो मेरा बहुत बोझ न उनके ऊपर डालो जिससे वोह एक-दूसरे की तरफ देखते-देखते कई महीने दलीलां ही में न लगा देमें महाराज मैं अपना गुज़ारा इस रीति से कर लेवूंगी कि जब मैं एक महीने में गली कूचे और अपने सजाती शरीरों की वाकफ हो जाऊंगी तब दो तीन घरों से एक-एक रोटी ले लिया करूंगी और वस्त्र का खरच मेरी माई दे दिया करेगी माई में तो अन्न के देने की भी सामर्थ है परन्तु इसका स्वभाव जरा संकोची है इस से मेरा इस के साथ ऐसा व्यवहार है कि जो यह अपनी परसन्नता से दे देवे सो ले लेना और अपनी इच्छा से कुछ नहीं कहना इस जगा बैठी को तो दोनों अन्न और वस्त्र अच्छे सत्कार से दे देती है क्योंकि समुदाय में से निकलता विदत नहीं होता औ अन्य देश में जाऊं तो इसको अपनी गांठ से देना पड़ेगा तांते वस्त्र का तो मेरे को सम्भव दीखता है अन्न का नहीं और स्थान समाजस्थों से लेना ही है और जी जो आप की आज्ञा है कि स्त्री जनों को अपनी बुद्धि अनुसार उपदेश करना सो जी यह भी होती

1. 'बेवा' शब्द समझें। माईजी विधवा ही थीं। 'जिज्ञासु'

रहेगी क्योंकि जौन सी मेरे समीप होंगी और आवेंगीयां उनको तो होता ही रहेगा और जो समाजस्थों पुरुषों की इच्छा देखूंगी सो करूंगी आगे महाराज जी आप परम बुद्धिमान हों जो आप की आज्ञा होगी सो करूंगी दीनानाथ जी मैंने तो उसी काल ही लाहौर को चली जाना था जालंधर से लाहौर का टिकट ले लेना था परन्तु एक तो मेरे को चौथाईया ज्वर दूसरा मेरठ देखके चित्त में यह आई कि जेकर उस जगा भी अैसे होगा तो साथ वालियां हंसी करेंगियां तांते अपने स्थान पर चल कर महाराजों से पूछ जैसे कहेंगे वैसे करूंगी हे करुणाकर आप जो संसार के उपकार गौयों की रक्षा के लिये यत्न कर रहे थे वोह कैसे हुया और जो कहते थे कि सत्यार्थप्रकाश और अच्छी रीति से बना हुया छपेगा सो छपा है या नही होर महाराज जी वोह जो मेरी प्रार्थना है भूगोल खगोल के मगाने की सो जी उनकी भी कोई कृपा करके युक्ति बता देनी जिस रीति से मैं मंगा लेवूं।। हरियांना।। 4 नवंबर।। सन् 1882 ई०।।

हस्ताक्षर–
भगवती,

(ख) 60

।। ओंनमः ।।

सिद्ध श्रीमत्सर्वोत्तम सकल गौर्व गुण निधान धर्ममूर्ति दीनद्याल पितृस्वरूप श्री श्री श्री श्री श्री श्री महाराज स्वामीजी भगवती सहित सब समाज का प्रार्थना सहित पाद्य प्रणाम बांचना और महाराज पत्र आप का आया परम आनन्द हुया धन्य हों आप जो ऐसे दीनों पर दया करते हों परन्तु आप का 17 दसम्बर का लिखा हुआ 23 को इस डाकखाने में पहुंच कर 1 जनवरी को मेरे को मिला इस में यह हेतु है कि इस डाकखाने में यह अक्षर न तो मुंशी पढ़ा हुआ है न चिट्ठीरसां इस से यह मेरा पत्र इतने दिन रहा तांते लफाफे पर फारसी हरफ जरूर डलवाना और महाराज जी मेरठ से मेरे को 1 एक ही पत्र आया था सो जी मैं आप के पास भेज दया था और उस पत्र के साथ जो मैंने आप कों पत्र लिखा था उसमें अपने मेरठ जाने का सब समाचार लिखा और यह पूछा कि महाराज मैंने दो पत्र मेरठ को लिखे थे उनका जुवाब यह आया है इसका उत्तर मैं लिखूं वा जेकर लिखूं तो क्या लिखूं सो जी आपने उस पत्र का जुवाब यह लिखा जो आपके पास भेजा जाता है इस में आपने उत्तर देने वास्ते लिखा नहीं इस से मैंने उन्हों को इस पत्र का उत्तर जो जरूर नहीं लिखा

और जी इस से पीछे मेरे से उधर से कोई पत्र नहीं आया जेकर आता तो मैं उत्तर क्यों न लिखती काहे ते कि मेरे तो यह बात परम ही इष्ट थी यही बात तो मैं आप से प्रार्थना करके मांगती ही हूं कि बुद्धिमानों के संग से कोई कोई बात पूछती रहुं और फिर जब आप उन स्थानों में आवों तो फिर आप से प्रार्थना कर के कोई बात पूछूं और आगे औरों को भी बताती रहुं और जी जो मैंने प्रश्न पूछा था सो जी सत्यार्थप्रकाश भूमिका में तो ज़रूर लिखा है परन्तु मैंने उन स्थानों में अैसे समझ लीया कि जब मनुष्य अधिक पाप पुण्य थोड़ा करता है तब पशु आदि का शरीर पाता है जब पाप पुण्य तुल्य करता है तब फिर मनुष्य शरीर को पाता है जब पुण्य अधिक करता है तब देव हे कृपानिधे मैं हट के आने की बात नहीं समझी थी अब आप की कृपा से अच्छी रीति से समझ ली है और हे भगवन् जो आप यह लिखते हों कि हमारा उत्तर लिखने का अवकाश नहीं सो जी यह बात सत्य भी है परन्तु मेरे को यह प्रतीत होता है कि आप की मेरे पर कुछ कृपा की न्यूनता है काहे ते कि जैसी कृपा करनी ईश्वर जी को उचित थी सो उन्होंने भी कर दी है क्या कि जिस देश में आप जैसे विद्वान् उस देश में ग्रहस्थ के जंजालों से रहत जन्म फिर आप का दर्शन और इस मार्ग के समझने और चलने की मन में रुची और बताई बात समझने की समर्थ देदी हैं और जी जो मुझ को अपने करने का कर्तव्य अपने आधीन दीखता है सो उसको मैं भी अपने दिल से उत्साहपूर्वक अति शीघ्रता से करती हूं होर जो मेरे को करने योगय होवे सो आप कृपा करके बता दीजिये आपकों यह अति उचित है और जी आप की कृपा की न्यूनता मेरे को इस से प्रतीत होती है कि न तो दृढ़ होके कहीं और जगा पूछने का मेरा प्रबन्ध करते हो काहे तें कि मैं तो सब तरह से मानती हूं, और आप कभी थोड़ी सी बात जैसे कि बिना रुची से कोई किसी के कहे कहाये भोजन करता है वैसे ही कभी मेरठ की थोड़ी सी बात लिख छोड़ी कभी लाहौर को लिखें सो जी पहिले तो यह कि इस बात में मेरे को क्या पूछना यहां आप को भेजने की योग्यता दीखे वहां भेज देवें और जी जेकर पूछ भी लिया तो मैं भी इसके उत्तर में दो पत्र लिखे विदित तो होता है कि आप ने लाहौर को पत्र ही नहीं लिखा होगा जेकर लिखा भी होगा तौ मेरे को उसका उत्तर कुछ भी न दीया मेरठ की बात लिख छोड़ी वहां की बात को आप भले चंगे जानते भी होंगे कि इस बात में वोह ढील हैं यामैं प्रयोजन मेरे को अधिक है वा उन्हों को परन्तु आप ने कहीं और

समाज में लिखा नहीं होगा इससे और कोई बात लिखने को मिली नहीं मेरठ से किसी आप के पिछले पत्र का उत्तर अब आया होगा वो ही लिख छोड़ी है प्रजानाथ आप तो मेरा सत्कार भी चाहते हो और जी मैं तो इस विषय में अपना सत्कार भी नहीं चाहती एक थोड़ी द्यालता ही चाहती हूं, महाराज जी मूल बात यह कि न तो कही और जगा मेरे पूछने के प्रबंध का फिकर और जी न आप लिष सकों इस से आप ही कृपा की न्यूनता पाई जाती है या नहीं भला महाराज जी जेकर पूर्ण कृपा होवे तो रात्रि से उरे उरे प्रबन्ध भी कर सकों और एक महिने में थोड़ी सी बात लिखनी भी आप को कुछ कठिन नहीं काहे ते जिस को थोड़ी विद्या होती है उसको तो सोच कर उत्तर देना कठन भी होता है सो जी आप पूर्ण विद्वान् हों जौन सी बात अपने मन में बनी बनाई होती है उसके लिखने में कुछ दीर्घकाल भी नहीं लगता सो जी आप जानो आप का काम मैं तो महीने पीछे थोड़ी सी प्रार्थना लिखा ही करूंगी जितना चिर प्रबंध नहीं करते चाहे किसी और से उत्तर लिखवावों चाहे आप लिखो मैंने तो बहुत काल तक आप की ओर देख हे द्यालमूर्ति इन मेरी बातों से आप बुरा नहीं मानना अति क्षुधावंत भिक्षू दाता से इसी तरह से झगड़ा करता है दाता कों को य न चाहीये भिक्षा दे कर क्षुधा की निवृत्ति चाहिये हे दीनानाथ जी मनुष्य शरीर में जीवों के आने की बात तो मैं समझली परंतु अब इनके सुख दुःख होने में शङ्का है सो जी पाप पुण्यों की तुल्यता किस प्रकार से लेनी मेरे को तो यह शङ्का है कि जैसे किसी के घर में आधा गेहूं आधे चने मिले हुये 1 मन किसी के घर 5 किसी के 100 इस से आदि और भी जान लेना वैसे सब के पाप पुण्य अधिक न्यून हैं परंतु हैं आधे 2 सो जी मेरा इस में यह पूछना है कि जैसे गेहूं और चने कों अलग-अलग करीये तो जिसके घर में 100 यह था उसके 50 इतना गेहूं 50 इतने चने जिस के घर 5 उस के ढाई 2 मन जिस के 1 उसके बीस 2 सेर वैसे ही जिन्हों कों पुण्य का फल सुख अधिक होवे उन्हों कों पाप का फल दुःख भी अधिक हुआ चाहिये जिन कों सुख कम उनको दुःख भी कम, सो जी दीखता इस से विपरीत है और भी सत्यार्थप्रकाश में जिस जगह सत, रज, तम गुण की अधिक न्यूनता से मिल कर पाप पुण्य करने से सुख दुःख अधिक न्यून होते हैं यह लिखा है उस जगों भी और जगा भी और ग्रन्थों में भी मेरे को तो यह बात विदित हुई नहीं जेकर कहीं लिखी हुई होवे तो आप ने उत्तर नहीं लिखना वह प्रकरण लिख देना जेकर उसमें न मिलेगी तौ फिर पूछ लेवांगी हे धर्ममूर्ति अैसे नहीं करना

जो उत्तर ही न लिखों महाराज मेरा तो जीना ही इस प्रचीव से है नहीं तो मेरे को एक दिन ही अति दीर्घ हो जाता है।

हरियाना — हस्ताक्षर
6 जनवरी — **भगवती**

(ख) 61

श्रीस्वामी जी महाराज का पत्र लाला जीवन दास जी लाहौर के नाम

लाला जीवन दास जी आनन्दित रहो। पत्र आप का आया समाचार विदित हुआ यहां पारसी खत पढ़ने वाले बहुत कम हैं इंग्लिश के पाठक बहुत हैं इसलिये जब कभी लिखें तब नागरी वा इंगरेजी में लिखें इस पत्र का मतलब हम ठीक 2 नहीं समझते हैं जितना समझा है उतने का उत्तर लिखा जाता है। (सूद) शब्द का अर्थ जो रसोई करने वालों का है यही अर्थ अन्यत्र सूत्रादि में भी है पाककर्त्ता का कोई दृढ़ निश्चय नहीं हो सकता क्योंकि पाचक सब वर्णों में होते हैं अब तो इस से सनातन का व्यवहार ही प्रमाण हो सकता है जो आप लोगों में यज्ञोपवीत होता और धरावट अर्थात् विधवा को पुनः दूसरे के घर में बैठाना नहीं होता तो शूद्र वर्ण में गणना आप लोगों की नहीं अब यह विचारना चाहिये कि (सूद) लोग क्षत्रिय हें अथवा वैश्य जो राजधर्म राज्य करना आप के पुरुषे शौर्यादि गुण युक्त युद्ध में कौशल वाले हुए हों तो क्षत्रिय और जो वैश्य के व्यापारादि कर्म और गुण हों तो वैश्य समझना चाहिये अब आप लोग ही इसका निश्चय कर लीजिये। और जो कभी (सूत) शब्द विगण के सूद हो गया हो तो आप अवश्य क्षत्रिय वर्ण हैं हम ने सुना है कि आज कल बाबू नवीनचन्द्र राय लाहौर में हैं और विधवा विवाह में प्रयत्न कर रहे हैं और आर्य्यसमाज लाहौर भी इस बात में बाबू जी से संमत हो गया है ये ब्राह्म समाजी लोग भीतर और तथा वाहिर=और बात रखते हें इनका यह भी मतलब होता है कि जैसे हम लोग कृश्चीनों के तुय अपमानित हुए हैं वैसे आर्य्यसमाज भी हो जाय परन्तु जो अक्षतयोनि अर्थात् जिसका पुरुष के साथ कभी संयोग न हुआ हो उस कन्या के पुनर्विवाह करने में कुछ दोष नहीं और जिस का पुरुष से संमेल हुआ हो उसका नियोग करने में अपराध नहीं इससे विपरीत करने से शस्त्र से विरुद्ध होने से अब अथवा पश्चात् बहुत कष्ट भोगना पड़ेगा अर्थात् वर्ण बाह्य होना होवे तो भी कुछ संशय नहीं सबसे मेरा

आशीर्वाद कहिये गा।[1]

(ख) 62

वैदिक यंत्रालय
15.8.83 प्रयाग

नं० 873

श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में।
जोधपुर

श्री महाराज!

नमस्ते कल एक निवेदन पत्र आप को भेज चुका हूं।

(1) राय बहादुर पंडित सुन्दरलाल जी तारीख 9 वर्त्तमान मास को आए थे परन्तु ठहर न सके हम लोग स्टेशन पर ही उनसे मिले थे।

(2) आप के पास से धातुपाठ की सूचि आई इसमें धातु के सामने उसका गुण, आत्मनेपद, परस्मैपद ये सब लिखे हैं। मेरी समझ में इनका लिखना ठीक नहीं क्योंकि मूल धातु पाठ में तो ये सब लिखे ही हैं फिर दुबारा लिखने की क्या आवश्यकता है। मेरी समझ में सूचि में केवल धातु लिख कर उसके सामने छपे हुए ग्रंथ की पृष्ठ और पंक्ति लिख देनी चाहिये। जिस की इच्छा देखने की हो वह लिखे पृष्ठ से मूल पुस्तक में निकाल के देखले। वहां उसका सब हाल खुल जायगा। सूचि में गण आदि तब छपने चाहिये कि जब मूल पुस्तक साथ न हो। जब मूल पुस्तक इसके साथ है तो पुस्तक बढ़ाने से कौन लाभ है? पुस्तक को निरर्थक बढ़ा कर क्यों कागज और कंपोजादि का व्यय बढ़ा कर बहुमूल्य करना? इस विषय में जैसी आप की आज्ञा हो लिखीये। जो गणादि साथ छपने की आज्ञा आप देंगे तो बड़ा खर्च पड़ेगा इसके कंपोज़ में बड़ी कठिनता पड़ेगी और ऐसा कुच्छ फल भी न होगा।

(3) गोबध निवारणार्थ हस्ताक्षर कराने में देर क्यों होती है? **लार्ड रिपन के जाने का समय निकट चला आता है इनके गए पीछे कुच्छ न होगा। जो कुच्छ अच्छा होना है सो इन्हीं के समय में होगा।** इस में विशेष प्रयत्न करना चाहिये। यदि आप आज्ञा दीजिये तो में एक फार्म कोष्ठदार छपवा लूंगा और एक पत्र सही होने का मुंबई में छपा था उसकी नकल छपवा लूं पीछे समाचार पत्रों में नोटिस देदूं कि गोबध निवारण के लिये जो लोग सही करवाना चाहैं वे मुझ से फार्म मंगवालें और सही करवा 2 कर मेरे पास भेज

1. इस पत्र के अन्त में श्रीस्वामी जी महाराज के हस्ताक्षर नहीं है।

दें एकत्र होने पर मैं स्वामी जी महाराज के पास भेज दूंगा। इस प्रकार नोटिस होने पर सही शीघ्र हो जायगी। जो लोग मंगवेंगे उनको एंक फार्म तो मैं भेज दूंगा। अधिक हस्ताक्षर करवावेंगे तो कोरे कागज़ पर रूल करवा लेंगे। मेरी तुच्छ समझ में यह प्रकार श्रेष्ठ है। जैसी आप की आज्ञा हो लिखिये। इस काम में ढील होने से बड़ा नुकसान होता है। उदयपुर शाहपुरे और जोधपुर के महाराजाओं से आपने इस विषय में क्या सहायता चाही? और किसी के यहां से कुच्छ मिली वा नहीं? यदि उचित हो कृपा करके लिखिये।

(4) आज की डाक में गत सप्ताह जो ता० 11 को समाप्त हुआ उसकी भाषा 50 मंत्रों की और 10 पुस्तक गण पाठ के और एक मेरठ का आया हुआ पुस्तक भेजता हूं। इसे पहिले सप्ताह की भाषा मंत्र न होने के कारण से नहीं बनी मंत्र नहीं थे इस से नहीं बनी। आपने भेजे सो मंत्रों के पत्रे पहुंचे परन्तु कोई पत्र आपका नहीं आया। पत्र देने में देर न होनी चाहिये। कृपापत्र दीजिये।

आपका आज्ञाकरी
समर्थदान
मैनेजर

पुनः निवेदन यह है मैने **मुन्शी इन्द्रमणी को वेदभाष्य के रुपयों के लिये लिखा था उन्होंने लिखा कि हमारा हिसाब स्वामी जी जानते हैं प्रथम उनसे पूछ लो।** इसलिये आप से निवेदन है कि उनके हिसाब के विषय में आप लिखें।[1] कि उन की ओर कितना रुपया है। आपके पत्र आने से मैं उन को लिखूंगा। अब वेदभाष्य उन्होंने बंध कर दिया है।

समर्थदान
मैनेजर

(ख) 63

वैदिक यन्त्रालय

नं. 916 20.8.83 प्रयाग

श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में जोधपुर

श्री महाराज

नमस्ते कृपा पत्र आप का श्रावण सुदी 12 का लिखा आया।

1. मुंशीजी अर्थ के विषय में सदा कच्चे पाये गये। 'जिज्ञासु'

(1) माषा[1] बनाने के लिये ऋग्वेद के पत्रे पृ० 1768 से 1809 तक पहुंचे मैंने पं० शिवदयाल को 10 मंत्र भाषाने को दे दिये हैं जब बन चुकेगी तब आप की सेवा में भेज दूंगा।

(2) गणपाठ छप चुका सो मैं आपके पास भेज चुका हूं। आज निघंटु की भी सूचि भी छप चुकी। इसका शुद्धि पत्रादि छपने पर यह भी तय्यार हो जायगा। पीछे और ग्रन्थों की भी सूचि छपेगी। सत्यार्थप्रकाश भी बीच 2 मं छपता है। कुल 38 फार्म छपे हैं। 11 समुल्लास छप रहा है प्रयाग समाचार तो दो सप्ताह छप कर इस यंत्रालय में से बंद हो गया। प्रयाग प्रेस नामक यंत्रालय में छपता है। एक नंबर देशहितैषी का भी इसी में छपा है अब पीछे कहां छपेगा सो मालूम नहीं। यह प्रेस एक कंपनी ने बनाया है।

(3) मुंबई के टाईप की अवधि तो हो गई। मेंने पत्र दिया है उत्तर आने से मालूम होगा आशा है ढल गया होगा।

(4) कलकत्ते के टाईप के विषय में आपने लिखा सो पीछे से विचार के निवेदन करेंगे। परन्तु रुपया और लगेगा।

(5) ठाकुर भूपालसिंह जी रोख वाले यहां आए थे तो उन्होंने कहा कि हमारे पास अंक नहीं पहुंचे तो मैंने उनको 6 अंक दिये जिन की कीमत 2) होती है। कीमत के विषय उन्होंने कहा कि हमारे पास अगले अंक नहीं पहुंचे इस कारण दुबारा कीमत न देंगे। इसलिये इस विषय में आप से निवेदन है कि जैसा आप लिखें वैसा करें क्योंकि हम तो दूसरों से तो एक मास तक कोई खबर न दे तो हम दुबारा देने के दाम ले लेते हैं परन्तु इनका मामला और है इसलिये आप से पूछा है।

(6) इस विषय में मैंने पहिले भी निवेदन किया था और अब भी करता हूं कि निघंटु को आप व्याकरण के ग्रंथों के साथ मिलाते हैं यह बहुत लोगों को ठीक नहीं मालूम होता प्रथम तो निघंटु का नाम वेद के अंगों में ही नहीं हैं। जैसे शिक्षा। कल्प। व्याकरण। निरुक्त। ज्योतिष। छन्द। इन में निघंटु का नाम नही है। यदि आप निरुक्त के साथ मानें तो चाहै मानें। यदि वेदांग में मान भी लिया जाय तो व्याकरण के साथ नंबर न पड़ना चाहिये। क्योंकि आप छःओं अंगों की तो व्याख्या करते ही नहीं हैं कि जिस से वेदाङ्ग में होने से इसका भी नंबर पड़ता। यह तो केवल व्याकरण की व्याख्या है। इसका नाम व्याकरण के नंबर में डालने से कुच्छ लाभ नहीं मालूम होता।

देखिये! व्यवहारभानु और संस्कृत वाक्यप्रबोध भी वेदांग में छाप

1. यह शब्द माषा नहीं, भाषा होना चाहिये। 'जिज्ञासु'

दिये गये यह बड़ी भूल की बात हुई। यदि निघंटु पृथक नाम से छपाया जाय तो क्या हानि है? इसको विचार कर लिखिये कि क्या किया जाय। और लोगों की तो इसमें बिलकुल सम्मति नहीं है कि निघंटु व्याकरण में मिलाया जाय। पुस्तक छापने से प्रयोजन है व्याकरण के साथ लगाने से क्या लाभ है। जो छओं अंगों की व्याख्या होती तो जो अंग प्रथम चाहिये सो प्रथम पीछे चाहिये सो पीछे इस प्रकार सब की ठीक-ठीक व्यवस्था होती। जब यह बात नहीं है तो एक निघंटु ही को व्याकरण के साथ क्यों लगाते हैं। इसमें जैसी आप की आज्ञा हो लिखिये। परन्तु मैं तो जनता हूं पृकक् ही ठीक है पीछे आप की इच्छा है।

मैंने इससे पहिले भी पत्र दिये हैं कृपा करके उनके उत्तर ठीक ठीक लिखवावें।

आपका आज्ञाकारी
समर्थदान
मेनेजर

(ख) 64

वैदिक यंत्रालय
24.8.83 प्रयाग

नं० 937

श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में जोधपुर

श्री महाराज

नमस्ते कृपा पत्र आपका भाद्रपद वदी 1 का लिखा आया इसका उत्तर लिखता हूं:-

(1) धातुपाठ की सूचि आपने भेजी वैसी ही छाप देंगे।

(2) गोबध का उपाय शीघ्र ही होना चाहिये। अर्थात् इनके समय ही में इसका फल निकल आवे। जो इन पास अर्जी भेजी गई और फल पीछे निकला तो अच्छा न होगा।

(3) रजिस्टर मिलान हो रहा है। दूसरे काम के कारण से देर हो गई। आज शुक्रवार है ईश्वर ने चाहा तो सोमवार तक रवाना करूंगा।

(3) ज्वालादत्त जी को भाषा ठीक बनाने के लिये कह दिया है।

(4) उदयपुर का सब वृतान्त छाप के पुस्तकाकार प्रगट करने के लिये मैंने आप से पूछा था परन्तु आपने कुच्छ उत्तर नहीं दिया। उसमें वहां का सब हाल और धन्यवादपत्र और स्वीकार पत्रा सब छाप दिये जायंगे। समस्त वृतानत उस में होगा।

वह पुस्तक छाप के सब समाचार पत्रों और एत्तद्देशीय राजा महाराजाओं के पास भेज देंगे। इसके छापने की आज्ञा तो आप दे ही चुके हैं परन्तु फिर भी लिख दीजिये। आजकल यंत्रालय का बड़ा टाईप संस्कृत का खाली ही पड़ा है यह पुस्तक होगा तो शीघ्र ही निकल जायगा।

(5) संस्कृत में पत्र भेजा उस साधु को मैं भी नहीं जानता परन्तु यंत्रालय से पुसतक सब लिया करता है।

(6) गणपाठ आपके पास भेजा था सो रसीद भिजवाईये। उसके साथ गत सप्ताह की मंत्रों की भाषा भी भेजी थी।

(7) प्रयाग समाचार जिन दो सप्ताह के लिये आप को लिखा गया था उन तक छप कर बंध हो गया।

(8) यहां से प्रति मास रोकड़ का हिसाब और डाक बही की नकल और जितने फार्म जिस मास में छपते हैं उतने ही मितिवार अर्थात् अमुक तारीख को अमुक फार्म छपाये तीनों कागज पडितजी के पास बराबर भेज दिये जाते हैं। या तो आपके पास भेजते होंगे या अपने पास रखते होंगे। कृपा पत्र दीजिये।

(9) उणादि की सूचि छपने का लगा लग गया है।

बा० विश्वेश्वरसिंह जी
की नमस्ते पहुंचे

आपका आज्ञाकारी
समर्थदान
मेनेजर

पुनः निवेदनमिदम्।

सत्यार्थ प्रकाश के शब्द बदलने की आपने आज्ञा दी सो मालूम हुआ परन्तु अब पीछे आप कापी भेजें उनमें शब्द कड़े न लाये जायँ तो अच्छी बात है। जहां कहीं मैं शब्द बदलूंगा आपके आशय ही के अनूल बदलूंगा। परन्तु कापी में गड़ बड़ बड़ी आती है। असंबध भाषा बहुत आती है। यह ध्यान रख के दोष निकालना चाहिये। हम यहां बनाते हैं तो बड़ी शंका रहती है। मैंने बहुत बार निवेदन किया परन्तु कापी का दोष आप के यहां से नहीं निकला। जो आप की कापी के अनुकूल छाप दिया जाता तो ग्रंथ बहुत अशुद्ध होता।

कापी भेजीये यहां निमटने पर आ गई है। संस्कार विधि वा अन्य ग्रंथ बी बनाईये। क्योंकि सूची छपे पीछे सत्यार्थप्रकाश के साथ कोई अन्य ग्रंथ भी चाहिये। कापी भेजिये।

आपका आज्ञाकारी
समर्थदान
मैनेजर

(ख) 65

वैदिक यंत्रालय

नं. 949 27.8.83 प्रयाग

श्रीस्वामी जी महाराज की सेवा में जोधपुर

श्रीमहाराज!

कृपापत्र आप का भाद्रपद बदी 5 का लिखा आया। (1) ज्वालादत्तजी के विषय में आपने लिखा सो जाना। पत्रा आपने भेजा सो दिखला दूंगा। भाषा मुझे देख लेने के लिये आपने लिखा सो ठीक है परन्तु शोधने में मेरी भी तो दृष्टि कच्ची है क्योंकि दीर्घ काल तक काम किये बिना दृष्टि कदापि नहीं जमती है और दूसरे मैं करूं भी तो मुझे समय नहीं मिलता। मुझे निज का काम ही बहुत है। प्रूफ शोधना स्थिर चित्त का है मुझे एक न एक झगड़ा लगा ही रहता है। यह काम ज्वालादत्त ही का है उनहीं को सावधानी से देखना चाहिये। सत्यार्थप्रकाश का फार्म अन्त में मैं एक बार देखता हूं सो भी काम (') आदि चिन्होंने के लिये देखता हूं। इसमें कोई भूल और भी दीख पड़ती तो निकाल देता हूं। परन्तु प्रूफ शोधना काम ज्वालादत्त ही का है। एक से कई काम ठीक नहीं हो सकते। इस विषय में पीछे से दूसरे पत्र में निवेदन करूंगा।

(2) गणपाठ में कागज लगा सो व्याकरण के पिछले सब पुस्तकों में लग चुका है। यह मुम्बई की 11-00 रु० रीम की खरीद है। आख्यातिक में कागज निकम्मा लगा था इस कारण से अच्छा लगाया गया। इसकी बात चीत पं० सुन्दरलाल जी से यहां ही हो गई थी। हम लोगों की तुच्छ सम्मति में तो हलका कागज लगाना अच्छा नहीं है। क्योंकि दाम भी तो पूरे लिये जाते हैं। और यह कागज बहुत उत्तम भी नहीं है।

(3) जितने फार्म छपते हैं उनका व्योरा तारीख वार लिखकर पं० सुन्दरलाल जी के पास मासिक हिसाब के साथ भेज देता हूं। आपके पास

पहुंचते न होंगे वे शायद इकट्ठे ही भेज देंगे।

(4) संस्कारविधि की साफ नकल करवा कर तय्यार हो गई है तो भेज दीजिये। सत्यार्थप्रकाश की कापी भेजीये।

(5) आप लिखते हैं कि तुम छापते-छापते थक जाओगे। सो महाराज! इस बात की भी परीक्षा थोड़े दिनों में हो जायगी कि देखें कौन शीघ्रता करता है। व्याकरण की सूचि काल विशेष लेती है इसके छपे पीछे देर न होगी। जोलाई मासकी 1 तारीख से बाहर का कोई काम नहीं लिया जाता। जिस बात की आज्ञा ही आप की नही है वह क्यों की जायगी। अब सत्यार्थप्रकाश और उणादि की सूचि छपती है।

मानव प्रकृति बदलना असम्भव नहीं:-

एक पत्र की नकल आप ने भेजी है इसमें किसी ने अपने-अपने अपराध क्षमा कराए हैं। आपने केवल नकल ही भेजी है इस विषय में कुच्छ लिखा नहीं। और न नकल में किसी के हस्ताक्षर हैं **परन्तु मालूम होता है यह पत्र पं० भीमसेन का है। जो मेरा अनुमान ठीक है तो यह बात अच्छी हुई। भीमसेन ने अच्छी विचारी। और आशा है आप भी उनके अपराध क्षमा करेंगे। मुझ को तो इस पत्री के देखने से बड़ा आनन्द हुआ। मनुष्य की प्रकृति बदलना दुस्साध्य है परन्तु असंभव नहीं।** सदेव नहीं तो आशा है कुछ काल तक काम अच्छा करेंगे। कृपापत्र दीजिये। और समाचार दूसरे पत्र में लिखूंगा।[1]

सत्यार्थ प्रकाश 320
पृष्ठ तक छप चुका है।
स० दा०

आपका आज्ञाकारी
समर्थदान
मनेजर

11. पत्र[2]

Rawalpindi 10th Dec. 1877

Dear Ram Narain

Yours of the 5th inst duly came to hand & understood all what you stated there in. In accepted Rs. 30 as donation for the Veda Bhasya, from Ravgoppa Mangesh Manjeshwarkar with

1. साहित्य सृजन के लिये ऋषि के लिये वैदिक प्रेस की स्थापना एक विवशता थी। भले मनुष्यों, निष्ठावान् और सिद्धान्त प्रेमी लेखिका और प्रफू रीडर न मिलने से प्रेस उनके लिये सिर दर्द ही बना रहा। पत्र व्यवहार इसका प्रमाण है। 'जिज्ञासु'
2. यह मूलपत्र परोपकारिणी सभा अजमेर के संग्रह में है।

thanks & give much credit to him for his such boldness in the path of truth. I also herein enclose a separate receipt for the amount offered by him as well as answer for his good enquiry.

I am very glad to hear that Pandit Soonder Lall will be at Amballa but sorry to say that I am too far from the Railway Line. Please inform you uncle not to suffer unseless troubles in snowy weather & I am always satisfied to hear only now & then that he is enjoyment of sound health without earing for his long & wide visits. Please give him my best asheerbad & accept the same for yourself.

Yours well-wisher
Pt. Swami Dayanand Sarussawatti
दयानन्द सरस्वती

P.S.

Lala Shiva Dyala asst Engineer is coming down to Allahabad on public duty & will see you within a fortnight. I have given him a letter to your address. So please receive him kindly

(दयानन्द सरस्वती)

पत्र 11 का भाषानुवाद

रावलपिण्डी 10 दिसम्बर 1877

प्रिय रामनारायण।

आपका दिनाक 5 दिसम्बर का पत्र यथासमय प्राप्त हुआ था उसमें आपने जो कुछ लिखा है, में सब समझ गया हूं।

मैंने राव गोप्पामंगेश मंजेश्वरकर से रु० 30/. वेदभाष्य के लिये सधन्यवाद भेंटस्वरूप स्वीकार किये हें और उनके द्वारा सत्य के पथ पर दिखलाई निर्भीकता के लिये उन्हें धन्यवाद देता हूं। उनके द्वारा भेंट की गई राशि की रसीद तथा उनके द्वारा की गई जिज्ञासा का उत्तर मैं साथ ही भिजवा रहा हूं।

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पण्डित सुन्दरलाल अम्बाला आयेगे, किन्तु मुझे यह लिखते हुए दु:ख है कि मैं उस स्थान से बहुत दूर हूं, रावलपिण्डी रेलवे लाइन से बहुत दूरी पर अलग स्थित है। अपने चाचाजी से कहें कि वे व्यर्थ में ही इस बर्फीले मौसम में कष्ट न उठावें। मैं जब-जब

यह सुनकर कि उनका स्वास्थ्य उत्तम है, संतुष्ट हूं। इसके लिये वे इतनी लम्बी यात्रा न करें। उन्हें मेरा शुभाशीर्वाद तथा आपको मेरा आशीर्वाद।

आपका शुभेच्छु

प० स्वामी दयानन्द सरस्वती

पुनश्च–

लाला शिवदयाल, एसिस्टेण्ट इन्जीनियर, सरकारी कार्य से इलाहाबाद आ रहे हैं और आपसे एक पखवाड़े के अन्दर मिलेंगे। उन्हें मैंने आपको सम्बोधित एक पत्र दिया है, अतः कृपया उनकी अगवानी प्रेम से करना।

यह पत्र डॉ० धर्मवीर जी को कहाँ से मिला वह हमें बताना भूल गये। यह सवा सौ वर्ष बीत गये तब मिला। आर्यसमाज के इतिहास पर इससे नया प्रकाश पड़ता है। दक्षिण भारत (कर्नाटक) के दृढ़, दानी, ज्ञानी ऋषि भक्त की इसमें चर्चा है। इसने मुम्बई में ऋषि दर्शन किये। **दक्षिण का इकलौता और सबसे पहला आर्य है जिसकी इसमें चर्चा है।**

राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

अमेरीका के सण्डे मैगज़ीन 1878 ई० में प्रकाशित
महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्र

A REVOLT IN INDIA FEARED

Hindoos Concerned in An Agitation Like the Boxers.

THE ARYA SAMAJ GROWS.

IS A POLITICAL SOCIETY, WITH RELIGION AS ITS BASIS.

STRIKES AT CHRISTIANITY.

Special Cable to the Sunday Press.

Bombay, May 25.—The India government is at the present time making a close investigation into the Arya Samaj, the greatest native reform movement which has ever been inaugurated in Hindoostan.

When it is known that the membership of the society constitutes several mil-

भारत सरकार द्वारा इंग्लैण्ड में अपनी (Home govt.) सरकार को भेजे गये एक समुद्री तार का छाया चित्र

विशेष प्रकाशित साहित्य

पूज्य पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के साहित्य, लेखों तथा व्याख्यानों को संग्रहीत करके 'गंगा ज्ञान सागर' के नाम से धर्म प्रेमी जनता को भेंट किया जा रहा है। लगभग 2100 पृष्ठों में, बड़ा आकार।

गंगा ज्ञान सागर-1	सम्पा. प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
गंगा ज्ञान सागर-2	सम्पा. प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
गंगा ज्ञान सागर-3	सम्पा. प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
गंगा ज्ञान सागर-4	सम्पा. प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

2018 के नए प्रकाशन

भारतीय संस्कृति का प्रवाह	पं. इन्द्रविद्यावाचस्पति
सृष्टि विज्ञान	पं. आत्माराम अमृतसरी
पुत्रेष्टि यज्ञ	पं. सुरेन्द्र शर्मा गौड़
युवाओं को माँ का उपहार	कु. कंचन आर्या
वैदिक धर्म गाईड	श्री मदन रहेजा
वैदिक बाल शिक्षाएँ	स्वामी विद्यानन्द विदेह
वेदों में ईश्वर का स्वरूप	श्री वेद प्रकाश
अथातो धर्म जिज्ञासा	श्री वेद प्रकाश
मैं दयानन्द बोल रहा हूँ	डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे
वैदिक धर्म जोड़ता है-तोड़ता नहीं	ब्र. नन्दकिशोर
वैदिक मान्यताओं का वैज्ञानिक और व्यावहारिक विवेचन	डॉ. राजपाल सिंह
Mother's Gift to the Young (with colour pictures)	Ku. Kanchan Arya
Vaidik Ethics	Ach. Darshananand
The Original Philosophy of Yoga (Yog Darshan of Patanjali)	Dr. Tulsiram
Philosophy of Dayananda	Pandit Gangaprasad Upadhyaya

आगामी प्रकाशन

मैक्समूलर का एक्सरे (X- Ray of Maxmuller)	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' व स्वामी श्रद्धानन्द Swami Shraddhananda
महर्षि दयानन्द का अपूर्व पत्र-व्यवहार	स्वामी श्रद्धानन्द सम्पा. प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

ऋषि दयानन्द के पत्र-व्यवहार मानव समाज की अमूल्य सम्पदा है। इनका विस्तृत अध्ययन किए बिना ऋषि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन चरित्र व आर्य समाज का इतिहास लिखा ही नहीं जा सकता। यह बेजोड़ ग्रन्थ इतिहास की कई गुत्थियों को सुलझाने वाला ग्रन्थ है।

इस पत्र-व्यवहार को क्रमबद्ध कर सम्पादन करने में महात्मा मुंशीराम जी ने अत्यन्त साहस, घोर श्रम, असीम श्रद्धा, विद्वता तथा सूझबूझ का परिचय दिया है। इस पत्र-व्यवहार में महात्मा मुंशीराम जी ने प्रत्येक प्रेरक-प्रसंग को मुखरित कर दिया है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस ग्रन्थ का सृजन करके आर्यसमाज पर बड़ा उपकार किया है। आशा है धर्मप्रेमी जनता इस पत्र-व्यवहार के पुनः प्रकाशन के इस महान यज्ञ में सहयोग करेगी।

ISBN 978-81-7077-287-3

9 788170 772873

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

महर्षि दयानन्द का अपूर्व पत्र-व्यवहार

₹200.00

www.vedicbooks.com